* श्री *

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति

क्रमिक पुस्तक मालिका



पाँचवीं पुस्तक



मूल ग्रंथकार

० पं० विष्णुनारायण भातखण्डे

(बी. ए; एल-एल. बी.)

सम्पादक व प्रकाशक

लक्ष्मीनारायण गर्ग ने

मराठी से हिन्दी भाषा में अनुवाद कराकर

संगीत कार्यालय, हाथरस

से प्रकाशित की।



प्रथम आवृत्ति, हिन्दी.



जुलाई १९५४ ☐ मू० ८) रुपया

Published by L. N. Garg
and
Printed by Th. Bharat Singh
AT THE
SANGEET PRESS, HATHRAS.

प्रस्तावना

आचार्य भातखण्डे जी द्वारा अत्यन्त परिश्रम से संगृहीत की हुई बहुमूल्य घरानेदार चीजों का यह विशाल संग्रह सन् १६३७ ई० में मराठी भाषा में प्रकाशित हुआ था, अब इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करते हुए हमें परम आनन्द प्राप्त हो रहा है।

हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति में गाये जाने वाले रागों की घरानेदार खान्दानी चीजों की सङ्गीत प्रेमियों को बड़ी आवश्यकता थी। अतः भातखण्डेजी ने अपने जीवन काल में लगभग १३२५ ख्याल, ध्रुपद, धमार, होरी, तराने आदि का संग्रह क्रमिक पुस्तक मालिका के पहिले चार भागों में प्रकाशित किया। जिनसे सङ्गीत के विद्यार्थी और पाठकों ने यथोचित लाभ उठाया।

अब इस पांचवें भाग में हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति के १० थाटों में से प्रथम पांच थाट (१) कल्याण (२) विलावल (३) खमाज (४) भैरव (५) पूर्वी के ६८ प्रसिद्ध रागों की २५१ खान्दानी चीजों की स्वरलिपियां दी गई हैं। शेष पांच थाट—मारवा, काफी, आसावरी, तोड़ी और भैरवी के ६८ रागों की २३७ चीजों की स्वरलिपियां छटवें भाग में दी गई हैं।

दिनों दिन सङ्गीत कला की उन्नति और प्रचार को देखते हुए हमें पूर्ण आशा है कि इस ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद से सङ्गीत के विद्यार्थी और पाठक यथोचित लाभ उठाकर परिश्रम को सफल बनायेंगे।

इसके हिन्दी अनुवाद में सङ्गीताचार्य श्री सुदामाप्रसाद दुबे से जो सहायता प्राप्त हुई है, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

"गंगा सप्तमी"

संवत २०११

अनुक्रमणिका.

आधुनिक अथवा लक्ष्यसंगीत

शिक्षकों के लिये सूचना

१—सर्व प्रथम इच्छित ध्वनि को षड्ज मानकर विद्यार्थियों को उस स्वर में मिलना सिखाया जावे। प्रत्येक बार शिक्षक द्वारा 'सा' स्वर विलंम्बित एवं गंभीर ध्वनि से बोला जाना चाहिये। इस प्रकार प्रतिदिन बार-बार किया जावे।

२—विद्यार्थियों को अपने साथ स्वरोच्चारण मत करने दो। उन्हें सुन लेने के बाद ही गाने दो।

३—विद्यार्थियों को दबी हुई ध्वनि से मत गाने दो।

४—एक साथ तीन से अधिक विद्यार्थियों को स्वरोच्चारण मत करने दो।

५—स्वर सिखाते समय आरंभ से ही श्यामपट (ब्लैक बोर्ड) का उपयोग करते रहो। विद्यार्थियों में स्वर पढ़ने की आदत डाली जावे।

६—विद्यार्थियों का लक्ष्य स्वर स्थान, श्वासोच्छ्वास और उसमें होने वाले श्रम की ओर होने दो।

७—सरगम सिखाने के पूर्व, बार-बार किये हुए अभ्यास में विद्यार्थियों को स्वरों की अच्छी पहिचान होनी चाहिये। मुख्य रूप से सरगम से ही राग ज्ञान होता है, अतः उन्हें अच्छी तरह कहलवा लेने की सावधानी रखी जावे।

८—स्वर शिक्षण में संलग्न होने के पूर्व ताल और उसकी मात्रायें विद्यार्थियों को सिखा देना उत्तम है। 'सरगम सिखाने के पूर्व विद्यार्थियों में ताल मात्रा का उत्तम ज्ञान होना चाहिये।

९—चीजों के बोल सिखाने के पूर्व प्रत्येक स्वर-पंक्ति को उसके अलंकारों के साथ गाते आना चाहिये।

१०—शुद्ध स्वरों के पाठ उत्तम रीति से सीख जाने पर विकृत स्वरों के अभ्यास की ओर बढ़ना चाहिये। प्रायः विकृत स्वर अर्धान्तरी होते हैं अतः इन्हें सिखाते समय विद्यार्थियों द्वारा तैयार हुए अर्धान्तर 'गम' और 'निसां' का उपयोग करना चाहिये। जैसे 'मंप' स्वरों के उच्चारण के समय बीच-बीच में 'निसां' कहलवाना चाहिये। यह शिक्षक की दूरदर्शिता और बुद्धिमता पर ही अवलंबित रहेगा कि विद्यार्थियों को विकृत स्वर अब और किस प्रकार सिखाना चाहिये।

इस पुस्तक में प्रयुक्त किये चिन्हों का विवरण

रे, ग, ध, नि, इन स्वरों के नीचे आड़ी रेखा हो तो ये कोमल समझे जावें। यदि रेखा न हो तो तीव्र समझे जावें।

म — इस प्रकार लिखा हुआ शुद्ध या कोमल समझा जावे,

मं — इस प्रकार लिखा हुआ तीव्र समझा जावे।

. — जिस स्वर के नीचे बिन्दु हो वह मंद्र स्थान का और जिसके ऊपर बिंदु हो वह तार स्थानका स्वर समझा जावे बिन्दु रहित सम्पूर्ण स्वर मध्य सप्तक के समझे जावें।

‿ — इस प्रकार के चिन्ह में लिखे हुए स्वर एक मात्रा के समय मान में गाये जाने वाले हैं।

⁀ — यह चिन्ह किस स्वर से किस स्वर तक मींड (एक स्वर दूसरे स्वर पर घर्षण क्रिया से जाना) है, इसका दिग्दर्शक है।

— — स्वर के आगे यह चिन्ह जहां हो वहां पिछला स्वर एक मात्रा लम्बा करना है। यदि चिन्ह न हो तो उतने काल की विश्रांति है, यह समझना चाहिये।

ऽ — गीत के शब्दों में जहां यह अवग्रह चिन्ह हो वहां पिछले अक्षर का अन्त्य स्वर (अकार उकार आदि) एक मात्रा लंबा किया जावे।

( ) — स्वर को इस प्रकार कोष्टक में वंद किया गया हो, तो क्रमशः उसका अगला स्वर, वही स्वर, पिछला स्वर और वही स्वर, इस प्रकार चार स्वर एक मात्रा में कहे जावें। जैसे-(प) धपमप, (म) पमगम, (सा) रेसानिसा। कहीं-कहीं पर स्वरों के ऊपर बाईं ओर छोटे टाइप में छपे हुए स्वर दिये गये हैं उन्हें (प्रेस नोट) अलंकारिक स्वर कहा जाता है। ये सूक्ष्म 'कण' स्वर नवीन विद्यार्थियां के गले से उच्चारित न किये जा सकें, तो इनके अभाव से रागहानि नहीं होगी।

इन स्वरों का लगाना आने से गायन में अधिक रंजकता हो जावेगी।

× — यह चिन्ह गीत में प्रयुक्त ताल का 'सम' बताता है। 'सम' को सदैव 'प्रथम ताली' मानकर आगे की तालियों का क्रम इसी से समझना चाहिये।

० — यह चिन्ह तालों की 'खाली' अर्थात् ताली रहित स्थान दिखाता है।

रागों की अनुक्रमणिका

राग (७०) चीज (२५५)

क्रमिक पुस्तक में आई हुई तालों के मात्रानियम व बोल.

ताल दादरा.

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	
ठेका—	धीं	धीं	धा	धा	ती	ना	तबला
,,	धीं	तीं	धा	,,	,,	,,	,,
	×			०			

ताल तीव्रा.

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	
थपिया—	धा	दीं	ता	तिट	कत	गदि	गन	पखावज
	×			२		३		

झपताल.

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
थपिया—	धा	ऽ	धा	गि	की	ट	कड	धा	की	ट	पखावज
ठेका—	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना	तबला
	×		२			०		३			

सूलताल.

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
थपिया—	धा	धा	दीं	ता	किट	धा	तिट	कत	गदि	गन	पखावज
	×		०		२		३		०		

चौताल.

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
थपिया—	धा	धा	दीं	ता	किट	धा	दीं	ता	तिट	कत	गदि	गन	पखावज
	×		०		२		०		३		४		

एकताल.

मात्रा–	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२	
ठेका–	धीं धीं	धागि तृक	तूं ना	क त्ता	धीं तृक	धीं ना	ता०
	×	०	२	०	३	४	

आडाचौताल.

मात्रा–	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२	१३ १४	
ठेका–	धीं तिरकिड	धीं ना	तूं ना	क त्ता	तिरकड धीं	ना धीं	धीं ना	ता०
	×	२	०	३	०	४	०	

ताल झूमरा.

मात्रा–	१ २ ३	४ ५ ६ ७	८ ९ १०	११ १२ १३ १४	
ठेका–	धीं ऽ धा,तृक	धीं धीं धागि तृक	तीं ऽ ता,तृक	धीं धीं धागि तृक	ता०
,,	धीं धीं नत	,, ,, ,, ,,	तीं तीं नत	,, ,, ,, ,,	,,
	×	२	०	३	

ताल धमार.

मात्रा–	१ २ ३ ४ ५	६ ७	८ ९ १०	११ १२ १३ १४	
थपिया–	क ध्धि ट धि ट	धा ऽ	क त्ति ट	ति ट ता ऽ	पखावज
	×	२	०	३	

ताल दीपचन्दी.

मात्रा–	१ २ ३	४ ५ ६ ७	८ ९ १०	११ १२ १३ १४	
ठेका–	धीं धीं ऽ	धा ग तीं ऽ	ता तीं ऽ	धा ग धीं ऽ	तबला.
	×	२	०	३	

तिलवाड़ा.

मात्रा–	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६	
ठेका–	धा तृक धीं धीं	धा धा तीं तीं	ता तृक धीं धीं	धा धा धीं धीं	ता०
	×	२	०	३	

त्रिताल (पंजाबी)—यह विलम्बित त्रिताल है.

मात्रा–	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६	
ठेका–	ता धीं धीं धा	धा धीं धीं धा	धा तीं तीं ता	ता धीं धीं धा	ता०
	×	२	०	३	

ताल पंजाबी.

मात्रा—	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
	×	२	०	३

ब्रह्मताल.

मात्रा—

१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२	१३ १४	१५ १६	१७ १८	१९ २०	२१ २२	२३ २४	२५ २६	२७ २८
×	०	२	३	०	४	५	६	०	७	८	९	१०	०

रूपकताल.

मात्रा—	१ २ ३	४ ५	६ ७
ठेका—	धीं धा तृक्	धीं धीं	धा तृक्
	×	२	३

ताल गजझंपा.

मात्रा—	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५
ठेका—	धा धिन नक तक	धा धिन नक तक	धिन नक तक किट	तक गदि गिन
	×	×	०	३

शिखरताल.

मात्रा—	१ २ ३ ४ ५ ६	७ ८ ९ १० ११ १२	१३ १४	१५ १६ १७
ठेका—	धा तृक धिन नक थुं गा	धिन नक धुम किट तक धेत्	धा तिट	कत गदि गिन
	×	०	३	४

मत्तताल.

मात्रा—	१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२	१३ १४	१५ १६	१७ १८
ठेका—	धा ऽ	धि ड	न क	धि ड	न क	ति ट	क त	ग दि	गि न
	×	०	२	३	०	४	५	६	०

शुद्धि पत्र

नोट—स्वरलिपि वाले पृष्ठों में लाइन गिनते समय हैडिंग, कण स्वर व ताल चिन्ह छोड़ देने चाहिये।

पृष्ठ	लाइन	कालम या खाना	अशुद्ध	शुद्ध
७१	७	६	प ग	प प
६५	५	४	प —ग सा, नि़ सा	प —ग नि़ सा,सा
६५	६	४	डी ऽनि गा, आ	ङि ऽनि गा,आ
१२२	८	१	छो ऽ	जो ऽ
१२७	६	२	ग रे ग – –	ग रे ग – –
१३१	३	६	रे ग, पप गग प	रे ग, पप गग प
१३१	४	६	ऽ,बन ऽ	ऽ, बन ऽ
१४७	६	६	दा नि	दा ३ नि
१६१	३	—	सा, सा, रे म ।,	सा, सा, रेम,
१६४	३	४	सां ध नि प	सां ध नि प
१७३	४	—	गमौ रिसाविति प्रोचुः	गमौ रिसाविति प्रोचुः
१७८	१४	१	खो ऽ	खो ऽ ×
१८०	८	४	ऽ न्ह ऽ	ऽ न्हा ऽ
१६६	१४	५	ऽह्व सौंऽ	ऽह् सौंऽ
२०१	६	४	सा ऽ ये सा	सा ऽ ये, सा
२०२	५	५	म म रे	ग म रे
२०६	१३	२	नि़ सा ग म	नि़ सा ग ग
२१५	२	२	ह त स ख	ह त स खि
२२७	१	२	(म) – रे म	(म) – रे, म

२२६	७	२	रे रे ।स सा	रे रे सा सा
२३६	६	४	ऽ ब	ऽ बि
२६०	३	४	म रे	ग रे
२६४	११	३	ग सां नि प म	ग सां नि प, म
३०८	४	२	दे ऽ। प्र ०	दे ऽ। प्र २
३१४	७	१	सा सा नि़ सा सा(सा) ध़ नि़	सा सा नि़ सा सा(सा), ध़ नि़
३२४	७	३	सां ¬ प	सां नि प
३२७	१	४	रे– मप.	रे–, मप
३३६	३	—	नि ध प	निधप,
३३६	४	—	सारें,	सारें,
३४६	३	—	भरवके	भैरवके
३५२	१	६	ग रे – सा	म रे – सा
३५८	३	४	म ग (म)रे रे सा	रे म ग (म)रे रे सा
३६२	२	३	ल ऽ ऽ ऽ जि	ली ऽ ऽ ऽ जि
३६४	११	४	म म ग	ग म ग
३७१	२	४	ऽ ये	ये ऽ
३८३	११	२	सां ध प	सां ध –
३९५	५	३	ध पम	ध पम
३९७	४	—	हरित	हरति
४०८	५	४	ध रें सां	ध रें सां
४१०	६	४	म रे	ग रे
४२३	८	५	ऽऽ,ऽ	ऽ,ऽऽ
४५८	६	५	स ऽ	सों ऽ

४६६	७	१	म ग प	मं ग प
४७२	२	—	गयो	भयो
४८१	११	—	गप,	गप
४८३	१	—	प प सा सा ग ग प प, पधग	प प सा सा ग ग ब, प, पधग,
४८४	३	—	मम, रेनि़सा, रेनि़, म, रेनि़,	मम, रेनि़सा, रेनि़, म, रेनि़,
४८४	१२	—	साग,	साग
४६१	१२	—	धनि़प़ पप़सा	धनि़प़, पप़सा,
४६८	७	—	धपम	धपम,
५०१	१८	—	सांरेंगंमंपंमं–रेंसां	सांरेंगंमंपंमंगंरेंसां
५२१	१६	—	ग सा;	गरे॒सा;
५२३	४	—	रेगरे॒सा,	रे॒गरे॒सा,
५२५	४	—	सारेनि़सा	सारे॒नि़सा
५२५	७	—	रेमं,	रे॒मं,
५२५	११	—	गपगरे गरे॒सा।	गपगरे॒गरे॒सा।
५२८	७	—	म मंध॒ मंग, निध॒प, मंग, म मंध॒ मंग	मं मं ध॒ मं ग, निध॒प, मंग, मं मंध॒मंग
५३०	२२	—	गप.	गप–
५३१	२	—	(६७ रागों की २५१ चीज़ें)	(७० रागों की २५१ चीज़ें)



ग्रंथकार : पंडित **विष्णु नारायण भातखंडे,** बी. ए., एलएल. बी.

("चतुर पंडित")

जन्म : गोकुलाष्टमी शाके १७८२ — मृत्यु : गणेशचतुर्थी शाके १८५८

१० अगस्त १८६० — १९ सितम्बर १९३६

"मद्भक्ताः यत्र गायंत तत्र तिष्ठामि नारद"

* श्री *

पांचवीं पुस्तक



मंगलाचरण

प्रणम्य शिरसा देवं दत्तात्रेयं दिगम्बरं ।
सर्वविघ्नोपशान्त्यर्थं कर्तव्यं कर्तुमारभे ।।

शास्त्रीय-विवरण

विषय-प्रवेश

सङ्गीत प्रेमियों द्वारा अपनाई हुई इस क्रमिक पुस्तक मालिका के प्रारम्भिक चार भागों में, प्रसिद्ध दस थाटों से उत्पन्न होने वाले कुल ४५ रागों की लगभग साढ़े तेरहसौ चीजें अबतक प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त द्वितीय भाग में नाद, स्वर, सप्तक, थाट आदि पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या; तीसरे भाग में सप्तक से थाट कैसे उत्पन्न होते हैं, एक सप्तक से इस प्रकार कितने थाट उत्पन्न हो सकते हैं, थाटों से रागों की उत्पत्ति कैसे होती है? आदि प्रश्नों की व्याख्या तथा चतुर्थ भाग में श्रुति और स्वर स्थान, मार्गी और देशी सङ्गीत, अलाप राग लक्षण, जाति, स्थाय, मुख चालन, निबद्धगान, तानें गीतों के ख्याल, टप्पा आदि भेद और दाक्षिणात्य ताल पद्धति आदि विषयों का विवेचन किया जा चुका है।

अब इस पुस्तक और इसके अगले भाग अर्थात् क्रमिक पुस्तक मालिका के छठे (अन्तिम) भाग में शेष शास्त्रीय और ऐतिहासिक जानकारी देकर अपनी पद्धति से सम्बन्धित शास्त्रीय भाग पूरा करूँगा। इसमें से (पांचवें) भाग में प्राचीन (ग्रन्थोक्त) सङ्गीत, आधुनिक (लक्ष्य) सङ्गीत, राग और रस, रागों के देवमय स्वरूप, स्वरों के रंग

आदि विषयों का विचार करूँगा और अगले भाग में हिन्दुस्थानी सङ्गीत का मध्यकालीन इतिहास लिखकर भावी सङ्गीत के विषय में विचार करूँगा।

प्राचीन सङ्गीत

भरत व शार्ङ्गदेव की श्रुतियां

आजकल कुछ आधुनिक विद्वान अपने लेखों में जिन २२ श्रुतियों का उल्लेख 'रत्नाकर' के नाम से करते हैं, वे उस ग्रंथ की नहीं हैं।

'सङ्गीत रत्नाकर' में पण्डित शार्ङ्गदेव अपनी श्रुति-रचना के सम्बन्ध में निम्न दो श्लोकों में इस प्रकार खुलासा करते हैं:—

व्यक्तहे कुर्महे तासां वीणाद्वंद्वे निदर्शनम् ।
द्वे वीणे सदृशे कार्ये यथा नादः समो भवेत् ॥
तयोर्द्वाविंशतिस्तंत्र्यः प्रत्येकं तासु चादिमा ।
कार्या मंद्रतमध्वाना द्वितीयोच्चध्वनिर्मनाक् ॥
स्यान्निरंतरता श्रुत्योर्मध्ये ध्वन्यन्तरा श्रुतेः ॥

पण्डित शार्ङ्गदेव ने श्रुति का एक नियत प्रमाण स्वीकार किया है और अपनी २२ श्रुतियां समान मानी हैं।

तथा—

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्ज मध्यम पंचमाः ।
द्वे द्वे निषाद गांधारौ त्रिस्त्रो ऋषभधैवतौ ॥

इस प्रकार सप्त स्वरों में २२ श्रुतियों का विभाजन कर प्रत्येक शुद्धस्वर, अपनी ग्रन्थोक्त अन्तिम श्रुति पर स्थापित किया है। इस प्रकार से उत्पन्न होने वाली श्रुति स्वर व्यवस्था, क्रमिक पुस्तक मालिका के ४ थे भाग में दी जा चुकी है, अतः पुनः यहां नहीं दी जा रही है। इन्होंने बताया है कि कानों द्वारा स्पष्टतापूर्वक भिन्न रूप से पहिचाने जाने वाला नाद ही 'श्रुति' है, और इस प्रकार की श्रुतियां एक सप्तक में २२ से अधिक होना सम्भव नहीं है। प्रत्येक सप्तक में इस प्रकार के २२ नाद

आते हैं। इन्होंने कहा है कि "एवं कंठे तथा शीर्षे श्रुतिर्द्वाविंशतिर्मता" इन श्रुतियों की स्थापना किस प्रकार की जावे, इस का उत्तर इन्होंने इस श्लोक में दिया है:—

कार्यामंद्रतमध्वाना द्वितीयोच्चध्वनिर्मनाक् ।
स्यान्निरंतरता श्रुत्योर्मध्ये ध्वन्यन्तराश्रुते ॥

अर्थात् इस हिसाब से श्रुति का प्रमाण (अन्तर) नियत किया है। अति मन्द्र नाद पर एक तार मिलाने के पश्चात् उससे थोड़ा सा ऊँचा अर्थात् कानों द्वारा स्पष्ट भिन्न समझ सकने योग्य ऊँचा—दूसरा नाद ग्रहण किया जावे, और पहिले और दूसरे नाद का जो परस्पर प्रमाण (Ratio) हो वही प्रमाण (अन्तर) दूसरे और तीसरे, तीसरे और चौथे तथा चौथे और पांचवें, आदि नादों का रखा जावे। इस प्रकार नाद स्थापना करने पर एक सप्तक में, एक से दूसरे "चौथे ऊँचे" और साधारण मनुष्य की कर्णेंद्रिय द्वारा अलग-अलग पहिचाने जाने वाले कुलनाद २२ ही उत्पन्न होते हैं; और नाद-प्रमाण-दृष्टि से सभी श्रुतियां समान होती हैं।

भरत ने अपने 'नाट्य शास्त्र' में लगभग इसी प्रकार की श्रुति व्यवस्था दी है; परन्तु उसका वर्णन भिन्न दृष्टांत एवं भिन्न शब्दों द्वारा किया है। उनके द्वारा दिया हुआ विवरण निम्न श्लोकों में है:—

षड्जश्चतुःश्रुतिर्ज्ञेय ऋषभस्त्रिश्रुतिस्तथा ।
द्विश्रुतिश्चैव गांधारो मध्यमश्च चतुःश्रुतिः ॥
चतुःश्रुतिः पंचमा स्याद्धैवतस्त्रिश्रुतिस्तथा ।
निषादो द्विश्रुतिश्चैव षड्जग्रामे भवंति हि ॥

मध्यम ग्राम के विषय में भरत ने इस प्रकार का नियम बताया है:—

षड्जग्रामे पंचने स्वचतुर्थश्रुतिसंस्थिते ।
स्वोपान्त्यश्रुति संस्थेऽस्मिन् मध्यमग्राम ईष्यते ॥

अर्थात्—जिस नाद रचना में 'पंचम' सत्रहवीं श्रुति पर स्थापित हो, वह 'षड़ज ग्राम' और जहां वह सोलहवीं श्रुति पर स्थापित किया जावे, वह 'मध्यम ग्राम' होता है। मध्यम ग्राम के पञ्चम बनाने में

योजित किया जाने वाला प्रमाण (अन्तर) ही उसने श्रुति का प्रमाण माना है। भरत का कथन है कि किन्हीं दो श्रुतियों में यही एक निश्चित ध्वनि प्रमाण होना चाहिये। इस विवरण से यह कहना आपत्तिजनक नहीं है कि १३ वीं शताब्दी में की गई शार्ङ्गदेव की श्रुति-स्वर रचना का आधार ५ वीं शताब्दी में भरत द्वारा की हुई रचना ही रही थी।

भरत और शार्ङ्गदेव ने श्रुति स्थान निश्चित करने के लिये जो प्रयोग बताये हैं, उनसे सिद्ध होता है कि श्रुति Geometrical progression के अनुसार एक पर एक चढ़ती जाती हैं। भरत ने दो वीणाओं द्वारा श्रुति प्रमाण निश्चित करने के लिये कहा है।

इनमें से एक वीणा 'ध्रुव' अथवा 'अचल' वीणा हो और यह "चतुश्चतुश्चतुश्चैव" के प्रमाण से षड़ज ग्राम (अर्थात् सत्रहवीं श्रुति पर 'पञ्चम' स्थापित होने वाले ग्राम) में मिली हुई हो। दूसरी वीणा आरम्भ में ठीक वैसी ही मिलाई जाकर प्रत्येक बार एक श्रुति उतारते हुए चार बार उतरी हुई हो। ऐसा करने पर आरम्भिक षड़ज स्वर, निषाद तक उतरा हुआ हो जावेगा। प्रत्येक फेरे को 'सारणा' नाम दिया जाकर इस सम्पूर्ण प्रयोग को 'सारणा चतुष्टय' का पारिभाषिक नाम उस समय प्रयुक्त हुआ। इस प्रयोग द्वारा उसने सिद्ध किया है कि षड़ज स्वर चार श्रुति का है और सभी श्रुतियां नियत प्रमाण की और समान होती हैं। भरत और शार्ङ्गदेव में केवल इतना अन्तर है कि भरत ने वीणा पर ७ तार बांधे हैं और शार्ङ्गदेव ने २२ तार बांधे हैं, परन्तु दोनों का कथन यही है कि श्रुति नियत प्रमाण की और समान है, और एक सप्तक में ऐसी श्रुतियां २२ ही होना शक्य हैं। इस विषय पर श्रीयुत फड़के का एक लेख मैरिज कॉलेज ऑफ हिन्दुस्थानी म्यूज़िक के 'सङ्गीत' (त्रैमासिक) में प्रकाशित हुआ है, उसे देखा जावे। सारांश यह है कि कुछ आधुनिक विद्वान पाश्चात्य आन्दोलन शास्त्र से उत्पन्न होने वाले असमान श्रुत्यन्तर को स्वीकार कर उनका आधार भरत और शार्ङ्गदेव को बताते हैं, यह भ्रान्ति पूर्ण है।

(इस विषय में अधिक विस्तृत विवरण के लिये हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति भाग १ पृष्ठ २६-४३ और हि० सं० पद्धति भाग ४ पृ० १८-४७ (मराठी) देखिये)*

---

* इन पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद "भातखन्डे सङ्गीत शास्त्र" के नाम से सङ्गीत कार्यालय द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं।

शिक्षा ग्रन्थ

भरत और शार्ङ्गदेव के पीछे जाने पर 'नारदी शिक्षा' और 'मांडूकी शिक्षा' ये दो उपलब्ध होते हैं। इनमें स्वरों का वर्णन भिन्न-भिन्न जीवधारियों की ध्वनि से तुलना करके दिया हुआ है तथा स्वरों को भिन्न-भिन्न रङ्ग भी बांट दिये गये हैं। परन्तु इनमें श्रुति स्वर स्थान के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं होती, अतः इस दृष्टि से ये ग्रंथ निरुपयोगी हैं।

'स्वरमेलकलानिधि'

अब हम दक्षिण के पण्डित रामामात्य द्वारा वर्णित श्रुति स्वर प्रकरण की ओर बढ़ें। यह विद्वान भी शार्ङ्गदेव के समान ही श्रुतियां बाईस मानकर और उनके प्राचीन नाम देकर प्रत्येक स्वर का अपनी अन्तिम श्रुति पर ही शुद्ध होना मानता है। इस गणना के अनुसार इन सभी का शुद्ध या अच्युत षड़्ज ४ थी श्रुति पर, शुद्ध रिषभ ७ वीं पर, शुद्ध गांधार ९ वीं पर, शुद्ध अथवा अच्युत मध्यम १३ वीं पर, शुद्ध पञ्चम १७ वीं पर, शुद्ध धैवत २० वीं पर और शुद्ध निषाद २२ वीं श्रुति पर पड़ता है। इनके ग्रंथ में शुद्ध गांधार को 'पञ्च श्रुतिकरिषभ' और शुद्ध निषाद को 'पञ्चश्रुतिकधैवत' नाम अतिरिक्त दिये हैं, इसके अलावा शेष विकृत स्वरों के नाम 'रत्नाकर' जैसे ही हैं। रत्नाकर में शुद्ध और विकृत मिलाकर १२ स्वर ही बताये हैं। इन सबके तुलनात्मक नाम आगे पृष्ठ २४ पर दिए हुए नकशे से स्पष्ट ज्ञात होंगे। स्वरमेलकलानिधि में शुद्ध और विकृत प्रत्येक सात-सात मिलाकर कुल चौदह स्वर बताये हैं। शार्ङ्गदेव के समय जो पद्धति प्रचलित थी, वह रामामात्य के समय नहीं थी। प्रचार में मध्यम ग्राम भिन्न नहीं माना जाता था। समस्त राग एक सप्तक से ही उत्पन्न होते थे। पञ्चम अपने स्थान से नहीं हटाया जाता था। षड़्ज, मध्यम और पञ्चम की 'च्युत' अवस्था नहीं मानी जाती थी। रत्नाकर के समय निषाद स्वर की दो प्रसिद्ध विकृति कैशिक-निषाद और काकली-निषाद थीं। निषाद ने षड़्ज की तीसरी श्रुति ग्रहण की, इस हेतु से रामामात्य ने इसे 'च्युतषड़्ज निषाद' का नाम दिया है। इसके समय में मध्यम की तीसरी श्रुति ग्रहण करने वाला गांधार "च्युतमध्यमगांधार" और पञ्चम की तीसरी श्रुति ग्रहण करने वाला मध्यम "च्युतपंचम मध्यम" हुआ। ऐतिहासिक दृष्टि से

यह क्रमिक परिवर्तन ध्यान रखने योग्य है। साधारण गांधार और कैशिक निषाद को रामामात्य ने 'षट्श्रुतिक रे' और 'षट् श्रुतिक ध' कहा है। रामामात्य के शुद्ध रे और ध स्वर, अपने कोमल रे, ध हुए और उसके शुद्ध ग और नि स्वर अपने कोमल ग नि हो जाते हैं तथा उसके अन्तर गांधार और काकली निषाद अपने शुद्ध ग और नी स्वर होते हैं। रामामात्य के ग्रंथ में दिए हुए शुद्ध, विकृत स्वर आज दक्षिण में उन्हीं नामों से प्रचलित हैं।

राग विबोध

राग-विबोध-कर्ता पण्डित सोमनाथ ने शार्ङ्गदेव की वीणा पर बाईस तार बांधने की पद्धति में परिवर्तन कर वीणा के डण्डे पर बाईस परदे बांधने की युक्ति निकाली। इसने वीणा पर चार तार बांधकर प्रथम तीन तार षड्ज का तीन श्रुतियों में मिलाना, और चौथा तार शुद्ध अथवा अच्युत षड्ज का रखने का उल्लेख किया है। प्रथम तीन तारों को 'मनाक् उच्च ध्वनि' के प्रमाण से एक से दूसरा ऊँचा तार लगाकर, चतुर्थ तार को षड्ज माना है। सोमनाथ ने रत्नाकर के विकृत स्वरों के नादों को बढ़ाकर विकृत स्वरों के पन्द्रह नाम दिये हैं। उनका स्थान अगले चार्ट में देखा जावे।

'सङ्गीतसमयसार और 'सद्रागचन्द्रोदय'

'समयसार' ग्रंथ की रचना पं० पार्श्वदेव ने की है। इसने अपने ग्रंथ में रत्नाकर का विधान ही उद्धृत कर लिया है। श्रुति और स्वर भेद, मतङ्ग आदि के बताये हुए उद्धृत किए हैं। 'सद्रागचन्द्रोदय' के रचयिता 'पुण्डरीक विट्ठल' ने सभी प्राचीन कल्पनाओं को अपने ग्रन्थ में स्थान दिया है, परन्तु यह किस प्रत्यक्ष स्वर ध्वनि का प्रयोग करता था, यह इसकी वीणा से समझा जा सकता है। इसकी वीणा के तार रामामात्य की वीणा के तारों के समान मिलाये जाते थे। इसने स्वर-स्थानों का वर्णन निम्नरूप से किया है:—

आद्यानुमंद्राव्हय षड्जतंत्र्या। शुद्धो यथा स्यादृषभस्तथाद्या॥
सारी निवेश्येत तथा द्वितीया। तंत्र्या तया शुद्धगसिद्धि हेतोः॥

मारी तृतीयाऽपि तथैव तंत्र्या । ऽधीयेत साधारण गस्य सिद्धयै ॥
सारी चतुर्थी लघुमध्यमस्य । सिद्धयै तया तंत्रिकया तथैव ॥
तंत्र्या तया पंचम सारिका च । निधीयते शुद्धमसाधनाय ॥
सारी निवेश्या च तथैव षष्ठी । तंत्र्या तयैवं लघुपाञ्हयाय ॥

परन्तु यही कहा जावेगा कि चन्द्रोदय में दो स्वरों के मध्यान्तर में श्रुति किस नाप से रखी जावे, इस प्रश्न का कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता। यह भी दिखाई देता है कि यह शार्ङ्गदेव के वाद्याध्याय में बताये हुए विवरण के अनुसार अपनी 'स्वर वीणा' पर चौदह परदे बांधता था। इसकी श्रुति वीणा भिन्न थी।

संस्कृत ग्रन्थकारों की तुलनात्मक श्रुति-स्वर-रचना

संस्कृत ग्रंथकारों की श्रुति और स्वर, उनके नाम और स्थान इस तुलनात्मक चार्ट द्वारा स्पष्ट रूप से दिखाई देंगे।



संस्कृत ग्रंथकारों की तुलनात्मक श्रुति-स्वर रचना

नं०	श्रुति नाम	स्वर	भरत	स्वर	शार्ङ्गदेव	स्वर	रामामात्य	स्वर	सोमनाथ	स्वर	पुंडरीक	स्वर	व्यंकटमखी	स्वर	तुलजाधिप	स्वर	भावभट्ट
१	तीव्रा	...	..	..	कैशिक	...	कैशिक	...	कैशिक	..	कैशिक	...	कैशिक	.	कैशिक	...	कैशिक
२	कुमुद्वती	...	काकली		काकली	..	काकली	..	काकली	...	काकली		...		काकली	.	काकली
३	मन्दा	...	...	..	च्युत षडज	.	च्युत षड्ज नि	..	मृदु सा	.	लघु स	..	काकली	.	वि. षड्. नी	.	त्रिग. न.
४	छंदोवती	सा	...	सा	अच्युत सा	सा	...	सा	...	सा	...	सा	...	सा	...	सा	...
५	दयावती	...	...	...	...	..	...	.	...	...	...		...	.	...		...
६	रंजनी	..	...	.	...		...	.	...			.	...		...		...
७	रक्तिका	रे	...	रे	विकृत रे	रे	...	रे	...	रे	..	रे	...	रे	...	रे	...
८	रौद्री	...	...	...	...	...	...	...	तीव्र रे	...	तीव्र रे	...	...	...		...	...
९	क्रोधा	ग	...	ग	...	ग	पंचश्रुति रे	ग	तीव्रतर रे	ग	...	ग	...	ग	पंचश्रुति रे	ग	...
१०	वज्रिका	...	...	...	साधारण	..	साधारण	...	तीव्रतम रे	...	साधारण	...	साधारण	...	साधारण	.	साधारण
११	प्रसारिणी	...	अंतर	...	अंतर	...	अंतर	...	अंतर	...	अंतर	...	...	...	अंतर		अंतर
१२	प्रीती	...	...	...	च्युत म	...	च्युत मध्यम ग	...	मृदु मध्यम	...	लघु म	...	अंतर	...	वि. मध्यम ग		त्रिग. ग
१३	मार्जनी	म	...	म	अच्युत म	म	...	म	...	म		म	...	म	...	म	
१४	क्षिती	..	...	...	....	.	...	...	...	...	पंचश्रुति म	...	...	...	...	..	...
१५	रक्ता	...	...	...	...	...	...	...	तीव्रतम म	...	...	...	. .	...	...	...	...
१६	संदीपिनी	...	...	...	कैशिक प	...	च्युत पंचम म	...	मृदु प	...	लघु प	...	वराली म	...	वि. पंचम म		विकृत पंचम
१७	आलापिनी	प	...	प	...	प	...	प	...	प	...	प	...	प	...	प	...
१८	मदंती	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	..	...
१९	रोहिणी	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...
२०	रम्या	ध	...	ध	विकृत ध	ध	...	ध	...	ध	...	ध	...	ध	...	ध	...
२१	उग्रा	...	...	..	...	.		...	तीव्र ध	...	तीव्र ध	.	...	.	...	..	...
२२	क्षोभिणी	नि	..	नि	...	नि	पंचश्रुति ध	नि	तीव्रतर ध	नि	...	नि	...	नि	पंचश्रुति ध	नि	...

चार्ट में बताये हुए पं० व्यंकटमखी ने "चतुर्दंडिप्रकाशिका" नामक ग्रन्थ लिखा है, और भाव भट्ट ने 'अनूपरत्नाकर' 'अनूप-विलास' और 'अनूपांकुश' नामक तीन ग्रंथ लिखे हैं। चार्ट में दिये हुए सभी ग्रंथकार दक्षिण पद्धति के हुए हैं।

संगीत पारिजात

अब हम पंडित अहोबल के 'सङ्गीत पारिजाति' की ओर चलें। अहोबल ने अपने स्वर-स्थान निश्चित करने की एक नवीन और अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना की। इसने अपने स्वर वीणा के तार की लम्बाई पर से बताये हैं। यदि यह सुबुद्धि पण्डित शार्ङ्गदेव को सूझ गई होती, तो जो गड़बड़ आज उसके ग्रंथ के सम्बन्ध में फैली हुई है, वह पैदा नहीं होती। अहोबल की परिभाषायें, दक्षिण के पण्डितों जैसी नहीं हैं, फिर भी उसने वीणा पर बारह परदे ही लगाये थे और उनके लगाने का ढंग भी दक्षिण के पण्डितों जैसा था। इतना ही नहीं, उसके स्वर स्थान भी अधिकांशतः अपने ही थे। इन स्वर-स्थानों का उल्लेख इस पुस्तक-मालिका के चौथे भाग में किया जा चुका है। 'रागतत्व विवोध' का रचयिता पं० श्री निवास अहोबल का ही अनुयायी था। इसने अहोबल के ग्रंथ में बताये हुए स्वर-स्थान ही सिद्ध किये हैं। पूर्वाङ्ग और उत्तरांग के स्वरों का परस्पर सम्बन्ध दिखाने के लिये अहोबल इस प्रकार कहता है:—

षड्जपंचमभावेन षड्जे ज्ञेयाः स्वरा बुधैः।
गनिभावेन गांधारे मसभावेन मध्यमे ॥

"यह षड्ज-पंचम भाव" यूरोपियन सङ्गीत में 'Harmony of the fifth' नाम से सम्बोधित किया जाता है और इसी नियम से प्राचीन ग्रीक "पिथागोरियन सप्तक" (पिथागोरस नामक व्यक्ति द्वारा आविष्कृत) तैयार किया गया था। अहोबल का शुद्ध थाट वर्तमान

प्रचलित काफी थाट जैसा था। दक्षिण का शुद्ध स्वर सप्तक और अपने यहां प्रचलित स्वरों का वर्णन तुलनात्मक रूप से इस तरह किया जा सकेगा।

दक्षिण के शुद्ध स्वर	हिन्दुस्तानी शुद्ध स्वर
१—सा	सा
२—रे	कोमल रे
३—ग	शुद्ध रे
४—म	म
५—प	प
६—ध	कोमल ध
७—नि	शुद्ध ध

इस शुद्ध सप्तक को दक्षिण में "मुखारी" नाम दिया गया है। कदाचित् यही सप्तक रत्नाकर आदि संस्कृत ग्रंथों का शुद्ध स्वर सप्तक रहा हो। इस सप्तक में अपने यहां प्रचलित गांधार और निषाद स्वर हैं ही नहीं। उत्तर भारत में इस समय प्रचलित शुद्ध सप्तक, अपने प्रचलित काफी सप्तक जैसा था। आजकल उत्तर में बिलावल का शुद्ध स्वर सप्तक प्रचलित है। अहोबल के मत से श्रुति और स्वर में बिलकुल भेद नहीं है। इसका मत है कि कुल बाईस गीतोपयोगी नादों में से जितने हम एक राग में उपयोग करें, उतने स्वर हैं और शेष श्रुतियां हैं।

रागतरंगिणी

यह ग्रंथ पण्डित लोचन का लिखा हुआ है। इसका स्वर-सप्तक अहोबल के शुद्ध स्वर सप्तक जैसा ही है। यह ग्रंथ भी उत्तर पद्धति का है। पारिजात और तरंगिणी के स्वर श्रुति का तुलनात्मक कोष्टक आगे दिया जा रहा है:—

अहोबल और लोचन के शुद्ध विकृत स्वरों का नक्शा

नं०	श्रुतिनाम	शुद्ध स्वर	विकृत स्वर		प्रयोग के स्वर
			अहोबल	लोचन कवि	
४	छंदोवती	सा	... ...	... ...	... ...
५	दयावती	...	पूर्व रे	... ...	... ...
६	रंजनी	...	कोमल रे	... ...	कोमल रे
७	रक्तिका	रे	पूर्व ग	तीव्र रे	... ...
८	रौद्री	...	कोमल ग	तीव्रतर रे	... ...
९	क्रोधा	ग	... ...	... ...	... ...
१०	वज्रिका	...	... ...	तीव्र ग	तीव्र ग
११	प्रसारिणी	...	... ...	तीव्रतर ग	... ...
१२	प्रीति	...	... ...	तीव्रतम ग	... ...
१३	मार्जनी	म	... ...	अतितीव्रतम ग	... ...
१४	क्षिती	...	... ...	तीव्र म	... .
१५	रक्ता	...	... ...	तीव्रतर म	तीव्रतर म
१६	संदीपिनी	...	... ...	तीव्रतम म	... ...
१७	आलापिनी	प	... ...	... ...	... ...
१८	मदंती	...	पूर्व ध	... ...	... ...
१९	रोहिणी	...	कोमल ध	... ...	कोमल ध
२०	रम्या	ध	पूर्व नि	... ...	... ...
२१	उग्रा	...	कोमल नि	तीव्र ध	... ...
२२	क्षोभिणी	नि	... ...	तीव्रतर ध	... ...
१	तीव्रा	...	... ...	तीव्र नि	तीव्र नि
२	कुमुद्वती	...	... ...	तीव्रतर नि	... ...
३	मंदा	...	... ...	तीव्रतम नि	... ...
४	छंदोवती	...	... .	... ...	... ...

ग्रन्थोक्त श्रुति स्वर प्रकरण का सारांश

१—श्रुति को एक सूक्ष्म स्वरांतर समझा जावे। उसमें गीतोपयोगिता और अभिज्ञेयता होनी ही चाहिये। अपने सप्तक के इस प्रकार के

२२ सूक्ष्म भाग करने की प्रथा है। भरत और शार्ङ्गदेव नियत प्रमाण की श्रुतियां मानते थे। परन्तु श्रुति का प्रत्यक्ष प्रमाण उस समय प्रचलित दो ग्रामों के पंचमों का परस्पर प्रमाण ही था। उन ग्रामों के लुप्त हो जाने के कारण अब उस प्रमाण का प्राप्त होना कठिन है, और गणित से लाये गये प्रमाण का उपयोग उस प्रकार नहीं हो सकता, क्योंकि उस प्रमाण से सिद्ध होने वाले स्वर अब प्रचलित होने अशक्य हैं। सम्भव होने पर भी उनकी निरुपयोगिता स्पष्ट है। इन ग्रन्थकारों के पश्चात् श्रुति का नियत प्रमाण नहीं रहा। आधुनिक सङ्गीत में हमें भी यही स्वीकार करना होगा। इस मत में यह व्याख्या नहीं है कि श्रुति तार की अमुक लम्बाई की आवाज, या अमुक आंदोलन का नाद, मानी जाती हो। यह भी नहीं है कि एक मध्यांतर की श्रुतियों का प्रमाण दूसरे मध्यांतर की श्रुतियों से मिलता ही हो। अपने मध्यकालीन पण्डित श्रुति के विवाद में पड़ते ही नहीं थे। वे शास्त्रोक्त श्रुति संख्या और स्वरों में उनका विभागीकरण श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर राग प्रकरण की ओर बढ़जाते थे। वे दो स्वरों के मध्यांतर को शास्त्रोक्त संख्या से समान विभाजित कर उन्हें ही श्रुति मानते थे, परन्तु प्रत्यक्ष व्यवहार और राग वर्णन में परम्परा से आये हुये बारह (अथवा चौदह) स्वरों का ही उपयोग करते थे।

२—श्रुति और स्वर में वास्तव में भेद नहीं होता। किसी भी राग के लिये प्रयुक्त होने वाले बाईस में से सात नादों का नाम 'स्वर' और शेष का नाम 'श्रुति' है।

सर्वाश्च श्रुतयस्तत्तद्रागेषु स्वरतां गताः।
रागहेतुत्वं एतासां श्रुति संज्ञैव संमता॥

३—अति कोमल, तीव्रतर, आदि अलंकारिक स्वर होते हैं। आजकल सभी तरफ एक सप्तक में शुद्ध और विकृत स्वरों की स्थापना कर सङ्गीत का कार्य होता है। अब भरत और शार्ङ्गदेव के समय की ग्राम मूर्छना और जाति की पद्धति प्रचलित नहीं है। अब अपने राग वर्णन, वर्ज्या वर्ज्य स्वर वादी, सम्वादी थाट और जन्य राग आदि की पद्धति से ही किये जाने चाहिये। राग गाते समय अति कोमल, तीव्रतम, तीव्रतर, स्वर, स्वरसंगति और कण्ठेन्द्रिय की

रचना के कारण अपने आप गले से लग जाया करते हैं। यह अनुभव सिद्ध है कि स्वरों का यथा योग्य 'उच्चार' सध जाने पर जो स्वर जिस जगह जितना ऊँचा या नीचा लगाना चाहिये अपने आप लग जाता है।

४—अहोबल ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि अति कोमल रे और ध अर्थात् ५ वीं और १८ वीं श्रुति दक्षिण के किसी भी ग्रन्थकार द्वारा प्रयुक्त नहीं की गईं। रामामात्य, सोमनाथ, व्यंकटमखी आदि तो दो श्रुति के रे और ध को भी प्रयुक्त नहीं करते। पुण्डरीक विट्ठल कहते हैं:—

पंचम्यष्टादशी षष्ठी तथा चैकोनविंशतिः।
चतस्रः श्रुतयश्चैता रागाद्यैरप्रयोजकाः॥

५—दक्षिण के शुद्ध स्वरों का स्थान बिलकुल निम्नतम स्थिति का होता है। उत्तर की ओर उनको मध्य स्थिति का माना है, अर्थात् उनकी दो विकृतियां, कोमल (उतरा हुआ रूप) होती हैं।

६—प्रत्येक स्वर अपने शुद्ध स्थान से तनिक आगे पीछे हटने पर विकृत हो जाता है। विकृत हो जाने पर उसका अगले और पिछले स्वरों से बना हुआ मूल सम्बन्ध बदल जाता है।

७—भरत और शार्ङ्गदेव के शुद्ध स्वर सप्तक कैसे थे, इसे समझ लेने का मार्ग अब नहीं रहा। रागतरंगिणी और पारिजात का शुद्ध स्वर सप्तक काफी का था। प्रचलित हिन्दुस्थानी पद्धति का शुद्ध स्वर सप्तक बिलावल का है। यदि स्वरों की आन्दोलन संख्या को गणित दृष्टि से बताना हो तो तरंगिणी और पारिजात के शुद्ध सप्तक के स्वरों की कम्पन संख्या २४०, २७०, २८८, ३२०, ३६०, ४०५, ४३२ और ४८० होगी। अपने शुद्ध सप्तक (बिलावल) के स्वरों की आन्दोलन संख्या २४०, २७०, ३०१$\frac{१}{३}$, ३२०, ३६०, ४०५, ४५२$\frac{४}{५}$ और ४८० होगी।

वादी संवादी स्वरों का श्रुत्यंतर कैसे नापा जावे ?

साधारणतः वादी सम्वादी स्वर षड्ज पञ्चम भाव से ठहराये जाते हैं। बहुधा वादी स्वर से सम्वादी स्वर पांचवाँ होता है। यद्यपि इसमें कुछ अपवाद भी होता है, परन्तु नियम यही है। यदि इस तरह आने वाला सम्वादी स्वर उस राग में वर्ज्य होता हो, जैसे 'सा रे ग म

प ध सां' आरोह के औड़व राग में वादी गांधार हो और उसका साधारण सम्वादी निषाद उस राग में वर्ज्य होता हो तो उसके निकट का स्वर सम्वादी अर्थात् चौथा (उदाहरण में धैवत) अथवा छठा (उदाहरण में षड़ज) हो सकता है। परन्तु यथा सम्भव सम्वादी स्वर वादी स्वर के निकट का अधिक अच्छा माना जाकर चौथा स्वर ही पसन्द किया जाता है।

शुद्ध और विकृत जाति

प्रचार में राग गायन आने के पूर्व जाति गायन प्रचलित था। जाति का लक्षण क्रमिक पुस्तक के चौथे भाग के पृष्ठ ३५ पर बताया गया है। शार्ङ्गदेव ने जाति के दो भेद शुद्ध और विकृत जाति नामक किये थे। यह विवरण रत्नाकर के स्वराध्याय नामक सातवें प्रकरण में है। अभी तक यह स्पष्टता नहीं हुई कि 'जाति' अमुक स्वरान्तर को कहते हैं। अभी तक रत्नाकर का शुद्ध-स्वर-थाट सिद्ध नहीं हो सका, परन्तु अनुमान है कि वह 'मुखारी' होना चाहिये। रत्नाकर के उपांग शीर्षक के अन्तर्गत अपने अनेक राग वर्णन किये हुए प्राप्त होते हैं। शार्ङ्गदेव अपनी शुद्ध जाति की संख्या सात मानता था। उसने इनका नाम प्रसिद्ध सात स्वरों पर 'षाड़जी' 'आर्षभी' 'गांधारी' 'मध्यमा' आदि बताया है। वह शुद्ध जाति के लक्षण इस प्रकार बताता है—"जिस जाति में न्यास, अपन्यास, अंश और ग्रह स्वर, जाति का नाम स्वर ही होता हो, जो सदा सम्पूर्ण हो और जिसमें तार स्थान में कभी भी न्यास न हो, वह शुद्ध जाति होती है। न्यास का नियम सुस्थिर रखते हुए अन्य बातों में परिवर्तन करने पर जाति विकृत हो जावेगी। इसे 'शुद्ध विकृत' की संज्ञा प्राप्त होगी। इस प्रकार एक-एक शुद्ध जाति के अनेक विकृत भेद हो सकते हैं। शार्ङ्गदेव कहता है:—

संपूर्णत्वग्रहांशापन्यासेष्वेकैक वर्जनात् ।
भवंति भेदाश्चत्वारो द्वयोस्त्यागे तु षमणताः ॥
त्यागे त्रयाणां चत्वार एकस्त्यक्ते चतुष्टये ।
भेदाः पंचदशैवैते षाड्ज्याः सद्भिर्निरूपिताः ॥
तत्राष्टौ पूर्णताहीनाः षाडवौडुवभेदतः ।
अतोऽष्टावधिका आर्षभ्यादिष्वौडुवजातिषु ॥
अतस्त्रयोविंशतिधा षट्सु प्रत्येकमीरिताः ॥

इस प्रकार 'षाड्जी' जाति की पन्द्रह विकृत 'संसर्गज' जातियां हो जाती हैं और आर्षभी, गांधारी आदि शेष छः जाति की प्रत्येक की तेईस हो जाती हैं। कुल १५३ विकृत जातियां होती हैं। ये शुद्ध विकृत जातियां हुई। संसर्गज विकृत जातियां ग्यारह होती हैं; परन्तु आज की स्थिति में यह जाति प्रकरण प्रत्यक्ष उपयोग का नहीं है क्योंकि रत्नाकर से यह व्यक्त नहीं होता कि उसका शुद्ध स्वर थाट कौनसा है, वह अपनी वीणा पर कितने तार लगाता था और उन्हें किन स्वरों में मिलाता था।

मूर्छना के अर्थ और प्रयोग में परिवर्तन

मध्यकालीन पण्डितों के समय में एक ही ग्राम माना जाता था। इसी प्रकार प्राचीन ग्राम, मूर्छना और जाति का प्रपञ्च भी प्रचलित न था। 'जाति' का प्रयोग गायन में नहीं किया गया। 'ग्राम' और 'मूर्छना' शब्द प्रचलित अवश्य थे, परन्तु उनका उपयोग नवीन परिस्थिति के अनुसार पूर्ववत् नहीं हुआ। श्रीनिवास कहता है:—

आदावुद्गृह्यते येन स तानोद्ग्राहसंज्ञकः।
आद्यंतयोश्चानियमस्ताने यत्र प्रजायते ॥
स्थायी तानः सविज्ञेयो लक्ष्यलक्षण कोविदैः।
संचारी स तु विज्ञेयः स्थाय्यारोहविमिश्रितः।
यत्र रागस्य विश्रांतिः समाप्तिद्योतको हि सः॥

इसने सैंधव राग का सर्व प्रथम उदाहरण इस प्रकार दिया है:—

शुद्धमेलोद्भवः पूर्णो धैवतादिक मूर्छना।
आरोहे गनिवर्ज्यः स्याद्रागः सैंधवनामकः॥

आगे सरगम से उदाहरण देकर अमुक 'उद्ग्राह' अमुक 'स्थायी' अमुक 'संचारी' अमुक 'मुक्तायी' भी बताता है। इस लक्षण में 'धैवतादिक मूर्छना' प्रथम उद्ग्राह खण्ड है, यानी धैवत से आरम्भ की गई 'मूर्छना' ध सा रे म प म। ग़ रे सा ऩि ध़ ध़ सा, इस प्रकार बताई है। अहोबल भी हूबहू यही व्याख्या और यही मूर्छना बताता है। 'आदावुद्गृह्यते येन स तानोद्ग्राहकारकः' अहोबल के इस वाक्य को श्री निवास ने ग्रहण कर लिया है। 'मेल' मूर्छना की अगली स्थिति है। अर्थात् मूर्छना का आधार मेल, मेल का आधार ग्राम्, ग्राम का आधार

शुद्ध स्वर और स्वरों का आधार श्रुति इस प्रकार की श्रंखला है। राग सम्पूर्ण, षाड़व और औड़व होने के कारण मेल भी वैसे ही होने आवश्यक थे, परन्तु उनका विस्तार षड़ज से षड़ज तक होकर रंजकत्व की शर्त न रखते हुए मध्य में मूर्छना की योजना भी होनी थी। अब मूर्छना की व्याख्या "आरोहश्चावरोहश्च स्वराणां जायते यदा । तां मूर्छना तथा लोके आहुर्ग्रामाश्रयां बुधाः।" हो गई थी, और पूर्वकालीन व्याख्या "क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्" में अन्तर हो गया था। मेल का स्वर स्वरूप निश्चित होने पर, "मूर्छना" से आरम्भ का स्वर नियत कर तथा वर्ज्यावर्ज्य स्वर नियमों से आरोह अवरोह कायम कर, राग निश्चित किया गया। 'उद्ग्राह' तान कानों में पड़ी कि यह ध्यान आ जाता था कि कौन सा राग है। इस व्यवस्था को ध्यान में रखकर, इस मालिका में साधारणतः प्रथम राग का 'उठाव' (उद्ग्राह) अर्थात् मूर्छना बताई गई, और बाद में 'चलन' यानी "अन्तर्मार्ग" दिखाया गया है। उद्ग्राह की पूर्ति अंशादि-स्वरों से होती थी। आगे चलकर यह बन्धन भी नहीं रहा। और "मूर्छना" "मध्यषड्जं समारभ्य तदूर्ध्व स्वरमा व्रजेत्। पूर्वैकैकस्वरं त्यक्त्व त्वारोहादिक मुच्यताम्" के नियम से होने लगी।

इस विचार धारा से यह दिखाई पड़ेगा कि मेल अथवा स्वरांतर निश्चित हो जाने पर, उसी पंक्ति में सिर्फ मूर्छना बदल कर अर्थात् भिन्न-भिन्न ग्रह स्वरों की कल्पना कर, उन्हें वर्ज्यावर्ज्य नियम से गाने से राग बदल जाता था। इसके पश्चात् मेल के षाड़व औड़व स्वरूप, उनके तीव्र कोमल स्वर और वर्ज्यावर्ज्य स्वर नियम पर ही रागत्व अवलम्बित रह गया, और उद्ग्राह तान का महत्व समाप्त हो गया। और फिर रागों के आरोहावरोह षड्ज से वर्ज्यावर्ज्य स्वर नियमों के अनुरूप ठहराये जाने लगे। धीरे-धीरे 'मूर्छना' का पर्यायवाची 'मेल' होने लगा। प्राचीन काल में जबकि जाति गायन था, तब भी ग्राम की स्वर पंक्ति, फिर मूर्छना, फिर जाति इस प्रकार का क्रम था। उस समय मूर्छना की स्वर पंक्ति में से ग्रह अंश, आदि पसन्द करने पर जाति का गायन प्राप्त होता था। यह सम्पूर्ण व्यवस्था बाद में पिछड़ने लगी और सभी राग षड़ज से उत्पन्न करने का निश्चय हुआ। प्राचीन शब्दों के नवीन अर्थ उत्पन्न हुए, और उनमें नवीन कौशल उपलब्ध होने लगा।

आधुनिक अथवा 'लक्ष्य' सङ्गीत

यूरोपियन सप्तक

वीणा के एक मुक्ततार को छेड़ने पर यदि प्रति सैकंड २४० आन्दोलन उत्पन्न हों, तो इस प्रकार उत्पन्न स्वर को मध्य सप्तक के आरम्भ का (जिसे मध्य षड़ज कहते हैं) षड़ज माना जाता है । यदि इस तार की लम्बाई कम करते जावें तो स्वर क्रमशः ऊँचा होता जावेगा। तार की लम्बाई आधी करने पर आंदोलन संख्या, मुक्त तार के आंदोलन से दुगनी हो जाती है, अर्थात इस तार की लम्बाई के ठीक बीच में यदि एक परदा बांधां जावे तो इस परदे तक के तार, और परदे से घोड़ी तक के तार, इन दोनों टुकड़ों से षड़ज निकलेगा, और उसकी आंदोलन संख्या प्रति सैकंड ४८० होगी । अमुक स्वर की प्रति सैकंड कितनी आंदोलन संख्या है, यह यन्त्र से नापी जा सकती है । इस प्रमाण से यूरोपियन सप्तक में प्रथम (अर्थात् मध्यम) षड़ज, जिसे वे 'C' नाम देते हैं—, के तार की आंदोलन संख्या प्रति सैकंड २४०, ऋषभ (D) की २७०, गांधार (E) की ३००, मध्यम, (F) की ३२०, पंचम (G) की ३६०, धैवत (A) की ४००, निषाद (B) की ४५० और तार षड़ज (C) की ४८०, होती है । इसे यूरोपियन-'टेम्पर्ड' सप्तक कहते हैं । सप्तक रचना में, किसी भी स्वर से पांचवें स्वर की कंपन संख्या डेढ़गुनी होती है, और ऐसे दोनों स्वरों में संवाद अथवा 'हॉरमनी' होती है । यह नियम और ऊपर बताया हुआ 'तार, सप्तक में दुगनी कंपन संख्या होने का नियम', इन दो नियमों से एक सप्तक के स्वरों के आंदोलन, बिना यंत्र की सहायता के केवल गणित से निकाले जा सकते हैं । उदाहरणार्थः-षड़ज के आंदोलन २४० हैं तो पंचम के आंदोलन इससे डेढ़ गुने ३६० हुए । पंचम से पांचवाँ स्वर तार ऋषभ है । इसके आंदोलन ३६० के डेढ़ गुने ५४० हुए । तार ऋषभ के आंदोलन ५४० हैं अतः मध्यम ऋषभ के इससे आधे २७० हुए । मध्यम ऋषभ से पांचवां स्वर मध्य धैवत है, इसके आंदोलन २७० के डेढ़ गुने ४०५ हुए । इस धैवत से पांचवें स्वर तार गांधार के आंदोलन ४०५ के $१\frac{१}{२}$ गुने $६०७\frac{१}{२}$ हुए और मध्यम गांधार के $३०३\frac{३}{४}$ हुए । इस स्वर से पांचवे स्वर मध्य निषाद के आंदोलन इससे $१\frac{१}{२}$ गुने $४५५\frac{५}{८}$ हुए, और मध्य मध्यम के आंदोलन तार षड़ज के $\frac{२}{३}$ यानी ३२० हुए । इस प्रकार सम्पूर्ण सप्तक के आंदोलन २४०,

२७०, ३०३ ३/४, ३२०, ३६०, ४०५, ४५५ ५/८, और ४८० होते हैं। इनमें गांधार, धैवत और निषाद् की आंदोलन संख्या में दस का पूर्ण भाग नहीं जाता, अतः ये स्वर यन्त्र की सहायता से निश्चित नहीं किये जा सकते। इसलिये ये "टेम्पर" से "टेम्पर्ड" सप्तक में गांधार के ३००, धैवत के ४०० और निषाद के ४५० आंदोलन माने जाते हैं। दूसरी तरह से कहा जावे तो यूरोपियन पद्धति के अनुसार दो निकटस्थ स्वरों के बीच में का अन्तर तीन प्रकार का होता है—१ मेजर टोन, २ मायनर टोन, ३ सेमी टोन। यदि दो स्वरों का मध्यान्तर 'मेजर टोन' हुआ तो उनका प्रमाण ९/८ मायनर टोन हुआ तो १०/९ और सेमी टोन हुआ तो १६/१५ होता है। षड़ज, ऋषभ, मध्यम, पंचम, और पंचम, धैवत, का मध्यान्तर 'मेजर-टोन', ऋषभ गांधार और धैवत निषाद् का मध्यान्तर 'मायनर टोन' तथा गांधार मध्यम और निषाद् तार षड़ज, का मध्यान्तर 'सेमिटोन' माना जाता है।

हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति के सर्वसाधारण नियम

(१) प्रत्येक राग में कम से कम पांच स्वर होने चाहिए। रागों के तीन वर्ग माने गये हैं (१) औड़व (अर्थात् पांच स्वरों का) (२) षाड़व (अर्थात् छः स्वरों का) और (३) सम्पूर्ण (अर्थात् सातों स्वरों का का जिसमें प्रयोग हो)

(२) किसी राग के आरोह में पाँच या छः स्वर और अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग होता हो अथवा उसके विपरीत रूप से स्वर ग्रहण किये गये हों, तो कुछ ग्रंथकार ऐसे रागों की शक्लें 'सम्पूर्ण' शब्द से सम्बोधित करते हैं।

(३) दो, तीन अथवा चार स्वरों के समुदाय को 'तान' कहा जा सकता है, राग नहीं।

(४) औड़व, षाड़व और सम्पूर्ण, वास्तव में राग के आरोह, अवरोह दोनों पर लागू होने वाले गुण हैं, इसलिये प्रत्येक थाट या मेल के गणित दृष्टि से निम्न ६ भेद हो सकते हैं। औड़व–औड़व (यानी आरोह भी औड़व और अवरोह भी औड़व) औड़व–षाड़व, औड़व–सम्पूर्ण, षाड़व–औड़व, षाड़व–षाड़व, षाड़व–सम्पूर्ण, सम्पूर्ण–औड़व, सम्पूर्ण–षाड़व और सम्पूर्ण–सम्पूर्ण।

(५) अधिकतर किसी भी राग में एक साथ मध्यम और पञ्चम दोनों स्वर वर्ज्य नहीं होते।

(६) सप्तक के 'पूर्वाङ्ग' और 'उत्तराङ्ग' नामक दो भाग होते हैं। पूर्वाङ्ग सा से प तक और उत्तराङ्ग म से सां तक होता है।

(७) हिन्दुस्थानी-पद्धति के सभी रागों के उनके स्वरों के अनुसार तीन वर्ग होते हैं। १-कोमल रे और ध स्वर वाले सन्धिप्रकाश राग, २-तीव्र रे, ध और ग वाले राग, ३-कोमल ग, नी वाले राग। इस वर्गीकरण का रागों के गान समय से निकट सम्बन्ध है।

(८) सन्धिप्रकाश रागों को सूर्योदय और सूर्यास्त के समय गाने का प्रचार है, इस कारण ये सन्धिप्रकाश राग कहलाते हैं। इन्हें गाकर तीव्र रे, ग और ध वाले राग और उनके बाद कोमल ग नि वाले राग गाये जाते हैं। संधिप्रकाश काल प्रतिदिन दो बार आता है, अतः यह क्रम दिन और रात्रि में एक सा ही दिखाई पड़ता है।

(९) हिन्दुस्थानी सङ्गीत में मध्यम स्वर बहुत ही विचित्रता दर्शक माना जाता है। इसकी सहायता राग-समय निश्चित करने में तो होती ही है, परन्तु इसके प्रयोग से राग की प्रकृति तक बदली जा सकती है। इस गुण के कारण इसे कहीं-कहीं 'अध्वदर्शक' कहा जाता है।

(१०) हमारे सङ्गीत में तीव्र म के प्रयोग वाले राग अधिकतर रात्रिगेय हैं। दिन में इस स्वर से संयुक्त राग बहुत ही कम दिखाई देते हैं।

(११) जो राग दोपहर बारह बजे से रात्रि के बारह बजे तक गाये जाते हैं, उन्हें 'पूर्वराग' कहा जाता है। रात्रि के बारह बजे से दिन के बारह बजे तक गाये जाने वाले रागों को 'उत्तर राग' कहा जाता है।

(१२) राग अपने नियत समय पर गाया जाने पर ही अधिक शोभनीय होता है।

यथाकाले समारब्धं गीतं भवति रंजकम्।
अतः स्वरस्य नियमात् रागेऽपि नियमः कृतः॥

तात्पर्य यह है कि जब यह मान लिया गया है कि अमुक समय में अमुक प्रकार के स्वर अधिक रंजक होते हैं, तब उन स्वरों के अनुसार रागों का समय नियत करना अपने आप सिद्ध हो जाता है।

(१३) पूर्व रागों में अधिकतर वादी स्वर पूर्वाङ्ग में से ही (सा से प तक) कोई एक होता है। उत्तर रागों में उत्तराङ्ग (म से सां तक)

का कोई एक स्वर वादी होता है, इसलिये पूर्व रागों को 'पूर्वाङ्ग वादी' और उत्तर रागों को 'उत्तराङ्ग वादी' कहा जाता है।

(१४) सा, म और प, दोनों अङ्गों में होने के कारण जिन रागों में ये स्वर वादी होते हैं, वे सर्वकालिक माने जाते हैं।

(१५) राग के लिये निम्नलिखित पाँच तत्व होने आवश्यक हैं:—
(१) थाट, (२) आरोहावरोह, (३) वादी सम्वादी, (४) समय (५) रंजकता।

(१६) प्रत्येक राग में एक ही स्वर वादी और एक ही स्वर सम्वादी होता है। यदि वादी स्वर पूर्वाङ्ग का है तो षड़ज पञ्चम भाव से संवादी स्वर उत्तराङ्ग का होता है। इसी तरह वादी स्वर उत्तराङ्ग में हो त सम्वादी पूर्वाङ्ग में होता है। वादी और सम्वादी स्वर में कम से कम चार स्वरों का अन्तर होता है। साधारणतः समश्रुतिक स्वर सम्वादी होते हैं। शेष स्वरों को 'अनुवादी' समभा जाता है और प्रयुक्त न होने वाले स्वरों को वर्ज्य स्वर अथवा 'विवादी' माना जाता है। कहीं-कहीं उचित स्थल पर विवादी स्वर का प्रयोग भी राग की रंजकता बढ़ाने के लिये उचित मात्रा में किया जाता है। गायक लोग इसलिये भी विवादी स्वर का प्रयोग करते हैं कि तान लेने में टेढ़े तिरछे टुकड़े उत्पन्न न हो जावें। प्रायः अनेक स्थलों पर अर्धान्तर वाले स्वर ही अवरोह में विवादी के रूप में ग्रहण किए हुए प्राप्त होते हैं। रे के आगे ग॒, ग के आगे म, मं के आगे प, ध के आगे नि॒, इस प्रकार विवादी स्वर प्राप्त होते हैं। एकान्तर वाले स्वर भी कहीं–कहीं इस प्रकार के हो सकते हैं। वर्ज्य माने हुए स्वरों का 'कण' नियत स्वर के साथ स्पर्श रूप से लिया जाने से राग हानि नहीं होती और उच्चार सरल हो जाता है। इसे ही 'ईषत्स्पर्श' कहा जाता है।

(१७) जहां तक सम्भव हो, एक ही स्वर के दोनों रूप (तीव्र और कोमल) एक के बाद एक नहीं लिये जाते। यदि कहीं ऐसा प्रयोग दिखाई दे तो उसे अपवाद समभना चाहिए। उदाहरणार्थ 'ललित' राग के दोनों मध्यम।

(१८) जिस राग में तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है, उसमें अकेला कोमल निषाद प्रयुक्त नहीं होता। दोनों मध्यम और दोनों निषाद वाले राग हो सकते हैं।

(१९) सन्धिप्रकाश रागों का उपयोग करुण और शान्तरस तथा इनके अन्तर्भूत रसों का परिपोषक होता है। तीव्र रे ध, और ग वाले राग शृङ्गार, हास्य और इनके अन्तर्गत रसों के पोषक होते हैं और कोमल ग और नि वाले राग वीर, रौद्र और भयानक रसों के पोषक होते हैं।

(२०) सा, म और प वादी स्वर वाले राग अधिक गंभीर प्रकृति के होते हैं।

(२१) अगले प्रहर के रागों में जाते हुए पिछले प्रहर के अन्तिम भाग में आने वाले रागों में धीरे-धीरे द्विस्वरूपी स्वर आगे लगते हैं; जैसे—मध्यरात्रि के कोमल ग और नि वाले राग शुरू करने के पूर्व खमाज थाट के अन्तिम रागों में दोनों गांधार और दोनों निषाद ग्रहण करने वाले रागों की योजना की जाती है। ऐसे मध्यवर्ती रागों को 'परमेल प्रवेशक' कहा जाता है।

(२२) साधारणतया पूर्व राग और उत्तर राग परस्पर 'जवाब' होते हैं। उदाहरणार्थ 'बिलावल' का सायंकालीन जवाब 'कल्याण' 'सारङ्ग' का 'कानड़ा' 'भैरव' का 'पूर्वी' आदि।

(२३) प्रत्येक थाटों से पूर्व राग और उत्तर राग उत्पन्न होते हैं। एक अङ्ग के राग वादी सम्वादी बदल कर दूसरे अङ्ग में बनाये जाना शक्य है।

(२४) प्रातःकालीन रागों में कोमल रे और ध की प्रबलता दिखाई देती है और सायंकालीन रागों में तीव्र ग और तीव्र नि की प्रबलता दीख पड़ती है।

(२५) सायंकालीन सन्धिप्रकाश रागों में कोमल म का प्रमाण बिलकुल कम होता है। प्रातःकालीन सन्धिप्रकाश रागों में तीव्र म का प्रमाण कम होता है।

(२६) राग में स्वर कम अधिक लगने की मात्रा के अनुसार प्रबल दुर्बल अथवा सम हो जाते हैं।

(२७) राग विस्तार में तिरोभाव साधकर रंजकता बढ़ाने के लिये वादी स्वर के अलावा अन्य स्वरों को 'अंशत्व' (आगे लाना) दिया जाता है। 'कण' का बहुत महत्व होता है, कहीं-कहीं 'कण' से ही राग भेद हो सकता है।

(२८) रात्रि के प्रथम प्रहर में गाये जाने वाले रागों में जहां दोनों मध्यम का प्रयोग होता है, वहां शुद्ध मध्यम आरोह और अवरोह में प्रयुक्त होता है।

(२९) रात्रि के प्रथम प्रहर में गाये जाने वाले दोनों मध्यम वाले रागों में "आरोहे तु निवक्रं स्यादवरोहे गवक्रितम्" का सामान्य नियम दिखाई पड़ता है। ऐसे रागों में आरोह में निषाद स्वर दुर्बल रहता है।

(३०) दोनों मध्यम वाले रागों के अंतरों में बड़ा ही साम्य होता है। परस्पर की भिन्नता आरोह में स्पष्ट दिखाई जा सकती है।

(३१) उत्तर रागों का राग स्वरूप अवरोह में और पूर्व रागों का राग स्वरूप आरोह में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

(३२) 'नि सा रे ग' स्वर समुदाय तत्काल संधिप्रकाशत्व दिखाता है।

(३३) सायंगेय रागों में तार षड्ज की प्रबलता दुःसह होती है। प्रातर्गेय रागों में इसी स्वर की प्रबलता अतिशय रंजक होती है।

(३४) दोपहर बारह बजे के उपरांत क्रमशः सा, म, और प स्वरों की प्रबलता बढ़ती जाती है। यही बात मध्य रात्रि बीत जाने पर फिर से दिखाई पड़ती है। अपराह्न काल के रागों के आरोह में रे और ध स्वर दुर्बल अथवा वर्ज्य हो जाते हैं। ठीक दोपहर को ऋषभ और निषाद स्वर बहुत जोरदार हो जाते हैं।

(३५) पूर्व रागों में जो महत्व सा और प का होता है वही उत्तर रागों में प और सा का होता है। पूर्व रागों की पूर्व चतुःस्वरी का कार्य उत्तर रागों में उत्तर चतुःस्वरी की ओर जा पहुंचता है।

(३६) जिस राग का विस्तार मन्द्र सप्तक में अच्छा विस्तृत दिखाई देता है उसकी प्रकृति गंभीर होती है। क्षुद्र गीतों के रागों में मन्द्र स्थान का बहुत कार्य नहीं होता।

(३७) रागों में 'ध' और 'प' स्वर प्रबल होने पर प्रातःकाल की छाया पड़ने लगती है। ये स्वर उत्तरांग प्रधान रागों में अतिशय विचित्रता उत्पादक होते हैं। इनका महत्व कम करने के लिये पूर्वाङ्ग के गांधार से उनका योग अथवा संगति की जाती है।

(३८) कोमल धैवत और तीव्र गांधार वाले रागों में पंचम क्वचित ही वर्ज्य किया जाता है। जहां यह वर्ज्य किया जाता है, वहां इसकी पूर्ति दोनों मध्यम लेकर की जाती है।

(३९) कोमल निषाद राग वाले रागों के आरोह में अनेक बार तीव्र निषाद का प्रयोग किया जाता है। प्रायः यह प्रयोग काफी और खमाज थाट के रागों में दिखाई पड़ता है।

(४०) तीव्र मध्यम वाले रागों के अन्तरे अनेक समय गांधार से शुरू किये हुए प्राप्त होते हैं।

(४१) अपने सङ्गीत में अनेक बार रागों की परख स्वर संगति पर से होती है। स्वर संगति से सूक्ष्म प्रमाण से स्वर स्थान अपने आप आगे पीछे हो जाते हैं।

इस पुस्तक में आगे दिये हुए गीतों के आरम्भ में जो राग वर्णन दिये गये हैं, उनमें स्वर, सङ्गीत स्थान, सायंगेयत्व या प्रातर्गेयत्व, संधि-प्रकाशत्व, अंश, परमेल प्रवेशत्व, मन्द्र गायन, गांभीर्य, आदि सभी बातों का उल्लेख यथा स्थान किया गया है। वह भाग विद्यार्थियों के लिये महत्वपूर्ण है, और उन्हें ध्यान में रखना ही चाहिये।

राग सम्बन्धी ध्यान में रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें

प्रत्येक राग सम्बन्धी निम्न लिखित बीस बातें यदि विद्यार्थियों के ध्यान में जम जावें तो उन्हें वह राग अच्छी तरह अवगत हो जायेगा। वे बातें इस प्रकार हैं:—(१) थाट (२) जाति–औड़व षाड़व सम्पूर्ण अथवा मिश्र, जैसे औड़व–षाड़व, औड़व सम्पूर्ण आदि (३) गायन समय (४) अङ्ग प्राधान्य, पूर्वाङ्ग अथवा उत्तरांग (५) वादी स्वर (६) संवादी स्वर (७) सङ्गीत (८) मिश्रण, अर्थात् राग शुद्ध है अथवा एक या अधिक रागों का मिश्रण हुआ है। (९) वर्ज्य स्वर (१०) दुर्बल स्वर (११) वक्रता, है या नहीं (१२) आरोहावरोह (१३)पकड़ (१४) विश्रांति-स्थान (१५) स्थाई का उठाव (१६) साधारण चलन (१७) अन्तरे का उठाव (१८) समानता या भिन्नता अर्थात् उसी थाट से उत्पन्न होने वाले

रागों से वह कितना समान अथवा कितना भिन्न है (१९) ग्रन्थोक्त आधार और (२०) प्रचलित रूप तथा आधार। इस सभी संग्रह का एक कोष्ठक तैयार कर प्रत्येक राग सम्बन्धी जानकारी विद्यार्थियों को भरकर रख लेना चाहिये।

हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति की थाट संख्या

हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति में प्रचलित सवा सौ डेढ़ सौ रागों को दस-जनक मेलों में विभाजित किया है। इस मेल वर्गीकरण में आने वाले प्रत्येक रागों का अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षण 'हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति' ग्रंथ में किया गया है; और संक्षिप्त वर्णन क्रमिक पुस्तक मालिका में चीजों के पहिले दिया गया है। इस पद्धति के नियमों की दृष्टि से थाटों की संख्या दस, पूर्ण और पर्याप्त होती है। यदि कोई चाहे तो वह इससे अधिक क्रम संख्या मान सकता है। इस पद्धति में दस थाटों के तीन समुदाय उनके स्वरों पर से किये हैं। पहिले समुदाय में रे ध और ग स्वर शुद्ध प्रयुक्त होने वाले थाटों का समावेश किया है, ये थाट कल्याण बिलावल और खमाज हैं। दूसरे समुदाय में रे कोमल और शुद्ध ग, नि वाले राग आते हैं, ये भैरव पूर्वी और मारवा थाट हैं। तीसरे समुदाय में ग और नि कोमल वाले थाट, अर्थात् काफी, आसावरी, भैरवी, और तोड़ी थाट आते हैं। इस वर्गीकरण में रागों का समय भी स्थूल रूप से एक दम ध्यान में आ जाता है। दक्षिण की ओर पं० व्यंकटमखी ने बारह स्वरों से ७२ थाट गणित से सिद्ध किये हैं, यह विषय इस मालिका के तीसरे भाग में विस्तार पूर्वक दिया ही जा चुका है। एक समय, मुख्य छः राग उनकी छत्तीस रागिनी और उनके पुत्र आदि व्यवस्था प्रचलित थी। वे छः राग ये थे (१) भैरव (२) मालकोंस (३) हिंडोल (४) दीपक (५) श्री और (६) मेघ। मतांतर में ये छः नाम भी भिन्न मिलते हैं, परन्तु आजकल रागरागिनी के रूपों में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाने से यह व्यवस्था नष्ट सी हो गई है। उस समय के राग नाम और जन्य-

जनक व्यवस्था आज के सङ्गीत से नहीं मिल सकती और ज्ञान जिस सुलभ रीति से प्राप्त हो, समाज को वही रीति अधिक पसन्द आती है, अतः उस रागिनीकी व्यवस्था की अपेक्षा थाट रचना अधिक श्रेष्ठ है ।

रागों का सायंप्रातर्गेयत्व

अपने रागों में षड़ज स्वर कहीं भी वर्ज्य नहीं होता । राग के मुख्य अंग को बदलने वाले स्वर, अथवा अपनी राग पद्धति के मार्ग दर्शक स्वर रे, ग, ध, और नि हैं । शुद्ध म और पंचम स्वर को वादी बनाने पर भी राग स्वरूप में स्पष्ट भेद हो सकता है, तो भी प्रमुख वैचित्र्य रे, ग, ध और नि स्वरों को ही प्राप्त होता है । प्रत्येक राग में मध्य षड़ज बड़ी मात्रा में रहता है । तार षड़ज इस प्रकार नहीं आता । यदि किसी राग में जहां–तहां तार षड़ज चमकने लगे तो उसमें प्रातर्गेयत्व की छाया आने लगती है । सायंगेय रागों में तार षड़ज की प्रबलता दुःसह होती है । सायंकाल के समय राग वैचित्र्य रे, ग, और प स्वरों पर निर्भर होता है । इन प्रत्येक स्वरों पर समाप्त होने वाली तानें बहुत ही रंजक होती हैं । 'ग–प' और प–ग स्वरों के उच्चार द्वारा भी प्रातर्गेयत्व और सायंगेयत्व दिखाया जा सकता है । आरोह में यथा स्थान ऋषभ लेते रहने पर प्रातःकाल का रंग दूर होता जावेगा ।

धैवत और पंचम बढ़ जाने पर राग गंभीर होकर प्रातःकालीन दिखाई देने लगता है । ऋषभ, गांधार प्रबल होने पर इसका उलटा परिणाम हो जाता है । मध्यम, निषाद, कम होने पर गांभीर्य आ जाता है और सायंगेयत्व कम होता जाता है । सायंगेय रागों में पूर्वाङ्ग प्रबल होता है, और प्रातर्गेय रागों में उत्तरांग प्रबल होता है ।

जो अंग प्रबल होता है, अधिकतर राग का वादी स्वर उसमें ही होता है । एक से आरोह अवरोह होने पर भी अंग की प्रबलता से राग भिन्न हो जाता है । उदाहरणार्थ देशकार और भूप को लो । दोनों में 'सा, रे, ग, प, ध. सां'—स्वर लगते हैं, परन्तु देशकार में उत्तरांग प्रबल है और इसका वादी स्वर धैवत है । भूप में पूर्वाङ्ग प्रबल है और इसका वादी स्वर गांधार है । इस कारण दोनों की प्रकृति में बहुत कुछ अन्तर

हो जाता है। इसी तरह तीव्र मध्यम भी सायंगेयत्व प्रगट करता है। शाम के अन्तिम प्रहर में तार षड्ज समस्त गायन का प्राण स्वर हो जाता है। गायक की आवाज अच्छी चमकती है तथा षड्ज मध्यम और पंचम स्वरों को अद्भुत महत्व मिल जाता है। गायक आते-जाते तार षड्ज पर मुकाम करता है। फिर जैसे-जैसे प्रातःकाल निकट आता है वैसे-वैसे उत्तरांग के अन्य स्वर भी अपना वैचित्र्य प्रदर्शित करने लगते हैं, और फिर विश्रान्ति स्थान पंचम स्वर हो जाता। हमारे गायक तीव्र निषाद और तीव्र मध्यम को स्वतन्त्र स्वर नहीं मानते। क्वचित गीत इन स्वरों के खुले प्रयोग पर आधारित पाये जा सकते हैं। ये दोनों स्वर सदैव गायक को आगे अथवा पीछे थकाने का प्रयत्न करते हैं। उत्तर रागों में उत्तरांग की प्रधानता होने के कारण श्रोताओं का लक्ष्य अपने आप 'सां, नि, ध, प, म,' स्वरों की ओर चला जाता है। इन रागों की सारी खूबी आरोह में होती है। उत्तर रागों में उत्तरांग का ही कोई स्वर वादी होता है। प्रातःकालीन रागों में 'सां, म, प, और ध,' में से कोई एक स्वर वादी होता है। प्रातःकाल पंचम एक आत्मीयता पूर्ण विश्रान्ति-स्थान होता है। पूर्वाङ्ग रागों में षड्ज विश्रान्ति स्थान होता है, प्रातर्गेय रागों में क्वचित ही पंचम वर्ज्य होता है। 'ध-प' अथवा 'धु-प' स्वर लम्बे रूप से उच्चारण करने पर तत्काल प्रातःकाल का संकेत हो जाता है। रात्रि के अन्तिम प्रहर में दोनों मध्यम वाले राग भी गाये जाते हैं, परन्तु उनमें तीव्र मध्यम अधिक नहीं होता।

सायंकाल गाये जाने वाले रागों में तीव्र मध्यम पर ही सम्पूर्ण राग वैचित्र्य निर्भर रहता है। एक ही थाट से सायंगेय और प्रातर्गेय दोनों प्रकार के राग स्वरूप निकल सकते हैं। प्रातर्गेय राग अवरोह में अधिक स्पष्ट और शोभनीय हो जाते हैं। केवल मध्यम बदल जाने से अन्य स्वर वे ही रहने पर भी गायन काल बदल जाता है। प्रातःकालीन भैरव का केवल मध्यम तीव्र करने से सायंकालीन जवाब पूर्वी तैयार हो जाता है। इसी प्रकार बिलावल और कल्याण में होता है। सा, म और प स्वर चाहे जिस काल के रागों के वादी हो सकते हैं। जिस राग में गांधार और निषाद कोमल होते हैं—प्रायः उसमें तीव्र मध्यम का प्रयोग नहीं किया जाता।

सन्धिप्रकाश राग

सन्धिप्रकाश रागों में अधिकांशतः कोमल रे और ध तथा तीव्र ग और नि दिखाई देते हैं। तीव्र मध्यम वाले सायंगेय और कोमल मध्यम वाले प्रातर्गेय सन्धिप्रकाश राग करुण और शान्तरस के योग्य हैं और इस कारण इनमें गांभीर्य भी अधिक होता है। सन्धिप्रकाश रागों की प्रकृति क्षुद्र नहीं होती। ग्रंथों में इस सम्बन्ध में इस प्रकार का कथन मिलता है:—

संधिप्रकाशरागाणां मृदुता रिधयोस्ततः।
मेलमेनं समारभ्य तीव्रत्वे परिवर्तिता॥
परिवर्तनमप्येतन्नूनं संतोषकारणम्।
भिन्नरससमास्मादान्मनोहर्षं प्रपद्यते॥

तृतीय प्रहर के रागों का एक चिन्ह रे और ध स्वरों का दुर्बल होना है। सन्धिप्रकाश शुरू होने के पूर्व के रागों में रे और ध स्वर दुर्बल अथवा वर्ज्य होते हैं, इस नियम का उदाहरण 'धानी' 'धनाश्री' भीमपलासी, मुलतानी, मालवश्री आदि हैं। दोपहर के ढल जाने पर जैसे दिन भर से चलते रहने वाले रे और ध स्वर धीरे-धीरे स्वाभाविक रूप से थकने (दुर्बल होने) लगते हैं। ऐसे रागों को "सन्धि-प्रकाश-मेल-प्रवेशक" राग कहा जाता है।

उदाहरण के लिये 'मुलतानी' को लें। इस राग के पश्चात् पूर्वी थाट के राग आते हैं, परन्तु उनकी अधिकांश तैयारी मुलतानी में पहिले ही हो जाती है। इसमें गांधार को छोड़कर शेष सभी स्वर पूर्वी के आ ही जाते हैं। केवल एक गांधार कोमल का तीव्र किया कि पूर्वी थाट सिद्ध हुआ। अपनी राग पद्धति का सम्पूर्ण रहस्य रे ध, रे ध और ग नि के तीन जोड़ों में निहित है। प्रभात से संध्या तक और संध्या से प्रभात तक जो बारह-बारह घण्टों के दो विभाग होते हैं, उन प्रत्येक के तीन उप विभाग करने पर पूर्व तृतीयांश में कोमल रे ध के राग, मध्य तृतीयांश में शुद्ध रे ध (और शुद्ध ग नि) के राग, और अंत्य तृतीयांश में कोमल ग नि के रागों का समावेश होता है। यह बड़ी कौतूहलप्रद और सकारण व्यवस्था है। कोमल रे, ध की प्रकृति गांभीर्य उत्पादक है। प्रातःकालीन सन्धिप्रकाश में कोमल रे, ध स्वरों के रागों का आरम्भ कर धीरे-धीरे रे ध स्वर में तीव्रत्व लगाकर दो प्रहर के बाद कोमल ग, नि

के राग आरम्भ होते हैं और फिर सायंकालीन सन्धिप्रकाश से आगे प्रभातकाल तक वही क्रम रखा जाता है। यह अलग कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह व्यवस्था तत्तत् समय की सहज मनोवृत्ति और उससे उत्पन्न रसों की पोषक है। सभी सन्धिप्रकाश राग सूर्यास्त काल अथवा सूर्योदय के प्रहर में गाये जाते हैं। इन रागों के गाने के उपरान्त दिन और रात्रि के प्रथम प्रहर में रिषभ, गांधार और धैवत तीव्र लगने वाले राग गाये जाते हैं; और इनके बाद फिर तृतीय वर्ग के राग–कोमल गांधार निषाद वाले मध्य रात्रि और मध्याह्नकाल में आ जाते हैं। मध्यम स्वर दिन और रात्रि के निश्चय के लिये उपयोगी होता है। यदि हम एक काल्पनिक रेखा बनावें और उसके ऊपरी ओर निचली बाजू में राग समुदाय लिखना चाहें तो एक सिरे पर प्रथम सायंगेय–संधिप्रकाश राग, फिर रेखा की ऊपरी बाजू में क्रमशः प्रथम रात्रिगेय रे, ग, ध स्वर तीव्र वाले राग, फिर कोमल निषाद गांधार वाले राग लिखे जायेंगे। इसके बाद दूसरे सिरे पर प्रातर्गेय–सन्धिप्रकाश राग लिखे जायेंगे। वहां से विपरीत क्रम से रेखा की दूसरी बाजू में प्रथम प्रातर्गेय रे, ग, ध स्वर तीव्र वाले राग और फिर ग और नि स्वर कोमल ग्रहण करने वाले राग, लिखना पड़ेगा। इसके बाद फिर सायंगेय सन्धिप्रकाश राग लिखा हुआ आ ही जावेगा। इस प्रकार एक मजेदार राग–मण्डल बन जाता है।

सायंगेय और प्रातर्गेय रागों का सम्बन्ध

ऊपर के वर्णन से राग रचना पर विचार करने से ज्ञात होगा कि अनेक सायंगेय रागों का जवाब प्रातर्गेय रागों में मिलता है। उदाहरणार्थ प्रातर्गेय वसन्त का जवाब सायंगेय 'मालीगौरा' है। इसी तरह सोहनी और पूरिया, मारवा और पञ्चम, बिलावल और कल्याण, भैरव और पूर्वी, कालिंगड़ा और परज आदि जोड़ियां हैं। इसी प्रकार रात्रि कालीन तीव्र रे, ध वाले थाटों से उत्पन्न होने वाले अनेक रागों का सम्बन्ध भिन्न–भिन्न बिलावलों से मार्मिक लोग सहज में ही लगा सकते हैं। सायंकाल के लगभग पच्चीस रागों को अङ्ग भेद और वादी भेद से उषाकालीन और प्रातःकालीन बनाया जा सकता है। इस कार्य में अनेक पुराने रूप काम में आयेंगे, किन्हीं के नियम बिलकुल बदल जायेंगे और कुछ बिलकुल नवीन प्रकार भी प्रचार में प्राप्त होंगे। यह विभाग भावी–सङ्गीत का है।

कल्पद्रुम-रचयिता की हिन्दुस्थानी रागों की समय-रचना

हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति के रागों के समय की एक रचना करने का प्रयत्न 'कल्पद्रुम' में किया गया है। ग्रन्थकार ने अपने मत का नाम 'इन्द्रप्रस्थ' बताया है। उसका वर्गीकरण निम्न रूप का है:—*

प्रातसमेमें गाइये भैरव प्रथम सुराग।
ललित भैरवी रामकली खट गुणकली अनुराग ॥
देशकार बीभास पुनी भटियारी भंखार।
वसन्त बाहार पंचम हिंदोल हीलार ॥
वेलावली अलायिका सरपरदा कुकूभ ।
देवगिरी शुकला शुभा प्रहर चढे दिन धूप ॥
लच्छाशाख भुशाख पुनी रामशाख देशाख।
सुहा सुघरई सुही शुभा देवगंधारी भाख ॥
देढ प्रहर दिन चढतही टोडी गुर्जर गान।
देशी आसावरी जौनपुरि टोडि वरारी जान ॥
सारङ्ग सुध विंद्रावनी बडहंसी सामन्त।
लंकदहन लुम लूहरी दो पेहेरे मेवन्त ॥
मेघमल्लारी गौड पुनी गौडगिरी जलधार।
नटमल्लारी सूरपुनी रामदासि मल्लार ॥
मुलतानी अरु धनासिरी भीमपालासी जान।
बरवा धानि अहीरिका तृतिय प्रहरका गान ॥
जंगला मंगल पीलु पुनी सिंधु तिलंग प्रदीप।
दीपक दीपकी काफि पुनी चौथे प्रहर प्रलीप ॥
जैतश्री श्री मालसिरी मालश्री गौराह ।
गौडसारङ्ग अरु मारुवा पूर्वी और पुर्व्याह ॥

---

* यद्यपि इन दोहों में अनेक स्थानों पर मात्रा दोष आदिक अशुद्धियां हैं, फिर भी उद्धरण के रूप में हम उन्हें ज्यों का त्यों दे रहे हैं।

त्रिवणी श्री गौरी बहुरी चेती टंकी मान ।
चौथे प्रहर दिन अन्तमें श्रीटंकी कर गान ।।
प्रथम जाम रजनी समे कल्याणी सुधगान ।
हेम खेम एमन पुनी शाम हमीरिह जान ।।
जेत भूपाली पूरिया कामोदी कर मान ।
प्रहरि रजनि जातें गुनी छायानाट बखान ।।
देढ प्रहर निसके समे नायकि वख्त प्रमान ।
अष्टादश है कानरा कौशिक कान्हर जान ।।
अडाना शहाना शोभना सोहन सोहनी मान ।
केदारा मलुहा पुनी नाटकेदार बखान ।।
बिहंग बिहारी बिहागरा बिहाग पुनी विनोद ।
भरन अरन संकीर्ण अरु शंकरा आमोद ।।
सोरट देस सौराष्ट्रिका सिंदूरा सावेरि ।
परज खंबावति सुखावति कलिंगरा आभेरी ।।
मालकोश और कौशिकी कुसुमकारा कर्णाटि ।
ललित कलिंग लिलावती अरुणोदयमें बांटि ।।
सोले सहस्र और आठशो रागरागनी जान ।
वृन्दावन हरि रासमें गोपिन किये है गान ।।
देश देश के भेद में भिन्न भिन्न है नाम ।
मारग ब्रह्मादिक कहे देशी दस हूँ धाम ।।

इसमें अधिकांश राग अपनी हिन्दुस्तानी पद्धति के ही हैं, इतना ही नहीं, परन्तु उनका गान-समय भी, अपने गायकों के लिये स्वीकारात्मक है ।

रागों की रंजकता कैसे बढ़ाई जावे

गायक का महत्व, नियमों की शुद्धता के साथ रागों की रंजकता संभालने से बढ़ जाता है । कुछ लोगों की ऐसी कुछ मूर्खता पूर्ण समझ

है कि रागों के नियम बन्धन से गायन की रंजकता बिगड़ जाती है। प्रथम यह देखना चाहिये कि अपने राग के नियम कहां आते हैं और उतना ही टुकड़ा प्रथम हाथ में लेना चाहिये। इस स्वर भाग को सैकड़ों बार गाया जावे। प्रथम विलम्बित लय से गाकर फिर बाद में बिलकुल द्रुतलय में गाते जाना चाहिये। इस तरह करने पर देखना चाहिये कि गला कहां रुकता है, वह कौनसे 'कण' अपने आप शोधकर ले लेता है, यह नोट कर लेना चाहिये। यह भी देखते जाना चाहिये कि किस जगह कौनसा राग निकट आ जाता है और उसे अलग करने के लिये क्या करना पड़ता है। यदि राग के समस्त भाग इस तरह देख लिये जावें तो रियाज़ से तैयार करना बिलकुल सरल हो जाता है और आवश्यकता होने पर यथा स्थान अपने आप सूझ होने लगती है। गायक को अपने हृदय में यह बात सदैव अंकित करते जाना चाहिये कि अपने राग का श्रोताओं पर सदैव कैसा परिणाम होता है। इसके अनुसार राग-विस्तार करने से राग की रंजकता अधिक हो जाती है।

राग विस्तार कैसा किया जावे

जिस राग का वादी स्वर पूर्वाङ्ग में हो, उसका प्रारम्भ उसी स्वर से करना अच्छा है। यदि वादी स्वर षड्ज से काफी दूर हो तो कुछ भिन्न योजना करनी पड़ती है। ऐसी जगह सम्वादी स्वर से प्रारम्भ करना सम्भव हो, तो देखना चाहिये। आरम्भ में बड़ी लम्बी तानें लेने की उलझन में न पड़ा जावे। आरम्भ में बिल्कुल छोटी-छोटी तानें लेकर षड्ज में मिलना चाहिये। ऐसा करने पर जहां निषाद वर्ज्य न हो वहां इसे भी लेकर तान पूरी करना चाहिये। इसके बाद एक नवीन स्वर जोड़ा जावे और तान पूरी की जावे। आरम्भ में वादी से आगे न जाना चाहिये। फिर धीरे-धीरे मन्द्र स्थान की ओर बढ़कर छोटे-छोटे टुकड़े बनाये जावें और बार-बार षड्ज से जाकर मिला जावे। ऐसा करते हुए वर्ज्यावर्ज्य नियम, राग की प्रकृति मंद्र गति या मध्य गति आदि बातों का विचार कर बढ़त की जावे। प्रत्येक राग में ठहराये हुए विश्रान्ति स्थान होते हैं। यदि ये ज्ञात हों तो राग-विस्तार करने में बड़ी मदद मिलती है। प्रत्येक तान में कुछ न कुछ स्वरों की उलट-पलट करते रहना चाहिये। मध्य-सप्तक की तानों का जोड़ मन्द्र सप्तक की तानों से से कर देने पर विस्तार क्षेत्र पर्याप्त रूप से बढ़ जावेगा। राग का शुद्ध

स्वरूप और उसकी वक्रताएँ सृष्टि के सम्मुख रखकर तदनुसार राग विस्तार करना चाहिये। गायक लोगों की प्रत्येक 'तान' ताल में बैठाई हुई नहीं होती। तानबाजी करते समय ताल की ओर विशेष लक्ष्य रखने की आवश्यकता नहीं होती, सिर्फ तानों से फिर स्थाई में मिलते समय खूबी से दोनों को उचित स्थान पर मिला देना पर्याप्त है। जहां स्थाई का आरम्भ पूर्वाङ्ग में हो वहां अन्तरा उसी अङ्ग में जाकर मिला देना अच्छा होता है और जहां उत्तराङ्ग में हो, वहां पञ्चम पर न्यास करना अच्छा होता है। अन्तरे के कभी तीन और कभी चार टुकड़े होते हैं। अन्तरे के तीसरे टुकड़े में कुछ गीतों में तार स्थान की ओर जाना पड़ता है और कुछ गीतों में मध्य षड्ज की ओर आना पड़ता है। तीसरे टुकड़े की व्यवस्था कुछ अन्शों में चौथे टुकड़े पर निर्भर रहती है। यदि तीसरा टुकड़ा अवरोहात्मक रूप से नीचे आने वाला हो तो चौथा टुकड़ा ऊपर जाने का होता है और यदि तीसरा ऊपर जाने का हो तो चौथे में नीचे आना पड़ता है। राग विस्तार करते समय पूर्वाङ्ग और उत्तराङ्ग की तानें आरम्भ में अलग-अलग मश्क करली जावें और तैयार होने पर उन्हें परस्पर जोड़ने का अभ्यास किया जावे। उत्तराङ्ग में पूर्वाङ्ग का क्रम ही चलता है। रागों के आलाप में ग्रह, अंश, न्यास, अपन्यास, तार स्थान-सीमा, मन्द्र स्थान-सीमा, स्वरों की अल्पता और प्रबलता आदि बातें दिखाई जानी चाहिये। आलाप करने में प्रथम स्थायी का भाग हाथ में लिया जावे। इसमें जहां तक सम्भव हो तार सप्तक के स्वर नहीं लगाये जावें। स्थायी के आलाप का वास्तविक आनन्द मुख्यतः मन्द्र और मध्यम स्थानों से ही रहता है। तार-स्थान का महत्व मध्य रात्रि के बाद गाये जाने वाले रागों में होता है। यथेच्छ रूप से स्थाई का भाग गाने के बाद तार सप्तक की ओर बढ़ा जावे। तार सप्तक में जाने पर यह नियम नहीं है कि मध्य सप्तक में आया ही नहीं जा सकता। तार स्थान में पञ्चम से आगे न बढ़ा जावे। गायन का आरम्भ करने पर प्रथम मध्य स्थान के षड्ज को अच्छा और देर तक गाना चाहिये। कुशल गायक एक दम अपना गीत गाना आरम्भ नहीं करते। अच्छी तरह षड्ज को साथ लेने पर जिस राग को गाना हो, उसके वादी स्वर को दीर्घ रूप से उच्चारित किया जावे और फिर वहां से षड्ज पर जाकर मिला जावे। यह सावधानी रखी जावे कि उकता देने वाली पुनरुक्ति उत्पन्न न हो। हर बार नवीन स्वर रचना अथवा

तान उत्पन्न की जावे, अर्थात् प्रत्येक तान में कुछ न कुछ नवीन स्वरों का प्रयोग कर अथवा प्रथम स्वरों को उलट–पलट कर गाया जावे। ऐसी तानों को 'कूट तान' कहा जाता है। 'कूट तान' उस तान को कहते हैं, जिससे स्वरों का क्रम वक्र होता है। प्रत्येक राग गाते हुए उसके मुख्य अङ्ग अर्थात् मुख्य पकड़ यानी पहचानने के स्वर, सदैव ध्यान में रखने चाहिये। एक थाट से अनेक राग निकलते हैं। गाते समय वे एक दूसरे से मिल न जावें, इसलिये बीच–बीच में प्रस्तुत राग का मुख्य भाग श्रोताओं के सम्मुख रखते जाना चाहिये। इस तरह राग विस्तार करने का अभ्यास करना चाहिये। कभी तीन स्वरों के, कभी चार स्वरों के, कभी उससे कम या अधिक स्वरों के टुकड़े करने का अभ्यास कर लेना चाहिये। राग का प्रभाव श्रोताओं के हृदय पर से मिटने न देना चाहिये। तानें धीरे–धीरे बड़ी होती जावें। भिन्न स्वर समुदाय से किये जाने वाले राग विस्तार को ही 'तान' कहा जाता है। आरम्भ में विलम्बित–लय से गाकर फिर गति बढ़ाई जावे। बिलकुल द्रुत–लय (अति द्रुतलय) का गायन, यह तृतीय विभाग है। गाने की गति को 'लय' कहा जाता है। शीघ्र–गति को 'द्रुतलय' मध्यम गति को 'मध्यलय' और धीमी गति को 'विलम्बित–लय' कहा जाता है। आलाप के सम्बन्ध में एक जगह ग्रंथ में निम्न सूचना दी गई है, इसे बताकर अगले विषय की ओर बढ़ूंगाः—

मध्य षड्जं समारभ्य मंद्रषड्जावधिक्रमात्।
सम्यगालापनं कृत्वा मध्यषड्जे समापयेत्॥
मंद्र मध्यषड्जमध्ये रागवर्धनमारभेत्।
गत्वातानं तारकान्तं मध्यषड्जे समापयेत्॥

सम प्राकृतिक रागों में उच्चार का महत्व

किस स्वर पर कितनी देर थमना चाहिये, वहां कौनसी स्वर संगति को सँभालना चाहिये, किस स्वर को किस तरह वक्र करना चाहिये, किन सम प्राकृतिक रागों को कैसे भिन्न रखा जावे, ये सब बातें

नि̱ म नि̱ सा म म सा⁀

महत्वपूर्ण हैं। ध̱, प, ग̱, रेसा; ध, प, मपग, रेसा, प, ग̱, रे सा;

ये टुकड़े कानों में पड़ते ही मार्मिक श्रोताओं के ध्यान में तत्काल आ जाता है कि गायक ने ये टुकड़े भिन्न-भिन्न क्यों लिये हैं। केवल स्वर बोलने से राग भिन्नता होना आवश्यक नहीं है, खूबी उनको योग्य रीति से गाने की है। इस पुस्तक के अन्त में इस भाग में आये हुए रागों के स्वर-विस्तार खास तौर से दिये गये हैं। इनमें स्वल्प विराम चिन्ह से दिखाये हुए विश्रान्ति स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। ऊपर दिये हुए तीनों स्वर समुदाय आसावरी थाट के हैं, परन्तु उनमें एक आसावरी राग का, एक जौनपुरी का और एक गांधारी का है। यह भेद उनमें बताये हुए विराम स्थान से, आगे या पीछे लगने वाले कणों से, स्वर-वक्रता एवं सरलता से मार्मिक रसिकों के ध्यान में सहज ही आ जाता है। इस प्रकार से गाना कठिन होता है और इन खूबियों को पहचान लेना ही सच्ची गुण ग्राहकता है।

मंद्र गायन

मन्द्र स्थान में राग विस्तार करते समय मुख्य रूप से एक बात ध्यान में रखनी चाहिये कि जहां तक अपना गला स्पष्ट और मधुर ध्वनि में नीचे जा सकता हो, वहीं तक उतरना चाहिये। अच्छी तरह रियाज़ कर, मन्द्र स्वर प्रथम स्पष्ट सुनाई दिया सके, ऐसी तैयारी करनी चाहिये। जो राग [illegible] सप्तक में अच्छे शोभित होते हैं, प्रायः वे राग तार सप्तक में [illegible] ऊपर नहीं जाते। इसलिये आरम्भ में तंबूरा ऊँचे स्वर में मिला[illegible] से मन्द्र [illegible]न में काफी नीचे उतरना सम्भव हो सकेगा। दरबारी कानड़ा, मियाँ की मल्हार, पूरिया आदि ऐसे ही राग हैं।

स्वरलिपि और उसके उपयोग की मर्यादा

'नोटेशन' (स्वरलिपि) यदि स्वर, ताल और मात्रा के साथ चीज़ें या सरगम उनके कण स्वरों के साथ लिखा हुआ हो तो अवश्य ही उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अमुक राग अमुक काल में किस तरह गाया जाता था इसका बोध अगली पीढ़ी को कराने के लिये नोटेशन जैसा अन्य साधन नहीं है। सर्वाङ्ग पूर्ण (जैसा मूल गायक गाता है वैसा हूबहू लिखने योग्य) स्वरलिपि अभी तक कहीं भी उत्पन्न नहीं हुई, और वैसी पद्धति उत्पन्न होना शक्य भी नहीं है। मूल गायकी के स्वर

लगाने की शैली, बोल उच्चार की सफाई, प्रत्येक दो स्वरों में एक प्रकार का गुप्त बन्धन, भिन्न-भिन्न जगह गीत के धर्मानुरूप अथवा सङ्गीत की वाक्य पूर्ति के लिये की जाने वाली छोटी बड़ी विश्रान्ति, अर्थ के अनुरूप ध्वनि को मृदु और प्रचण्ड करने की शैली आदि-आदि सभी बातें निर्जीव स्वरलिपि में उतार सकना अशक्य है। भाषा में भी वक्ता की भाषण पद्धति का हूबहू लेखन लिपि द्वारा नहीं हो सकता, तो भी वक्ता के आंतरिक लेखन द्वारा पाठक को पूर्ण रूप से बोध हो जाता है; इसी प्रकार सङ्गीत की स्वरलिपि है। तो भी इसमें सन्देह नहीं है कि नोटेशन के प्रयोग से व्याकरण दृष्टि से यथा शक्ति और यथामति प्रत्येक व्यक्ति गा सकता है। स्वरलिपि पद्धति का मजाक उड़ाने वाले लोग केवल अपनी हठवादिता का प्रदर्शन करते हैं। वे लोग भाषा की लिपि का मजाक नहीं उड़ाते। बड़ी कक्षाओं को शिक्षा देने के लिये गायन की पुस्तकों के सिवाय अन्य मार्ग ही नहीं है। स्वरलिपि का मजाक उड़ाने वाले अधिकांश ऐसे ही लोग हैं, जिन्हें पढ़ना नहीं आता। कोई भी समझदार मनुष्य यह नहीं कहेगा कि यदि स्वरलिपि द्वारा बिना दोष के गायन का चित्र नहीं उठ सके, तो यह लिपि सम्पूर्ण नहीं है और यह बिलकुल नहीं होना चाहिए। सङ्गीत के लिये भी लेखन पद्धति की आवश्यकता है। समस्त देश में एक ही लिपि होने पर कार्य अच्छी तरह हो सकता है, इस सिद्धान्त को जानकर पाश्चात्य विद्वानों ने स्वर लेखन पद्धति स्वीकार की है। देश में प्रचलित लिपियों में से एक भी लिपि विशुद्ध 'स्वदेशी' नहीं है! चाहे जो चार पाँच पद्धतियां का मिश्रण कर अपनी नवीन पद्धति बताकर स्थापना करने लगता है! कोई यूरोपियन 'स्टाफ' के चिन्ह नाद स्थान दिखाने के लिये ग्रहण करता है। कोई यूरोपियन 'बार' चिन्ह ग्रहण करता है, कोई पाश्चात्यों के पुनरावर्तन चिन्ह स्वीकार करता है। यूरोपियन लिपि में मुरकी, गिटकरी, जमजमा, घसीट, मींड आदि बातें नहीं हैं। स्वरलिपि का क्षेत्र बिलकुल मर्यादित होता है। चीज की रूपरेखा स्पष्ट और शुद्ध रूप से व्यक्त कर देने पर स्वरलिपि का कार्य समाप्त हो जाता है। स्वरलिपि ध्येय नहीं, परन्तु उसकी प्राप्ति का एक सरल साधन है। यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि इस साधन का क्लिष्ट होना निरुपयोगी होगा। यह तो जितना सरल, स्वाभाविक और सहज हो, उतना ही अधिक सर्वमान्य होगा। यदि नोटेशन क्लिष्ट हो तो

प्रयोक्ता की दशा किसी ऐसे व्यक्ति जैसी होगी, जो उस राज-भवन में राजा के दर्शन के लिये जारहा है, जिसमें जगह-जगह सशस्त्र सैनिकों का पहरा है। ऐसी स्वरलिपि के गुहा गर्तों और शिखरों को प्राण रक्षा करते हुए पार कर लेने पर ध्येय तक पहुँचना सम्भव है। अनेक तो मार्ग में ही वापिस लौट आने वाले दिखाई देने लगेंगे। वक्रताएँ, उच्चार, चलन आदि बातें प्रत्यक्ष गान सुनकर परम्परा से ही प्राप्त करनी चाहिये। जिस प्रकार शरीर को आभूषणों से सुसज्जित किया जाता है, वैसे ही इन बातों को समझना चाहिये। स्वरलिपि से चीज का साधारण स्वरूप और स्वभाव स्पष्ट रूप से निश्चित कर दिया जाता है, इसे सजाने के लिये अलंकार आदि गुरू परम्परा से कानों से सुनकर ही सीखना चाहिये। हिन्दुस्थानी-सङ्गीत-पद्धति की क्रमिक पुस्तक मालिका में प्रयुक्त किया हुआ नोटेशन प्रायः प्राचीन ग्रन्थों की स्वर-लेखन-पद्धति के अनुसार ही है। रत्नाकर के स्वर-लिपि चिन्ह वीणा वादन के अनुरूप हैं, क्योंकि मन्द्र स्वर निकालने के लिये वीणा पर मेरु की ओर ऊपर हाथ ले जाना पड़ता है और तार स्वर के लिये घोड़ी की ओर नीचे हाथ ले जाना पड़ता है। इसलिये रत्नाकर में मन्द्र स्थानों को ऊपर बिन्दु देकर दिखाया गया है। इस पद्धति को वेदों के उदात्त, अनुदात्त स्वर चिन्हों का भ[illegible] आधार प्राप्त है। अपनी पद्धति में मन्द्र स्थान स्वरों के नीचे बिन्दु लगाकर दिखाये जाते हैं, क्योंकि मन्द्र स्थान में आवाज़ नीचे उतरती है और तार स्थान में ऊपर चढ़ती है।

अन्तर मार्ग

अपनी पद्धति का एक नियम "वादि भेदेराग भेद:" है। इस भेद के साधन के हेतु दो समान थाटों के रागों के अन्तर मार्ग भिन्न रखे जाना आवश्यक हो जाता है। 'अन्तर मार्ग' नाम प्राचीन है। इसका अर्थ "राग का चलन" होता है। राग के चलन में हम छोटे-छोटे स्वर विन्यासों की रचना करते हैं। वैचित्र्य के लिये हमें ऐसा करना पड़ता है। प्राचीनकाल में ग्रह, न्यास का नियम बहुत कड़ा था। ये (ग्रह, न्यास स्वर) अपनी-अपनी जगह प्रबन्ध में आना आवश्यक थे। परन्तु प्राकृत-सङ्गीत में इन नियमों की शिथिलता हो जाने से अन्तर मार्ग के लिये अब न्यास अपन्यास का बन्धन नियत नहीं है। राग विस्तार करने के समय रागों के विशेष लक्षणों और वादी संवाद

स्वरों के अनुरूप भिन्न-भिन्न स्वर-संगति, भिन्न-भिन्न स्वरों के जोड़ने की क्रिया को ही अब 'अन्तर मार्ग' कहा जायेगा।

अपने गायक 'स्थाय' को 'विश्रांति स्थान' अथवा 'मुकाम' कहते हैं। भिन्न-भिन्न तानें इस स्वर पर आकर समाप्त होने से यह स्वर विश्रान्ति लेने योग्य हो जाता है। गाते समय गायक एक ही राग में भिन्न-भिन्न स्वरों को अपनी तानों के अन्त में लेकर श्रोता को वादी स्वर जैसा आभास करा देते हैं और फिर नियत काल में नियत वादी स्वर को आगे लाकर राग हानि नहीं होने देते। इस प्रकार आगे लाये हुए स्वर को कुछ देर के लिये वादी मानकर उसके अगले पिछले चार-चार स्वर लेकर, फिर मन्द्र स्थान में कुछ तानें लेकर पुनः अपनी तानें मध्य षड्ज पर लाकर पूर्ण करने लगते हैं। इस रीति से अनेक तानें उत्पन्न हो जाती हैं और श्रोताओं को उकताहट उत्पन्न नहीं होती।

आदत, जिगर, हिसाब

मुसलिम गायकों के मुँह से उपरोक्त शब्द कहीं-कहीं सुनाई पड़ जाते हैं। उन्हें सुनकर यह कौतूहल होना स्वाभाविक है कि इनका क्या अर्थ है? 'आदत' का अर्थ है अच्छी तरह रियाज़ कर अच्छी-अच्छी तानें लेने की सामर्थ्य। 'जिगर' का अर्थ गीत और गाने का अङ्ग, स्वभाव, और 'हिसाब' का अर्थ राग और ताल के शास्त्रीय-नियम होता है।

गीत रचना

कोई भी चीज (गीत) हो, उसमें सङ्गीत के अनेक तत्व सुव्यवस्थित रीति से गुंधे होते हैं। चाहे जिस तरह के राग में आने वाले स्वरों को चाहे जहां जोड़ देना सङ्गीत नहीं होता। प्रत्येक राग में गीत रचना करते समय निम्न बातों की ओर ध्यान देना चाहिये—(१) राग का स्थूल स्वरूप, (२) कौन-कौन से अङ्ग कहां-कहां रखे जावें, (३) कौन सी स्वर-सङ्गति, (४) मुक्त स्वर कौन से और कहां रखे जावें, (५) अमुक स्वर से गीत शुरू होने पर एक कल्पना पूरी होने के लिये कितने स्वर वाक्य आवश्यक होंगे, (६) कौनसा विश्रान्ति स्थान, (७) किस वाक्य में कौन से स्वर आने चाहिये, (८) कौनसा वाक्य कितना दीर्घ रखना होगा

(६) चीज के शब्दों का उस वाक्य से कैसा सम्बन्ध रखा जावे, (१०) तालके किस ठेके पर कौनसा भाग लाया जावे, (११) इत्यादि। कक्षाओं में इस विषय की शिक्षा देते समय विद्यार्थियों को वाक्यों का प्रथक्करण कर समझाना चाहिये। गीत के मध्य भाग में जहां षड्ज पर कुछ वाक्य आकर समाविष्ट होते हैं, वह स्थान दिखाना चाहिए; और नवीन वाक्य आरम्भ होकर गीत के अन्तिम भाग का सम्बन्ध पुनः आरंभिक भाग से कैसा मिलाया गया है, यह भी दिखाना चाहिये। यह भी समझा देना चाहिये कि अन्तरा कैसे शुरू होता है और उसके इस प्रकार शुरू करने का क्या कारण है।



कल्याण थाट.

कल्याण थाट के राग (५)

चंद्रकान्त

सावनी कल्याण

जैतकल्याण

श्यामकल्याण

मालश्री

राग चंद्रकान्त.

गरी सनी धनी धपौ सगौ रिगौ धमौ गपौ ।
रिसौ रात्र्यां भवेत् चन्द्रकान्तो गांशोऽग्रयामके ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

जब ईमन् के मेलमें चढ़त न मध्यम होइ ।
गनि वादी संवादितें चंद्रकांत है सोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ।

राग चन्द्रकान्त कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसके आरोह में मध्यम स्वर वर्ज्य होता है। जाति षाड़व-सम्पूर्ण है। वादी स्वर गांधार और सम्वादी निषाद माना जाता है। गायन का समय, रात्रि का प्रथम प्रहर है। पूर्वाङ्ग वादी राग होने के कारण राग का वैचित्र्य पूर्वाङ्ग में होता है। इसका विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तकों में ही होता है। किंचित् रूप से यह राग शुद्ध कल्याण जैसा दिखाई पड़ता है, किन्तु शुद्ध कल्याण के आरोह में म, और नि, दोनों स्वर वर्ज्य होने से भेद स्पष्ट हो जाता है। इस राग के निकट आ पहुँचने वाले अन्य राग भूप, और जैतकल्याण हैं; परन्तु इन दोनों रागों में म और नि स्वर बिलकुल वर्ज्य होते हैं, इसके सिवाय जैतकल्याण राग का वादी स्वर पंचम है। सारांश में, यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऊपर बताये हुए तीनों रागों से 'चन्द्रकान्त' स्वतन्त्र राग है।

उठाव.

ग, रे, सा, निध, निधप, सा, ग, रेग, धमग, प, रे, सा.

चलन.

गरेसा, निधप, धप, सा, सारेगरेसा; रेरेसा; निरेग, रेग, रेरे,

गपरेग, मंग, पमंग, रेगरेसा; निरेग, रेसा, रेरेसा,

निधनिधप, पधनिरे, गरे, धमंगप, रे, नि, रेगरेसा ।

चन्द्रकांत—त्रिताल

स्थायी.

सा – निध नि	– ध प प	नि रे ग रे	सा – सा –
चं ऽ द्र कां	ऽ त स खि	अ ति म न	भा ऽ यो ऽ
३	×	२	०
सा – ग –	ग – मं ग	नि नि मं गप	रे – नि रेग
क ऽ न्या ऽ	णी ऽ अं ग	वि म ल र	चा ऽ यो ऽऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

ग – प धप	सां – सां सां	नि रें गं रें	सां नि ध प
वा ऽ दि गं	धा ऽ र व	र ज सु र	म ऽ ध्य म
३	×	२	०
प – प –	मं मं ग रे	नि नि मं गप	रे – नि रेग
आ ऽ रो ऽ	ह न में ऽ	च तु र दि	खा ऽ यो ऽऽ।
३	×	२	०

चंद्रकांत—त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी.

सारे गग सा(सा) – निध	ध ध मं नि नि ध पधप	मं प निध सा ,रे	ग रे सा –
प्याऽ रेऽ ऽ तोरी	छ बि ऽ मोऽरे	हि याऽ में ऽब	स त है ऽ
३	×	२	०
नि सा – ग ,रे	ध ग – मं ग	ग ध ध – मं गप	ग रे रे नि रे सा
रै ऽ न ,दि	ना ऽ वा को	मो ऽ हे लऽ	गो ध्या ऽ न।
३	×	२	०

अन्तरा.

प								नि							
ग	–	प	सांध	सां	–	सां	सां	सां	रेंनि	गं	रें	सां	निध	निध	प
बे	ऽ	गि	मिऽ	लो	ऽ	अ	ब	र	होऽ	ऽ	न	जा	ऽऽ	वऽ	त
३				×				२				०			
प						ध		प			प	ग			
ग	ग	प	प	ध	नि	पध	प	ग	ध	प	गप	रे	नि़	रे	सा
त	र	फ़	त	ज	ल	बिऽ	न	मी	ऽ	न	सऽ	मा	ऽ	ऽ	न।
३				×				२				०			

राग सावनीकल्याण.

यह राग कहीं-कहीं पर सुनने को मिलता है। इसके सम्पूर्ण नियम उपलब्ध नहीं हैं। इसके गीतों पर से ही नियम निश्चित करना पड़ेगा। यह कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसमें शुद्धकल्याण का अङ्ग आता है। प्रायः इसका विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही होता है। इस राग में वादी स्वर 'षड्ज' माना जा सकता है। इसके गायन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। आरोह में मध्यम और निषाद स्वर दुर्बल रहते हैं। मन्द्र धैवत पर न्यास होता है।

इसका साधारण चलन इस प्रकार है।

गरेसा, निधनिधप, पसा, रेगरेसा, सासामग, पपध,
पधपग, रेसाध, गरेसा।

सावनीकल्याण - तिलवाड़ा

स्थायी.

ग
जा

		मं	नि
रे सा – सा,नि़ध़	नि़ ध़ प़ –	प़ सा – ध़	सा रे सा –
ऽ हू ऽ त,नऽ	ला ऽ गे ऽ	वा हू ऽ ऽ	जा ऽ ने ऽ
३	×	२	०
नि़ सा	ग	ग	ध़
सा मग प –	प – ग रे	रे ग – रे	सा (सा) – ध़
औ रक हू ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ने ऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०
	(अथवा)		
	ग		
	प ग – रे		
	जा ऽ ऽ ऽ		
	×		

अन्तरा.

ग प	मं	ग प	
प ग प –	प ध प –	प ग – गप	ग रे सा –
ह म रे ऽ	म न की ऽ	का ऽ ऽ हुन	जा ऽ ने ऽ
३	×	२	०
नि़ सा	ग प	ग प	
सा मग प प	प ध प –	प ग – प	ग रे सा ध़
वा ऽऽ हू न	जा ऽ ने ऽ	म न ऽ ऽ	जा ऽ ने ऽ
३	×	२	०
ध़			
ग रे सा सा,नि़ध़			
जा ऽ हू त,नऽ			
३			

सावनीकल्याण—त्रिताल

स्थायी.

सा रे ग सा नि़ ध़	नि़ ध़ प़ प़	प़ सा सा सा	सा रे सा —
स व स खि	यां ऽ मि ल	मं ऽ ग ल	गा ऽ वो ऽ
३	×	२	०
सा — ग ग	प प ध प	प ध प ध	प गरेसा सा ध़
सा ऽ व न	मो रे म न	सु ख उ प	जा ऽ यो ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

प — सां सां	सां — सां —	सां — नि निध	नि ध प प
मे ऽ च क	ल्या ऽ णी ऽ	मे ऽ ल म	नो ऽ ह र
३	×	२	०
प प प प	ध ध प प	प ग ग प	ग रेसा सा ध़
म नि दु र	ब ल अ नु	लो ऽ म दि	खा ऽऽ वो ऽ
३	×	२	०
सारे गग सा — नि़ध़	नि़ ध़ प़ध़ प़	प़ सा — सासा	सा रे सा —
स व ऽ सखि	यां ऽ मि ल	मं ऽ ऽ गल	गा ऽ वो ऽ।
३	×	२	०

राग जैतकल्याण.

सगौ पगौ पधपगा रिसौ पगौ पधौ च गः।
जयत्कल्याणकः पांशो गेयो रात्रिमुखे बुधैः॥

अभिनवरागमंजर्याम्।

जैतकल्याण, कल्याण थाट से उत्पन्न होने वाला कल्याण का एक भेद है। इसमें मध्यम और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं, अर्थात् इसकी जाति औड़व-औड़व है। वादी स्वर पंचम है। इसके आरोह में 'ग॒' और अवरोह में 'धग' स्वरों की स्वर सङ्गति—रंजकता-उत्पादक और रागवाचक होती है। जानकारों का यह भी मत है कि आरोह में रिषभ और धैवत स्वर इस राग में स्वल्प-प्रमाण में लिए जावें। वादी स्वर के भेद से, यह राग भूपाली से अलग रखा जा सकता है। प्रचार में 'जत' नामक एक राग और है, वह इस राग से भिन्न है।

उठाव.

सा, ग, पग, पधपग, रेसा, पग, पधग।

चलन.

सा, गपरे, सा, सा, रेसा, सासागगप, प, पधग, पधपरे,

सासारेसा, प, सा, रेसा, गप, प, पधग,

पपसां, सां, रेंसां, सांधसां, रेंसां, प,

गपधसां, प, पधग।

जैतकल्याण—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

मं	प				ग				
प	ग	प	पध	प	रे	–	सा	रे	सा
ज	य	ज	यऽ	भ	वा	ऽ	नि	प	ति
×		२			०		३		
		प					मं		
सा	सा	ग	प	प	प	प	प	ध	ग
ज	य	पं	ऽ	च	व	द्	ना	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

मं									
प	प	सां	–	सां	सां	–	सां	रें	सां
न	म	न	ऽ	क	रे	ऽ	च	तु	र
×		२			०		३		
सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	प	प	ग
भा	ऽ	व	ध	र	सु	ध	अं	त	र
×		२			०		३		
		प							
सा	सा	ग	प	प	प	–	प	प	धग
ज	ग	त	ऽ	नि	स्ता	ऽ	र	ना	ऽऽ।
×		२			०		३		

जैतकल्याण—त्रिताल (विलम्बित).

स्थायी.

ग	प			ग						ग		ग		प	
प	पग	गप	धप	रे	–	सा	सा	रे	सा	प	पग	प	–	ध	ग
जै	ऽसो	जाऽ	ऽको	भा	ऽ	व,	च	तु	र	वा	कोऽ	दी	ऽ	स	त।
३				×				२				०			

अन्तरा.

ग प – सां –सां	सां – रें सां	ध सां ध सां रें	नि (सां) – (प) ग
ए ऽ क ऽक	हे ऽ वा को	ए ऽ क हु	दी ऽ स त
३	×	२	०
धृ प प सा – ग ग	ग प सां प – सां रें	सां – प पग	प प – ध ग
ने ऽ क क	हे ऽ वा को	ने ऽ क दिऽ	खा ऽ व त।
३	×	२	०

जैतकल्याण—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

प प ग गप धप रेरे, सारे	प सा – ग पग	निृ प प सा ग ग प	मं मं प – प –,धग
अति हिस रस, रस	मा ऽ ता ऽऽ	ब न रा ऽ	आ ऽ या ऽ,ऽऽ।
३	×	२	०

(अथवा)

निृ प प सा ग ग प	मं – प प धग
ब न रा ऽ	ऽ आ या ऽऽ
२	०

अन्तरा.

प ग प सां सां	सां – सां ,सां	नि सां रें सां –	नि सां सां (प) पग
ध न ध न	भा ऽ ग ,ब	नी ऽ के ऽ	म न रं गऽ
३	×	२	०
रे प प सा ग ग प	ध गप सांध सां – पध	ग प – – ग	मं मं प – प धग
जि न ए ऽ	सौऽ ऽ ऽ बर	पा ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽऽ
३	×	२	०

जैतकल्याण—त्रिताल (विलम्बित).

स्थायी.

प
ग
मे

	प	गप		ग						सा		प़			
प	ग	पध	प	रे	रे	सा	रे	सा	—	ध़	प़	सा	—	रे	सा
री	सु	रंऽ	ग	चु	न	री	ऽ	या	ऽ	बो	ऽ	री	ऽ	स	ब
३				×				२				०			
नि़		प		मं		प		प			प	ग			प
सा	सा	ग	प	प	प	धग	प	सां	—	(प)ग	गप	रे	—	सा	ग
अ	ब	ना	ऽ	खे	लूं	तोऽ	सों	का	ऽ	न्हऽ	मैंऽ	हो	ऽ	री,	मे।
३				×				२				०			

अन्तरा.

मं								नि							
प	प	सां	सां	—	सां	रें	सां	सां	—	रें	सां	—	प	प	ग
नि	प	ट	ढी	ऽ	ट	नं	द	रा	ऽ	य	ला	ऽ	ड़ि	लो	ऽ
३				×				२				०			
ग		प				प	सां				प	ग			प
सा	—	ग	प	प	—	सां	रें	सां	—	पग	गप	रे	—	सा,	ग
का	ऽ	हे	क	रो	ऽ	ह	म	से	ऽ	बऽ	रऽ	जो	ऽ	री,	मे।
३				×				२				०			

जैतकल्याण—आड़ा चौताल

स्थायी.

								सा					
ग	प	ध	प	ग	रे	सा	—	प	ग	प	प	प	ध
उ	त	त	न	दे	रे	ना	ऽ	दी	ऽ	ऽ	म्त	दा	नी
३		०		४		०		×		२		०	

								सा					
ग	प	ध	प	ग	रे	सा	–	प	ग	प	प	प	ग
अ	त	त	न	दे	रे	ना	ऽ	दी	ऽ	ऽ	म्त	दि	या
३		०		४		०		×		२		०	
प	–	ग	रे	सा	सा	प़	सा	सा	ग	प	ग	प	ध
ना	ऽ	रे	ऽ	दा	नी	उ	दा	नि	दा	नि	त	दा	नी
३		०		४		०		×		२		०	

अन्तरा.

ग	प	प	सां	–	प	प	ध	ग	प	ध	प	ग	रे
ना	द	दिं	दीं	ऽ	म्त	न	न	न	न	दे	रे	ना	ऽ
३		०		४		०		×		२		०	
		सा											
सा	सा	प़	–	सा	–	प़	सा	सा	ग	प	ग	प	ध
ता	रे	दा	ऽ	नी	ऽ	ता	ना	दे	रे	ना	त	दा	नी
३		०		४		०		×		२		०	

जैतकल्याण–चौताल (विलम्बित)

स्थायी.

सा

गा

	प						ग				
–	ग	प	प	प	–	ग	प	प	प	ग	प
ऽ	ग	ऽ	रि	या	ऽ	ऽ	छू	व	न	ऽ	ऽ
३		४		×		०		२		०	
				ध़			प				
ग	रें	सा	–	सा	ध़	सा	ग	प	रे	सा	मा
तो	ऽ	हे	ऽ	कै	ऽ	से	दे	ऽ	ऽ	उं,	गा।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

ग								ध			
प	–	सां	सां	–	रें	सां	सां	सां	ध	सां	रें
बा	ऽ	ट	घा	ऽ	ट	प	र	रो	ऽ	क	त
×		०		२		०		३		४	
		ग		ध़		प					
सां	–	प	ग	सा	–	ग	प	प	ध	प	–
टो	ऽ	क	त	छीं	ऽ	क	त	प	नि	यां	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग											
प	–	ग	प	ग	रे	सा,	सा				
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	हूँ,	गा				
×		०		२		०					

जैतकल्याण—धमार (विलम्बित).

स्थायी.

ग		
प	–	ग
फा	ऽ	ऽ
०		

प		गप									सा		
ग	प	पध	प	ग	रे	–	सा	–	–	–	रे	सा	–
ऽ	ऽ	गुऽ	न	आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ए	री	ऽ
३				×					२		०		
				म॑							नि़	सा	
सा	ध़	प़	–	प़	सा	ध़	सा	–	–	–	सा	ग	ग
मा	ऽ	ई	ऽ	पि	या	ऽ	सों	ऽ	ऽ	ऽ	र	ह	स
३				×					२		०		

प	प ध	प	
ग प धग प	सां – – प ग	ग प	ग रे सा
र ह सऽ ऽ	खे ऽ ऽ लूं ऽ	गी ध	मा ऽ र
३	×	२	०
मं गप			
प ग पध प			
फा ऽ गुऽ न			
३			

अन्तरा.

प
गप
लेगु

सां – ध सां –	सां सां	सां सां –	सां – – –
ला ऽ ऽ ल ऽ	मु ख	रु चि ऽ	सों ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
नि सां		नि सां	मं
सां ध – सां –	सां सां	सां रें सां	प – ध ग
मी हूँ ऽ गी ऽ	वा को	चो ऽ वा	चं ऽ द न
×	२	०	३
प सां		मं	ग
ग प सां ध –	सां सां	प ग प	रे – सा –
अं ग ल गा ऽ	ऽ ये	चं ऽ ऽ	द ऽ न ऽ
×	२	०	३
नि सा	ध	मं	गप
सा रें – सां –	प प	प ध ग	प ग पध प
ग रे ऽ डा ऽ	रुं गी	हा ऽ र	फा ऽ गुऽ न
×	२	०	३

राग श्यामकल्याण.

श्यामो रागो भवतिविलसन्मद्वयश्चान्यतीव्रः ।
आरोहे धैवत विरहितः षड्जवादी तथास्मिन् ॥
संवादी च प्रकृतिरुचिरो मध्यमः संप्रदिष्टः ।
पूर्वे यामे सरस मतिभिर्गीयतेऽसौ निशायाम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ।

मरी निसौ रिमौ पश्च धपौ मरी निसौ तथा ।
पूर्वयामे भवेद्रात्र्यां श्यामाख्यो रिपशोभनः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

मध्यम दो तीवर सबहि धैवत चढ़त न लीन्ह ।
सम वादी संवादि तें शाम राग कहि दीन्ह ॥

रागचन्द्रिकासार ।

राग श्यामकल्याण-कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसे कोई-कोई केवल 'श्याम' नाम से सम्बोधित करते हैं। यह भी कल्याण का एक प्रकार माना जाता है। इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। आरोह में धैवत वर्ज्य होता है। इसका वादी स्वर षड्ज और सम्वादी मध्यम है। कुछ लोगों के मत से वादी ऋषभ है। कहीं-कहीं पर इसके अनुरूप प्रचार भी है। इस राग के उठाव में कामोद का अङ्ग स्पष्ट दिखाई देता है, परन्तु इस राग में कामोद जैसा नि और ग स्वरों का अल्पत्व नहीं होता। इस राग में निषाद स्वर स्पष्ट रूप से, जोरदार ढङ्ग से लगता है। इस कारण यह कामोद से भिन्न हो जाता है। इस राग में 'रेम' संगति रागवाचक है। कामोद में इस प्रकार 'रेप'

संगति है। 'मरे' स्वर संगति से इस राग में मल्लार का आभास हो जाता है, परन्तु निषाद स्वर स्पष्ट रूप से प्रयुक्त होने से यह मल्लार से भिन्न किया जा सकता है। कई लोगों का मत है कि इस राग की उत्पत्ति हमीर, गौड़सारङ्ग और केदार रागों के मिश्रण से होती है।

उठाव.

मरे, निसा, रे, मंप, धप, मरे, निसा।

चलन.

सा, रे, मंप, पधप, मंपधप, मरे, निसा, रेमंप, गमरे, नि, सा।

श्यामकल्याण—त्रिताल (द्रुत).

स्थायी.

गम	पध	मंप	गम	पग	म	रे	सा	रे	—	सा	सा	रे	—	नि़	सा
श्याऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	म	क	ल्या	ऽ	ऽ	ण	गा	ऽ	व	त
०				३				×				२			
मं	मं	प	प	मं	प	ध	प	ध	—	—	मं	प	—	म	ग
नि	स	दि	न	च	तु	र	गु	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
०				३				×				२			

अन्तरा.

प	—	सां	सां	सां	—	सां	—	प	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प
मे	ऽ	ल	क	ल्या	ऽ	णी	ऽ	अं	ऽ	श	ख	र	ज	क	र
०				३				×				२			
मं	—	प	प	मं	प	ध	प	ध	—	—	मं	प	—	म	ग
म	ऽ	ध्य	म	जु	गु	ल	गु	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
०				३				×				२			

श्यामकल्याण—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

(ग)प	—	मग	म	रे	सा	रे	(रे)नि़	सा	सा
सू	ऽ	नोऽ	ऽ	अ	हो	ऽ	श्या	ऽ	म
×		२			०		३		
(प)मं	(प)मं	प	—	ध	प	ध	(ध)मं	प	मग
इ	त	नी	ऽ	मो	री	बि	नं	ऽ	तीऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

(म)प	–	सां	–	सां	सां	–	(नि)सां	(सां)रें	सां
क	ऽ	ल्या	ऽ	ण	के	ऽ	सं	ऽ	ग
×		२			०		३		
(नि)सां	ध	सां	–	रें	सां	सां	(सां)ध	नि	प
का	ऽ	मो	ऽ	द	को	मि	ला	ऽ	य
×		२			०		३		
(प)म॑	–	(प)म॑	प	प	प	नि	(ध)म॑	प	प
गा	ऽ	ओ	ऽ	च	तु	र	रू	ऽ	प
×		२			०		३		
(प)म॑	(प)म॑	(प)म॑	प	ध	प	ध	(ध)म॑	प	मग
इ	त	नी	ऽ	क	ही	ऽ	मो	ऽ	रीऽ।
×		२			०		३		

श्यामकल्याण–झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

(रे)म	रे	सारे	(रे)नि़	सा	(म)रे	–	(प)म॑	प	प
भू	ल	नऽ	आ	हिं	डो	ऽ	रे	स	ब
×		२			०		३		
(म)प	रें	सां	(नि)ध	प	(प)म॑	–	प	(प)ध	प
स	खी	न	मि	ल	के	ऽ	ऽ	अ	ब
×		२			०		३		

अन्तरा.

मं		प							
प	प	सां	—	सां	सां	—	रें	सां	—
प	च	रं	ऽ	ग	पा	ऽ	ट	की	ऽ
×		२			०		३		
सां	नि						सां		
ध	ध	सां	—	रें	सां	—	ध	नि॒	प
डो	ऽ	रे	ऽ	ज	हां	ऽ	नं	ऽ	द
×		२			०		३		
ध									
प	प	रें	सां	—	सां	ध	नि॒	प	प
कुं	व	र	प्या	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	झु
×		२			०		३		
प					ध				
मं	—	प	ध	—	मं	—	प	ध	प
ला	ऽ	व	त	ऽ	है	ऽ	ऽ	ज	न
×		२			०		३		
रे			सा						
म	रे	सा	नि॒,	सा	स्थायी के अनुसार				
झू	ल	न	आ,	हिं					
×		२							

श्यामकल्याण—त्रिताल

गम	पध	मंप	गम	पग	मरे	नि॒सा	रे	नि॒	—	सा	—	रे	—	नि॒	सा
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वन	की	सां	ऽ	ऽ	ऽ	झ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
मं	—	प	—	मं	प	ध	प	ध	—	मं	—	प	—	म	ग
मो	ऽ	को	ऽ	सु	ख	द	भ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
०				३				×				२			

अन्तरा.

म	ग	प	प	सां	–	–	–	रें	सां	नि	धनि	मं	ध	प	–
आ	ऽ	नं	द	की	ऽ	ऽ	ऽ	त	रं	ऽ	ग	मो	ऽ	को	ऽ
०				३				×				२			
मं	मं	प	–	मं	प	ध	प	ध	–	मं	–	प	–	म	ग
उ	ठ	त	ऽ	न	ई	ऽ	न	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

श्यामकल्याण–त्रिताल

स्थायी.

												सा			
गम	पध	मंप	गम	पग	मरे	निसा	रे–	नि	–	सा	–	रे	नि	सा	–
नींऽ	दन	आऽ	वत	पिया	बिन	देऽ	खेऽ	आ	ऽ	ली	ऽ	मै	ऽ	का	ऽ
०				३				×				२			
प				प		प		प							
मं	–	प	–	मं	प	ध	प	ध	–	मं	–	प	–	म	ग
कै	ऽ	से	ऽ	प	रे	अ	ब	चै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ।
०				३				×				२			

अन्तरा.

												सां			
प	प	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	सां	रें	सां	ध	–	प	प
घ	री	प	ल	छि	न	मो	हे	जु	ग	सी	ऽ	ला	ऽ	ग	त
०				३				×				२			
मं	मं	प	–	मं	प	ध	प	ध	–	मं	–	प	–	म	ग
म	ग	जो	ऽ	व	त	र	हे	नै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ।
०				३				×				२			

श्यामकल्याण–एकताल, विलम्बित (दूसरा प्रकार).

स्थायी.

ग
म
ध

			रे	म							
(म)	गरे	ग	निसा	रे	—	—	मं	प	मंप	ध	प
टा	SS	S	कारि	हू	S	S	स्ने	S	SS	च	रा
३		४		×		०		२		०	

	मं			ग		रे	ग				म
मंप	प(प)	मग	मरे	रे	ग	ग	मग	प	म	रे,	रे
SS	SS	गेS	Sअं	घे	S	S	रीS	S	S	S,	घ
३		४		×		०		२		०	

म			रे
रे	प	म,गरे	निसा
टा	S	S,SS	कारि
३		४	

(अथवा)

ग			रे
म	(म)	–रे	निसा
टा	S	SS	कारि
३		४	

अन्तरा.

मं								प		सां	
पप	सां	सांसां	–सां	रें	सां	—	निसां	सां	(सां)	ध	निप
इला	जे	दमा	Sगे	म	कुन्	S	SS	क्रू	S	S	Sज
३		४		×		०		२		०	

म	म			ग	
प	प(प)	मग	मरे	रे	ग
चा	ऽऽ	गऽ	ऽअं	धे	ऽ
३		४		×	

स्थायी के अनुसार

श्यामकल्याण–रूपक (विलम्बित).

स्थायी.

			रे	म			प								
(म)	गरे	ग	निसा	रे	ऽ	ऽ	म	–	प	रे	म	प	प		
म्हा	राऽ	ऽ	रसि	या	ऽ	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	म		
२		३		०			२		३		०				
प			मं				म								
ध	मं	प	प(प)	मग	म	रे	रे	ग	म	प	प	मग	मरे		
थां	ऽ	ऽ	नेऽ	चाऽ	ऽ	है	हो	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽऽ	ऽज		
२		३		०			२		३		०				

अन्तरा.

मं				नि		नि	नि	सां				सां		
प	–	सां	–	सां	रें	सां	सां	ध	सां	रें	सां	धनि	प	
दा	ऽ	सी	ऽ	थां	ऽ	री	ज	न	म	ज	न	मऽ	री	
२		३		०			२		३		०			
प	प				नि		प							
मं	मं	प	प,मंप	सां	ध	प	मं	प	ध	मं	प	मग	मरे	
थें	तो	मा	का,ऽऽ	ऽ	सि	र	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जऽ	ऽऽ	
२		३		०			२		३		०			

श्यामकल्याण—त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी.

ग रे रे	म	प प	प
म गग – निसा	रे – – रे	मं मं प मंप	ध मंप म ग
जि योऽ ऽ मेरो	ला ऽ ऽ ल	ब न रा ऽऽ	मे ऽऽ रा ऽ
३	×	२	०
ग	सा	प	प मं
म (म) – रे	सा – ध निप	मंरे मं प –	ध मंप प(प) मग
अ ति ऽ ऽ	मो ऽ हे ऽऽ	कंऽ ग ना ऽ	ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
३	×	२	०

(अथवा)

		प	प
		मंमं प – मंप	मंरे मंप – –
		बन रा ऽ ऽऽ	मेऽ राऽ ऽ ऽ
		२	०
ग ग	नि सा	प	प मं
म म(म) – रे	सा – धनि प	मंरे मंमं प मंप	ध मंप प(प) मग
अ तिऽ ऽ ऽ	सो ऽ ऽऽ हे	कंऽ ऽग ना ऽऽ	ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
३	×	२	०

अन्तरा.

मं	नि	सां	नि सां
प प सां, सां	सां रें सां, सां	ध निध सां रें	सां (सां) ध निप
स र स, सु	नै ऽ रा, ब	ना ऽऽ ये ऽ	से ऽ रा ऽबि
३	×	२	०
मं	सां	प	ध
प रें सां –	ध नि प –	मं प ध प	मंप प(प) मग गमप
ग ऽ जे ऽ	सो ऽ हे ऽ	मो ती ल रा	माऽ ऽऽ लाऽ ऽऽऽ
३	×	२	०

श्यामकल्याण–चौताल

स्थायी.

	ग		रें			ग			प		
	म	ग	नि़	—	सा	रे	—	—	मं	प	प
ऽ	पा	ऽ	र्व	ऽ	ति	ना	ऽ	ऽ	थ	ऽ	अ
०		३		४		×		०		२	
ध	—	मं	प	गग	प	प	—	मग	म	रे	सा
ना	ऽ	थ	ना	ऽऽ	थ	बि	ऽ	श्वऽ	ना	ऽ	थ
०		३		४		×		०		२	
			नि			प	ध		मं		
रे	सा	सा	ध़	नि़	प़	ध	मं	प	प	गम	प
क	र	त्रि	शू	ऽ	ल	त्रि	रा	ऽ	ज	ऽऽ	त
०		३		४		×		०		२	

अन्तरा.

			प						नि		
प	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	—	सां	रें	सां
ब	स	न	भु	ष	न	ग	ज	ऽ	च	ऽ	र्म
×		०		२		०		३		४	
सां		नि							सां		
ध	—	ध	सां	—	रें	सां	सां	—	ध	नि	प
रुं	ऽ	ड	मा	ऽ	ल	प	शू	ऽ	प	ऽ	ति
×		०		२		०		३		४	
मं		प					रें		सां		
प	—	रें	रें	सां	सां	सां	सां	—	ध	नि	प
तां	ऽ	ड	व	ड	म	रू	ऽ	ऽ	धू	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
ध			ध								
मं	प	ध	मं	प	प						
रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	त						
×		०		२							

श्यामकल्याण–चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

											म॑
											प
											आ
	रे		रे	म			प				म
म	ग	–	नि़सा	रे	–	–	म॑	प	म॑	प,	प
लीं	ऽ	ऽ	रींऽ	पा	ऽ	ऽ	व	म	ार	तु,	पि
३		४		×		०		२		०	

(अथवा)

				म			प		म॑		म॑
				रे	–	–	म॑	प	प	प,	प
				पा	ऽ	ऽ	व	म	रि	तु	पि
				×		०		२		०	

				नि			नि–सा				म॑
–	मग	मरे	सा	सा	रे	सा	सा	ध़	नि़	प़,	प़
ऽ	याऽ	ऽऽ	के	आ	व	न	को	ऽ	ऽ	ऽ	मो
३		४		×		०		२		०	

				नि			प				ग
सा	रे	सा	सा	सा	ध	प,	ध	म॑	प	मग	प
हे	सु	ना	ए	आ	ऽ	न,	ये	ऽ	ऽ	नऽ,	आ।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

म॑			प								
प	–	–	सां	–	सां	सां	–	–	रें	सां	–
फा	ऽ	ऽ	गु	ऽ	न	के	ऽ	ऽ	दि	न	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि									सां		
सां	ध	–	सां	–	रें	सां	–	–	ध	नि॒	प
ऍ	ऽ	ऽ	से	ऽ	हि	बी	ऽ	ऽ	त	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

प	प					मं			सां		
मं	मं	–	प	–	प	प	सां	–	ध	नि॒	प
चि	र	ऽ	हा	ऽ	स	ता	ऽ	ऽ	व	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

प			प				ग
मं	प	मंप	ध	मं	प	मग	प
दि	न	ऽऽ	रै	ऽ	ऽ	नऽ,	आ
×		०		२		०	

राग मालश्री

प्रख्याता मालवश्रीः सगमपनियुता धर्षभाभ्यां विहीना ।
प्रारोहे चावरोहेऽप्यमृदुगमनिका भ्राजते सौडुवैव ॥
प्रोक्तोऽस्यां पंचमोंऽश प्रविलमति च संवादिरूपस्तु षड्जः ।
मोद्ग्राहन्यामगाजत्सुरुचिरमतिभिर्गीयते सायमेषा ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ।

मगौ पमौ गपौ निश्च सनी पमौ गपौ गसौ ।
मालश्रीः पांशिका सायं गपसंगति मंडिता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

रिखब नहीं धैवत नहीं तीव्र गमनि बखानि ।
सप संवादीवादितें मालसिरी पहिचानि ॥

रागचन्द्रिकासार ।

मालश्री राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसमें रि और ध स्वर वर्ज्य होते हैं। जाति औड़व-औड़व है। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी स्वर षड़ज है। इसका गान समय संध्याकाल है। कुछ लोगों का कथन है कि सा, ग, और प, इन तीनों स्वरों से ही यह राग गाना चाहिये। परन्तु राग के लिये कम से कम पांच स्वर होने चाहिये, इसलिये यह कथन मान्य नहीं किया जा सकता। फिर भी यह निर्विवाद है कि, इस राग में म और नि स्वर अत्यन्त गौण रूप से और केवल स्वर संख्या की पूर्ति करने के लिये ही ग्रहण किये जाते हैं। इस राग में जगह-जगह ग और प स्वरों की संगति दृष्टिगोचर होती है। इस राग में तार षड़ज से पंचम पर उतरने की स्वररचना बहुत ही मधुर और रंजक होती है।

उठाव.

सा, गप, मंग, प, नि, सां, निप, मंग, पग, सा

चलन.

प, प, पगसा, सासागगप, प, पमंग, प ग सा,
सासापनिसा, गपग, मंग, सा, निसागपमंग, पग, सा;
पपगसा, गपसां, निसांगंसां, पंमंगंसां,
निनिपमंग, पसां, सांनिपग, सागपसां, निपगपग, गसा ।

मालश्री—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि़ मं		प	
सा सा ग प	प – मं ग	मं ग ग प	ग सा सा –
स ब स खि	यां ऽ मि ल	मं ऽ ग ल	गा ऽ वो ऽ
३	×	२	०
नि़	मं	ग	
सा प़ सा सा	ग प ग सा	प – ग प	ग – सा –
मा ऽ ल मि	री ऽ सु र	नी ऽ के ल	गा ऽ वो ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

मं		नि	पं
प – सां सां	सां – सां –	सां गं गं पं	गं पं गं सां
मे ऽ च क	ल्या ऽ णी ऽ	मे ऽ ल व	ना ऽ वो ऽ
३	×	२	०
नि	ग	नि प ग	प
सां सां प ग	सा ग प सां	सां प ग प	ग प ग सा
रि ध सु र	व र जि त	रू ऽ प दि	खा ऽ वो ऽ।
३	×	२	०

मालश्री—झूमरा

ग		प प	ग
प – ग प	ग – सा	सा – ग ग	प – प
मे ऽ ल क	ल्या ऽ ण	औ ऽ ड व	रा ऽ ग
३	×	२	०
	प		सां
प प ग सा	सा ग प	प – सां –	नि प ग
रि ध व र	ज क र	चौ ऽ थे ऽ	प्र ह र
३	×	२	०

प – सां मां	पं गं सां प	प प ग प	ग – सा
मा ऽ ल व	सि रि को	रू र त ब	खा ऽ न ।
३	×	२	०

अन्तरा.

प – सां सां	सां – सां	सां गं गं पं	गं – सां
पं ऽ च म	वा ऽ दी	जा ऽ में ऽ	सो ऽ हे
३	×	२	०
सां सां प ग	सा ग प	सां प ग प	ग – सा
म नि सु र	अ ऽ ल्प	च तु र प्र	मा ऽ न ।
३	×	२	०

मालश्री–झपताल

स्थायी.

सा प	ग – सा	सा मा	सा – सा
क हे	क ऽ ल्प	द्रु म	ग्रं ऽ थ
×	२	०	३
सा –	सा ग ग	सा ग	प – प
मा ऽ	ल सि रि	को ऽ	रू ऽ प
×	२	०	३
प प	मं ग –	सा ग	प प सां
रि ख	ब धै ऽ	व त	व र ज
×	२	०	३
सां नि	प ग प	ग प	ग ग सा
क ऽ	ल्या ऽ खि	सों ऽ	ज नि त ।
×	२	०	३

अन्तरा.

प	—	सां	सां	सां	सां	—	सां	—	सां
पं	ऽ	च	म	क	रें	ऽ	वा	ऽ	दि
×		२			०		३		
सां	सां	गं	गं	मं	गं	गं	सां	—	सां
ख	र	ज	सु	र	स	म	वा	ऽ	दि
×		२			०		३		
सां	सां	नि	प	प	ग	सा	ग	प	सां
तृ	ति	य	ऽ	प्र	ह	र	दि	व	स
×		२			०		३		
सां	—	प	ग	प	ग	प	ग	ग	सा
गा	ऽ	व	त	गु	नी	ऽ	सु	म	त
×		२			०		३		

मालश्री—सूलताल

स्थायी.

सा	—	ग	ग	प	—	प	प	प	ग
ओं	ऽ	ड	त्र	मा	ऽ	ल	सि	री	ऽ
×		०		२		३		०	
प	—	प	ग	प	ग	प	ग	—	सा
रा	ऽ	ग	नि	नि	त	क	हा	ऽ	य
×		०		२		३		०	
प़	—	सा	—	सा	—	सा	रे	सा	सा
गा	ऽ	को	ऽ	खा	ऽ	ड	व	क	र
×		०		२		३		०	

सां	—	प	प	प	ग	प	ग
सा	ऽ	द	त	गु	नि	दि	खा
×		०		२		३	

—	सा
ऽ	य।
०	

अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
सं	पु	र	न	सु	र	ती	ऽ	व	र
×		०		२		३		०	
		सां		पं					
सां	—	गं	गं	गं	पं	गं	—	सां	सां
सा	ऽ	द	त	ज	ग	गा	ऽ	व	न
×		०		२		३		०	
				ग					
सां	सां	प,	ग	सा	ग	प	ध	प	—
र	सि	क,	न	बा	ऽ	ग	ब	हा	ऽ
×		०		२		३		०	
सां	सां	प	ग	प	ग	प	ग	—	सा
दु	र	कों	ऽ	म	न	रि	झा	ऽ	य।
×		०		२		३		०	

मालश्री—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि प		म	प
सा सा ग प	— प सां सां	प ग — प	ग प ग सा
क र त हो	ऽ स क ल	सिं गा ऽ र	स ज नी ऽ
०	३	×	२
सा प		सा प	
प — ग प	ग — सा सा	सां — प ग	प ग सा —
आ ऽ ज पि	या ऽ घ र	मे ऽ रे आ	ऽ वें गे ऽ।
०	३	×	२

अन्तरा.

म॑ प प सां सां	– सां सां –	नि सां गं गं पं	गं पं गं सां
द र स न	ऽ भ ये ऽ	श्या ऽ म सुं	द र के ऽ
०	३	×	२
पं – गं पं	– गं सां सां	सां सां प प ग	प ग सा –
रो ऽ म रो	ऽ म स खी	ह र ख पा	ऽ वें गे ऽ।
०	३	×	२

मालश्री–त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि़ सा सा प ग प	म॑ प पम॑ ग ग प	प ग –सा –सा	सा – – –
बा जे रे ऽ	ठु मऽ क ठु	म क ऽपा ऽय	ला ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
नि़ सा सा प ग प	म॑ प पम॑ ग नि सां	प ग –सा –सा	सा – – –
झ न न न	झ नऽ न ठु	म क ऽपा ऽय	ला ऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

म॑ प
कै

प सां – सां	सां – नि सां सां	सां सां मं गं पं	पं गं गंमं गं सां
से क ऽ र	आ ऽ बुं स	दा रं गी ले	मं मऽ द सा
३	×	२	०

नि नि	प ग		
सां ‿सां सां सां	(प) प ग प	प ग ‿सा ‿सा	सा – – –
सा ऽस्न नं द	क्री ला ज ठु	म क ऽपा ऽय	ला ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०

मालश्री–एकताल, (मध्यलय).

स्थायी.

नि़	प			प							प
सा	ग	प	प	सां	–	–	प	ग	–	ग	प
में	डी	जिं	द्	तू	ऽ	ऽ	सा	ऽ	ऽ	डे	ऽ
३		४		×		०		२		०	
				सा	प						
–	ग	–	सा	प	ग	–	प	–	ग	सा	–
ऽ	ना	ऽ	ल	ल	गी	ऽ	वे	ऽ	मि	यां	ऽ
३		४		×		०		२		०	
				सा		प					
सा	प़	सा	सा	प	–	ग	प	ग	ग	सा	सा
मै	डी	ब	ल	वें	ऽ	ख	न	ज	र	भ	र
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

र्म		प						नि		पं	
प	प	सां	–	सां	–	–	सां	सां	गं	गं	पं
हु	ण	बं	ऽ	दी	ऽ	ऽ	तू	सा	ऽ	डा	ऽ
३		४		×		०		२		०	
				नि	नि						
गं	–	सां	–	सां	सां	पग	प	ग	–	सा	सा
सां	ऽ	ईं	ऽ	मैं	ऽ	डाऽ	अ	दा	ऽ	रं	ग
३		४		×		०		२		०	

मं	सा	सा	प	मं	
प़ प़	सा सा	प –	ग प	– ग	सा सा
क रे	में डे	ना ऽ	ल तू	ऽ सु	ध र।
३	४	×	०	२	०

मालश्री—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

नि़
सा
आ

सा	ग	प	
– गग प –	प (प) – ग	ग प मं गप	ग –सा सा –
ऽ ऽऽ वे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ऽ ऽऽ	रां ऽज ना ऽ
३	×	२	०

(अथवा)

नि़ मंसा
सा गग प –
आ ऽऽ वे ऽ
३

नि़	मं	मं	मं
सा ग प प	प (प) प ग	प सां सां प	प गप ग सा,सा
वे ऽ तुं सी	नि त नि त	र दी में नु	तें डीऽ चा ऽ,आ
३	×	२	०

(अथवा)

मं
प सां प ग
रें दी में नु
२

अन्तरा.

मं		मं प	
प ग प ,प	सां – सां –	प पग ग प	ग – सा –
औ ऽ र ,कि	सूं ऽ दा ऽ	मु खऽ हू ऽ	ना ऽ वे ऽ
३	×	२	०
		(अथवा)	
		मं प	
		प पग – गप	
		मु खऽ ऽ हूऽ	
		२	
प	प	नि़ प	नि़
सां वप (प) ग	ग प ग सा	सा सांसां (प) ग	प –ग सा, सा
दे ऽख ली ऽ	म न रं ग	वे ऽख लीं तें	डी ऽनि गा, आ.
३	×	२	०

मालश्री–रूपक

स्थायी.

मं					
प प	ग – सा	सा –	नि़ सा	ग प ग	प –
म ख	दू ऽ म	सा ऽ	बि र	क लि य	रो ऽ
३	०	२	३	०	२
	प				
प प	सां – सां	प –	ग प	ग – सा	सा –
तो रे	द ऽ र	बा ऽ	र में	आ ऽ यो	है ऽ
३	०	२	३	०	२
सा	सा		मं		
प़ –	सा – ग	प प	प प	ग – सा	
जै ऽ	दी ऽ ऽ	ऽ न	म ख	दू ऽ म	
३	०	२	३	०	

अन्तरा.

								नि			सां				
प	–	सां	सां	–	सां	सां	सां	गं	–	गं	–	पं	गं
इ	ऽ	च्छा	पू	ऽ	र	न	की	ऽ	ऽ	जे	ऽ	द	र
०			२		३		०			२		३	
गं	सां	–	पं	गं	सां	–	प	सां	–	प	–	ग	प
स	की	ऽ	तु	म	हो	ऽ	अ	ति	ऽ	ही	ऽ	प	र
०			२		३		०			२		३	
ग	–	–	सा	–	प	प	ग	–	सा				
वी	ऽ	ऽ	न	ऽ	म	ख	दू	ऽ	म				
०			२		३		०						

मालश्री–सूल (मध्यलय)

स्थायी.

सा									
प	प	प	ग	प	ग	प	ग	–	सा
अ	व	गु	न	ब	क	स	मे	ऽ	रे
×		०		२		३		०	
नि			सा						
सां	सा	ग	ग	प	सां	सां	प	–	ग
कृ	पा	ऽ	क	रे	क	र	ता	ऽ	र
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

(म)प	प	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां
सु	न	ले	ऽ	इ	त	नि	बि	न	ति
×		०		२		३		०	
(नि)सां	सां	गं	गं	–	पं	पं	गं	–	सां
क	र	त	हों	ऽ	अ	ब	तो	ऽ	सें
×		०		२		३		०	
(म)ग़	प	सां	सां	(म)प	(प)ग	प	ग	–	सा
दि	न	दि	न	अ	ढ़ो	ऽ	मे	ऽ	रो
×		०		२		३		०	
(नि़)सा	प़	सा	सा	ग	ग	प	प	सां	सां
स	र	स	रा	ऽ	ग	सु	र	सु	ध
×		०		२		३		०	
सां	–	प	ग	प	ग	प	ग	–	सा
अ	ऽ	च्छ	र	मो	हे	ऽ	ता	ऽ	र ।
×		०		२		३		०	

मालश्री–झपताल

स्थायी.

(नि़)सा	प	ग	–	सा	सा	–	सा	–	सा
उ	ठ	रे	ऽ	मु	सा	ऽ	फी	ऽ	र
×		२			०		३		

सा	सा	सा	ग	ग	सा	ग	प	प	ग
क	ब	लो	ऽ	तुं	सों	वे	गो	अ	ब
×		२			०		३		
		प							
सा	मा	ग	प	प	प	—	प	मां	सां
अ	व	ध	स	ब	खो	ऽ	य	क	ब
×		२			०		३		
		ग			प				
प	ग	सा	ग	प	ग	प	ग	—	सा
र	ब	को	ऽ	सं	भा	ऽ	रे	ऽ	गो।
×		२			०		३		

अन्तरा.

मं									
प	—	सां	मां	सां	सां	—	सां	मां	—
दो	ऽ	दि	न	की	सां	ऽ	स	को	ऽ
×		२			०		३		
					पं				
सां	सां	गं	गं	पं	गं	पं	गं	—	सां
युं	हि	क	र	त	चि	म	वा	ऽ	स
×		२			०		३		
नि									
सां	—	प	ग	मा	सा	ग	प	सां	सां
अं	ऽ	त	म	म	य	न	को	ऽ	ऊ
×		२			०		३		
			प		प				
मां	—	प	ग	प	ग	प	ग	—	सा
का	ऽ	म	न	हिं	आ	ऽ	वे	ऽ	गो।
×		२			०		३		

मालश्री—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि़	सा								
मा	प	ग	–	सा	सा	सा	सा	–	सा
दु	र	गे	ऽ	दु	रि	त	दू	ऽ	र
×		२			०		३		
नि़					ग				
सा	सा	सा	ग	ग	सा	ग	प	प	प
र	हो	दि	न	दु	ख	दा	ति	न	को
×		२			०		३		
नि़		मं							
सा	सा	ग	प	प	प	–	प	सां	प
उ	द	र	ऽ	धि	दा	ऽ	र	द	ल
×		२			०		३		
			प		प				
प	ग	सा	ग	प	ग	प	ग	सा	–
दा	नि	व	दं	ड	दा	ऽ	इ	यो	ऽ ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

मं									
प	प	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	–
द्वं	द	फं	ऽ	द	मं	द	दि	से	ऽ
×		२			०		३		
सां	सां	सां	–	सां	सां	–	प	प	ग
पा	द	प	ऽ	अ	दा	ऽ	स	न	को
×		२			०		३		

(मं)प	प	ग	–	सा	सा	ग	प	प	सां
दु	र	वा	ऽ	सिं	दु	र	स	र	न
×		२			०		३		
सां	सां	प	(प)ग	प	(प)ग	प	ग	सा	–
दा	रु	न	द	व	दा	ऽ	इ	यो	ऽ
×		२			०		३		

संचारी.

(मं)प	प	ग	सा	–	ग	प	प	प	प
द	या	नि	धि	ऽ	द	र्प	द	ल	न
×		२			०		३		
ग	सा	सा	ग	प	(प)ग	प	सा	सा	सा
दु	ऽ	ष्ट	म	द	मो	ऽ	ह	ह	रो
×		२			०		३		
(नि़)सा	प़	सा	–	सा	ग	–	सा	सा	सा
द्वे	ष	दं	ऽ	भ	दू	ऽ	र	कि	यो
×		२			०		३		
(नि़)सा	ग	(ग)सा	ग	–	प	–	प	ग	–
दा	नि	द	म	ऽ	दा	ऽ	इ	यो	ऽ।
×		२			०		३		

आभोग.

(मं)प	ग	प	प	सां	सां	सां	सां	–	सां
दुं	ऽ	दु	भि	मृ	दं	ग	ना	ऽ	द
×		२			०		३		

नि									
सां	सां	गं	सां	सां	सां	—	प	प	ग
ना	र	द्	अ	नु	वा	ऽ	द्	क	रे
×		२			०		३		
					प				
ग	ग	सा	सा	—	ग	—	प	प	सां
अ	नं	द्	दे	ऽ	खे	ऽ	ब	ल्ल	भ
×		२			०		३		
मं		प			प				
प	प	ग	ग	प	ग	प	ग	सा	—
दि	ल	दु	नो	ब	धा	ऽ	इ	या	ऽ।
×		२			०		३		

मालश्री–सूलताल

स्थायी.

सां	—	प	प	ग	ग	प	ग	—	सा
दा	ऽ	न	क	र	त	स	मा	ऽ	न
×		०		२		३		०	
सा	सा	ग	ग	प	प	—	प	ग	ग
भु	ज	प	ति	म	हा	ऽ	ग्या	ऽ	न
×		०		२		३		०	
प	—	प	प	प	—	प	ग	—	प
वि	ऽ	क्र	म	जो	ऽ	त	दी	ऽ	प
×		०		२		३		०	
सां	—	सां	प	प	ग	प	ग	—	सा
म	ऽ	ध्य	म	बु	ध	बि	ना	ऽ	न।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	—	—	सां	—	सां
बि	भि	ख	न	को	ऽ	ऽ	दी	ऽ	नो
×		०		२		३		०	
सां	गं	—	सां	—	सां	—	सां	प	प
ए	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ज	ऽ	रा	ऽ	म
×		०		२		३		०	
प	—	प	प	प	ग	प	ग	—	सा
रा	ऽ	व	न	मा	ऽ	र	सी	ऽ	ता
×		०		२		३		०	
गं	—	सां	प	प	ग	प	ग	—	सा
ला	ऽ	यो	च	तु	र	सु	जा	ऽ	न।
×		०		२		३		०	

मालश्री—सूलताल

स्थायी.

प	—	ग	ग	सा	—	सा	—	—	—
नि	ऽ	र्म	ल	मौं	ऽ	ख	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	
सा	—	ग	—	प	ग	प	—	—	—
चं	ऽ	द्रा	ऽ	हू	ऽ	तें	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	

सा	–	ग	–	प	–	सां	सां	प	प
जा	ऽ	के	ऽ	दे	ऽ	ख	त	उ	द
×		०		२		३		०	
ग	प	ग	–	सा	–	प	ग	प	–
च	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	चं	ऽ	दी	ऽ
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	–	सां	सां	सां	–	–	–	सां	सां
दे	ऽ	ख	त	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ख	त
×		०		२		३		०	
प	–	प	सां	सां	–	प	–	ग	प
आ	ऽ	न	प	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	
ग	–	सा	–	सा	ग	प	–	सां	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	नो	ऽ	दा	ऽ
×		०		२		३		०	
प	–	ग		ग	सा	प	ग	प	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मि	न	कौं	ऽ	दी	ऽ।
×		०		२		३		०	

मालश्री–धमार

स्थायी.

नि			
सा प प प	ग सा – ग –	सा –	सा – सा
जो ऽ ब न	म द ऽ मा ऽ	ती ऽ	ना ऽ र
३	×	२	०
सा – सा ग	सा ग – प ग	प –	प सां –
आ ऽ व त	कूं ऽ ऽ ज न	में ऽ	सं ऽ ऽ
३	×	२	०
		प	
सां प – प	प ग – प –	ग प	ग – सा
ग ऽ ऽ लि	यें ऽ ऽ ऽ ऽ	ब्रि ज	रा ऽ ज।
३	×	२	०

अन्तरा.

प ग – प –	सां सां	सां – –	– सां सां –
हो ऽ ऽ हो ऽ	क र	धा ऽ ऽ	ऽ व त ऽ
×	२	०	३
	पं		
सां सां गं पं पं	गं पं	गं – सां	सां गं सां सां
ग रे ऽ लि प	टे ऽ	जा ऽ त	ने ऽ क न
×	२	०	३
	प		
प ग – प –	ग प	ग – सा	
आ ऽ ऽ ऽ ऽ	वे ऽ	ला ऽ ज।	
×	२	०	
सा			
प प प प	स्थायी के अनुसार		
है जो ब न			
२			

बिलावल थाट

बिलावल थाट के राग (२८)

हेमकल्याण.
यमनीबिलावल.
देवगिरी.
औड़व देवगिरी.
सरपरदा.
लच्छासाख.
शुक्ल बिलावल.
कुकुभ.
नट बिलावल
नट.
नट नारायण.
नट बिहाग.
बिहागड़ा.
पटबिहाग.
सावनी (बिहाग अङ्ग)
कामोद नाट.
केदार नाट.
मलुहा केदार.
मलुहा.
जलधर केदार.
दुर्गा.
छाया.
छायातिलक.
गुणकली.
पहाड़ी.
मांड.
मेवाड़ा.
हंसध्वनि.

राग हेमकल्याण.

पधौ पसौ रिसौ मश्च गपौ धपौ गमौ रिसौ ।
हेमकल्याणकः सांशः प्रारोहे निधदुर्बलः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

मृदु मध्यम तीवर सबै चढ़त न धैवत नेम ।
सप वादी संवादितें राग कहावत हेम ॥

रागचन्द्रिकासार ।

राग हेमकल्याण की उत्पत्ति बिलावल थाट से होती है। इसके आरोह में धैवत और निषाद स्वर दुर्बल होते हैं। कुछ लोगों का मत निषाद को बिलकुल वर्ज्य मानने का भी है। वादी स्वर षड्ज और सम्वादी पंचम है। राग का विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तक में होता है। जानकारों का मत है कि शुद्धकल्याण और कामोद के संयोग से यह राग उत्पन्न होता है। रात्रि के द्वितीय प्रहर में इसे गाया जाता है। इसका चलन विलम्बित लय में अधिक अच्छा दिखाई देता है। बहुधा इस राग का प्रारम्भ मन्द्र पंचम से किया जाता है। इस राग पर कुछ मलुहाकेदार की छाया जान पड़ती है, परन्तु निषाद स्वर वर्ज्य करने या असत्प्राय रखने से यह मलुहाकेदार से भिन्न हो जाता है।

कहीं-कहीं इस राग की जोड़ी का एक 'खेम' नामक राग भी सुनाई देता है; परन्तु वह बहुत थोड़े लोगों को याद है और उसके लक्षणों के सम्बन्ध में भी एक मत प्राप्त नहीं होता।

उठाव.

प़, धप़, सा, रेसा, सामगप, धप, ग, मरेसा ।

चलन.

प़प़ धप़, सा, सा, रेंसा, गमरेसा, गमपगमरेसा ।
सा, मगप, गमरेसा रेसा, धप़, सा, गमप,
गमरेसा सा, मग, रेसा, प, धपसांधप, धप,
गमप, गमरेसा, रेसा, धप़सा ।

हेमकल्याण—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

								सा							
प़	ध़	प़	—	सा	—	—	—	ध़	—	सा	—	सा	रे	सा	—
अ	ब	मैं	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	जा	ऽ	य	क	हूं	ऽ
३				×				२				०			
नि़		ग						ग			प				
सा	सा	म	ग	प	—	—	—	प	(प)	गमप	ग	म	रे	सा	—
अ	प	ने	जि	या	ऽ	ऽ	ऽ	कौ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ	बि	था	ऽ।
३				×				२				०			

अन्तरा.

नि़		सा					प								
सा	सा	म	ग	प	—	प	सां	—	प	गमप	गम	सा	रे	सा	—
दि	न	ना	ऽ	चैं	ऽ	न	रैं	ऽ	न	नाऽऽ	ऽऽ	निं	दि	या	ऽ
३				×				२				०			
नि़								ग							
सा	—	मग	प	—	प	ध	प	म	रे	सा	—	—	रे	सा	—
कौ	ऽ	नऽ	जा	ऽ	य	क	हे	उ	न	से	ऽ	ऽ	क	था	ऽ।
३				×				२				०			

हेमकल्याण—एकताल (विलम्बित)

स्थायी.

म़				प़				सा			
प़	—	ध़	प़	सा	—	सा	—	रे	—	सा	सा
सा	ऽ	व	न	आ	ऽ	यो	ऽ	री	ऽ	य	ह
३		४		×		०		२		०	
नि़	ग			ग				ग			
सा	मग	प,पर्म	धप	प	—	ग	प	रे	—	सा	प़
मो	बिर	हि,नऽ	पर	को	ऽ	ऽ	प	की	ऽ	न्हे	ऽ
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

नि़	पप			मं							
सासा	गग	प	धप	प	प	ग	प	ग	रे	सारे	सा
चहुँ	ओर	ते	घन	उ	म	ड़	घु	म	ड़	आऽ	यो
३		४		×		०		२		०	
रे	प	ग		मं				ग			
सासा	गग	प	प	प	—	ग	प	रे	—	सा	—
मद	गज	आ	ऽ	दी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ।
३		४		×		०		२		०	

(अथवा)

नि़											
सा	मग	प	प	प	ध	प	ग	प	रे	सा	—
म	दऽ	ग	ज	आ	ऽ	दी	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ।
३		४		×		०		२		०	

हेमकल्याण—झपताल (मध्यलय) एक प्रकार

स्थायी.

प	म	प	ध	प	म	—	ग	—	सा
सुं	ऽ	द	ऽ	र	गो	ऽ	ल	ऽ	क
×		२			०		३		
नि़	सा	रे	रे	रे	रे	ग	म	प	ध
पो	ऽ	ल	न	पै	अ	न	मो	ऽ	ल
×		२			०		३		
म	—	ग	रे	ग	सा	सा	नि़	सा	रे
सों	ऽ	कूं	ऽ	ऽ	ड	ल	डो	ऽ	ल
×		२			०		३		

सा	—	ग	—	म	प	—	ग	रे	सा
नी	ऽ	प्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री।
×		२			०		३		

अन्तरा.

म	ग	म	—	ग	प	—	नि	सां	सां
हि	या	ह	ऽ	ल	के	ऽ	घू	ऽ	ति
×		२			०		३		
गं	—	रें	—	सां	नि	सां	नि	ध	प
मो	ऽ	ह	ऽ	न	की	ऽ	झ	ल	के
×		२			०		३		
(प)ग	प	नि	सां	नि	ध	प	प	ध	मग
सु	ध	री	अ	ल	के	ऽ	घुं	ग	रऽ
×		२			०		३		
सा	—	ग	—	म	प	—	ग	रे	सा
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री।
×		२			०		३		

राग यमनीबिलावल.



मता यमनपूर्विका पुनरियं हि वेलावली ।
प्रविष्ट इह तीव्रमध्यम इति स्वरूपे भिदा ॥
सपावभिमतौ सदा रुचिरवादिसंवादिनौ ।
मनोज्ञमधुरस्वरैरुषसि गीयते सांप्रतम् ॥

राागकल्पद्रुमांकुरे ॥१६॥

सरी गमौ गपौ मश्च धपौ मगौ मरी च सः ।
सपसंवादसंपन्ना द्विमेमनी प्रभातगा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३२॥

चढत तीरवमध्यम लगे ठाट बिलावलको हि ।
पस संवादीवादितें यमनबिलावल होहि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥१५॥

यमनीबिलावल, बिलावल थाट से उत्पन्न होने वाला एक बिलावल का भेद है। यह यमन और बिलावल, इन दोनों रागों के मिश्रण से उत्पन्न हुआ है। इसके गायन का समय प्रातःकाल माना गया है। इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। वादी षड़ज और संवादी पञ्चम है। आरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग कर यमन का अङ्ग दिखाया जाता है और स्पष्ट रूप से शुद्ध मध्यम लगाकर उसका निवारण किया जाता है। इसका रागवाचक प्रयोग "प, मं, प, गमगरे, गरेसा" है। इसका साधारण चलन बिलावल जैसा ही होता है।

उठाव.

सारेग, मग, पमंधप, गमगरे, गरेसा ।

चलन.

सा, रेग, रे, सा, निधनि, धपधनिसा, ग, मग, पमंप, गमगरे, गरेसा ।

यमनी बिलावल—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि़ सा	रे	म ग	—	म ग	म ग	म	गरे	ग	—
य	म	नी	ऽ	बि	ला	ऽ	व	ली	ऽ
×		२			०		३		
म॑ प	पम॑	प ध	प	प	प ग	म	गरे	ग	रेसा
स	ब	च	तु	र	मा	ऽ	न	त	ऽ
×		२			०		३		
नि़ सा	सा	ग	रे	सा	रे	सानि़	नि़ ध़	—	प़
प्र	थ	म	ऽ	प्र	ह	र	गे	ऽ	य
×		२			०		३		
प़ प	—	ध	प	पम॑	प ग	म	गरे	ग	रेसा
रा	ऽ	ग	नि	क	हा	ऽ	व	त	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

सां ध	नि ध	सां नि	सां	सां	सां	—	नि सां	रें	सां
वे	ऽ	ला	ऽ	व	ली	ऽ	सं	ऽ	ग
×		२			०		३		
नि सां	रें	मं गं	मं	रें	सां रें	सांनि	नि ध	—	प
क	ऽ	ल्या	ऽ	ण	को	मि	ला	ऽ	य
×		२			०		३		
प ग	—	प	प	प	सां ध	नि	ध	प	प
वा	ऽ	दी	सु	र	ख	र	ज	क	र
×		२			०		३		

मं प	मं	प	
प ग	प ध प	ग म	गरे ग रेसा
स ब	को ऽ रि	झा ऽ	व त ऽ।
×	२	०	३

यमनी बिलावल–त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि	नि		
सा रे ग रे	सा रे सा –	प मंग प –	मंपध प म गरे
भो ऽ र भ	यो ऽ है ऽ	मे ऽ रे ऽ	ला ड़ि ले ऽ।
०	३	×	२
		मं	
मग मग प –	सां सां ध प	प (प) म ग	म रे सा –
जा ऽ गो ऽ	कुं व र क	न्हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ।।
०	३	×	२

अन्तरा.

प – सां सां	सां – रें सां	सां रें गं रें	सां निध नि (प)
सं ऽ ग स	खा ऽ स ब	द्वा ऽ र न	ठा ऽ ऽ रे।
०	३	×	२
		रे	ध
मग मग प रें	सां नि ध प	म गग पम	ग रे सा नि
खे ऽ लो स	वैं ऽ अ ब	उ ठो ऽ जदु	रा ऽ ई ऽ।।
०	३	×	२

यमनी बिलावल–त्रिताल (मध्यलय).

ग
रे

पि

ग ग – रे	सा – नि़ ध़	सा – (सा) –	नि़ ध़ प़ –
या बि ऽ न	कै ऽ ऽ ऽ	से ऽ ऽ ऽ	के ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
नि़ ध़ सा –	सा – – –	(नि़) सा (सा) नि़ ध़	– सा – रे
भ ऽ री ऽ	ये ऽ ऽ ऽ	कै ऽ से ऽ	ऽ धी ऽ र
३	×	२	०
ग – रे –	ग – रे –	सा – – (नि़) सा	गरे ग – ग
ज ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ चै	ऽऽ न ऽ ना
३	×	२	०
म ध – प	(ध) प मं प ग	म ग (ग) रे रे	ग रे सा, (ग) रे
ऽ ऽ ऽ प	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ मा	ऽ ऽ ऽ, पि
३	×	२	०

अन्तरा.

मग मग प प	नि ध सां –	सां – –, (नि) सां	(रें) सां नि ध प
जऽ बऽ से ग	ये ऽ मो ऽ	री ऽ ऽ, सु	ध हू ऽ न
०	३	×	२
प मं प ग	म ग रे (ग) रेग	, ग गम ध	प मं प ग
ली ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ नीऽ	ऽ, स दाऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

ग (कण)		नि़ सा म	
म ग रे रे	ग रे सा –	सा – म ग	प – – –
ऽ ऽ ऽ रं	ऽ ऽ ग ऽ	कै ऽ से प	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
			ग (कण)
मंप धनि सांरें –	सां – नि ध	प मं प ग	म ग रे रे
मोऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	हे ऽ चै ऽ	ऽ ऽ ऽ न	ऽ ऽ ऽ मा।
०	३	×	२
ग (कण)			
ग रे सा, रे	ग ग – रे	सा	
ऽ ऽ ऽ, पि	या बि ऽ न	कै	
०	३	×	

यमनी बिलावल—एकताल (विलम्बित).

स्थायी.

नि़		नि़	ध़		
सा रे	ग रे	सा नि़सा	नि़ प़ध़नि़सा	–सा –रे	गरे सा
ज ब	सु धि	आ ऽऽ	वे ऽऽऽऽ	ऽमि ऽत्र	कीऽ ऽ
३	४	×	०	२	०
नि़	प प	प		प	रे
सा सा	ग ,ग	ग प	मं प	ग म	ग रेगमप
उ ठ	त ,जि	या ऽ	ऽ ऽ	रे ऽ	ऽ ऽऽऽऽ
३	४	×	०	२	०
प		म			
म प	म ग	गम ,गमपम	ग रे	सा नि़	रे –
हू ऽ	के ऽ	ऽऽ ,ऽऽऽऽ	मा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
३	४	×	०	२	०

अन्तरा.

नि़						ग		म			
सा	सा	ग	,ग	ग	–	म	ग	गम	गमप	मग	,ग
ज	ब	तें	ऽपि	या	ऽ	प	र	द्देऽ	ऽऽऽ	सऽ	,ग
३		४		×		०		२		०	
			रे	नि़	प़			नि़			
(म)ग	रेसा	सारेग	सा	ध़नि़	ध़ध़	सा	नि़सा	सा	मग	प	मप
बऽ	ऽन	कीऽऽ	नो	तऽ	बऽ	तें	ऽऽ	हो	ऽत	न	ऽऽ
३		४		×		०		२		०	
प			म	प				म			
नि	धप	मग	रे	गपधनिसां	सां,धप	पधनिध	ध,पम	गम,गमपम	ग	रेसा	रे
म	योऽ	ऽऽ	ऽ	हेऽऽऽऽ	सू,ऽऽ	ऽऽऽऽ	खे,ऽऽ	ऽऽ,ऽऽऽऽ	मा	ऽऽ	ऽ।
३		४		×		०		२		०	

यमनी बिलावल—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

नि़	
सा,	सारे
आ,	नप

म						म						प		प	
ग	म	रे	ग	ग	–	ग	म	ध	प	म	प	म	प	ग	म
रो	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	को	ऽऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			
म												नि़			
रे	ग	रे	सा	सासारेग	रे	सा	–	सा	नि़	ध़	प़	सा	रे	ग	–
ऽ	ऽ	ऽगु	न	औऽऽऽ	ऽगु	न	ऽ	ना	ऽ	ऽ	में	भा	ऽव	रा	ऽ
×				२				०				३			

प		प म	
ग -म ध प	मं प मंप -	ग म रे ग	रे सासारेग गरेसानि़ -,सारें
ऽ ऽऽ ऽ में	ऽ ऽ ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ आऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽ,नप।
×	२	०	३

अन्तरा.

	नि	नि	
निध सांसां सां निसां	सां रें सां -	सां गरें सां -,निध	नि (सां) नि ध
बेऽ गिसु धे ऽऽ	ली ऽ जे ऽ	औ ऽऽ रे ऽ,गुऽ	सां ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
ध		नि़	नि़ सा
प मं प ग	म गरे ग रे	सा रे सा -	सासा मग प -
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ	कब हुन कँ ऽ
३	×	२	०
		मं ध	
पपधनि सांरें सां निसां	नि ध प निध	प मं प मं	प ग म गरे
सेऽऽऽ ऽऽ के ऽऽ	प क रे ऽऽ	बां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽऽ।
३	×	२	०
रे सा			
ग रे सासारेगगरे नि़,सारे			
ई ऽ आऽऽऽऽऽ ऽ,नप			
३			

यमनी बिलावल—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

नि़ नि़	म रे		ग
सारे गरे सारे सा	ग -म ग गमंपध	प मं प मंग	म गरे ग प(प)
जुग जुग जीऽ वो	रे ऽऽ ऽ मोऽऽऽ	रे ऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽऽ ऽ, गुरु
३	×	२	०

	रे	सारे	
म ग म रे	नि़ रे सा नि़सा	गग रे सा(सा) नि़ध़	नि़ ध़ प़ प़
रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽऽ	चऽ तु रऽ सुऽ	जा ऽ ऽ न
३	×	२	०
मं	सा	सा	
प़प़ सासा — नि़सा	नि़ रे सा नि़सा	नि़ रे ग —	म गरे ग मध
गुन निधा ऽ ऽऽ	ऽ ऽ न ऽऽ	अ प नो ऽ	ऽ ऽऽ ऽ ऽसु
३	×	२	०
ध	ग		
प मं प ग	म गरे ग रेगमंप	म ग म रे	नि़ रे सा नि़
धा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ ऽ रेऽऽऽ	का ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जे ऽ
३	×	२	०

अन्तरा.

सां		पं	रें
नि ध सां सां	रेंसां -,निसां निसांरें गंमंपं	मं पं गं मं	गं रें गं रें
जो ऽ मो पे	दया ऽ,ऽऽ तेंऽऽ ऽऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ की ऽ
३	×	२	०
रें सांरें	प	मं	
निरें सां गंगं रेंसां	सां (सां)नि ध प	प धनिसांरें सां निध	नि ध प मं
ऽऽ न्ही काऽ बिधि	हो ऽऽ ऽ उ	अ बऽऽऽ उ तऽ	रा ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
	रे	नि़ सा	
प ग म गरे	ग रे नि़रे सा	सा मग प -,मंप	
ऽ ऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽऽ ई	दे होब ता ऽ,ऽऽ	
२	×	२	

मंपधनि	सांरेंगंरें	सांनिधप	मगरेसा
आऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽज
०			

यमनी बिलावल—चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

	नि़		रे			म	मं		मं		
	सा	ग	ग	—	ग	ग	ग	रे	ग	प	प
ऽ	घे	ऽ	रो	ऽ	री	ज	ल	ऽ	घ	ऽ	र
०		३		४		×		०		२	
मं			ध			मं					
प	प	—	मं	—	ग	ग	—	रे	ग	रे	सा
च	हूं	ऽ	ओ	ऽ	र	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
०		३		४		×		०		२	
			रे								
—	सा	ग	ग	—	प	ग	—	रे	सा	रे	सा
ऽ	दा	ऽ	दू	ऽ	र	शो	ऽ	र	क	र	त
०		३		४		×		०		२	
									नि़		
सा	सा	रे	ग	रे	—	सा	—	—	सा	रेध़	सा
पि	या	ऽ	बि	न	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	है।
०		३		४		×		०		२	

अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
त	र	फि	त	र	फि	च	म	के	कों	ऽ	ध
×		०		२		०		३		४	
					सां	रें			ध		
सां	सां	ध	सां	—	गं	सां	—	नि	नि	प	—
च	का	ऽ	चौं	ऽ	ध	ला	ऽ	ऽ	व	त	ऽ
×		०		२		०		३		४	
			सां							प	
ग	—	प	ध	सां	सां	रें	सां	सां	ध	ध	प
ए	ऽ	री	पा	ऽ	पी	प	पि	या	नि	ह	र
×		०		२		०		३		४	

प					सां						
ग	–	प	ध	सां	ध	सां	सां	–	प	ध	प
ना	ऽ	हीं	ऽ	द्	ई	ऽ	की	ऽ	ड	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
		सां									
रें	सां	ध	प	ग	प	गरे	सा				
तो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हेऽ,	धं				
×		०		२		०					

संचारी.

प	प										
ग	ग	प	प	प	प	प	–	प	ध	प	प
ए	क	तो	अ	नं	ग	अं	ऽ	ग	द	ह	त
×		०		२		०		३		४	
प											
ग	–	–	प	–	ध	सां	सां	निध	नि	ध	प
पा	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	प	र	मऽ	ऽ	दु	ख
×		०		२		०		३		४	
प											
ग	–	ग	प	ध	प	ध	प	ग	रे	सारे	सा
का	ऽ	र	भा	ऽ	र	र	ज	नी	ऽ	ऽऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
			प								
सा	–	–	ग	प	–	प	ध	प	प	ध	प
ना	ऽ	ऽ	हीं	ऽ	ऽ	घ	ट	त	हो	ऽ	त।
×		०		२		०		३		४	

आभोग.

प											
ग	प	ध	सां	–	सां	सां	–	–	सां	रें	सां
रा	जा	ऽ	रा	ऽ	म	प्या	ऽ	ऽ	रे	ऽ	की
×		०		२		०		३		४	

सां					सां	रें			ध	ध	
ध	—	सां	सां	सां	गं	नि	सां	नि	नि	प	—
ऐ	ऽ	से	स	म	य	आ	ऽ	न	मि	ले	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	प					सां			प		
प	ग	प	प	—	प	ध	सां	सां	ध	प	ग
त	ब	इ	दु	ऽ	ख	दू	ऽ	र	हो	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	
प											
ग	—	प	ध	सां	ध	सां	प	ध	रें	सां	—
अं	ऽ	कु	भ	रे	ऽ	ई	ऽ	दु	मु	खी	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां		सां									
रें	सां	ध	प	ग	प	गरे,	सा				
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हेऽ,	घे				
×		०		२		०					

यमनी बिलावल—चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

नि़		रे		प	म		प				
सा	ग	ग	ग	ग	ग	रे	ग	प	प	प	—
तू	ऽ	कि	त	क	र	त	मा	ऽ	न	का	ऽ
३		४		×		०		२		०	
				ग							
प	प	ग	रे	रे	ग	सा	रे	ग	रे	सा	रे
न्ह	सों	ऽ	ऽ	ए	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३		४		×		०		२		०	
—	सा	—	सा	नि़	ध़	प़	साध़	सा	सा	रे	सा
ऽ	ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ऽ	लऽ	ऽ	नि	प	ट
३		४		×		०		२		०	

		प									
–	सा	ग	प	ग	–	रे	ग	रे	सा	रेध़	,सा
ऽ	न	ट	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ग	ऽ	र	ऽऽ	,तू ।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

प			सां								
ग	प	प	ध	–	प	सां	–	–	सां	–	सां
तू	ऽ	सी	तू	ऽ	ऽ	ही	ऽ	ऽ	औ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
सां	नि					नि			सां		
ध	ध	–	सां	–	सां	सां	–	–	ध	–	प
दे	ऽ	ऽ	खी	ऽ	न	ले	ऽ	ऽ	खी	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
प							सां				
ग	–	–	प	ध	रें	सां	ध	सां	प	ग	प
ऐ	ऽ	ऽ	सी	ऽ	च	तु	र	ऽ	रू	ऽ	प ।
×		०		२		०		३		४	
ग	–	रे	ग	रे	सा	रेध़,	सा				
आ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	र	ऽऽ,	तू				
×		०		२		०					

राग देवगिरी बिलावल.

निसौ धनी धसौ रिगौ मगौ पमौ गमौ रिसौ ।
देवगिरी भवेत् प्रातः षड्जांशा मोदवर्धिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३१॥

वेलावलीमेलभवो हि देवगिरिर्विलोमे धग दुर्बलेयम् ।
संपूर्णरागः किल षड्जवादो कल्याणमिश्रोऽभिमतः प्रभाते ॥

राग कल्पद्रुमांकुरे ॥१८॥

जबहि बिलावल मेलमें उतरत धग नहिं लाग ।
सप वादो संवादितें कहत देवगिरी राग ॥

राग चन्द्रिकासार ॥१७॥

देवगिरी बिलावल, बिलावल थाट से उत्पन्न होने वाला बिलावल का एक भेद है। इस राग में भी कल्याण का अङ्ग है। इसका वादी स्वर षड्ज है। कोई धैवत को वादी मानते हैं। अवरोह में ध और ग स्वर दुर्बल हैं। बिलावल के सभी भेदों के रागांग अवरोह में व्यक्त होते हैं। ऐसा होना उचित भी है क्योंकि बिलावल के समस्त भेद दिवसगेय दिन में गाये जाने वाले हैं। जिस तरह रात्रिगेय रागों का अङ्ग आरोह में व्यक्त होता है, उसी तरह दिनगेय राग अवरोह में स्पष्टता प्राप्त करते हैं। कहीं पर देवगिरी को सम्पूर्ण मानकर गाने का प्रचार भी है। कई जगह म नि वर्जित, औड़व देवगिरी नामक एक भेद भी प्रचलित है। इसका विस्तार मन्द्र और मध्य स्थानों में बड़ी सुन्दरता से होता है। कुछ लोग इस राग में क्वचित् तीव्र मध्यम का स्वल्प प्रयोग भी करते हैं, परन्तु हमारे मत से ऐसा प्रयोग करने पर 'यमनी' राग आगे आजायेगा। देवगिरी, बिलावल का ही एक भेद है; अतः इसके अवरोह में धैवत की सङ्गति में कोमल नि का स्पर्श अच्छा दिखाई पड़ता है।

उठाव.

निसा, धनिधमा, रेग, मग, प, मग, गरे, सा ।

चलन.

सा, धनिध, मा, रेग, गग, गरे, सा, साग, प, धनिप, मग, मरे, सा ।

देवगिरी—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि़		ध़			ग				
सा	नि़	नि़ध़	सा	रे	रे	ग	ग	—	ग
आ	ऽ	जऽ	ऽ	बि	ला	ऽ	व	ऽ	ल
×		२			०		३		
म					ग		नि़		
ग	गम	रे	ग	प	रे	—	सा	रे	ग
च	तुऽ	र	सु	र	गा	ऽ	ये	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
नि़					ग				
सा	नि़ध़	सा	—	रे	रे	ग	ग	—	ग
आ	ऽऽ	ज	ऽ	बि	ला	ऽ	व	ऽ	ल
×		२			०		३		
मं			प		ग				
प	प	ग	ग	प	रे	—	सा	—	—
च	तु	र	सु	र	गा	ऽ	ये	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
प		प			ध			ध	
ग	—	ग	प	प	प	ध	नि	प	प
दे	ऽ	व	गि	री	ना	ऽ	म	शु	भ
×		२			०		३		
ग		रे			ग				
प	ग	ग	—	प	रे	—	सा	रे	ग
ह	म	को	ऽ	ब	ता	ऽ	ये	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

नि									
सां	सां	नि	ध	नि	सां	—	सां	—	सां
बि	ल	वा	ऽ	लि	सं	ऽ	ग	ऽ	त
×		२			०		३		

सां	सां	सां					सां		
नि	नि	नि	ध	नि	सां	–	ध	नि॒	प
म	धु	र	ऽ	र	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ये
×		२			०		३		
प	प	प						ध	
ग	ग	ग	प	प	नि	ध	नि	प	प
अ	व	रो	ऽ	ह	अ	ध	ग	क	र
×		२			०		३		
म॑		प			ग				
प	प	ग	–	प	रे	–	सा	रे	ग
म	न	को	ऽ	रि	झा	ऽ	ये	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

देवगिरी—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

सा	ध॒	ग		ग				नि॒							
नि॒सा	नि॒ध॒	सा	,रे	रे	ग	–	रे	सा	रे	सा	–	नि॒	ध॒	प॒	–
आऽ	जऽ	ऽ	,ब	धा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ
३				×				२				०			
ध॒		प		प	प			ध				ग			
प॒	ग	ग	,ग	ग	ग	प	–	पपधनि	(प)	ग	रे	रे	ग	रे	सा
नं	ऽ	द	,म	ह	ल	ऽ	ऽ	धऽऽऽ	र	ऽ	ऽ	छा	ऽ	ऽ	ई।
३				×				२				०			

अन्तरा.

ध	ध									ध		ध		सां	
प	निध	,नि	सां	सां	–	सां	,सां	(सां),	निध	निध	,सां सां	सां	(सां)	धनि॒	प
मो	तीऽ	,य	न	चौ	ऽ	क	,पु	रा,	ऽऽ	वोऽ	,स ब	मी	ऽ	ऽऽ	लि
३				×				२				०			

प प प	ध	ग	नि़
ग ग ग प	पपधनि (प) ग रे	रे ग – रे	सा रे सा –,नि़सा
अ ग टे ऽ	जऽऽऽ दु ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ,ऽऽ।
३	×	२	०

देवगिरी–तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

नि़ ध़	ग	नि़	नि़
सा नि़ ध़ ,सारे	रे ग – रे	सा रे सा –	सा रे ग –
दि न ऽ ,गिन	दे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ	ब म ना ऽ
३	×	२	०
म		ग	नि़
ग – म ग	रे ग – –	म ग रे –	सा रे सा –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ
३	×	२	०

(अथवा)

नि़ ध़	ग	नि़	नि़
सा नि़ ध़ ,सारे	रे ग – रे	सा रे सा –	सा रे ग –
दि न ऽ ,गिन	दे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ	ब म ना ऽ
३	×	२	०
म	ग	ग	नि़
ग म ग रे	रे ग – –	म – ग रे	सा रे सा –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ।
३	×	२	०
नि़	ग गम		नि़
सा –रे ग –	रे ग – ,मप	म ग रे –	सा रे सा –
आ ऽज का ऽ	ल ऽ ऽ ,पर	सों ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ
३	×	२	०

अन्तरा.

सां		नि	नि सां
नि ध सां –	सां – मां –	सां –नि रें सां	सां (सां) धनि ध
पो ऽ थी ऽ	बां ऽ चो ऽ	मो ऽऽ ती ऽ	वा ऽ ऽऽ रु
३	×	२	०
प निनि		म प म	
म – धध –,सां	सां ध नि प	प – निधनिप मपम	ग रे सा –
द ऽ च्छिना ऽ,दि	ला ऽ ऽ ऊं	दो ऽ नौऽऽऽ ऽऽक	रे ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०

देवगिरी—एकताल (विलम्बित).

स्थायी.

सा

क

			म		
सानि साध	सा सारे	ग –	– गम	ग रे	– ग
बऽ ऽऽ	ऽ घर	आ ऽ	ऽ ऽऽ	वे ऽ	ऽ, पि
३	४	×	०	२	०
		नि		नि	
रे ग	रे सा	सा निध	सा सा	सा रे	– सा
या ऽ	मो रे	ये ऽऽ	रि तु	यों ऽ	ऽ हि
३	४	×	०	२	०
सा		नि	म		
निध निध	सा –	सा रे	– ग	म ग	रे, सा
बीऽ ऽऽ	ती ऽ	जा ऽ	ऽ ऽ	ऽ त	ऽ, क।
३	४	×	०	२	०

अन्तरा.

प	प							म			
ग	ग	प	प	प	–	प	ग	प	ध	प	–
नि	स	दि	न	मैं	ऽ	त	र	फ	त	हूं	ऽ
३		४		×		०		२		०	
सां											
ध	सां	निध	प	पप	–म	म	पम	ग	रे	रे	ग
स	ज	नीऽ	ऽ	पिया	ऽमि	ल	ऽऽ	न	ब	ता	ऽ।
३		४		×		०		२		०	
रे	सा	सा,साध	,सारे								
ऽ	दे	क,बऽ	,घर								
३		४									

देवगिरी–तिलवाड़ा (विलम्बित)

स्थायी.

			ध					नि				नि			
सासारेग	–रे	सा	प	ग	–	–	रे	सा	रे	सा	–	सारे	गग	गमपपम	गरेग
एऽऽऽ	ऽब	ना	ब्या	ह	ऽ	ऽ	न	आ	ऽ	यो	ऽ	नीकी	बनी	केऽऽऽऽ	ऽऽऽ
३				×				२				०			
म				प				नि							
गम	निध	प	ग,मरे	ग	–	रे	सा	सा	मग	ममगरेगम	पम	ग	रे	नि	रे
काऽ	ऽर	न	ऽऽऽ	सी	ऽ	ऽ	स	से	ऽरा	ऽऽऽऽऽऽ	ऽभु	ला	ऽ	यो	ऽ
३				×				२				०			

सा
नि़सारेग –रे स प़
एऽऽऽ ऽब ना ब्या
३

अन्तरा.

सां नि			
ध ध सां सां	रें सां – निसां	सांसांरेंगं गं रें सां	सांसांनिध निध–सांसां
ध न घ री	ध न ऽ ऽऽ	राऽऽऽ ऽ त सु	हाऽऽऽ ऽऽ ऽग की
३	×	२	०
सां	म नि नि	सां	
ध प म ग	ग म ध ध	ध – नि प	सांसांनिध नि सां सां
ऽ ऽ ऽ ऽ	ब न री ब	ना ऽ ऽ ये	नैऽऽऽ ऽ न न
३	×	२	०
	सां		म रे
सां रें सां –	ध प म ग	म रे ममगरेगम पम	ग रे नि़ रे
ऽ ऽ में ऽ	क ज रा ऽ	ऽ ऽ ऽऽऽऽऽऽ ऽदि	ला ऽ यो ऽ
३	×	२	०
नि़सारेग –रे सा प़			
ऽऽऽऽ बऽ ना ब्या			
३			

देवगिरी—रूपक (विलम्बित)

स्थायी.

सा		नि़	री	ग	प
ग री	सा(सा),नि़ध़	नि़ध़ ,सारे	ग – –	प (प)	ग म
यं दि	नाऽ ,ऽऽ	ऽऽ ,हम	रे ऽ ऽ	दो ऽ	ऽ ऽ
०	२	३	•	२	३

	ग ग			सा	
ग रे —	रे रे	ग म	ग रे —	नि़ रे	सा —
रे ऽ ऽ	च ले	ऽ ऽ	जा ऽ ऽ	ये ऽ	ही ऽ
०	२	३	०	२	३
सा		नि़	नि़	नि़	रे पप
नि़सा — ,गरे	सा नि़	ध़ प़	सा रे —	रे ग	ग,गग प
ऽऽ ऽ ,अब	हूं ऽ	ऽ न	पा ऽ ऽ	यो ऽ	ऽ,बन ऽ।
०	२	३	०	२	३
	ग	सा	सा		
म ग —	रे —	नि़ रे	सा नि़सा ,गरे	सा(सा	
वा ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	री ऽऽ ,येदि	नाऽ	
०	२	३	०	२	

अन्तरा.

	ध		नि		
पप	नि निध,नि	सां निसां सां	सां रें	गं रें	सां — नि
दिन	रै ऽऽ,न	बी ऽऽ ती	ना ऽ	म ज	प ऽ त
२	३	०	२	३	०
				प	
ध नि	(प) —	म ग —	प (प)	ग म	गरे ग रे
ऽ ऽ	हूं ऽ	ऽ ऽ ऽ	कि त	वे ऽ	अऽ ऽ ब
२	३	०	२	३	०
			नि़	रे पप	
नि़ रे	सा —	नि़ रे —	रें ग	ग ग,गप	म ग —
हूं ऽ	हूं ऽ	तो ऽ ऽ	हे ऽ	ऽ गि,रऽ	धा ऽ ऽ।
२	३	०	२	३	०
ग	सा	सा			
रे —	नि़ रे	सा नि़सा ,गरे			
ऽ ऽ	ऽ ऽ	री ऽऽ ,येदि			
२	३	०			

देवगिरी—एकताल (विलम्बित)

स्थायी.

सा	प म			सा ध़	
प —	गम गमपम	ग रे	सा नि़सा	नि़सा नि़ध़	सा नि़सा
रू ऽ	ऽऽ ऽऽऽसे	हो ऽ	ऽ ऽऽ	पिऽ याऽ	ऽ ऽऽ
३	४	×	०	२	०
नि़		नि़		ग	रे
सा ग	रे सा	सा सा	रे —	रे ग	ग म
आ ऽ	ऽ ज	ऐ सी	का ऽ	ह म	सें ऽ
३	४	×	०	२	०
म	प			नि़नि़ सासा	रेरे
प —	गम, गमपम	ग रे	सा —	सासा रेरे	गग —म
चू ऽ	ऽऽ, ऽऽऽक	री ऽ	ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ।
३	४	×	०	२	०
पध	प म				
निनि, (प)	गम गमपम				
ऽऽ, रू	ऽऽ ऽऽऽसे।				
३	४				

अन्तरा.

प		गग रे		मं	नि
नि ध	प ,प	मम गग	प ,मप	प —,प	ध निध
ना ऽ	हे ,ना	उऽ तर	को ,ऽऽ	उ ऽत	र ऽऽ
३	४	×	०	२	०
ध		प			
सां (सां),निध	निध प	नि ध	प ,प	(प) मग	मरे ग
दे ऽ,ऽऽ	होऽ ऽ	बि न	ति ,क	रू ऽऽ	ऽऽ ऽ
३	४	×	०	२	०

ग प	(प)	प गम	,गमपम	रे ग	रे	सा	–	निनि सासा	सासा रेरे	रे गग	–म
क	रे	SS	,SSSजो	गी	S	S	S	SS	SS	SS	SS
३		४		×		०		२		०	
मध निनि	(प)										
SS	रू										
३											

देवगिरी–एकताल (विलम्बित).

स्थायी.

सा प	–	गम	गमप,मग	ग	रे	सा	निसा	नि मा	सा	ग	रे
मी	S	SS	SSS,लS	ना	S	S	SS	दो	ही	S	S
३		४		×		०		२		०	
सा	सा निसा	ध निध	सा	नि सा	सा	रे	–	ग रे	ग रे	ग	रे ग
ला	SS	SS	S	मि	ल	ना	S	दो	ही	S	ला
३		४		×		०		२		०	
ग म	प	म	म गमप,मग	ग	रे	सा	–	निनि सासा	सासा रेरे	रेरे गग	–म
मो	S	S	SSS,रीS	मा	S	S	S	SS	SS	SS	SS
३		४		×		०		२		०	
मध निनि	(प)	प गम,	गमप,मग								
SS	मी	SS,	SSS,लS								
३		४									

अन्तरा.

प				गग	रे			मं			
नि	ध	प	-,मंप	मम	गग	प	प	प	-प	नि	ध
जो	ऽ	ऽ	ऽ,ऽऽ	काऽ	ऽऽ	र	न	सो	ऽ,अ	ब	ऽ
३		४		×		०		२		०	
ध नि				प				ग			
सां	सां(सां),निध	निध	प	नि	ध	प	प	प	(प)	म	ग
मैं	ऽऽ,ऽऽ	पह	रु	ह	रि	या	ला	चू	री	मो	ऽ
३		४		×		०		२		०	
			म								
म	गरे	ग	गमपम	ग	रे	सा	—	स्थायी के अनुसार			
ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽरी	मा	ऽ	ऽ	ऽ				
३		४		×		०					

औड़व देवगिरी—मूलताल(मध्यलय).

स्थायी.

							सा	सा	रे
						ऽ	क	स	प
						३		०	
				प	प		प		सां
ग	—	ग	ग	ग	ग	रे	ग	प	ध
नं	ऽ	द	न	द	श	भु	जा	ऽ	रे
×		०		२		३		०	

(अथवा)

				प	प			प	
	—	ग	ग	ग	ग	रे	रे	ग	प
नं	ऽ	द	न	द	श	ऽ	भु	जा	ऽ
×		०		२		३		०	

—	(सां)ध	|	सां	—		इत्यादि
ऽ	रे	|	ऽ	ऽ		
×			०			

सां	—	|	(ग)प	ग	|	प	(ग)रे	|	—	—	|	सा	—
ऽ	ऽ	|	कं	ऽ	|	ऽ	द	|	ऽ	ऽ	|	न	ऽ
×			०			२			३			०	
सा	—	|	रे	ग	|	ग	पग	|	प	(सां)ध	|	सां	—
सीं	ऽ	|	गी	बा	|	हा	नऽ	|	ऽ	स	|	ब	ऽ
×			०			२			३			०	
प	ध	|	प	ध	|	प	ग	|	रे,	सा	|	सा	रे
मु	क	|	ल	स	|	त	ये	|	ऽ,	क	|	स	प
×			०			२			३			०	

अन्तरा.

(प)ग	प	|	(सां)ध	—	|	सां	—	|	सां	—	|	सां	—
ग	व	|	री	ऽ	|	को	ऽ	|	पु	ऽ	|	त्र	ऽ
×			०			२			३			०	
(सां)ध	—	|	सां	रें	|	सां	—	|	(सां)ध	—	|	प	—
नी	ऽ	|	ल	ब	|	खा	ऽ	|	ऽ	ऽ	|	न	
×			०			२			३			०	
(प)ग	ग	|	रे	(प)ग	|	प	प	|	सां	ध	|	सां	सां
द	श	|	भु	जा	|	ऽ	व	|	र	दा	|	य	क
×			०			२			३			०	

प	ध	प	ध	प	गरे,	ग	रे	सा	रे
मु	क	ल	स	त	येऽ	ऽ	क	म	प
×		०		२		३		०	

औड़व देवगिरी—(मनि-वर्जित) सूलताल (मध्यलय).

स्थायी.

ग	रे	सा	सा	सा	मा	—	रे	सा	—
अ	नु	द्रु	त	ल	घु	ऽ	गु	रू	ऽ
×		०		२		३		०	
		रे							
सा	ग	ग	प	ग	रे	मा	रे	सा	सा
घु	लु	त	प्र	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
×		०		२		३		०	
प		प	प	प			प		
ग	—	ग	ग	ग	—	रे	ग	प	प
ता	ऽ	ल	क	ला	ऽ	ऽ	का	ऽ	ल
×		०		२		३		०	
ग		प							
प	—	ग	प	ग	रे	सा	रे	सा	—
या	ऽ	बि	धि	जा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

ग			सां						
प	प	—	ध	सां	सां	सां	—	सां	सां
अ	णु	ऽ	आ	ऽ	दि	ती	ऽ	त्ति	र
×		०		२		३		०	

		सां	सां						
सां	—	ध	ध	सां	—	ध	प	प	ध
चा	ऽ	ट	क	चा	ऽ	त्र	क	ब	क
×		०		२		३		०	
प									
ग	—	प	ध	सां	ध	रें	रें	सां	—
बा	ऽ	य	स	भे	ऽ	ऽ	क	को	ऽ
×		०		२		३		०	
		प							
ध	प	ग	प	ग	रे	सा	रे	सा	—
कु	ट	प	र	मा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ।
×		०		२		३		०	

संचारी.

	प								
प	ग	प	प	प	—	प	ध	प	—
अ	ति	त	अ	ना	ऽ	ग	त	अं	ऽ
×		०		२		३		०	
	सां								
ध	ध	सां	सां	ध	प	प	ध	प	—
स	न्या	ऽ	स	क	र	दे	ऽ	त	ऽ
×		०		२		३		०	
प				प					
ग	—	ग	रे	ग	प	ध	ध	प	—
न	ऽ	ष्ट	उ	द्दी	ऽ	ऽ	ष्ट	सो	ऽ
×		०		२		३		०	
प									
ग	—	ध	प	ग	—	रे	—	सा	—
ले	ऽ	त	है	ता	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ।
×		०		२		३		०	

आभोग.

(प) ग	प	(सां) ध	सां	सां	—	सां	सां	—	सां
क	हे	मि	यां	ता	ऽ	न	से	ऽ	न
×		०		२		३		०	
सां	—	रें	गं	सां	—	ध	प	प	ध
पू	ऽ	र	न	हो	ऽ	सो	ऽ	क	रे
×		०		२		३		०	
(प) ग	—	प	ध	सां	ध	सां	रें	सां	—
स	ऽ	म	ऽ	सू	ऽ	र	न	को	ऽ
×		०		२		३		०	
(ध) सां	—	ध	प	(प) ग	प	ग	रे	सा	—
दे	ऽ	खे	ऽ	छा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ
×		०		२		३		०	

राग सरपरदा.

सरी गमौ धपौ निधौ निसौ निधौ पमौ गमौ ।
रिसौ सर्पर्दिका प्रातः सपसंवादमंडना ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३७॥

विभाति सरपर्दकः सकलमान्यतीव्रस्वरै-
र्बिलावल विशेष एव स इह प्रदिष्टो बुधैः ॥
सपावथ धगा च कैश्चिदिह वादिसंवादिनौ
स्मृतावुषसि गीयते सुमधुरस्वरं गायकैः

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥२०॥

सकल बिलावल के हि सुर धैवत वादि कहाइ ।
संवादी गंधार रहि सर्पर्दा हो जाइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥१६॥

सरपरदा एक यावनिक राग भेद है। ऐसा माना जाता है कि यह हजरत अमीर खुसरो द्वारा प्रचार में लाये हुए रागों में से एक है। इसे भी एक बिलावल का भेद माना जाता है। यह राग अल्हैया बिलावल के साथ, यमन, गौड़ और बिहाग के मिश्रण से उत्पन्न होता है। इसमें षड़ज और पंचम का संवाद है। इसके गायन का समय दिवस का प्रथम प्रहर है। इसमें गान्धार और धैवत स्वर भी महत्व के होते हैं।

उठाव.

सा, रेगम, ध, प, निध, निसां, निध, प, मग, मरे, सा ।

चलन.

सा, रेगमध, प, मग, मरे, सा, गमध, प, सारेग, मरे, सा ।
सारेग, ग, रेग, मपमग, रे, सा, गमप, मग, मरे, सा ।

सरपरदा—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि़ सा	रे	म ग	ग	म	प नि़	ध	प	ध	प
बि	धु	व	द	न	यु	व	ति	ग	ण
×		२			०		३		
प ग	म	रे	गम	प	मग	म	रेसा	रे	सा
गा	ऽ	य	सऽ	ब	काऽ	ऽ	न्हऽ	गु	ण
×		२			०		३		
रे सा	—	रे	ग	म	नि— ध	नि़	प	ध	प
रा	ऽ	ग	प	र	दा	ऽ	नु	प	म
×		२			०		३		
सा	सा	रे	ग	म	म रे	रे	सा	रे	सा
सु	न	त	ही	ऽ	ह	र	त	म	न।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	—	प	नि	ध नि	सां	सां	सां	सां	सां
अं	ऽ	ग	बि	ल	व	ल	सु	ष	म
×		२			०		३		
नि	—	नि	ध नि	ध नि	सां	सांनि	धप	ग म	रे ग
म	ऽ	ध्य	ल	य	क	रऽ	ऊऽ	त्त	म
×		२			०		३		
ग म	—	नि ध	नि ध	—	ध नि़	प	नि ध	नि	सां
सा	ऽ	ध	सं	ऽ	ग	त	शो	भ	न
×		२			०		३		

सां	सां	(सां)ध	प	प	ध	मग	म	रे	सा
ह	र	ष	त	च	तु	रऽ	सु	ज	न ।
×		२			०		३		

सरपरदा—झपताल

स्थायी.

सा	—	म	ग	ग	प	प	नि	ध	नि
ल	ऽ	च्छ	न	गु	नि	स	र	प	र
×		२			०		३		
सां	—	सां	रें	सां	(सां)ध	—	—	प	मग
दा	ऽ	को	ऽ	ब	ता	ऽ	ऽ	ब	तऽ
×		२			०		३		
म	प	म	ग	ग	म	ग	ग	म	रे
मे	ऽ	ल	शु	चि	सं	ऽ	पु	र	न
×		२			०		३		
ग	म	प	ग	म	ग	—	म	रे	सा
अ	ह	र	सु	ख	गा	ऽ	ऽ	ब	त ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	नि	ध	नि	सां	सां	सां	—	सां
स	प	क	र	त	स	म	वा	ऽ	द
×		२			०		३		

सां	रें	गं	गं	मं	^{मं}रें	—	—	सां	सां
का	हु	ध	ग	को	मा	ऽ	ऽ	न	त
×		२			०		३		
सां	ध	प	म	ग	म	ग	ग	म	रे
य	म	न	बि	ल	व	ल	गौ	ऽ	ड
×		२			०		३		
ग	म	प	म	प	म	ग	म	रे	सा
च	तु	र	सु	मि	ला	ऽ	ऽ	व	त
×		२			०		३		

सरपरदा—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा
ये

रे	ग	—	म	(नि)ध	—	प	—	(प)म	प	—	म	ग	—	म	रे
तो	म	ऽ	न्वा	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ
३				×				२				०			
(प)ग	म	प	म	ग	—	रे	—	सा	—	—	—	(नि)नि़	सा	—	सा
ऽ	ऽ	ह	म	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कै
३				×				२				०			
रे	ग	—	म	(म)नि	ध	प	—	—	—	(प)	—	—	—	—	सा
सीं	रे	ऽ	क	रूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ
३				×				२				०			

रे ग – ग	म ग म रे	ग रे म ग	ग रे सा सा
ब मो ऽ री	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ, ये।
३	×	२	०

अन्तरा.

नि

ब

ध			सां
नि नि – नि	सां – – –	सां – – –	(सां) – – नि
टि यां ऽ ब	टी ऽ ऽ ऽ	यां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ जा
३	×	२	०
ध			ग
– नि – नि	सां – – –	ध प – म	ग – – म
ऽ त ऽ ह	ती ऽ ऽ ऽ	अ रे ऽ भ	ला ऽ ऽ का
३	×	२	०
म	नि॒	म	नि
नि॒ ध – ध	ध नि॒ प –	प – नि ध	सां – – सां
हु को ऽ धी	ट ऽ नु ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ठा
३	×	२	०
रें	सां	ध	नि
गं सां – सां	ध – नि॒ प	– – नि नि	सां – – सां
ऽ ड ऽ र	हे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ भ	ला ऽ ऽ अ
३	×	२	०
सां	प	प	नि
सां ध नि॒ प	ध – म –	ग म (म) –	ग रे सा सा
खि यां ऽ लु	भा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ, ये।
३	×	२	०

सरपरदा—एकताल (मध्यलय).

स्थायी.

	नि̣
	सा
	रै

				म							
—	रे	ग	म	ध	(प)	—	प	(प)	—	म	ग
ऽ	न	मैं	तो	जा	गी	ऽ	पि	या	ऽ	के	उ
३		४		×		०		२		०	
				म							
मग	मरे	ग	म	प	मग	मग	मरे	मसा	रे	सा	सा
माऽ	ऽऽ	ये	ऽ	सि	गऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	,रै
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

सां								नि			
नि	ध	सां	सां	सां	—	सां	—	सां	रें	गं	(सां)
वे	ऽ	तो	ब	से	ऽ	सौ	ऽ	त	न	ढिं	ग
३		४		×		०		२		०	
		सां		प	ध					प	ध
सां	—	धनि̣	प	ध	ग	—	प	—	मप	नि	नि
ना	ऽ	सऽ	र	मे	री	ऽ	आं	ऽ	ऽऽ	ख	न
३		४		×		०		२		०	
				नि							
सां	रें	सां	—	सांरें	सांनि	धप	मग	मप	मग	रेसा	सा
ला	ऽ	गी	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	,रै।
३		४		×		०		२		०	

सरपरदा—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि̣ ग	ध	नि	ग म
सा सा म ग	प प नि नि	सां – ध प	म प म ग
न ई रे ल	ग न औ र	मी ऽ ठी ऽ	ब ति यां ऽ
०	३	×	२
ग		म प	म
म गम प म	ग – म रे	ग म प ग	गम रेग सारे सा
पि याऽ ऽ जा	ने ऽ औ र	जि या मो रा	जाऽ नेऽ आऽ ली
०	३	×	२

अन्तरा.

ध		नि	सां
प प नि नि	सां सां सां सां	सां सां रें गं	(सां) – धनि प
कि त वे बा	ऽ ट घा ट	कि त ज मु	ना ऽ तऽ ट
०	३	×	२
म ध	नि	सां	पप
प ध गम ग	प प ध नि	सां सां धनि प	धध पम गरे सा
कि त वेऽ मैं	कि त क द	म की छैऽ ऽ	याऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२

सरपरदा—एकताल (विलम्बित)

स्थायी.

रे

रं

म	प	म रे	म		
ग ग	ग,मरे गम	पम ग	रे सा,गम	प प	मप ,पम
गी ला	ने,ऽऽ राऽ	मोऽ रा	ऽ ऽ,अल	लो नी	ऽऽ ,सऽ
३	४	×	०	२	०

ध			रे	म					म		
प	म	ग	ग	पम	(प)	मग,	मग	(म)ग	रे	सा,	रे
लो	नी	ऽ	ऽ	सुऽ,	र	तऽ,	सऽ	ह्राऽ	ऽ	ता,	रं
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

म		सांनि				प				म	
पप	पप	धध	सां	धनि	प	ध	प	म	ग	रे	सा
सुध	बुध	सब	ऽ	बिऽ	स	रा	ऽ	ई	ऽ	मो	री
३		४		×		०		२		०	
नि				ग				नि			
सा	रे	सा	सा	प	–	–	सा	सा	रे	सा,	रे
नि	त	उ	ठ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई,	रं।
३		४		×		०		२		०	

सरपरदा—एकताल (विलम्बित).

स्थायी.

											,सारे
											,नज
म	रे	म		ग	रे		म				
ग	ग	ग,मरे	गम	म(म)	ग	रेसा	,गम	प	प	मप	,पम
रां	रो	मे,ऽऽ	लोऽ	दीऽ	जो	ऽऽ	,होऽ	दी	जो	ऽऽ	,सांऽ
३		४		×		०		२		०	
ध			रे	सा							
प	म	गम	ग	प	(प)	म	ग	मगमग	मरेगसा	रे	सा,सारे
व	ली	याऽ	ऽ	म्हा	ने	ही	ऽ	होऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	जी,नज।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

पप प,-प	सां ध सां	सां धनि प	पपध धधग,-म	रे ग म ,पम	ग रे
छुंछु द,ऽप	गा ऽ	थांऽ रा	म्हाऽऽ ऽ,ऽऽ	ने ,ऽन	भा ऽ
३	४	×	०	२	०
सा निसा	नि सांरे सासा	सा प (प)	म ग	मगमग मरेगसा	रे सा,सारे
वे ऽऽ	इत नी,ऽश्र	र ज	सु न	लीऽऽऽ ऽऽऽऽ	जो जी,नज।
३	४	×	०	२	०

तराना (राग मिश्र)-तीव्रा (मध्यलय).

स्थायी.

					सा नि सा
					दा नि
रे – रे	म रे –	म रे प	म रे सा	सा सा	रे प
तो ऽ म्ता	नो ऽ	म्ता ना	ना ना ना	ता ना	दे रे
×	२	३	×	२	३
प म रे	रे म –	रे सा	रे – सा	नि सा	म रे
ना ऽ ऽ	तो ऽ	म्ता ऽ	दा ऽ नि	ता ना	दे रे
×	२	३	×	२	३
प म प –	प –	प म	नि प –	प म	म रे म
ना ऽ ऽ	दा ऽ	नी ऽ	य ला ऽ	ली ऽ	या ऽ
×	२	३	×	२	३
प म रे	म रे म	प निप	सां नि सां नि	प म	रे सा
ऽ ऽ ऽ	ली ऽ	य ऽऽ	ला ऽ ऽ	य ऽ	ला ले
×	२	३	×	२	३

रे नि॒ सा	रे –	म रे प	म रे सा	इत्यादि.
तो ऽ म्ता	नो ऽ	म्ता ना	ना ना ना	
×	२	३	×	

अन्तरा.

प म –	म प	प ध नि॒ नि॒ प	सा नि –	सां नि	सां सां –
दी ऽ	म्दा रा	दा रा ऽ	दी ऽ	म्दा रा	दा रा ऽ
२	३	×	२	३	×
सां –सां	सां सां	रें रें –	सां रें –	सां –	प नि॒ प नि
दी ऽम	अ त	त दी ऽ	म्दी ऽ	म्दी ऽ	म्तो ऽ म्त
२	३	×	२	३	×
सां सां	रें –	सां – –	रे म रे	म म	प म प –
ना द्रे	ना ऽ	ऽ ऽ ऽ	ता ना	दे रे	ना ऽ ऽ
२	३	×	२	३	×
म प –	प –	प नि॒ प –	प म	म रे म	प म –
दा ऽ	नी ऽ	य ला ऽ	ली ऽ	या ऽ	ऽ ऽ ऽ
२	३	×	२	३	×
म रे म	प नि॒प	नि सां –	सां –	सां नि॒	सां नि॒ सां नि॒
ली ऽ	ये ऽऽ	ला ऽ ऽ	ऽ ऽ	ये ऽ	ला ऽ ऽ
२	३	×	२	३	×
प म	रे सा	रे – सा	म रे –	रे प	म रे रे सा
ला ऽ	ला ले	तो ऽ म्ता	नो ऽ	म्ता ना	ना ना ना।
२	३	×	२	३	×

राग लच्छासाख.

रागो लच्छासागो वेलावल्युद्भवोऽस्ति निद्वन्द्वः ।
वादी धैवत एवहि संवादी भवति चात्र गांधारः ॥

राग कल्पद्रुमांकुरे ॥२२॥

पमौ गरी पमौ गधौ निसौ निधौ पमौ गमौ ।
रिसौ लच्छाद्यशाखास्यात्प्राह्ले धैवतवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३६॥

राग बिलावल में जबै खंमाजहि मिलि जाय ।
धग वादी संवादितें लच्छासाग कहाय ॥

राग चन्द्रिकासार ॥२१॥

लच्छासाख राग, बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। यह बिलावल अङ्ग का होने से प्रातर्गेय राग है। यह राग सम्पूर्ण है और इसमें दोनों निषादों का प्रयोग होता है। इसका वादी धैवत और संवादी गांधार है, तथा बिलावल अङ्ग अवरोह में व्यक्त होता है। 'धम' सङ्गति राग वाचक है। क्वचित् 'सांप' स्वर सङ्गति का भी उपयोग होता है। इस राग में भिंझोटी का अन्श होता है। यह बात मार्मिक श्रोताओं के ध्यान में तत्काल आ जाती है। गांधार के विशिष्ट प्रयोग के कारण गौड़सारङ्ग की छाया भी इस राग पर पड़ती है, परन्तु इन दोनों रागों में बिलावल अङ्ग बिलकुल ही नहीं होता। लच्छासाख के लिये यह अङ्ग अत्यावश्यक है। बिलावल के सब भेद एक दूसरे से अलग करना कठिन होता है। प्रचार पर लक्ष्य देकर अपना मत ठहराना ही सरल मार्ग है।

उठाव.

प, मग, रेप, मग, धनिसां, निध, प, मग, मरे, सा ।

चलन.

प, मग, म, पमग, मरेसा, सारेग, म, निधप, मग, म, रेसा । सां, निध, प, मगमरे, सा, साम, ग, पप, धनिधप, मग ।

———

लच्छासाख–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

म ग
प – प – | ग म – प | म – ग ग | सा – ग म
ल ऽ च्छा ऽ | ऽ सा ऽ ख | सुं ऽ द र | ए ऽ ऽ ऽ
× | २ | ० | ३

ग ग
प – प – | ग म – प | म – ग ग | म म ग ग
ल ऽ च्छा ऽ | ऽ सा ऽ ख | सुं ऽ द र | सु ख क र
× | २ | ० | ३

ग
म ग रे सा | – रे सा सा | सा – रे – | ग ग म –
क ह त रा | ऽ ग गु नि | वे ऽ ला ऽ | व ल के ऽ
× | २ | ० | ३

म म
मनि धनि ध प | म ग म – | प प म ग | रे सा नि़ सा
सुऽ सऽ र ल | ठा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ठ
× | २ | ० | ३

ग प
मनि धनि ध रे | रे रे ग – | म – ग रे | सा रे सा सा
प्रऽ थऽ म प्र | ह र को ऽ | गा ऽ व त | सुं ऽ द र।
× | २ | ० | ३

अन्तरा.

म सां
ग म प ध | नि सां नि सां | सां – सां सां | ध धनि प –
ए ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | सु ऽ ध्ध सु | र नऽ सों ऽ
० | ३ | × | २

म प
म प – प | म प म ग | ग – म – | ग – रे ग
कि यो ऽ सु | पू ऽ र न | वा ऽ दि ऽ | धै ऽ व त
० | ३ | × | २

(ग) प म ग रे	सा रे सा –	सा – सा सा	सा – सा सा
द्र ढ त र	क र के ऽ	अं ऽ ग वि	ला ऽ व ल
०	३	×	२
(ग) रे – ग ग	म म प –	(नि) ध – नि नि	सां – रें –
रा ऽ ख त	सु ध मु ऽ	द्रा ऽ सु ध	बा ऽ नी ऽ
०	३	×	२
गं गं गं गं	मं – पं पं		
च तु र गु	नी ऽ स ब	मं गं रें मं	गं रें सां सां
०	३	×	२
सां नि ध प	म ग रे सा ॥		
०	३		

लच्छासाख–झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म ग स सा

म (म)नि̱	ध प म	ग रे	ग – रे
है ली	यां ऽ ऽ	गा ऽ	ऽ ऽ वो
०	३	×	२
ग –	(प)ग म (रे)ग	प –	(सां)नि (सां)नि नि
रि ऽ	झा ऽ वो	आ ऽ	ज तु म
०	३	×	२

								रे	म
सां	–	–	ध	प	म	ग	म	ग	,ग
मं	ऽ	ऽ	दि	ल	रा	ऽ	ऽ	ऽ	,स
•		३			×		२		

अन्तरा.

म				ध					
प	–	नि	–	नि	सां	–	सां	–	सां
सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	ऽ	सु	ऽ	र
×		२			०		३		
नि		रें							
सां	गं	गं	–	मं	गं	रें	सां	रें	सां
शु	ऽ	द्ध	ऽ	ल	गा	ऽ	ऽ	ऽ	वो
×		२			०		३		
ध		सां		ध					
प	–	नि	–	नि	सां	–	–	रें	सां
सा	ऽ	वा	ऽ	ऽ	दी	ऽ	ऽ	क	र
×		२			०		३		
नि		रें		पं					
सां	गं	गं	मं	मं	गं	रें	सां	रें	सां
रं	ऽ	ग	ऽ	ज	मा	ऽ	ऽ	ऽ	वो
×		२			०		३		
म		सां							
प	प	नि	–	–	सां	–	–	ध	प
च	तु	रा	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	ध	र
×		२			•		३		
ग			रे						
म	ग	म	ग,	ग					
का	ऽ	ऽ	ज,	स।					
×		२							

लच्छासाख–झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

									म
									ग
									सो
	म								
म	नि̱	ध	प	म	ग	रे	ग	सा	रे
हि	ल	रा	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ	वो
०		३			×		२		
म		म		रे				सां	सां
ग	—	ग	म	ग	प	—	प	नि	नि
री	ऽ	झा	ऽ	वो	आ	ऽ	ज	गा	वो
०		३			×		२		
					प				म
सां	—	सांनि	ध	प	म	—	ग	—,	ग
मं	ऽ	ऽऽ	दि	ल	रा	ऽ	ऽ	ऽ,	सो।
०		३			×		२		

अन्तरा.

म		सां							
प	प	नि	—	नि	सां	सां	सां	—	सां
स	ब	स	ऽ	खि	य	न	मि	ऽ	ल
×		२			०		३		
नि		रें							
सां	गं	गं	—	मं	गं	रें	सां	—	सां
चौ	ऽ	क	ऽ	पु	रा	ऽ	ऽ	ऽ	वो
×		२			०		३		
म		प	ध						
प	प	नि	नि	—	सां	सां	—	रें	सां
शु	भ	घ	ड़ी	ऽ	शु	भ	ऽ	दि	न
×		२			०		३		

नि		रें							नि
सां	गं	गं	—	मं	गं	रें	सां	—	सां
मं	ऽ	ग	ऽ	ल	गा	ऽ	वो	ऽ	हु
×		२			०		३		
		सां			प				
सां	—	ध	प	—	ध	म	गम	रेग,	—
से	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ब	न	राऽ	ऽऽ,	ऽ।
×		२			०		३		
प	—	प							
आ	ऽ	ज							
×		२							

लच्छासाख—मध्यलय (त्रिताल).

स्थायी.

सा								ग							
प	—	प	—	ग	म	—	प	म	—	ग	ग	रेग	म	ग	ग
शं	ऽ	भू	ऽ	ऽ	श्या	ऽ	म	सुं	ऽ	द	र	संऽ	ऽ	प	त
×				२				०				३			
रे	ग														
म	म	रे	सा	—	सा	सा	सा	सा	—	रे	—	ग	—	म	—
क	र	न	हा	ऽ	र	सु	ख	दा	ऽ	नी	ऽ	ए	ऽ	सो	ऽ
×				२				०				३			
म	ध							म	म						
नि	नि	ध	प	म	ग	म	—	प	प	म	ग	रे	सा	नि	सा
सु	ध	बु	ध	दा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			
सा	ध	ध									रे				
नि	नि	निध	रे	—	रे	ग	म	प	म	ग	सा	—	रे	सा	—
स	क	लऽ	स्रे	ऽ	ष्टि	को	ऽ	च	हूं	ऽ	लो	ऽ	क	में	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा.

		म	
		ग म प नि	सां रें नि सां
		ए ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
		०	३
सा			
सां – सां ध	नि॒ प प –	म – प प	म प म ग
स ऽ म दी	ऽ प नौ ऽ	खं ऽ ड द्	स हु दि स
×	२	०	३
प	रे	ग ग	
ग – ग ग	ग – ग –	म म ग रे	सा रे सा –
आ ऽ प ब	ना ऽ ये ऽ	म न रं ग	क र के ऽ
×	२	०	३
नि़			
सा सा सा सा	– सा सा सा	रे – ग ग	म – प प
क म ल नैं	ऽ न क म	ला ऽ प ति	का ऽ म कं
×	२	०	३
		मं	गं
ध ध नि नि	सां – रें –	गं मं पं –	मं गं रें सां
ऽ द् न भ	जो ऽ री ऽ	ऐ ऽ सो ऽ	त र न ता
×	२	०	३
सां रें सां नि	ध प म ग	म प म ग	रे सा नि़ सा
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ।
×	२	०	३

लच्छासाख–चौताल.

स्थायी.

ग म		ग			
म नि॒	ध प	म ग	ग –	– गम	मप –
अ ज	हु स	म झ	रे ऽ	ऽ मऽ	नऽ ऽ
०	३	४	×	०	२

	म										ग
ग	रे	—	ग	रे	सा	सा	—	सा	म	—	म
मू	ऽ	ऽ	र	ऽ	ख	सां	ऽ	भ्क	भो	ऽ	र
०		३		४		×		०		२	
			नि				ग			ग	रे
प	प	प	ध	नि	ध	प	म	ग	प	म	ग
क	र	त	ज	ऽ	न्म	जा	ऽ	त	ते	ऽ	रो।
०		३		४		×		०		२	

अन्तरा.

प	प	नि	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां	—	सां
भ	व	वा	ऽ	रि	धि	अ	ति	गँ	भी	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
										नि	
सां	—	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां	सां	ध	प
दु	ऽ	स्त	र	त	र	बे	ऽ	को	रा	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	
						नि̱					
म	म	नि̱	ध	—	ध	ध	नि̱	प	सांध	सां	—
सु	ख	ऽ	धा	ऽ	म	चे	ऽ	त	तूऽ	ऽ	ऽ।
×		०		२		०		३		४	
			नि̱	ग							
रें	सां	सां	धप	म	ग						
अ	ब	हि	सऽ	बे	रो						
×		०		२							

लच्छासाख—झंपा (मध्यलय).

स्थायी.

सा	—	ग	रे	ग	म	—	म	प	प
अ	ऽ	थ	ऽ	म	ता	ऽ	र	सु	र
०		३			×		२		
प							प		
ग	—	म	—	—	म	ध	ध	—	नि
सा	ऽ	धे	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ही	ऽ	गु
०		३			×		२		
नि									
ध	प	म	—	—	ग	म	ग	रे	ग
नी	ऽ	जो	ऽ	ऽ	सु	ध	मू	ऽ	द्रा
०		३			×		२		
					म		प		
म	ग	रे	सा	—	प	प	ग	—	म
बा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	सु	ध	गा	ऽ	वे ।
०		३			×		२		

अन्तरा.

म	ग	म	म	म	प	—	म	—	प
दु	त	म	ध	वि	लं	ऽ	बि	ऽ	त
०		३			×		२		
प					प				
सां	सां	म	म	प	म	—	म	ग	—
क	र	ल	य	दि	खा	ऽ	वे	ऽ	ऽ
०		३			×		२		
							प		
म	म	प	—	प	प	प	सां	—	सां
स	त	सु	ऽ	र	ति	न	ग्रा	ऽ	म
०		३			×		२		

म	म	प	—	ध	म	म	म	ग	—
ए	क	ई	ऽ	स	मु	र	छ	ना	ऽ
०		३			×		२		
नि	नि	नि	धप	ध	(ध) प	ध	नि	सां	—
बा	इ	स	ऽऽ	सु	रु	ति	की	ऽ	ऽ
०		३			×		२		
म	—	प	प	ध	(प) ग	पम	म	ग	—
सा	ऽ	ध	न	क	रा	ऽऽ	वे	ऽ	ऽ।
०		३			×		२		

राग शुक्लबिलावल.

सगौ गमौ मपौ धश्च निधौ पमौ गमौ रिसौ ।
शुक्लवेलावली मांशा प्रातर्गीता शुभप्रदा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ३० ॥

शुक्लबिलावल कहत है सम संवादी वाद ।
ठाठ बिलावल में जबै उतरत दोउ निखाद ॥

रागचंद्रिकासार ॥ १४ ॥

मेले वेलावलीये प्रभवति रुचिरा शुक्लवेलावली यत्प्रारोहे
दुर्बलो रिः क्वचिदपि च मृदुः स्यान्निषादोऽवरोहे ॥
वादित्वं मध्यमे स्यात्तदनुभवति संवादिता षड्ज एव
प्राह्णे गानं प्रदिष्टं सुनिपुणमतिभिर्मध्यमे न्यास इष्टः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ १५ ॥

शुक्लबिलावल, बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। यह भी बिलावल का एक भेद है। इसका गायन समय प्रातःकाल है। मध्यम वादी और षड़ज संवादी है। आरोह में रिषभ दुर्बल होता है। मध्यम पर न्यास होता है। 'रेप' की स्वर संगति रागवाचक है, अवरोह में 'निग' और 'धम' स्वर संगति मनोरंजक होती हैं। उत्तरांग प्रधान राग होने के कारण अवरोह में वैचित्र्य होता है। मध्यम पर न्यास करने से इसका रूप विशेष स्पष्ट होता है। अवरोह में धैवत की संगति में कोमल निषाद का किंचित् स्पर्श सुन्दर दिखाई देता है। मर्मज्ञों का मत है कि बिलावल और केदार राग के मिश्रण से यह राग उत्पन्न होता है।

उठाव.

साग, गम, मप, धनिधप, मग, मरे, सा ।

चलन.

सा, ग, गम, मपम, रेप, मपधनि, ग, गम, मपमग, मरे, सा ।

सा, सा, रेम, म, मप, प, मग, म, मरे, प, प, धसां, गम, प, मग, मरे, सा, निग, म, सां, निध, नि धध मग, मरे, सा, रेग-मपधनि, ग, म, रे, सा ।

शुक्लबिलावल–झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

ग				म					
म	ग	म	—	नि̱	ध	प	म	प	म
शु	क	ला	ऽ	वि	ला	ऽ	व	ऽ	ल
×		२			०		३		
म					नि		रे		
प	म	ग	—	सा	सा	ग	ग	म	—
स	म	झा	ऽ	ऊं	मैं	ऽ	स	खी	ऽ
×		२			०		३		
ग							सां		
म	—	म	ग	म	प	ध	नि	सां	सां
शं	ऽ	क	र	सु	ष	न	मे	ऽ	ल
×		२			०		३		
नि					ध		सां		
सां	नि̱	ध	—	म	प	ध	नि	सां	म
को	मि	ला	ऽ	ऊँ	मैं	ऽ	स	खी	ऽ।
×		२			०		३		
म									
ग	ग								
शु	क								
×									

अन्तरा.

सां	सां	सां		ध					
नि	नि	नि	—	नि	सां	सां	सां	—	सां
सं	पु	र	ऽ	न	घ	र	रू	ऽ	प
×		२			०		३		
नि		रें							
सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	—	सां
म	ऽ	ध्य	म	क	रूं	ऽ	वा	ऽ	दि
×		२			०		३		

सां	सां	सां							
ध	ध	ध	निम	गम	प	ध	नि	सां	सां
प्र	थ	म	ऽऽ	पऽ	हु	र	दि	व	स
×		२			०		३		
नि					ध		सां		
सां	नि	ध	–	म	प	ध	नि	सां	म
नि	त	गा	ऽ	ऊं	मैं	ऽ	स	खी	ऽ।
×		२			०		३		
म									
ग	ग								
शु	क								
×									

शुक्लबिलावल—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

ग		म		म			ग		
म	ग	ग	म	नि	ध	प	म	प	म
क	ल	ना	ऽ	प	र	त	मो	ऽ	हे
×		२			०		३		
प					म				
ग	म	गरे	ग	सा	ग	रेग	प	म	–
नि	स	दीऽ	ऽ	न	री	ऽऽ	द	ई	ऽ
×		२			०		३		
प							सां		
ग	म	ग	–	म	प	ध	नि	सां	सां
वि	र	हा	ऽ	अ	गि	न	मो	ऽ	रे
×		२			०		३		
ध					ध		सां		
सां	नि	ध	–	म	प	ध	नि	सां	म
त	न	में	ऽ	ज	री	ऽ	द	ई	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

सां नि	सां नि	सां नि	ध	नि	सां	—	सां	सां	सां
स	गु	न	ऽ	पि	या	ऽ	बि	न	सिं
×		२			०		३		
रें सां	रें	गं	रें	(सां)	सां नि	सां	सां ध	नि॒	प
गा	र	आ	भ	र	त	ज	दी	ऽ	यो
×		२			०		३		
म प	ध	ध ग	—	म	प	ध	नि	सां	सां
हे	ऽ	र	ऽ	त	हूं	ऽ	म	ग	ऽ
×		२			०		३		
नि सां	नि॒	ध	—	म	प	ध	नि	सां	म
त	क	ती	ऽ	ख	ड़ी	ऽ	द	ई	ऽ।
×		२			०		३		

शुक्लबिलावल—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

ग रेगमग	रेसानि॒सा	सा	रे सासा	म रे	म	—	मम	ग म	—ग	प	—	म प	—	म	ग
तूऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	हितो	पा	ऽ	ऽ	लन	हा	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ
३				×				२				०			
ग म	—	रे	प	—	मप	प	—	प सां	—	निसां	—	ग	रे ग	म	—
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ता	ऽ	मे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ
३				×				२				०			

नि़	रे			नि़ नि़				प							
सा	ग	ग	मप	ध	ध	नि़म	ग	ग	म	प	मग	म	ग	रे	सा
मो	ऽ	ऽ	पर	क	र	ऽऽ	म	क	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रो।
३				×				२				०			

अन्तरा.

म								नि		रें				सां	
प	–	सां	–सां	सां	–	रें	सां	सां	गं	गं	मं	गंरें	सां	ध	नि़प
ते	ऽ	रे	ऽहि	ना	ऽ	म	की	सु	मि	र	नि	जऽ	प	त	ऽऽ
३				×				२				०			
		म		नि़	रे			म		नि		नि			
म	ग	रे	सा	सा	गग	म	–	प	–	सां	–	सां	ग	रेगम	म
हूं	ऽ	ऽ	ऽ	मो	ऽऽ	री	ऽ	ई	ऽ	छा	ऽ	स	ऽ	ऽऽऽ	ब
३				×				२				०			
ग				ध		ग		ग							
म	प	ध	नि़	नि़	ग	रेगम	म	म	प	म	ग	म	ग	रे	नि़सा
पू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रऽऽ	न	क	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रो	ऽऽ।
३				×				२				०			

शुक्लबिलावल—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

म				म				ग				ग			
रेगमग	रेसानि़सा	–	,सा	रे	म	म–	गम	म	मग	प	–	म	प	म	ग
मैंऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	,नि	हा	ऽ	रेऽ	ऽऽ	दे	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	खो	ऽ
३				×				२				०			
			म					प					रे		
म	–	रे	रे	प	–म	प	–	सां	–	निसां	–	ग	ग	म	–
सा	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽअ	क	ऽ	ब	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
३				×				२				०			

(अथवा)

ग			म					प						ग	
म	–	रे	रे	प	–म	प	–	सां	–	निसां	–	ग	म	म	–
सा	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽअ	क	ऽ	ब	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
३				×				२				०			
रे	म			निनि				म				ग			
सासा	गग	म	पप	धध	–नि	ग	ग	ग	म	प	मग	म	रे	सा	–
जग	पर	रो	शन	ज़मीं	ऽऽ	ऽ	र	दी	ऽ	ऽ	ऽऽ	दा	ऽ	र	ऽ।
३				×				२				०			

अन्तरा.

		प						नि	गं	रें		मं		सां	
प	–	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	रें	गं	,मंगं	रें	सां	धनि	प
तू	ऽ	ही	ऽ	ध	र	नी	ऽ	तू	ऽ	ऽ	,मऽ	ही	ऽ	पऽ	र
३				×				२				०			
ग		म		म	रे			म		प		नि			
म	ग	रे	सा	ग	ग	म	–	प	–	सां	–	सां	ग	म	गम
क	ऽ	ऽ	र	रा	ऽ	खो	ऽ	सां	ऽ	चो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ
३				×				२				०			
ग								ग							
म	प	ध	नि	सां	ग	म	म	म	प	म	ग	म	रे	सा	–
क	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल्प	त	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ।
३				×				२				०			

शुक्लबिलावल–झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

									प
सा	सा	सा	रे	ग	म	–	प	प	ध
ध	र	मी	ऽ	न	में	ऽ	ये	म	र
×		२			०		३		

	प								
ग	म	ग	म	रे	रे	प	गम	गरे	ग
जा	ऽ	द्	में	ऽ	रा	ऽ	मऽ	चंऽ	द्र
×		२			०		३		
								नि	
सा	सा	ग	ग	म	प	—	प	ध	नि
र	सि	क	में	ऽ	कृ	ऽ	ष्ण	औ	र
×		२			०		३		
सां	—	धम	प	ध	ग	पम	ग	गरे	ग
ते	ऽ	जऽ	में	ऽ	न	रऽ	ह	रीऽ	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	प	नि	—	सां	सां	सां	सां	सां
क	ठि	न	में	ऽ	क	म	ठ	ब	ल
×		२			०		३		
गंरें	मं	मं	गं	रें	सां	नि	नि	रें	सां
विऽ	पु	ल	में	ये	बा	ऽ	रा	ऽ	ह
×		२			०		३		
धप	प	प	ग	म	प	—	नि	—	नि
बऽ	लि	न	में	ऽ	वा	ऽ	म	ऽ	न
×		२			०		३		
सां	—	धम	प	ध	ग	पम	म	गरे	ग
दे	ऽ	हऽ	ऽ	वि	क्र	मऽ	ध	रीऽ	ऽ
×		२			०		३		

संचारी.

पप	प	नि	—	सां	रेंसां	सां	ध	प	ध
गिरि	न	में	ऽ	क	नऽ	क	गि	रि	उ
×		२			०		३		
ग	म	रे	प	—	धप	ध	म	ग	रेग
द	धि	न	में	ऽ	छीऽ	ऽ	र	नि	धिऽ
×		२			०		३		
सा	सा	सा	रे	ग	म	—	प	प	प
स	र	न	में	ऽ	मा	ऽ	न	स	र
×		२			०		३		
ध	प	म	रे	प	ध	ग	पमप	गरे	ग
न	दि	न	में	ऽ	सु	र	सऽऽ	तीऽ	ऽ।
×		२			०		३		

आभोग.

प	प	प	नि	—	सां	सां	सां	—	—
ख	ग	न	में	ऽ	ग	रु	र	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां	गंरें	गं	मं	गं	रें	निसां	धनि	रें	सां
ड्डु	मऽ	न	में	ऽ	क	ऽऽ	ल्पऽ	त	रु
×		२			०		३		
ध	प	म	ग	म	प	प	नि	सां	सां
क	पि	न	में	ऽ	ह	नु	मा	ऽ	न
×		२			०		३		

रेंसां	सां	धप	प	ध	ग	पम	ग	रे	ग
पुऽ	रि	नऽ	में	ऽ	अ	वऽ	ध	पु	रि।
×		२			०		३		

शुक्लबिलावल–झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा	सा	रे	रे	–	रे	ग	सा	रे	सा
सु	भ	घ	री	ऽ	सु	भ	दि	ऽ	न
×		२			०		३		
रे	ग	म	–	प	(प)ध	म	ग	रे	ग
छ	ऽ	त्र	ऽ	ध	रो	रि	मा	ऽ	ई
×		२			०		३		
म	म	ग	म	रे	प	–	(प)नि	ध	सां
सु	भ	आ	ऽ	ज	पं	ऽ	डि	ऽ	त
×		२			०		३		
सां	सां	प	–	ध	प	म	ग	रे	ग
ल	ग	न	ऽ	ध	रो	रि	मा	ऽ	ई।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	(प)नि	ध	सां	सां	–	सां	–	सां
ब	न	रा	ऽ	ब	नी	ऽ	ते	ऽ	रो
×		२			०		३		

सां	नि								
ध	ध	ध	नि	रें	सां	–	ध	नि॒	प
चि	र	ज	ऽ	ग	जी	ऽ	वो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
		म					म		
म	–	ग	म	रे	ग	प	नि॒	ध	नि॒
जौ	ऽ	लौं	ऽ	र	हे	ऽ	दि	व	स
×		२			०		३		
ध	प	प	–	म	म	–	ग	रे	ग
चं	ऽ	द्र	ऽ	दि	वा	ऽ	क	ऽ	र।
×		२			०		३		

शुक्लबिलावल–चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

	नि			म			ग				
–	सा	–	सा	रे	म	म	म	मग	प	म	ग
ऽ	रा	ऽ	जा	रा	ऽ	म	नि	रंऽ	ऽ	ज	न
३		४		×		०		२		०	
	म			प			म			प	
मरे	रे	प	प	ध	मग	मरे	रे	प	प	सां	–
ऽऽ	हिं	ऽ	द	प	तेऽ	ऽऽ	सु	ऽ	ल	ता	ऽ
३		४		×		०		२		०	
नि				प	प					म	
ध	धनि॒	प	–	ग	ग	मरे	ग	म	प	प	मग
ऽ	नऽ	के	ऽ	क	र	ऽऽ	ता	ऽ	र	स	कऽ
३		४		×		०		२		०	
म				म							रे
रे	सा	रे	सा	रे	ग	म	प	ध	नि॒	म	ग
ल	स्त्र	ऽ	ष्टि	भ	र	न	पो	ष	न	ये	ऽ।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

प	प	प	सां	–	सां	सां	–	रें	रें नि	सां	सां
अ	ति	प्र	वी	ऽ	न	वी	ऽ	र	भा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
नि सां	गंरें	गं	मं	रें	सां	सां	सां	नि	ध नि	सां	सां
नं	ऽऽ	द्	न	अ	ति	ज	ग	बं	ऽ	द्	न
×		०		२		०		३		४	
नि सां	सां ध	नि	प	म प	म	ग	म ग	म	ग	रे	सा
दा	रि	ऽ	द्र	ह	र	न	शु	भ	क	र	न
×		०		२		०		३		४	
नि सा	सा	सां	नि	ध नि	सां	सां	सां	रें	रें नि	सां	सां
म	हा	ऽ	ज्ञा	ऽ	नि	गु	ण	नि	धा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
नि सां	ग	–	म	प	ध	नि	म	रे ग	सा		
ह	र	ऽ	दु	ख	न	ऽ	ये	ऽ।	,रा		
×		०		२		०		३			

शुक्लबिलावल–चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

म	ग	सा	ग	म	म
भ	र	न	जो	ऽ	ग
०		३		४	

				म	रे						
म	–	म	म	रे	प	प	–	म	ग	ग	म
ई	ऽ	ज	ल	ज	मु	ना	ऽ	त	ट	प	न
×		०		२		०		३		४	
			सां	नि̱						रे	
प	ध	ध	नि̱	ध	प	प	ध	म	ग	ग	रे
घ	ट	न	ट	ना	ऽ	ग	र	को	प्र	ग	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सा,	ग	म	प	ध	म						
ट,	द	र	स	भ	यो।						
×		०		२							

अन्तरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	–	रें	नि	सां	सां
मु	क	ट	मु	र	ली	सी	ऽ	स	फू	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
		रें							सां		
सां	गं	गं	गं	मं	रें	सां	सां	सां	ध	नि̱	प
श्र	व	न	कुं	ड	ल	छ	बि	दि	खा	ऽ	य
×		०		२		०		३		४	
प	ग	म	ग	रे	सा	सा	ग	म	प	ध	नि̱
आ	ऽ	लि	मे	ऽ	रो	म	न	ऽ	ह	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
नि̱											
ग	–	म	प	ध	म	म	ग	सा			
ली	ऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ।	भ	र	न			
×		०		२		०		३			

राग कुकुभ.

सगौ गमौ पमौ गरी गमौ पधौ सधौ पमौ ।
पमौ गमौ रिसौ नित्यं ककुभा मांशिका प्रगे ॥

अपिच

रिगौ मगौ मरी सरी सनी धपौ मपौ धमौ ।
गमौ रिसाविति प्रोचुः ककुभारूपकं परे ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३४॥

बेलावल्याः प्रभेदः ककुभ इति मतो मान्यतीव्रस्वराढ्यः ।
संवादी चर्षभोऽस्मिन् विलसति नितरां पंचमो वादिपीठे॥
संमिश्रो जैजवंत्याभवदिति सुधियो यद्वदंति ध्रुवं तद् ।
गायंति प्रातरेव प्रतिदिवसममुं गानशास्त्रप्रवीणाः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥२३॥

राग बिलावल में जबै जयजयवन्ती होय ।
रिप संवादी वादितें ककुभ निखादैं दोय ॥

राग चन्द्रिकासार ॥२२॥

कुकुभ बिलावल, बिलावल थाट से निकलता है । यह प्रभात-काल में गाया जाता है । इसमें वादी स्वर मध्यम और संवादी षड़ज है । बिलावल के समान इसमें सम्पूर्ण अवरोह सुन्दर दिखाई देता है । बिलावल के समान इसमें भी दोनों निषादों का प्रयोग होता है। इसमें 'सा प' और 'सा म' स्वर सङ्गति महत्व की होती हैं । कुछ लोग अल्हैया और झिंझोटी का योग कर इस राग को गाते हैं और कोई जैजैवन्ती और अल्हैया के मिश्रण से इसे गाते हैं ।

कुकुभ—झपताल (विलम्बित)

स्थायी.

नि									
सा	प	प	–	ध	प	म	गरे	ग	सा
गा	ऽ	ओ	ऽ	स	हे	लि	यांऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग				रे	ग				
रे	–	–	ग	ग	म	ग	रे	सा	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	कु	कु	भ	को	ऽ
×		२			०		३		
नि	सा								
सा	प	प	–	ध	प	म	ग	रे	गसा
पि	यु	को	ऽ	रि	झा	ऽ	ओ	ऽ	ऽऽ
×		२			०		३		
म					ग				
रे	–	–	–	ग	म	ग	रे	सा	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	च	तु	र	को	ऽ ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

म				ध					
प	प	नि	–	नि	सां	–	सां	–	सां
बि	ल	वा	ऽ	लि	को	ऽ	रू	ऽ	प
×		२			०		३		
नि	नि						सां		
ध	ध	सां	–	रें	सां	सां	ध	नि	प
रा	ऽ	खो	ऽ	ज	त	न	क	ऽ	र
×		२			०		३		
प	प	प			प			ध	
ग	ग	ग	म	रे	ग	प	नि	नि	रें
ज	य	वं	ऽ	ति	को	ऽ	मृ	दु	ग
×		२			०		३		

		सां		प					
सां	—	ध	नि॒	ध	ध	म	गरे	ग	सा
टा	ऽ	रे	ऽ	स	हे	लि	यांऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग				रे	ग				
रे	—	—	ग	ग	म	ग	रे	सा	—
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	कु	कु	भ	को	ऽ।
×		२			०		३		

कुकुभ—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि		म							
सा	प	प	—	ध	प	म	गरे	ग	सा
ते	ऽ	रे	ऽ	मि	ल	न	दाऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग				रे	ग				
रे	—	—	ग	ग	म	ग	रे	सा	—
चा	ऽ	ऽ	ऽ	वे	सैं	यो	मैं	नूं	ऽ
×		२			०		३		
नि		म							
सा	प	प	—	ध	प	म	गरे	ग	सा
आ	ऽ	वे	ऽ	लो	नी	ऽ	दाऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग				रे	ग				
रे	—	—	ग	ग	म	ग	रे	सा	—
चा	ऽ	ऽ	ऽ	वे	सैं	यो	मैं	नूं	ऽ।
×		२			०		३		

प्रकार १

सा ग, म, नि॒धप, मप, गम, सा, ग, गम, धनिसां,
सांधनि॒प, धम, ग, सा, ग, म ।

प्रकार २

रे, ग, गमगरे, सा, नि़सारे, सा, ध़, नि़॒प़, मम,
मप, धमप, सां, ध, प, धमग, मरे, सा ।

कुकुभ–सूलताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा									
प	–	प	–	म	ग	रे	रे	सा	सा
गा	ऽ	वो	ऽ	गु	नि	ज	न	स	ब
×		०		२		३		०	
ग									
रे	–	ग	–	म	–	प	–	–	–
म	ऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	
ग			रे			प			
म	म	ग	ग	म	प	म	प	म	ग
शि	व	शं	ऽ	क	र	भो	ऽ	ला	ऽ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

म			ध						
प	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	–	सां
वे	ऽ	ला	ऽ	व	ल	प्र	भे	ऽ	द
×		०		२		३		०	
सां						सां			
ध	नि	सां	रें	सां	–	ध	नि̲	प	प
कु	ऽ	कु	भ	ना	ऽ	म	सु	ल	भ
×		०		२		३		०	
म						म			
ग	म	प	–	म	ग	रे	–	सा	सा
सा	ऽ	धो	ऽ	शु	ऽ	द्ध	ऽ	स्व	र
×		०		२		३		०	
ग									
रे	–	ग	–	म	–	प	–	–	–
म	ऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

म				ध					
प	प	नि	–	नि	सां	–	सां	–	सां
सो	नी	सो	ऽ	नी	सू	ऽ	र	ऽ	त
×		२			०		३		
नि	सां						सां⌒		
सां	ध	सां	–	रें	सां	सां	ध	नि̱	प
म	न	पा	ऽ	र	ब	स	री	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
म		प			प		सां		
प	–	ग	म	रे	ग	प	ध	–	रें
मे	ऽ	रो	ऽ	री	त	प	त	ऽ	बु
×		२			०		३		
		सां			ध				
सां	–	ध	नि̱प	ध	प	म	गरे	ग	सा
झा	ऽ	वे	ऽऽ	लो	नी	ऽ	दाऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग				रे	ग				
रे	–	–	ग	ग	म	ग	रे	सा	–
चा	ऽ	ऽ	ऽ	वे	सैं	यो	मैं	नूं	ऽ
×		२			०		३		

कुकुभ—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

ग		ग					ग		
रे	–	रे	–	ग	म	ग	रे	–	सा
का	ऽ	को	ऽ	भ	ज	न	बी	ऽ	न
×		२			०		३		
नि̣							सा⌒		
सा	–	रे	रे	सा	सा	सा	ध̣	नि̣	प̣
खो	ऽ	व	त	उ	म	र	च	तु	र
×		२			०		३		

ग		\					प		
म	–	म	–	म	प	प	ध	म	प
वे	ऽ	ला	ऽ	बि	त	त	तो	ऽ	रि
×		२			०		३		
प		सां							
सां	–	ध	नि॒	प	ध	म	गरे	ग	सा
पा	ऽ	छी	ऽ	न	आ	ऽ	वेऽ	ऽ	गि।
×		२			०		३		

अन्तरा.

				ध					
प	–	नि	–	नि	सां	सां	सां	–	सां
गा	ऽ	वो	ऽ	ह	रि	को	ना	ऽ	म
×		२			०		३		
नि									
सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	–	सां
पू	ऽ	र	त	म	न	सु	का	ऽ	म
×		२			०		३		
				ध			नि		
सां	ध	प	ध	ग	प	–	ध	नि	सां
भा	ऽ	व	भ	ऽ	क्ती	ऽ	ते	ऽ	रि
×		२			०		३		
सां		सां			प				
रें	सां	ध	नि॒	प	ध	म	गरे	ग	सा
बि	र	था	ऽ	न	जा	ऽ	वेऽ	ऽ	गि।
×		२			०		३		

कुकुभ—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

(ग)रे	–	(ग)रे	ग	ग	म	ग	(ग)रे	–	सा
गो	ऽ	विं	ऽ	द	गि	रि	ध	ऽ	र
×		२			०		३		
(सा)नि़	सा	(ग)रे	ग	(रे)ग	(म)प	मग	(ग)रे	–	सा
ह	ल	ध	ऽ	र	बि	षऽ	ध	ऽ	र
×		२			०		३		
सा	–	(सा)ध़	नि़॒	प़	सा	–	सा	–	–
ना	ऽ	म	ऽ	ति	हा	ऽ	रो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
प	–	–	ध	म	ग	रे	ग	सा	–
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न्ह	ऽ
×		२			०		३		

अन्तरा.

(म)प	–	(नि)ध	नि	(ध)नि	सां	सां	सां	–	सां
मो	ऽ	र	ऽ	मु	कु	ट	सी	ऽ	स
×		२			०		३		
(सां)नि	नि	नि	–	(ध)नि	सां	सां	(सां)ध	नि॒	प
मु	र	ली	ऽ	अ	ध	र	गु	ऽ	ज
×		२			०		३		
(प)ध	–	(ध)ग	म	–	प	–	(सां)नि	–	(ध)नि
ग्वा	ऽ	ल	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ख	ऽ	न
×		२			०		३		

		सां						ग	
सां	—	ध	नि॒	प	ध	म	ग	रे	सा
मां	ऽ	ग	ऽ	त	दा	ऽ	ऽ	ऽ	न।
×		२			०		३		

कुकुभ—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

म									
प	—	प	—	म	—	ग	—	रे	सा
शि	ऽ	री	ऽ	शं	ऽ	भू	ऽ	ह	र
×		०		२		३		०	
ग									
रे	—	ग	—	म	—	प	—	—	—
म	ऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	
ग			रे						रे
म	—	ग	ग	प	—	म	—	म	ग
च	ऽ	त्र	ऽ	भु	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

			ध						
प	प	नि	नि	सां	सां	—	सां	—	सां
अ	ष्ट	सि	ध	न	व	ऽ	नी	ऽ	ध
×		०		२		३		०	
नि						सां			
ध	नि	सां	रें	सां	सां	ध	—	नि॒	प
दे	ऽ	त	स	ब	न	को	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	
ग							ग		
रे	ग	म	प	ध	ग	म	रे	—	सा
हो	ऽ	त	म	हा	ऽ	ऽ	भो	ऽ	ले
×		०		२		३		०	

ग रे	—	ग	—	म	—	प	—	—	—
म	ऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	

कुकुभ–चौताल

स्थायी.

रे	—	रे	—	ग	म	प	म	ग	रे	ग	सा
म	ऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व
×		०		२		०		३		४	
रे	पम	प	ध	प	मप	म	—	ग	म	रे	सा
भो	ऽऽ	ला	ऽ	च	ऽऽ	क्र	ऽ	ऽ	ऽ	वो	तो
×		०		२		०		३		४	
रे	पम	प	ध	प	मप	म	ग	म	रे	ग	सा
शि	ऽऽ	री	ऽ	शं	ऽऽ	भू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

म	—	प	नि	नि	नि	नि	नि	—	सां	निसां	सां
जै	ऽ	म	न	वि	च	क	र्म	ऽ	का	ऽऽ	र
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	सां	रें	सां	—	नि॒	ध	नि॒	—	प	—
तो	ऽ	पै	ऽ	आ	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ
×		०		२		०		३		४	

म	ध	नि (ध)	रें (नि)	सां	निसां	नि	ध	नि	—	प	—
ह	र	त	बि	गा	ऽऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म	नि	धनि	प	म	ग	म	ग	म	रे	ग	सा
हो	ऽ	तऽ	बि	लं	ऽ	बू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

कुकुभ—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा	सा	म (ग)	—	म	म	—	म	—	मग
ह	ज	र	ऽ	त	ख्वा	ऽ	जा	ऽ	गऽ
×		२			०		३		
म	ध	ध (प)	—	नि	ध	प	म	—	—
री	ऽ	ब	ऽ	न	वा	ऽ	जा	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां	—	—	नि (सां)	सां	नि	ध	प	म	म
रा	ऽ	ऽ	ज	न	के	ऽ	ऽ	तु	म
×		२			०		३		
म (ग)	ध	ध (प)	नि	नि (सां)	ध	प	म (प)	प	म
मा	ऽ	ऽ	ऽ	हा	रा	ऽ	ऽ	ऽ	जा
×		२			०		३		
सा (नि़)	—	म (ग)	—	म	म	प	म	—	म
सु	ऽ	बा	ऽ	स	ब	सि	यो	ऽ	न
×		२			०		३		

		प		सां					
म	ध	ध	नि	नि	ध	प	म	—	—
ग	र	अ	ऽ	ज	मे	ऽ	रू	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
म				सां					
सां	—	सां	नि	नि	ध	प	म	—	—
जा	ऽ	में	ऽ	ऽ	दि	न	का	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग		प		सां					
म	ध	ध	नि	नि	ध	प	म	प	म
ङं	ऽ	का	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ऽ	जा।
×		२			०		३		

अन्तरा.

ध		नि							
म	—	ध	—	नि	सां	—	सां	—	—
सो	ऽ	भा	ऽ	न	ली	ऽ	की	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ध	प				ध				
नि	ध	नि	सां	(निध)	प	—	म	—	—
वि	न	ती	ऽ	(यऽ)	ही	ऽ	है	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग	म			सां					
म	सां	सां	(निध)	नि	ध	प	म	—	—
स	ग	रे	(ऽऽ)	सं	वा	ऽ	रो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग		प		सां					
म	ध	ध	नि	नि	ध	प	म	प	म
मे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	का	ऽ	ऽ	ऽ	जा।
×		२			०		३		

कुकुभ—धमार (विलम्बित).

स्थायी.

रे			रे								ग		
ग	सा	ग	ग	म	–	–	म	–	ग	म	म	प	–
अ	ब	को	उ	कैं	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ
३				×					२		०		
म			म			म					प		
प	–	–	प	म	ग	मरे	रे	नि	ध	प	म	प	–
री	ऽ	ऽ	खे	ल	त	ऽऽ	बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	ऽ
३				×					२		०		
				प	म						ग		
म	–	ग	–	ग	ग	–	म	रे	गम	प	म	ग	–
मो	ऽ	पै	ऽ	रं	ग	ऽ	ऽ	ऽ	छिऽ	र	क	त	ऽ
३				×					२		०		
रे			रे										
ग	सा	ग	ग										
अ	ब	को	उ										
३													

अन्तरा.

ध			ध							–	सां	सां	सां
प	प	नि	नि	सां	सां	–	नि	सां	सां	सां	नि	नि	नि
य	ह	अ	च	र	ज	ऽ	ऽ	ऽ	दि	न	चा	ऽ	ऽ
३				×					२		०		
सां											प		नि
नि	–	ध	नि	सां	–	–	सां	ध	नि	प	ग	म	ध
र	ऽ	ऽ	स	खी	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	गि	न	ऽ
३				×					२		०		
नि	नि	नि					सां				प	नि	
ध	ध	ध	–	सां	सां	–	ध	नि	प	–	निध	ध	म
गि	न	पा	ऽ	प	र	ऽ	ऽ	ऽ	बे	ऽ	लऽ	त	ऽ
३				×					२		०		

म रे
ग सा ग ग
अ ब को उ
३

कुकुभ—धमार

स्थायी.

				प
				मप
				मन
प	प	रे रे		
नि़ ध प	ग म ग सासा	सा ग ग म प	म —	
ह र न	चा ऽ ल नंद	रा ऽ ऽ ऽ य	के ऽ	
०	३	×	२	
म	म रे	प प रे		
ग — सा	ग ग म —	म प ध म ग	म मप	
जू ऽ ऽ	छ बि सों ऽ	नि क स आ य	के, मन	
०	३	×	२	

अन्तरा.

सां	ध		सां सां सां ध
प प — नि —	नि —	सां सां —	नि नि नि नि
ह म ऽ को ऽ	दे ऽ	ख के ऽ	ठा ऽ ड़े भ
×	२	०	३
		नि	
सां — — सां ध	नि़ प	ध रें सां	सां ध नि़ प
ये ऽ ऽ ने ऽ	क प	गी ऽ या	पे ऽ च ब
×	२	०	३
प ध म रे	प		
ध म — ग ग	म मप		
ना ऽ ऽ ऽ य	के, मन		
×	२		

नट.

प्रख्यातो नट राग एष विलसत्तीव्रस्वरैर्मेतरैरारोहे
परिपूर्णताऽस्य धगयोस्त्यागोऽवराहे मतः ॥
वादी दीव्यति मध्यमो लसति संवादी तु षड्जस्वरो ।
धीमद्भिः प्रहरात्परं सुमधुरं रात्रावसौ गीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ७४ ॥

सगमपौ गमौ रिगौ मपौ मगौ मरी च सः ।
नटाह्वयो मतो मांशो द्वितीयप्रहरे निशि ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ४३ ॥

कोमल मध्यम तीख सब उतरत धग न लखाइ ।
सम संवादी वादितें नट छबि देत दिखाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ७५ ॥

'नट' अथवा 'नाट' बिलावल थाट से उत्पन्न होता है । इसके अवरोह में धैवत और गांधार स्वर वक्र होते हैं । आरोह सम्पूर्ण होता है । अवरोह में कहीं-कहीं कोमल निषाद का प्रयोग होता है । वादी स्वर मध्यम और संवादी षड़ज है । इसका गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है । इस राग में मध्यम स्वर गांधार की संगति में खुलकर जोरदार लगता है । उदाहरण के लिये "सा, गम, म, मपम, गम" आदि ।

साथ ही उक्त स्वर समुदाय और "रेगमप, सारेसा" राग वाचक भी हैं ।

उठाव.

सा, ग, म, पगम, रेगमप, मग, मरे, सा ।

चलन.

रे
सा, ग, गम, म, पम, ग, ग, म, प, सांधनिप, मग, रे,
ग, मप, सारेसा ।

'नट' एक स्वतन्त्र राग स्वरूप है। इसका अन्य कितने ही रागों से सहज और सुन्दर योग होकर और उन रागों के मिश्र रूप निर्मित होकर प्रचार में रूढ़ होगये हैं। उदाहरणार्थः—

नट बिहाग अथवा बेहाग नाट.

सा, गम, प, म, पसां, प, गमग, निप, गम, पनिसांमं,
गं, सां, पधम, पग, नि़सा। पपनि, निसां, गंसां,
ध
निनिप, म, पनि, प, धम, पमग, रेसा।

कामोद नाट.

प
गमपगमरेसारे, ग, म(प), म, ग, म, रेसा, सा(सा), धनि़प़,
सा, मगप, धप, पसां, प(प), पग, गमपगम, रेसारे।

केदार नाट.

सा, रेसा, म, मप, धप, म, गम, म, प, सां, धनि़प,
धपम, सारेगमप, सारेसा।

'नटनारायण' नाम का एक नट का भेद और भी है, उसमें अवरोह में धैवत स्पष्ट रूप से नहीं लिया जाता और मध्यम पर नट जैसा न्यास नहीं किया जाता, आरोह में निषाद दुर्बल रहता है, बाकी सब नट जैसा ही है।

नट—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा	–	ग	म	म	म	प	म	–	म
शु	ऽ	द्ध	स्व	र	र	च	मे	ऽ	ल
×		२			०		३		
ग	म	प	प	प	म	ग	म	–	म
म	ऽ	ध्य	म	क	रि	प्र	धा	ऽ	न
×		२			०		३		
					नि		सां		
ग	म	प	प	–	ध	सां	ध	नि॒	प
ना	ऽ	ट	रा	ऽ	ग	नि	गा	ऽ	य
×		२			०		३		
रे	ग	ग	म	प	सा	रे	सा	–	सा
गु	नि	शा	ऽ	स्त्र	प	र	मा	ऽ	न।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	–	प	सां	–	सां	–	सां	सां	–
छा	ऽ	य	का	ऽ	मो	ऽ	द	सूं	ऽ
×		२			०		३		
सां	गं	गं	–	मं	रें	–	सां	–	सां
अ	लि	या	ऽ	मि	ले	ऽ	आ	ऽ	य
×		२			०		३		
	सां						सां		
प	ध	नि	सां	रें	सां	सां	ध	नि॒	प
ध	ग	व	र	ज	अ	व	रो	ऽ	ह
×		२			०		३		

रे	ग	ग	म	प	सा	रे	सा	–	सा
च	तु	र	नि	त	तू	ऽ	मा	ऽ	न।
×		२			०		३		

नट—झपताल (विलम्बित)

स्थायी.

		सा							
सा	सा	म	म	म	म	म	म	–	म
जु	व	ति	जु	थ	स	न	फा	ऽ	ग
×		२			०		३		
ग		म					ग		
म	प	प	म	प	म	ग	म	–	म
खे	ऽ	ल	त	नं	द	के	ला	ऽ	ल
×		२			०		३		
ग					प		सां		
म	मग	प	प	–	सां	–	ध	नि	प
कुं	वऽ	र	हो	ऽ	री	ऽ	हो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग		रे			ग				
रे	ग	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा
हो	ऽ	री	ऽ	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ल	ना।
×		२			०		३		

अन्तरा.

म									
प	–	सां	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां
गा	ऽ	य	न	ट	ना	ऽ	रा	य	ण
×		२			०		३		

नि		रें					सां		
सां	गं	गं	मं	रें	सां	सां	ध	नि॒	प
मु	दि	त	चे	ऽ	त	सु	फा	ऽ	ग
×		२			०		३		
							सां		
प	प	रें	रें	सां	रें	सां	ध	नि॒	प
च	हूं	ऽ	दि	स	मि	ल	गो	ऽ	प
×		२			०		३		
म		रे			ग				
रे	ग	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा
बा	ऽ	ल	बिं	द	टो	ऽ	ऽ	ल	ना।
×		२			०		३		

नटनारायण—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

								ध	
सा	रे	सा	सा	प	प	–	ध	ग	म
हा	ऽ	थ	ड	म	रू	ऽ	लि	ये	ऽ
३			×		२			०	
म								ध	
सा	रे	सा	सा	प	प	–	ध	ग	–
हा	ऽ	थ	ड	म	रू	ऽ	लि	ये	ऽ
३			×		२			०	
			म						
म	–	–	प	–	सां	–	रें	सां	–
ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	च	ऽ	त	गा	ऽ
३			×		२			०	
सां			म					म	
ध	–	प	रे	–	ग	म	प	ग	म
व	ऽ	त	ब्र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छा	ऽ।
३			×		२			०	

अन्तरा.

प	–	सां	–	सां	सां	–	रें	सां	–
ला	ऽ	से	ऽ	रु	तां	ऽ	ड	व	ऽ
×		२			०		३		
सां	(नि)ध	सां	–	रें	सां	सां	(सां)ध	–	प
नि	र	त	ऽ	क	र	त	है	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
(म)प	–	सां	–	रें	सां	–	(सां)ध	–	प
ना	ऽ	च	ऽ	त	गा	ऽ	व	ऽ	त
×		२			०		३		
(रे)सा	रे	ग	म	प	(प)ग	म	सा	रे	सा
ब्र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह्मा	ऽ।	हा	ऽ	थ
×		२			०		३		

नटबिलावल.

वेलावली स्यान्नटपूर्विकाऽपि श्रुतिप्रिया मध्यमवाद्यलंकृता ।
आरोहणे यत्र नटे विभाति प्रगीयते प्रातरियं सुधीभिः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥१७॥

सगौ मपौ मगौ मरी गमौ पमौ गमौ रिसौ ।
नटवेलावली प्रोक्ता प्रातर्गेयांशमा जने ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥३५॥

चढत बिलावल राग में गावत नट की तान ।
सम संवाद ।वादितें नट्टबिलावल जान ॥

राग चन्द्रिकासार ॥१६॥

'नटबिलावल' नट और बिलावल, इन दोनों रागों के संयोग से उत्पन्न होने वाला मिश्र राग है। इसके पूर्वाङ्ग में नट का अङ्ग और उत्तरांग में बिलावल का अङ्ग होता है। वादी स्वर मध्यम और संवादी षड़ज है। सा, ग, ग, म, इस तरह उठाव लेकर आगे अवरोह में बिलावल जोड़ देने से यह राग स्पष्ट होता है। इसका गायन-समय दिवस का दूसरा प्रहर है। इसमें भी मध्यम स्वर खुला लगाने से राग को शोभा प्राप्त होती है।

उठाव.

सा, गम, पम, ग, म, रे, गमप, मग, मरे, सा ।

चलन

सा, ग, गम, म, मप, मग, मरे, ऩिधप, म, पमग,
रे, ग, मप, मग, मरेसा ।

नटबिलावल—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

म⌒			म	रे					
ग	—	सा	ग	ग	म	—	म	म	—
आ	ऽ	ज	न	व	ना	ऽ	ग	री	ऽ
×		२			०		३		
ग		म					रे		
म	प	प	प	—	म	ग	ग	म	ग
ला	ऽ	ल	सों	ऽ	म	च	र	हे	ऽ
×		२			०		३		
ग⌒		रे			प				
म	रे	नि॒	ध	प	म	—	प	म	ग
ल	लि	त	सं	ऽ	के	ऽ	त	ब	ट
×		२			०		३		
ग		रे							
रे	ग	ग	म	प	म	ग	मरे	सारे	सा
नि	क	ट	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री।
×		२			०		३		

अन्तरा.

				ध					
प	प	नि	नि	नि	सां	—	सां	रें	सां
स	घ	न	द्रु	म	कूं	ऽ	ज	न	व
×		२			०		३		
सां	सां	ध						सां⌒	
नि	नि	नि	सां	सां	रें	सां	सां	ध	नि॒प
बि	पि	न	कु	सु	मि	त	स	दा	ऽऽ
×		२			०		३		
		नि॒	नि॒	नि॒				सां⌒	
म	म	ध	ध	ध	सां	—	सां	ध	नि॒प
क	र	त	धु	न	की	ऽ	र	को	ऽऽ
×		२			०		३		

	प				ग				
प	नि̱	ध	प	—	म	ग	म	रे	सा
कि	ल	च	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रि।
×		२			०		३		

नटबिलावल—झपताल (विलम्बित).

स्थायी.

प	प	प	प	—	ध	प	ग	म	प
मु	कु	ट	के	ऽ	रं	ऽ	ग	न	पै
×		२			०		३		
नि	नि			रें	सां	ध		नि	
ध	ध	नि	सां	सां	नि	नि	सां	ध	प
इ	न्द्र	को	ऽ	ध	नु	ष	वा	ऽ	रुं
×		२			०		३		
						ग	म		
प	रे	ग	म	प	म	म	ग	रे	सा
अ	म	ल	ऽ	क	म	ल	वा	ऽ	रुं
×		२			०		३		
सा	नि̱	ध	पम	प	म	ग	रे	सा	रे
लो	ऽ	च	नऽ	वि	भा	ऽ	ल	प	र।
×		२			०		३		

अन्तरा.

			नि						
प	प	ध	ध	नि	सां	—	—	—	सां
कुं	ड	ल	ऽ	प्र	भा	ऽ	ऽ	ऽ	पै
×		२			०		३		

सां	गंरें	सांनि	सां	रें	सां	—	—	ध	नि
को	ऽऽ	टऽ	ऽ	प्र	भा	ऽ	ऽ	क	र
×		२			०		३		
ध	—	प	—	प	म	ग	म	—	प
बा	ऽ	ऽ	ऽ	र	डा	ऽ	रू	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ध	नि	सां	रें	सां	नि	सां	ध	—	प
को	ऽ	टि	क	म	ल	न	वा	ऽ	रू
×		२			०		३		

संचारी.

प	प	प	ध	प	म	ग	रे	सा	रे
ब	द	न	ऽ	र	सा	ऽ	ल	प	र
×		२			०		३		
रे	रे	प	—	प	प	प	प	प	—
त	न	के	ऽ	ब	र	न	प	र	ऽ
×		२			०		३		
रे	प	ग	म	प	ग	म	रे	—	सा
नी	ऽ	र	द	स	ज	ल	वा	ऽ	रू
×		२			०		३		
ग	रे	सा	—	रे	सा	सा	ध़	—	प़
च	प	ला	ऽ	च	म	क	म	ऽ	न
×		२			०		३		

सा	रे	ग	म	प	ग	–	रे	सा	सा
मो	ऽ	ह	न	की	मा	ऽ	ल	प	र।
×		२			०		३		

आभोग.

		नि	नि						
पं	प	ध	ध	नि	सां	सां	सां	–	सां
चा	ल	पै	ऽ	म	रा	ल	वा	ऽ	रुं
×		२			०		३		
गं	रें	सां	नि	सां	ध	नि॒	ध	प	प
म	न	प	र	म	ध	न	वा	ऽ	रुं
×		२			०		३		
प	म	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	नि
औ	र	क	हा	ऽ	क	हा	वा	ऽ	र
×		२			०		३		
सां	ध	प	ध	प	म	ग	रे	सा	रे
डा	रुं	नं	ऽ	द	ला	ऽ	ल	प	र।
×		२			०		३		

नटबिलावल–चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

			ग		प
सानि॒	सा	रे	रेग	म	मप
पूऽ	ऽ	र	नऽ	ऽ	पुऽ
०		३		४	

म	ग	रे	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा
रा	ऽ	न	प	र्मा	ऽ	नं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द
×		०		२		०		३		४	
सा	ध़	प़	ध़	नि़	सा	—	सा	रे	रे	—	ग
ई	ऽ	स	तू	ऽ	है	ऽ	प	र	मा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
						नि			रें	सां	
म	म	प	—	ध	प	ध	नि	सां	सां	नि	सां
ऽ	हूँ	ते	ऽ	प	र	प्र	कृ	ति	प्र	धा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध	प	मप	मग	म	रे						
ऽ	ऽ	नऽ	मेंऽ	ऽ	ऽ।						
×		०		२							

अन्तरा.

प	प	प	ध	निध	नि	सां	सां	—	—	—	सां
घ	ट	घ	ट	ऽऽ	ते	ऽ	रो	ऽ	वा	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	
रें	सां	—	ध	नि	सांनि	रें	सां	सां	ध	—	प
स	दा	ऽ	तू	ऽ	स्वऽ	यं	ऽ	प्र	का	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	
—	ध	नि	सां	—	रें	गं	मं	पं	मंगं	मं	रें
ऽ	ते	ऽ	रो	ऽ	चि	द्	ऽ	आ	भाऽ	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	

–	सां	–	रें	सां	सां	सां	ध	निध	सांनि	रें	सां
ऽ	सो	ऽ	ऽ	ऽ	न	आ	व	ऽऽ	तऽ	ऽ	ब
×		०		२		०		३		४	
ध	–	प	मग	म	रे						
खा	ऽ	न	मेंऽ	ऽ	ऽ।						
×		०		२							

संचारी.

सा नि़	सा	–	रे	रे	गरे	ग	म	म	प	–	म
वि	धि	ऽ	औ	र	निऽ	षे	ऽ	ध	भा	ऽ	व
×		०		२		०		३		४	
ग	रे	ग	म	प	–	प	ध	प	ध	नि	सां
अ	भा	ऽ	व	तें	ऽ	र	हि	त	तू	ऽ	है
×		०		२		०		३		४	
–	सां	ध	प	मग	रे	ग	म	रे	सा	रे	सा
ऽ	सु	ध	बु	धऽ	ऽ	तू	ऽ	है	ध्या	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	
ध़	नि़	रे	सा	रे	प	म	ग	म	रे	सा	–
अ	धै	ऽ	आ	ऽ	ठ	ध्या	ऽ	ऽ	न	में	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

आभोग.

प	–	–	ध	नि	ध	नि	सां	––	सांनि	रें	सां
तू	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ	नि	ऽ	ऽह्र	सौंऽ	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	

				नि	नि						
सांनि	रें	सां	–	ध	ध	नि	सां	रें	सां	–	सां
तोऽ	ऽ	में	ऽ	गु	ण	के	ऽ	प्र	सं	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
सां	ध	प	ध	नि	सां	सां	–	–	सां	–	रें
ऐ	ऽ	से	जै	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	रं	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
गं	मं	पं	मंगं	मं	रें	सां	ध	–	सांनि	रें	सां
दे	ऽ	खी	यऽ	ऽ	त	फ	टी	ऽ	कऽ	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	
ध	–	प	मग	म	रे						
खा	ऽ	न	मेंऽ	ऽ	ऽ						
×		०		२							

नटबिहाग—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

	सा
	प
	सा

ध			रे												
प	म	ग	ग	म	–	–	–	म	मग	प	प	सां	–	–,	प
ऽ	ज	ऽ	न	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ये	नाऽ	ऽ	ये	री	ऽ	ऽ,	पि
३				×				२				०			
ध											ध		रे	ग	
म	ग	नि़	सा	नि़	प़	नि़	सा	ग	म	प	प	म	ग	ग,	प
ऽ	या	बि	न	स	खि	मो	रे	जि	या	घ	ब	रा	ऽ	ये,	सा।
३				×				२				०			

अन्तरा.

प
ग

			ध									ध	ध		
प	नि	–	नि	सां	–	–	,सां	सां	सां	(सां)	सां	नि	नि	प,	प
र	जे	ऽ	घ	टा	ऽ	ऽ	,बि	ज	री	ऽ	सि	च	म	के,	च
३				×				२				०			
	प			रे							ध			रे	
प	ग	म	ग	नि़	नि़	सा	सा	ग	म	प	प	म	ग	ग़,	प
त	र	द्	र	स	न	बि	न	जि	या	त	र	सा	ऽ	ये	सा
३				×				२				०			

कामोदनाट–त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

गम	रे	सा	सा	रे	–	–	–	ग	म	गम	प	म	ग	–	म
हो	गा	ये	का	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	द्	ऽ	ऽ	ना
३				×				२				०			
रे	–	सा	सा	रे	–	सा	–	सा	–	रे	सा	सा	ध़	ध़	प़
ऽ	ऽ	ट	स्व	रू	ऽ	प	ऽ	पं	ऽ	डि	त	अ	नु	म	त
३				×				२				०			
			म												
सा	–	म	ग	प	मंप	ध	प	प	सांध	सां	प	धपमंप	प	ग	गमप
शं	ऽ	क	र	भू	ऽ	स्व	न	मे	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ल	ऽ	ऽऽऽ ।
३				×				२				०			

अन्तरा.

प – सां सां	सां सां सां –	सां ध सां रें	मां नि ध प
रो ऽ ह न	अ व रो ऽ	ह न नि ग	को त ज त
३	×	२	०
सा सा म ग	प प ध प	प सांध सां –	धपमंप प ग गमप
रि प वा ऽ	दि च त र	ला ऽ ऽ ऽ	ऽऽऽऽ गे ऽ ऽऽऽ।
३	×	२	०

कामोदनाट--चौताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा ध	प ध	मं प	म ग	(म) म रे	सा सा
सां व	रि सु	र त	मो रे	म न	ब स
×	०	२	०	३	४
(ग) रे रे	गम प	म ग	म रे	सा रे	सा –
ग इ	हुऽ र	रं ऽ	ऽ ग	प्र भु	की ऽ
×	०	२	०	३	४
प़ प़	सा सा	रे रे	सा सा	(ग) रे रे	ग ग
नि र	ख नि	र ख	सु ध	बु ध	स ब
×	०	२	०	३	४
ग म	(ध) प –	म ग	म रे	सा रे	सा –
त न	की ऽ	भू ऽ	ऽ ऽ	ल ग	ई ऽ।
×	०	२	०	३	४

अन्तरा.

								नि			
प	–	सां	सां	सां	–	सां	नि	ध	–	सां	रें
मो	ऽ	र	प	खा	ऽ	मु	र	ली	ऽ	ब	न
×		०		२		०		३		४	
				मं			मं	गं			
सां	नि	ध	प	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	सां
मा	ऽ	ला	ऽ	सो	ऽ	हे	च	तु	र	भु	ज
×		०		२		०		३		४	
नि								ग			
प	सांनि	सां	नि	ध	प	म	ग	म	रे	सा	–
का	ऽ	क	हुँ	अ	प	ने	ऽ	म	न	की	ऽ ।
×		०		२		०		३		४	

केदारनाट—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा –
दै ऽ

नि़				नि़							प़				
ध़	नि़	सा	रे	सा	सा	ध़	प़	म़	–	प़	रे	–	सा	सा	–
मा	रो	रे	ढी	ठ	न	तो	रा	का	ऽ	कि	नो	ऽ	रे	दै	ऽ
०				३				×				२			
नि़				नि़								प़			
ध़	नि़	सा	रे	सा	सा	ध़	प़	म़	–	–	प़	रे	–	सा	–
मा	रो	रे	ढी	ठ	न	तो	रा	का	ऽ	ऽ	कि	नो	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

													ग		
नि़	सा	रे	ग	म	प	,निध	प	म	ग	रे	नि़सारे	गमप	मरे,	सा	–
ड	ग	र	च	ल	त	,मऽ	न	ली	ऽ	न	छीऽऽ	ऽऽऽ	ऽन,	दै	ऽ।
०				३				×				२			

अन्तरा.

													ग		
म	–	म	म	प	–	,निध	प	म	म	रे	नि़सारे	गमप	मरे	सा	–
मैं	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	,जऽ	ल	भ	र	न	बाऽऽ	ऽऽऽ	ऽत	थी	ऽ
०				३				×				२			
													ग		
नि़	सा	रे	ग	म	प	,निध	प	म	ग	रे	नि़सारे	गमप	मरे	,सा	–
बं	ग	री	प	क	र	,मऽ	न	ली	ऽ	न	छीऽऽ	ऽऽऽ	ऽन	,दै	ऽ।
०				३				×				२			

राग बिहागड़ा व पटबिहाग



ये दोनों बिहाग के ही उपांग हैं। इन दोनों के अवरोह में कोमल नी का प्रयोग होता है। आरोह में रिषभ किंचित प्रमाण में लिया जाता है। 'बिहागड़ा' में मध्यम स्वर का कुछ अधिक महत्व होता है। इसी तरह धैवत भी सरल लिया जाता है। कोमल नि का प्रयोग अवरोह में सरल रूप से "सां, नि ध" की रीति से किया जाता है। पटबिहाग' में ऐसा नहीं होता। 'पटबिहाग' में 'बिहागड़ा' की अपेक्षा बिहाग का अङ्ग अधिक प्रमाण में होता है। कोई-कोई तो यही कहा करते हैं कि 'शुद्ध बिहाग' में उपरोक्त रूप से नि का प्रयोग करने और आरोह में थोड़ा रिषभ ग्रहण करने से 'पटबिहाग' हो जाता है।

बिहागड़ा का चलन.

रे

गमध, पधनिध, पमगसा, गग, पम, मगम, पधनि,

सां, सां, निध, प, मपम, गरेसा।

पटबिहाग का चलन.

गमनिधप, गमरेग, मपमग, सानि, पनिसा।



बिहागड़ा—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा – म ग	प – नि ध	सां – नि प	– – म ग
गा ऽ व त	रा ऽ ग बि	हा ऽ ग ड़ा	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
सां – नि ध	प – म ग	गम प ग म	ग – ऩि सा
नी ऽ सु र	को ऽ म ल	मेऽ ऽ द दि	खा ऽ व त
०	३	×	२
ऩि सा रे रे	ऩि सा ग म	प – ग म	ग – ऩि सा
रा ऽ ग बि	हा ऽ ग स	रू ऽ प मि	ला ऽ व त।
०	३	×	२

अन्तरा.

प – प –	नि – नि नि	सां सां सां सां	सां रें सां –
गा ऽ वा ऽ	दी ऽ औ र	नी ऽ स म	वा ऽ दी ऽ
०	३	×	२
सां – गं –	रेंगं मं गं रें	सां – सां सां	नि – प नि
दो ऽ नो ऽ	मऽ ऽ ध्य म	का ऽ हु क	हे ऽ गु नि
०	३	×	२
सां – नि ध	प – म ग	गम प ग म	ग – सा सा
नी ऽ सु र	अं ऽ ग ख	माऽ ऽ ज ब	ता ऽ व त
०	३	×	२
सा – रे रे	ऩि सा ग म	प प ग म	ग – ऩि सा
या ऽ म द्वि	ती ऽ य च	तु र थ स	गा ऽ व त।
०	३	×	२

बिहागड़ा—रूपक (विलम्बित).

स्थायी.

					प	
,गम	ध	पधनि॒	धप	म	म	—
ऽ,मग	जैं	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
२		३		×		
			रे	ग		
ग	सा	ग	ग	प	म	—
यं	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
२		३		×		
ग	म			सां	सां	
म	गम	—	पध	नि	नि	सां
ये	ऽऽ	ऽ	बिध	क	व	ऽ
२		३		×		
			ध			
नि॒	ध	प	,पध	सां	नि॒	ध
ने	ऽ	ऽ	,दुऽ	ला	ऽ	ऽ
२		३		×		
प			प			
ध	प	म	म	ग	रे	सा
रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
२		३		×		

अन्तरा.

			ध			
	निनि	सांसां	निनि	रें	मां	—
आ	वन	कह	ऽऽ	ग	ये	ऽ
२		३		×		
नि		सां				
सां	सां	रें	सां	नि॒	ध	प
अ	ज	हूं	न	आ	ऽ	ऽ
२		३		×		

नि						
ध	नि	ध	प	म	(म)	–
ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
२		३		×		
प						
मप	सां	गं	रेंगंमं	गं	रें	सां
जग	के	ऽ	ऽऽऽ	जी	ऽ	ऽ
२		३		×		
नि	ध	प	सां	नि	ध	प
व	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
२		३		×		
नि			प			
ध	प	म	म	ग	रे	सा
मू	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ।
२		३		×		

पटबिहाग—आड़ाचौताल (मध्यलय).

स्थायी.

	ग	म			म	म					रे		
ग	म	नि	ध	प	प	प	(प)	म	ग	–	ग	प	म
	कैं	से	कैं	से	ऽ	बो	ऽ	ल	त	ऽ	मो	ऽ	सों
०		४		०		×		२		०		३	
											नि		
ग	रे	–	नि	–	धनि	नि	रे	–	सा	–	सा	ग	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	लु	ग	ऽ	वा	ऽ	दे	खो	सैं
०		४		०		×		२		०		३	

सा —	सा नि़	नि़ध़ नि़	सारे मानि़सा	नि़ नि़	ध़ प़	— —
यां ऽ	ते हा	ऽऽ रे	बोऽ ऽऽऽ	ल न	बि ना	ऽ ऽ
०	४	०	×	२	०	३
— प़	नि़ सा	रे —	सा —	नि़सारे गमप	म ग	— रे
ऽ पू	छे न	हीं ऽ	सा ऽ	सऽऽ ऽऽऽ	न नं	ऽ द
०	४	०	×	२	०	३
— सा	— नि़	— नि़	सा ग	— म	ग रे	म ग
ऽ को	ऽ ऊ	ऽ ऽ	बा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ त।
०	४	०	×	२	०	३

अन्तरा.

गम	—प नि	सां सां	— रें	सां निनि	सां —	— प
जन	ऽम जो	ब न	ऽ यूं	ही ऽऽ	जा ऽ	ऽ त
०	३	०	४	०	×	२
— म	— ग	गरे सा	— सा	प —म	ग रे	नि़ रे
ऽ रं	ऽ गी	ऽऽ ले	ऽ ति	हा ऽरी	मा ऽ	या ऽ
०	३	०	४	०	×	२
सा —	ग म	प निसां	रेंसां —नि	ध प	गम पनि	सांरें निरें
मैं ऽ	नि स	दि नऽ	ऽजि ऽया	दु ख	पाऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ
०	३	०	४	०	×	२
सांनि धप	गम ग	ग, म	नि ध	प —		
ऽऽ ऽऽ	ऽऽ त	ऽ। कै	से कै	से ऽ		
०	३	०	४	०		

राग सावनी (बिहाग अंग)–झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि़ सा	ग	म	प	सां	प	म	ग	–	सा
जा	ऽ	ने	ऽ	अ	क	ल	स	ऽ	व
×		२			०		३		
नि़ सा	ग	रे ग	प	म	ग	रे	नि़ सा	रे	सा
औ	ऽ	र	ऽ	बे	अ	ऽ	क	ऽ	ल
×		२			०		३		
सा नि़	ध़	सा	रे	सा	नि़	ध़ नि़	ध़ प़	–	–
आ	ऽ	प	ऽ	भ	यो	ऽ	है	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
नि़ सा	सा	ग म	ग	म	प	प	सां नि	सां	सां
अ	प	नी	ऽ	क	ह	त	औ	ऽ	र
×		२			०		३		
प	नि	सां	–	सां	गं	रें	नि सां	रें	सां
का	हु	की	ऽ	न	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
प	ग	म	प,	सां	प	म	ग	–	सा
ऽ	ऽ	ने	ऽ।	अ	क	ल	स	ऽ	व
×		२			०		३		

अन्तरा.

म प	–	नि	–	नि	सां	सां	सां	–	सां
ऐ	ऽ	से	ऽ	व	हु	त	दे	ऽ	खे
×		२			०		३		

नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	सां	–	नि
द	र	स	ऽ	म	न	स	ह	ऽ	मे
×		२			०		३		
म		प							
प	ग	ग	प	म	ग	रे	सा	–	–
या	ऽ	प्र	ऽ	थ	वी	ऽ	में	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
		ग							
सा	सा	म	ग	म	प	–	नि	सां	सां
गु	नि	ज	न	की	वि	ऽ	द्या	ऽ	को
×		२			०		३		
प	नि	सां	सां	मं	गं	रें	सां	रें	सां
नि	की	ऽ	ष्ट	व	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
प	ग	म	प,	सां	प	ग	ग	–	सा
ऽ	ऽ	ने	ऽ।	अ	क	ल	स	ऽ	ब
×		२			०		३		

राग मलुहा अथवा मलुहा केदार

रिसौ पमौ पनी सश्च गमौ पगौ मरी च सः ।
मलुहा रात्रिगा मांशा प्रारोहे रिधदुर्बला ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥४७॥

केदारहिके मेलमें श्यामकमोद संजोग ।
चढत रिखब धैवत नहीं कहि मलुहा गुनिलोग ॥

राग चन्द्रिकासार ॥७८॥

केदारस्य प्रभेदो विलसति मलुहा मेतरैः सर्वतीव्रैः ।
संयुक्तो मध्यमांशः सहजरुचिरसंवादिषड्जाभिरामः ॥
आरोहे प्रायशोसावृषभधरहितः श्यामकामोदमिश्रो ।
गीतः पूर्वे हि यामे निशि कुशलजनैर्मंद्रमोद्ग्राहपूर्वम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥७७॥

मलूहा, यह केदार राग के एक उपभेद के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि केदार में श्याम और कामोद का संयोग करने से यह राग उत्पन्न होता है। यह बिलावल थाट का राग माना जाता है। इसमें क्वचित ही तीव्र–मध्यम ग्रहण किया जाता है। प्रायः इसका विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही होता है। विलम्बित लय में विस्तार होने पर राग को गांभीर्य प्राप्त होता है। इस राग की जीवभूत तान "रे, सा. प़, म़ म़ प़, प़ ध़ नी़, सा, रे, सा" है। इस तान के आगे कामोद का अंग "सा, ग, मरे, गमप गमरेसा" जोड़ देने पर यह राग स्पष्ट हो जाता है। इस राग में षड़ज और मध्यम का संवाद है। आरोह में रिषभ और धैवत स्वर दुर्बल होते हैं। मन्द्र नी से, विलम्बित रूप से सा पर जाने में राग रूप विशेष स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इसके गाने का समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है।

उठाव.

रेसा, प़, म़प़, नि़, सा, गमप, गमरे, नि़, सा ।

चलन,

प प
सा, रेसा, म़, म़, प़ सा, सा, रे, सा, ग, ग, मरे, गमप, गमरेनि़सा, सा, ध़प़, म़प़, सा, नि़सा, प, मग, मरे, सा, मग,

ध
प, मपधनि, धप, प़सा, पप, मगमरे, नि़सा ।

मलुहाकेदार—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा प़ म़ म़	प़ — — प़	प़ नि़ सा सा	रे — नि़ सा
म लु हा के	दा ऽ ऽ र	च तु र सु	ना ऽ व त
३	×	२	०
सा — ग —	ग ग म रे	ग म प ग	म रे नि़ सा
सं ऽ पू ऽ	र न सु र	शु ऽ द्ध ल	गा ऽ व त।
३	× ●	२	०

अन्तरा.

प प सां सां	सां — सां —	प नि सां रें	सां नि ध प
स प स म	वा ऽ दी ऽ	अ ध नि त	रो ऽ ह ण
३	×	२	०
ग म प ग	म रे नि़ सा	सा मग प धप	म रे नि़ सा
का मो दि सु	मे ऽ ल न	के ऽऽ दा रिऽ	पा ऽ व त।
३	×	२	०

मलुहा—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

रे सा प़ मग़	प़ — प़ प़ (नि)	— नि़ — सारे	सा — सा —
क्रु ऽ ष्ण मुऽ	रा ऽ रि श्या	ऽ म ऽ गिर	धा ऽ री ऽ
३	×	२	०

नि़ म म	म म	प प	रे
सा - ग ग	ग ग म रे	ग म प ग	म रे नि़ सारे
सं ऽ ग सो	ह त स ख	रा ऽ धा प्या	ऽ ऽ री ऽऽ।
३	×	२	०
सा - प़ म़			
कृ ऽ ष्ण मु			
३			

अन्तरा.

		नि	सां
प प सां सां	- सां रें सां	प नि सां रें	सां - ध प
श र न जा	ऽ य त्रा को	ज न म सु	धा ऽ र त
३	×	२	०
नि़ सा	ग	प	रे
सा सा म ग	प - ध प	ग म प पग	मरे नि़ सा रे
च तु रा ऽ	के ऽ प्र भु	तु म प रऽ	ऽऽ वा ऽ री।
३	×	२	०

मलुहा—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

	प़		
रे सा - प़	प़ म़ - म़ग़	प़ - - प़	प़ प़ नि़ सा
कै से ऽ जि	या ध ऽ रेऽ	धी ऽ ऽ र	मो रि आ लि
०	३	×	२
नि़ सा		ग	
सा म - मग	प ध - प	मंपध मंप - म	रे सा - सा
बा री ऽ उऽ	म री ऽ या	पिऽऽ याऽ ऽ घ	र ना ऽ हिं
०	३	×	२

नि़ सा		ग	
सा म – मग	प सां – सां	मंपध मंप – म	रे सा – सा
नि स ऽ दिऽ	ना नै ऽ न	बऽऽ रऽ ऽ स	त नी ऽ र।
०	३	×	२

अन्तरा.

प प – सां	सां – सां सां	निसांरें निसां – ध	प म – प
का सें ऽ क	हूं ऽ अ ब	जिऽऽ याऽ ऽ की	ऽ बी ऽ थ
०	३	×	२
ग		नि़ सा	
मंपध मंप – म	रे सा – सा	सा म ग प	प सां – प
कैऽऽ सेऽ ऽ क	रुं आ ऽ ली	ह र ऽ रं	ग बी ऽ न
०	३	×	२
ग			
मंपध मंप – म	रे सा – सा	प़ – – प़	
नाऽऽ हींऽ ऽ मि	टे पी ऽ र	धी ऽ ऽ र	इत्यादि
०	३	×	

मलुहा - तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

नि़ प़		नि़ सा	प
सा ,धप़ म़ ,प़	सा – नि़ सा	सा मग प प	ध – प मंप
मं ऽ,दर बा ,जो	रे ऽ ऽ ऽ	अ रेऽ बा जो	रे ऽ ऽ ऽऽ
३	×	२	०
मं	प प	नि़	नि़
प (प) मं म	धध,पमंप म ग मरे	सा रे सा –	सा सा रे सा
ध न ऽ ऽ	सऽबऽऽ मि ऽ ऽल	गा ऽ ओ ऽ	स खी ऽ यां
३	×	२	०

	प ध	नि़ सा	सा
नि़ ,ध़ प़ –	सा नि़नि़ रे सा	सा प – म	ग रे सा ध़नि़सारे
ऽ ऽ,स हे ऽ	ऽ ऽऽ ऽ ऽ	ल री ऽ या	ऽ ऽ ऽ ऽऽऽऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

मं सां		सां नि सां	
पप सांसां सां –,रें	सां – निसां –	नि ध सां रें	सां नि ध प
महुं मद सा ऽ,पि	या ऽ ऽऽ ऽ	म न के ऽ	बा ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
पप		नि़	ग
मंप मंप धध,पमंप	म ग रे सा	सा सा म –ग	प – (प) –
ऽ ऽ ऽऽ मऽ,नुऽऽ	वा ऽ ऽ ऽ	स दा ऽ ऽऽ	रं ऽ ग ऽ
३	×	२	०
ग	ग	मं	सा
म रे सा –	म मग ध प	प प(प) म ग	म रे सा ध़नि़सारे
घ ऽ र ऽ	का ऽऽ ऽ ज	रे ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽऽऽऽ।
३	×	२	०

मलुहा—तिलवाड़ा (विलम्बित)

स्थायी.

		नि़	नि़ सा
सा –,ध़प़ म़ ,प़प़	सा – नि़ सा	सा प म गरे	सा रे सा –
में ऽ,दर मा ,दिय	नी ऽ ऽ ऽ	को ऽ डी ऽऽ	ऽ ऽ ये ऽ
३	×	२	०
नि़ ग	ध़	सा	ध़
सासा मगप मंपधनि,ध प	प़ – सा सा	प (प) म गरे	सा नि़ नि़ रे
आश केऽऽ दाऽऽऽ,मा नूं	बा ऽ त न	पू ऽ छे ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

मं ध	नि	नि	
पप सांसां सांसां निनि	रें सां – निसां	सां निध सांनि रें	सां नि ध प
सुख दुख अप ऽऽ	ऽ नो ऽ ऽऽ	सा नूऽ ऽऽ ऽ	आं ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
मं पप	नि	नि सा मं	म
प धध,पमंप म गरे	सा रे सा निसा	सा मग प ,प(प)	म ग रे सा
को ऽऽ,डीऽऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽ ये ऽऽ	स दाऽ ऽ ,रंग	त ऽ र न
३	×	२	०
सा	मं नि		पप नि
–सा रेसा मग प	प धनिसांरें सां नि	ध प म –	धध,पमंप म,गरे सारे सा
ऽमी लबि चेऽ ऽ	क रऽऽऽ ता ऽ	ऽ ऽ र ऽ	मीऽ,लऽऽ बी,ऽऽ ऽऽ च।
३	×	२	०

मलुहा–धमार (विलंबित)

स्थायी.

			नि
			सा प –
			मो पे ऽ
			०
ग			ध
– – म मग	प – – – –	प –	प नि –
ऽ ऽ रं गऽ	डा ऽ ऽ ऽ ऽ	र ऽ	ग यो ऽ
३	×	२	०
	नि	प म	म
सा रे सा –	सा – – ग –	ग ग	ग – –
ऽ ऽ है ऽ	ए ऽ ऽ ऽ ऽ	नं द	जी ऽ ऽ
३	×	२	०

म – रे –	म ग म प ग –	म रे	रे नि़ सा रे
ऽ ऽ के ऽ	छो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	रा ऽ ऽ।
३	×	२	•
ग़ सा प़ म़ मग़			
मो पे रं गऽ			
३			

अन्तरा.

मं प – – सां –	सां –	सां सां –	ध नि प नि सां रें
बा ऽ ऽ ट ऽ	घा ऽ	ट में ऽ	रो ऽ क त
×	२	०	३
सां – – ध प	म गम प	ग म रे सा	नि़ सा मग प प
टो ऽ ऽ क त	सूं ऽ ऽ	ऽ द र	श्या ऽऽ म स
×	२	०	३
प ध प – ग –	म रे	रे नि़ सा रे,	ग़ सा प़ म़ मग़
लो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ना ऽ ऽ।	मो पे रं गऽ
×	२	०	३

मलुहा—(एक प्रकार) धमार (विलम्बित)

स्थायी.

प
ल

ग – म	म ध – प –	ग म ग – म रे	सा –
जो ऽ ऽ	ऽ ऽ ही ऽ	आं ऽ ऽ ऽ ऽ	खें ऽ
•	३	×	२

म		नि ग	म
प सा सा	रे रे सा सा	सा – – म –	– ग
ला ऽ ग	र ही तो सों	का ऽ ऽ सें ऽ	ऽ क
०	३	×	२
	म	प	
प – –	प ध प –	म प – म –	म, रे
हूँ ऽ ऽ	ये ऽ ही ऽ	ब ती ऽ यां ऽ	ऽ। ल
०	३	×	२

अन्तरा.

			नि
प प – सां –	, सां	सां – –	सां रें सां –
अ व ऽ धी ऽ	ऽ ब	दी ऽ ऽ	मों ऽ सों ऽ
×	२	०	३
सां सां			सां
ध ध – सां –	, रें	सां सां –	ध नि प –
अ न ऽ त ऽ	ऽ बि	ल म ऽ	र ऽ हे ऽ
×	२	०	३
		सां	ध सां
म – मग प –	, सां	ध – –	सां रें सां –
कै ऽ ऽऽ से ऽ	ऽ ल	गा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऊं ऽ
×	२	०	३
सां			
सां – – ध प	म प	म ग, मरे	ग म ध प
प्या ऽ ऽ री ऽ	छ ति	यां ऽ। लऽ	जो ऽ ऽ ही
×	२	०	३

———

राग-जलधर अथवा जलधर केदार

चांदनीजलधारौ च मलुहाख्यस्तृतीयकः ।
आधुनिका मत एते प्रभेदा लक्ष्यवर्त्मनि ॥ १०४ ॥
तीव्रमस्य प्रयोगेण तथा कोमल नेरपि ।
केदारे चांदनी नामा प्रकारः संभवेत्ततः ॥ १०५ ॥
मेघ केदारसंयोगाज्जलधारः समुद्भवेत् ।
संगिरंति पुनः केचिल्लक्ष्यलक्षणवेदिनः ॥ १०६ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगीते ।

यह केदार राग का एक भेद है जो बिलावल थाट से उत्पन्न होता है । यह औड़व है । इसमें गांधार और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं । इसमें केदार और मल्लार का संयोग होता है । इसका वादी स्वर मध्यम है और संवादी षड़ज है । स्थूल रूप में केदार का प्रस्तार कर बीच-बीच में "रेप" और "मरे" स्वर-संगति तथा मध्यम पर न्यास करने पर इसका स्वरूप अच्छा स्पष्ट हो जाता है । इसे रात्रि के दूसरे प्रहर में गाया जाता है ।

इस राग का साधारण चलन इस प्रकार है:—

सां, रेंसां, धपम, ममप, धपम, रेसा, सा, रेप, म, रे, सा, मपधसां, धपम, मप, धमां, सांसां, सां, रेंमंरेंसां, ध, प मपसां, धप मरेसा, रेंमंरेंसां, धप, म, प ।

जलधर—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

प									
सां	सां	रें	सां	–	ध	प	म	–	म
अ	ति	म	नो	ऽ	ह	र	रू	ऽ	प
×		२			०		३		
म					ग		म		
प	–	ध	प	–	म	म	रे	–	सा
रा	ऽ	ग	नी	ऽ	ज	ल	धा	ऽ	र
×		२			०		३		
नि		म			म				
सा	सा	रे	प	म	रे	रे	सा	–	–
ब	र	खा	ऽ	दि	न	न	में	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
प		सां					प		
म	प	ध	सां	–	ध	प	म	–	प
गा	ऽ	व	त	ऽ	न	र	ना	ऽ	र।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प		सां							
म	प	ध	सां	सां	सां	सां	सां	–	सां
ग	नि	ब	र	ज	क	र	गा	ऽ	य
×		२			०		३		
नि		मं					सां		
सां	–	रें	मं	रें	सां	सां	ध	–	प
म	ऽ	ध्य	म	सु	र	ब	ढा	ऽ	य
×		२			०		३		
प		सां			रे		सा		
म	प	ध	सां	सां	म	रे	रे	रे	सा
सं	ऽ	यो	ऽ	ग	क	हे	च	तु	र
×		२			०		३		

(मं) रें	मं	रें	–	सां	(प) ध	प	(प) म	–	प
के	ऽ	दा	ऽ	र	म	ल	हा	ऽ	र।
×		२			०		३		

जलधर–केदार–झपताल (कल्याणमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

प	प	म	प	प	सां	–	रें	सां	सां
ज	ल	ध	र	के	दा	ऽ	र	गु	नि
×		२			०		३		
सां	नि	ध	प	म	ध	प	म	म	रे
क	ह	त	स	ब	च	तु	र	ज	न
×		२			०		३		
सा	रे	सा	म	रे	प	म	ध	प	म
×		२			०		३		
सां	नि	ध	प	म	ध	प	म	रे	सा।
×		२			०		३		

अन्तरा.

म	म	प	मं	प	सां	–	सां	रें	सां
×		२			०		३		

सां	रें	सां	नि	ध	नि	ध	प	म	म
×		२			०		३		
प	प	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प	म
×		२			०		३		
ध	प	म	रे	रे	प	रे	म	रे	सा।
×		२			०		३		

राग दुर्गा (बिलावल थाट)

पमौ पधौ मरी पश्च सधौ मरी पधौ मरी ।
दुर्गा गनिपरित्यक्ता रात्रिगेयाऽथ मांशिका ।।
अभिनवरागमंजर्याम ।।४६।।

शुद्धमेलसमुत्पन्ना दुर्गाख्या लोकविश्रुता ।
आरोहे चावरोहेऽपि गनिहीनैव संमता ।।६२।।
मध्यमः संमतो वादी कैश्चित् पंचम ईरितः ।
गानमस्याः सदाभिष्टं द्वितीयप्रहरे निशि ।।६३।।
श्रीमल्लक्ष्यसंगीते (द्वितीयावृत्ति)

दुर्गा राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार और निषाद वर्ज्य होते हैं। अर्थात् इसकी जाति औड़व–औड़व है। इसका वादी स्वर मध्यम और सम्वादी षड़ज है। गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसमें मध्यम पर विश्रान्ति लेना अच्छा शोभित होता है। 'धम' 'रेप' और 'रेध' स्वर संगतियां रागवाचक हैं। अवरोह वक्र होता है। इस राग पर किंचित शुद्ध मल्लार और सोरठ की छाया पड़ती है, परन्तु उपरोक्त स्वर संगतियों के कारण शुद्धमल्लार से तथा गांधार और निषाद के वर्ज्य होने के कारण सोरठ से भिन्न हो जाता है। दक्षिणात्य–सङ्गीत के ग्रन्थों में 'शुद्ध सावेरी' नामक एक राग बताया गया है। ऐसा जान पड़ता है कि उसी राग को इधर के विद्वानों ने 'दुर्गा' नाम से प्रचलित किया होगा।

खमाज थाट में, खमाज अङ्ग का एक 'दुर्गा' नामक राग अलग है, उसकी चीजें आगे खमाज थाट के प्रकरण में देखी जावें।

उठाव

प, मप, धमरे, प, सांध, सांरें, पध, मरे सा ।

राग का साधारण चलन.

प, म, प, ध, मरे, रेसा, सांध, सां, रेंध, सां, प, ध, मरे, प ।
मप, ध, सां, सांरें, धसां, सांरें, मरें, धसां,
पधसां, ध, मरे, रेंधसां, पध, मरे, प ।

दुर्गा—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

रे प			ध
प म पध ध	(म) – रे म	रे प – प	प ध (म) रे
रा ऽ गऽ गु	नी ऽ ऽ, दु	र गा ऽ ब	खा ऽ ने ऽ
३	×	२	०
सा		सा	प
म प म मसा	रे रे सा सा	सां ध सां रें	ध सां ध (म)रे
औ ऽ ड वऽ	शु द्ध स्व र	सा ऽ वे री	प्र मा ऽ नेऽ
३	×	२	०

अन्तरा.

			प
म प ध सां	सां सां रें सां	सां रें मं रें	सां ध (म) रे
३	×	२	०
सां सां प ध	(म) रे सा सा	रें ध सां प	ध (म) रे ऽ ।
३	×	२	०

दुर्गा—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

ध प			रे
सां सां ध ध	(म) म – रे	सा – सा रे	ध़ सा सा –
छि ट क र	ही चां ऽ द	नी ऽ रं ग	भी ऽ नी ऽ
×	२	०	३

रे		म				सां	सां	ध	सां						
सा	–	रे	म	प	–	ध	ध	सां	ध	सां	रें	ध	सां	प	ध
रा	ऽ	त	पि	या	ऽ	तो	रे	मि	ल	न	की	ऽ	आ	ऽ	स
×				२				०				३			

अन्तरा.

प		सां						सां			रें				
म	प	ध	सां	सां	सां	सां	–	ध	सां	रें	ध	सां	ध	(म)	रे
सा	ऽ	ऽ	स्न	न	दि	या	ऽ	जा	ऽ	गे	मो	ऽ	ऽ	री	ऽ
×				२				०				३			

(अथवा)

प				ध	सां			सां							
म	–	प	ध	सां	ध	सां	–	ध	सां	सां	रें	ध	सां	ध	म
सा	ऽ	स	न	नं	दि	या	ऽ	जा	ऽ	गे	मो	ऽ	ऽ	री	ऽ
×				२				०				३			
मं		रें						प		सां			ध		
रें	–	मं	रें	–	सां	रें	सां	म	प	ध	सां	रें	सां	ध	प
कै	ऽ	से	आ	ऽ	उं	अ	ब	सैं	ऽ	यां	तो	रे	पा	ऽ	स
×				२				०				३			

(अथवा)

		सां			रे		
म	प	ध	सां	रें	ध	सांप	ध
सैं	ऽ	या	तो	रे	पा	ऽऽ	स
×				२			

दुर्गा—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

म ध	ग ग	म	ध
प – मप पधध	म – रे म	रे प मप ,प	प ध म रे
दे ऽ ऽऽ वीऽभ	जो ऽ ऽ दु	र गा ऽऽ ,भ	वा ऽ नी ऽ
३	×	२	०
ग म ग म		सा नि	ध प
म प म सा	रे रे सा सा	सां ध सां रेंध	सां ध (म) रे
ज ग त ज	न नी म हि	षा ऽ सु रऽ	म र द नी।
३	×	२	०

अन्तरा.

ग		नि रें	प
म प सांध सां	सां – रें सां	सां रें मं रें	सां ध (म) रे
हि म नऽ ग	नं ऽ दि नी	भ व भ य	कं ऽ द नि
३	×	२	०
ग म		सा सां	प
म प म मसा	रे रे सा सा	सां ध सां रें	ध (म) – रे
श र न गऽ	त च तु र	अ भ य व	र दा ऽ नि।
३	×	२	०

दुर्गा त्रिताल (विलम्बित).

स्थायी.

प

अ

प प		म म	
प – मप धध	(म) – रे –	रे रे प मप	मपध ,ध म रे
हो ऽ ऽऽ जिन	बो ऽ ऽ ऽ	ऽ लो ऽ ऽऽ	ऽऽऽ ,पि या ऽ
३	×	२	०

(अथवा)

सा

अ

सा प — मप मपध	म म — रे रे	प — मप मपधध	म — रे —
हो ऽ ऽऽ जिऽन	बो ऽ ऽ लो	ऽ ऽ ऽऽ ऽऽऽपि	या ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
रे म म प म —	म सा रे सा —	सा ध सां सांध सां रेंध	प सां ध (म), रे
मो ऽ सों ऽ	ऽ तु म ऽ	आ ऽऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽ जे। ऽअ
३	×	२	०

अन्तरा.

प म प सांध सांसां	सां — रें सां	नि मं सां रें मं रेंरें	प सां ध (म) रे
ज हां ऽऽ ऽब	से ऽ नि स	व हां ऽ ऽसि	धा ऽ रो ऽ
३	×	२	०
रे: म प म —	म सा रे सा —	सां सां सांध सां रें	ध प सां ध (म), रे
का ऽ हे ऽ	ह म सों ऽ	का ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जे। ऽअ
३	×	२	०

दुर्गा—त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी.

रे प — मप,म ,पधध	(म) — रे —	म म रे रे प ,मप	मप मपध (म) रे
तूं ऽ ऽऽ,ऽ ,जिऽन	बो ऽ ऽ ऽ	ल रे ऽ ,ऽऽ	प्याऽ ऽऽऽ रे ऽ
३	×	२	०

रे | | सा   रें | प
म प म — | सा रे सा — | सां सांध रें ध | सां ध (म) रे
रं ऽ ग ऽ | चू ऽ वे ऽ | प रेऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ गो ऽ।
३ | × | २ | ०

अन्तरा.

ध | | | ध प
म प सांध सां | सां — रें सां | सां रें मं रें | सां ध (म) रे
घ री एऽ क | मा ऽ ऽ न | रै ऽ न श्रं | धे ऽ री ऽ
३ | × | २ | ०
रे म | सा | सा | ध प
म प म मसा | रे रे सा — | सां सां सांध रें | सां ध (म) रे
मो ऽ रा ऽऽ | जि य रा ऽ | ड रे ऽऽ ऽ | ऽ ऽ गो ऽ।
३ | × | २ | ०

राग छाया

कुछ गायकों के मतानुसार छायानट राग, छाया और नट इन दो रागों के मिश्रण से बना है। किन्तु केवल 'छाया' के स्वतन्त्र रूप का वर्णन नहीं मिलता। यहां पर दिये हुए गीत में छायानट की तरह तीव्र मध्यम व नट का अंग नहीं है। अवरोह में गान्धार व आरोह में निषाद लगाया गया है। छायानट के आरोह में निषाद का और अवरोह में गान्धार का वक्रत्व है।

छाया—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

		ग		म			म		
सा	सा	रे	ग	प	म	ग	रे	–	सा
स	खि	यां	ऽ	र	चो	ऽ	रा	ऽ	स
×		२			०		३		
		सा							
सा	सा	ग	रे	सा	सा	–	ध़	नि़	प़
क	द्	म	की	ऽ	छैं	ऽ	ऽ	ऽ	या
×		२			०		३		
		सा						रे	
प़	प़	ध़	सा	सा	सा	रे	ग	सा	सा
ज	म	ना	ऽ	के	त	ट	नि	क	ट
×		२			०		३		
				म			म		
सा	सा	रे	ग	प	म	ग	रे	–	सा
नि	र	ख	त	स	ब	वि	ला	ऽ	स
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	सां	–	सां	सां	सां	सां	रें	सां
मु	र	ली	ऽ	म	धु	र	धू	ऽ	न
×		२			०		३		
सां	–	रें	गंमं	पं	गंमं	रें	सां	रें	सां
रू	ऽ	प	कऽ	रि	संऽ	पु	र	ऽ	न
×		२			०		३		

							सां		
प	प	रें	–	सां	सां	सां	ध	<u>नि</u>	प
प	रि	यो	ऽ	ग	शु	भ	दे	ऽ	ख
×		२			०		३		
		रें					म		
रे	ग	ग	म	प	म	ग	रे	–	सा
च	तु	रा	ऽ	म	यो	हु	ला	ऽ	स।
×		२			०		३		

राग छाया-तिलक.



यह एक मिश्र राग है, जो 'छायानट' और 'तिलक कामोद' के संयोग से उत्पन्न होता है। इसका स्वरूप इस प्रकार है। इस राग में—"रेग, रेगमप, म, पग, मरे" छायानट का भाग और "रेप, मग, सारेग, सा" तिलककामोद का भाग आता है।

इसका साधारण स्वरूप इस प्रकार है:—

ग
सा, रे, ग, रेग, मप, म, पग, सारेग, म, रेग, सा, प़प़
साध़, सा, रेगसा, सां, पधम, गरेग, सा । मप
नि, निसां, रेंपंमंगं, सांरेंगंसां, सां रें सां
धनि॒प, सां, प, धम, गरेग, सा ।



छायातिलक–झूमरा (मध्यलय).

स्थायी.

ग	प		
रे ग गम (प)	म ग रे	सा रेग सा –	गम ग सा
जा ऽ यऽ सु	ना ऽ ओ	ह रिऽ सों ऽ	बिऽ न ति
३	×	२	०
सा रे		प	
प़ प़ ध़ सा	रे ग सा	सां सांप ध म	गरे ग सा
ह म री ऽ	स ज नी	पै यांऽ ला गु	तोऽ ऽ रे।
३	×	२	०

अन्तरा.

		गं गं	
म मप नि नि	सां सां सां	रें रेंपं मं गं	सां रेंगं सां
द रऽ स न	के बि न	जि याऽ घ ब	रा ऽऽ वे
३	×	२	०
प	सां		ग
सां – रें सां	ध नि प	सां सां प धप	म गरेग सा
बे ऽ गि प	धा ऽ रो	ह र रं गऽ	मो ऽऽऽ रे।
३	×	२	०

राग गुणकली



वेलावलीसुमेलाच्च जातो रागो गुणिप्रियः ।
गुणकलीति नामासौ सपसंवादशोभनः ॥
यतो वेलावलांगेन गीयते लक्ष्यवर्त्मनि ।
गानं सुसंमतं तस्य प्रथमप्रहरे दिने ॥
केचिद्गुणकली प्राहुः कल्याणांगविभूषिताम् ।
गांधारवादिनीं चापि साऽस्या भिन्ना परिस्फुटा ॥
रागतरंगिणीग्रन्थे गुणकरी समीरिता ।
गौरीमेलसमुत्पन्ना सा चास्या भेदमर्हयेत् ॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगीते (द्वितीयावृत्ति) ॥ १२२–१२५ ॥

राग गुणकली बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। यह संपूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर षड्ज और संवादी पंचम है। यह राग बिलावल अंग से गाया जाता है, अतः इसका गान समय दिवस का प्रथम प्रहर उचित ही है। कुछ लोगों के मत से यह राग कल्याण अंग का है, और इसका वादी स्वर गांधार है। यह स्पष्ट है कि, यह स्वरूप पूर्वोक्त स्वरूप से भिन्न ही होगा। प्राचीन ग्रन्थों में "गुणकरी" अथवा "गुणक्री" नामक एक गौरी (वर्तमान भैरव) थाट से उत्पन्न होने वाले राग का वर्णन किया गया है। यह स्वरूप भी इस समय कुछ जगहों पर प्रचलित है। इसका विवरण आगे यथास्थान आवेगा। इस गुणकरी का, और प्रस्तुत राग का कोई सम्बन्ध नहीं है। ये दोनों भिन्न-भिन्न राग हैं। [हि० सं० प० (भातखण्डे संगीत शास्त्र) भाग १ पृष्ठ २०२ –२०३ देखो]

गुणकली का साधारण चलन निम्न रूप में होता है—

गुणकली का साधारण चलन

सा, गरेसानिध, निधप, सा, रेसा, गप, रे, सा, सा,
गरेसा, निधप, सा, । पप, निध, सां, सां, निध,
निध, सांरेंसांनि, पप, पपधसां, धप,
ग, परेसा ।

गुणकली—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

						–	सा	सा	–
						ऽ	बि	द्या	ऽ
						३		०	
(सा) ग	रे	सा	नि़	ध़	नि़	(नि़) रे	–	सा	–
कां	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	पा	ऽ	ई	ऽ
×		०		२		३		०	
(प) ग	–	(प) ग	प	ग	रे	–	सा	सा	–
पा	ऽ	ई	ऽ	रे	ऽ	ऽ	बि	द्या	ऽ
×		०		२		३		०	
(सा) ग	रे	सा	नि़	ध़	नि़	रे	–	सा	–
कां	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	ई	ऽ
×		०		२		३		०	
(सा) नि़	ध़	सा	सा	सा	नि़	ध़	–	प़	–
मैं	ऽ	ने	सि	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ
×		०		२		३		०	
(म़) प	–	(सा) ध़	(नि़) ध़	(ध़) सा	–	–	सा	सा	–
तू	ऽ	तो	ऽ	ये	ऽ	ऽ	बि	द्या	ऽ
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

(म) प	–	(सां) ध	(नि) ध	सां	–	सां	–	सां	–
मो	ऽ	रे	ऽ	आ	ऽ	गे	ऽ	तू	ऽ
×		०		२		३		०	

सा	नि					मां			
ध	ध	सां	रें	सां	—	ध	—	नि॒	प
ले	ऽ	गु	रु	को	ऽ	ना	ऽ	ऽ	म
×		०		२		३		०	
म						सां			
प	—	ध	सां	—	सां	ध	—	प	—
कौ	ऽ	न	पा	ऽ	ठ	शा	ऽ	ला	ऽ
×		०		२		३		०	
				प					
प	ग	ग	—	ग	प	ग	रे	सा	—
मैं	ऽ	तू	ऽ	प	ढ	आ	ऽ	ई	ऽ
×		०		२		३		०	
सा	नि़					सा			
ध़	ध़	सा	सा	सा	नि़	ध़	—	प़	—
मैं	ऽ	ने	सि	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ।
×		०		२		३		०	

गुणकली—सूलताल (मध्यलय).

स्थायी.

							सा	सा	सा
							च	तु	र
ग	रे	सा	नि़	ध़	नि़	रे	रे	सा	—
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ज	प	ले	ऽ
×		०		२		३		०	
प		प							
ग	ग	ग	प	ग	रे	—	सा	सा	सा
ज	प	ले	ऽ	रे	ऽ	ऽ	च	तु	र
×		०		२		३		०	

ग	रे	सा	नि़	ध़	नि़	रे	रे	सा	–
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ज	प	ले	ऽ
×		०		२		३		०	
(सा)नि़	ध़	सा	सा	सा	–	(सा)ध़	–	नि़	प़
क्यों	ऽ	अ	ब	सो	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	
(म़)प़	–	(सा)ध़	–	सा	–	–	सा	सा	सा
तू	ऽ	तो	ऽ	रे	ऽ	ऽ	च	त	र
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	(नि)ध	निध	सां	सां	सां	सां	सां	–
ह	र	को	ऽऽ	ना	ऽ	म	लि	ये	ऽ
×		०		२		३		०	
(सां)ध	(नि)ध	सां	रें	सां	–	(सां)ध	नि॒	प	प
ता	ऽ	र	न	ते	ऽ	रो	ऽ	जा	की
×		०		२		३		०	
(सां)ध	सां	–	(सां)ध	प	(प)ग	–	प	(ग)रे	–
क्रि	पा	ऽ	से	ऽ	भु	ऽ	क्त	हो	ऽ
×		०		२		३		०	
सा	–	रे	सा	सा	–	(सा)ध़	–	प़	प़
मा	ऽ	न	व	दे	ऽ	ही	ऽ	स	ब
×		०		२		३		०	

		सा							
प़	–	ध़	–	सा	–	–	सा	सा	सा
तू	ऽ	तो	ऽ	रे	ऽ	ऽ	च	त	र।
×		०		२		३		०	

राग पहाड़ी.



पाहाडिका प्रभवति मेतरसर्वतीव्रा ।
मन्यल्पका सततसंश्रितमंद्रमध्या ॥
वादी तु षड्ज इह पंचममंत्रियुक्तः ।
संगीयते सुचतुरैः खलु सर्वदाऽसौ ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८८ ॥

गरी मधौ पधौ सश्च गपौ धपौ गरी सधौ ।
मंद्रमध्यस्वरा गांशा पहाडी मनिवर्जिता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ४४ ॥

मध्यम मृदु तीखे सबहि अत थोरे मनि लाग ।
सप वादीसंवादितें होत पहाडी राग ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ८७ ॥

राग पहाड़ी विलावल थाट से उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम और निषाद स्वर असत्प्राय (अति दुर्बल) होते हैं। इस कारण इस राग पर किंचित् मात्रा में भूपाली की छाया आ जाती है, परन्तु अवरोह में थोड़ा मध्यम लगा देने से भूपाली की निवृत्ति हो जाती है। इस राग का विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही अच्छा होता है। इसका वादी स्वर षड़ज और संवादी पंचम है। मन्द्र सप्तक के धैवत पर विश्रान्ति इस राग की एक राग वाचक विशेषता है। "ग, रेसा, ध़, प़ध़सा" इस राग की एक पकड़ ही समझना चाहिए। यह राग क्षुद्र प्रकृति के रागों में से एक माना जाता है।

उठाव.

ग, रेसा, ध़, प़ध़सा, गपधप, ग, रेसाध़ ।

चलन.

ग, रेसा, ध़, प़ध़सा । गपधप, ग, रेसाध़, ध़, रेग, सा,

प
ध़, प़ध़सा । गप, धसां, धप, गरे, ध़सारेग,

साध़, प़ध़सा ।

पहाड़ी—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

ध़ ध़ सा रे	ग ग ग ग	ग रे सा रे	ग रे सा ध़
मु र लि म	धु र धु न	च तु र सु	ना ऽ व त
३	×	२	०
सा रे ग ग	ग ग ग रे	ग रे सा रे	ग रे सा ध़
त न म न	स खि मे रो	अ ति हि लु	भा ऽ व त।
३	×	२	०

अन्तरा.

ग ग ग ग	प प प प	प – ध ध	सां ध प ग
म नि सु र	ब र जि त	रू ऽ प दि	खा ऽ व त
३	×	२	०
ग ग ग ग	ध प ग ग	ग रे सा रे	ग रे सा ध़
ब्रि ज ब नि	ता ऽ स ब	प हा ड़ि ब	ता ऽ व त।
३	×	२	०

पहाडी—दीपचन्दी (मध्यलय)

स्थायी.

सा	सा		सा
ध़ ध़ सा रे	रे ग –	(मग) रे रे ध़	ध़ सा रे
सा धु जी ऽ	रे ऽ ऽ	(नाऽ) ऽ ही ऽ	डो ऽ ऽ
३	×	२	०

सारे	ग	–	रे	सा	–	–		ध़	प़	ध़	–	,रे	सा	–	
ऽऽ	ऽ	ऽ	ल	ना	ऽ	ऽ		रे	ऽ	ऽ	ऽ	,नै	या	ऽ	
२				×				०				३			

अन्तरा.

सा	–	सा	ग	–	ग	ग	ग	–	ग	मग	रे	रे	–
ढा	ऽ	ल	वे	ऽ	त	ल	वा	ऽ	र	तेंऽ	ऽ	ढी	ऽ
×			२				०			३			
सा	सा	–	रे	–	रे	–	सारे	गरे	सानि़	ध़	प ध़	सा	–
खुं	टी	ऽ	य	ऽ	न	ऽ	टंऽ	ऽऽ	गऽ	दी	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
सा	ध़	–	सा	–	–	रे	ग	–	–	प	–	प	ध
घ	र	ऽ	में	ऽ	ऽ	झु	ले	ऽ	ऽ	वा	ऽ	की	ऽ
×			२				०			३			
पध	सांसां	धप	ग	रे	–	सा	सा	–	ध़				
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	र				
×			२				०						

राग मांड

सगौ रिमौ गपौ मधौ पनी धसौ सधौ निपौ ।
धमौ पगौ भवेद्वक्रं सांशं मांड स्वरूपकम् ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥४५॥

मध्यम मृदु तीवर सबैं वक्र सजत अवरोहि ।
सम वादी संवादितें मांड राग सुकहोहि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥२३॥

अथ मेवाडदेशीयो मांड रागः प्रकीर्तितः ।
षड्ज ग्रहांशकन्यासः संपूर्णः सार्वकालिकः ॥
निषादर्षभगांधारधैवतास्तीव्रसंज्ञकाः ।
मध्यमः कोमलश्चात्र संवादी पंचमः स्वरः ॥
आरोहे दुर्बलावत्र स्वरावृषभधैवतौ ।
अवरोहे वक्रता च निषादे कंपनं स्मृतम् ॥

सङ्गीतसुधाकरे

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। कहा जाता है कि इस राग की उत्पत्ति मालवा और राजपूताना प्रान्त से हुई है। आज भी इन प्रान्तों में यह राग सर्वसाधारण लोगों में प्रचलित है। यह क्षुद्र प्रकृति के रागों में से है। इसका स्वरूप वक्र है। यह राग प्रत्येक समय गाया जाता है। इसका वादी स्वर षड्ज और संवादी स्वर पंचम है। इस राग में सा, म और प स्वर महत्वपूर्ण हो जाते हैं। निषाद पर आंदोलन लेना इस राग का एक चिन्ह ही है। इसके आरोह में रे और ध स्वर दुर्बल हैं और अवरोह में वक्र हो जाते हैं। अनेक

मार्मिक लोगों का मत है कि "साग, रेम, गप" आदि स्वर क्रम वाले "अभ्युच्छ्रय" नामक अलंकार से यह राग उत्पन्न होता है। "सां, निध, म, पग, म, सा" इस प्रकार स्वर गाने पर मांड राग स्पष्ट हो जाता है।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा ग रे म ग प म ध प नि ध सां। सां ध नि प ध म प ग म सा।

इस राग का साधारण चलन इस प्रकार है:—

सा, रेग, सा, रे, ममप, ध, पधसां, सां, निसांनिध, धनिप, पध, म, पग, मसा, रेग, ग, सा।

मांड—त्रिताल

स्थायी.

ध – प म	ग सा रे ग	सा – सा रे	– रे सा सा
मां ऽ ड सु	र त व त	ला ऽ ये का	ऽ न्ह मो हे
०	३	×	२

१ ला अन्तरा.

म – म म	म म म –	प – प प	प ध सां सां
शु ऽ द्ध स्व	र न को ऽ	मे ऽ ल क	रे ऽ ता में
०	३	×	
सां रें सां नि	ध ध म म	प – – –	प – – –
म ऽ ध्य म	सु र को ब	ढा ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
सां सां नि –	ध ध प प	म म ग ग	म ग सा सा
म ध सं ऽ	ग त अ ति	म धु र च	तु र स खी
०	३	×	२
सा सां – नि नि	ध ध प ध	म प – ग ग	– मग सा सा
दे ऽ ख त	म न ह र	खा ऽ य का	ऽ न्हऽ मो हे
०	३	×	२

२ रा अन्तरा.

म म म म	म – म म	प – प प	सां सां सां सां
व ऽ क्र ग	ती ऽ अ व	रो ऽ ह न	स खि मो रे
०	३	×	२

सां – सां सां	ध – म म	प – – –	प – – –
सां ऽ च क	हूँ ऽ म न	भा ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
•	३	×	२
सां सां ध नि	प ध म प	ग म रे ग	सा ग रे सा
•	३	×	२
गं गं सां –	ध – नि नि	प – प म	– म प प
क ब हूँ ऽ	ना ऽ बि स	रा ऽ य का	ऽ न मो हे।
•	३	×	२

राग मेवाड़ा

यह मांड का ही एक भेद है। इसके नाम पर से यह ज्ञात होता है कि यह राग राजपूताने के ग्राम गीतों (FolkMusic) में से एक है। इसका विस्तार तार सप्तक में विशेष नहीं होता। गुजरात प्रान्त के रास (गरबा) आदि गीत अधिक तादाद में इसी राग में सुनने को मिलते हैं। यह राग बिलावल थाट का है।

इसका साधारण चलन इस प्रकार है:—

ध
म, गरेग, सा, रेमपध, मप, मगरेसा। सा, गमप, पधपधनि
प
ध, प, मम, ध, पधमप, गम, गरेसा।

मेवाड़ा—दादरा

स्थायी.

ग						रे					
म	–	–	गरे	ग	सा	म	–	–	रेम	प	ध
कूं	ऽ	ऽ	जऽ	ऽ	र	ली	ऽ	ऽ	दंऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
ग	ध										
म	प	म	मग	रेसा	सा	सा	–	–	सा	–	–
सं	दे	ऽ	सोऽ	ऽऽ	ह	मा	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
म											
ग	–	–	गरे	ग	सा	रे	म	–	रेम	प	ध
बा	ऽ	ऽ	येऽ	ऽ	बा	ल	म	ऽ	रोंऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
ग											
म	–	–	धप	म	ग	गम	–	–	सा	–	–
जै	ऽ	ऽ	येऽ	ऽ	ऽ	जीऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ ।
×			०			×			०		

अन्तरा (१)

			रे								
ग	–	–	ग	–	सा	रे	म	–	प	ध	म
थां	ऽ	ऽ	रें	ऽ	कां	टा	ने	ऽ	ह	मे	ऽ
×			०			×			०		
प	म	ग	ग	सा	सा	सा	–	–	सा	–	गम
ना	ऽ	ऽ	ना	ऽ	प	खे	ऽ	ऽ	रू	ऽ	हेऽ
×			०			×			०		

						प					
प	प	—	पध	पध	नि	ध	ध	—	पध	म	प
उ	ड़ी	ऽ	उऽ	ड़ीऽ	ऽ	ओ	ले	ऽ	काऽ	ते	ऽ
×			•			×			०		
म	—	—	धप	म	ग	गम	ग	रे	सा	—	—
जै	ऽ	ऽ	वेऽ	ऽ	ऽ	जीऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
×			•			×			•		

अन्तरा (२)

म											
ग	—	—	ग	सा	सा	रे	म	—	रेम	पध	—
मा	ऽ	ऽ	ण	ऽ	स	हो	ई	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽ
×			०			×			•		
म	धप	म	गम	गरे	सा	सा	—	—	सा	—	गम
ल	खऽ	ऽ	लऽ	ऽऽ	ख	भे	ऽ	ऽ	जूं	ऽ	ऽऽ
×			•			×			०		
										ध	
प	प	—	पध	नि	—	प	ध	—	म	प	—
ल	ख	ऽ	जोऽ	ऽ	ऽ	ह	मा	ऽ	री	ऽ	ऽ
×			•			×			०		
ग			म		प						
म	—	—	ध	—	म	ग	मग	रेसा	सा	—	—
पा	ऽ	ऽ	ख	ऽ	ड	ली	ऽऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ
×			•			×			•		

राग पटमंजरी

(बिलावल थाट)

राग पटमंजरी को कोई–कोई शुद्ध स्वर थाट के अन्तर्गत रागों में मानते हैं। इसके वास्तविक स्वरूप के सम्बन्ध में अनेक विवाद उत्पन्न होते रहते हैं। प्रस्तुत भेद में बिलावल के स्वर लगते हैं और कहीं–कहीं जयजयवन्ती जैसा भाग दिखाई देता है।

जब कभी इसे गाते हुए पंचम पर से रिषभ पर आते हैं, वहां जयजयवन्ती का आभास हो जाता है, परन्तु जयजयवन्ती में दोनों गांधार और दोनों निषाद का प्रयोग होता है, उस प्रकार पटमंजरी में नहीं होता। इस तरह यह राग स्वरूप सहज में भिन्न हो जाता है। इस राग भेद को कोई–कोई 'बङ्गाल बिलावल' भी कहते हैं।

[देखो हिं० सं० प० (थ्योरी मराठी) भाग ४ पृष्ठ ४६४–४६७]

श्रीमल्लक्ष्यसंगीत की प्रथम आवृत्ति (सन् १९१० ई०) में ग्रंथकार ने 'पटमंजरी' को काफी थाट में सम्मिलित किया था, वहां इसके 'शुद्ध स्वर–भेद' के सम्बन्ध में कहा है:—

मेले शुद्धस्वराणां तां केचिदन्ये विदो विदुः।
लक्ष्यदृष्ट्या न मे भाति तन्मतं चापि संगतम् ॥५९॥

(श्रीमल्लक्ष्यसंगीते पृष्ठ १२१)

इसी के अनुसार 'हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति' के सन् १९१० ई० में लिखे हुए प्रथम भाग में बिलावल मेलजन्य रागों का वर्णन करते हुए, उसमें 'पटमंजरी' का उल्लेख नहीं किया। परन्तु 'हिन्दुस्थानी सङ्गीत पद्धति' के सन् १९३२ ई० में प्रकाशित चतुर्थ भाग में उपरोक्त वर्णन प्राप्त होता है। साथ ही सन् १९३४ ई० में प्रकाशित 'श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीत' की द्वितीय आवृत्ति में उपरोक्त श्लोक में निम्नलिखित परिवर्तन किया गया है:—

मेले शुद्धस्वराणां तां केचिदन्ये विदो विदुः ।
न तद्विसंगतं भाति मतं लक्ष्यानुसारतः ॥ ६८ ॥

(श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीते पृष्ठ १५४)

सगौ मगौ रिसौ रिश्च सनी धपौ रिगौ सपौ ।
मगौ रिसौ भवेदन्या शुद्धमेलोत्थमंजरी ॥

(अभिनवरागमंजर्याम् ॥१५२॥)

इसके अतिरिक्त आगे दी हुई दोनों चीजों का समावेश ग्रंथकार ने बिलावल थाट के अन्तर्गत किया है; अतः वे दोनों चीजें यहां दी जारही हैं।

काफी मेलोत्पन्न 'पटमंजरी' की चीजें आगे काफी थाट के प्रकरण के अन्तर्गत क्रमिक पुस्तक मालिका के छठे भाग में दी जायेंगी।

साधारण चलन.

साग, गम रेरे, सासा, साध़, सारेसा, ध़ध़प़, प़प़रेरे, रेरेरेगसा, साग, गमप, मगमरेसा । पपसां, सांसांसांरेंसां, सांगंगंमंपं, मंगं, मंरेंसां, पपरेंरेंसां, पधप, गरेगमरेरेसा ।

पटमंजरी–धमार (विलंबित)
(बिलावलमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

नि़					प					नि़			
सा	ग	रे	ग	म	म	–	ग	रे	–	सा	रे	सा	सा
चा	ह	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	न
×					२		०			३			
सा										ध़			
नि़	–	ध़	सा	–	–	सा	नि़	ध़	नि़	प़	–	–	–
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	खे	ल	न	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ
×					२		०			३			
म़ प़					ग					रे			
प़	रे	–	रे	–	रे	–	ग	रे	ग	सा	–	–	सा
लो	ऽ	ऽ	ग	ऽ	न	ऽ	ला	ऽ	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ल
×					२		०			३			
नि़					प					रे			
सा	ग	रे	ग	म	म	–	ग	रे	ग	सा	रे	सा	–
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	र	है	ऽ	ऽ	ऽ।
×					२		०			३			

अन्तरा.

म										नि			
प	–	–	सां	–	–	सां	सां	–	–	सां	रें	सां	–
कु	ऽ	ऽ	ब्ज	ऽ	ऽ	मु	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
×					२		०			३			
सां										ध			
नि	–	ध	सां	–	रें	सां	नि	ध	नि	प	–	–	–
रं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	मा	र	त	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
×					२		०			३			
ध़ ग			ग			ग	ग			प			
प़	रे	–	रे	–	–	रे	रे	ग	–	सा	–	सा	–
भी	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	ग	ई	ऽ	ऽ	त	ऽ	न	ऽ
×					२		०			३			

नि़	प		रे
सा ग रे ग म	म –	ग रे ग	सा – – –
सा ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ।
×	२	•	३ •

पटमंजरी–धमार (विलम्बित).

(बिलावलमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

नि़			नि़
सा ग रे ग –	– म	ग रे सा	सा रे सा सा
रू ऽ ऽ प ऽ	ऽ जो	ब न ऽ	गु ऽ न ऽ
×	२	•	३
नि़	सा	सा सा	
सा नि़ ध़ सा –	रे सा	नि़ ध़ –	प़ – – –
खे ऽ ऽ ल ऽ	ऽ त	हो ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
×	२	•	३
ध़	ग	ग	रे
प़ प़ – रे –	– रे	रे ग –	सा – – सा
न यो ऽ ऽ ऽ	ऽ जो	ब न ऽ	को ऽ ऽ उ
×	२	•	३
नि़	प		रे
सा ग रे ग म	म –	ग रे ग	सा – – –
भा ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

अन्तरा.

म			
प – – सां –	– सां	सां – –	सां सां रें सां
अं ऽ ऽ ग ऽ	ऽ भ	भू ऽ ऽ	त न य न
×	२	•	३

नि														
सां	गं	रें	गं	मं	पं	मं	गं	रें	—	सां	रें	सां	सां
म	द	ऽ	तें	ऽ	ऽ	भ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	इ	ठ
×					२		०			३			
					प								
सां	—	प	ध	—	ध	प	ध	म	—	ग	रे	ग	सा
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	त	ब	न	ऽ	ब	ऽ	ऽ	न
×					२		०			३			
नि़					प					नि़			
सा	ग	रे	ग	म	म	—	ग	रे	ग	सा	रे	सा	सा
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ।
×					२		०			३			

पटमंजरी–सूलताल (मध्यलय).

(बिलावलमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

नि़								ग	
सा	सा	ग	ग	म	—	ग	ग	म	ग
त्रि	शू	ऽ	ल	ख	ऽ	प्प	र	ड	म
×		०		२		३		०	
		म							
म	रे	ग	म	प	म	ग	रे	सा	—
रू	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ
×		०		२		३		०	
			म						
सा	—	रे	ग	—	म	ग	रे	सा	—
दे	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	दे	ऽ	व	ऽ
×		०		२		३		०	
सा						सा			
नि़	—	(नि़ध़)	सा	—	—	ग	रे	सा	—
मा	ऽ	(ऽऽ)	हा	ऽ	ऽ	दे	ऽ	व	ऽ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	(प	सां)	सां	सां	—	सां	रें	सां	—
त्रि	ष	ऽ	ब्र	वा	ऽ	ह	ऽ	न	ऽ
×		०		२		३		०	
					म				
प	—	प	म	—	प	म	—	ग	—
चं	ऽ	द्र	मा	ऽ	ल	ला	ऽ	ट	ऽ
×		०		२		३		०	

ग म	गरे	ग	म	प	म	ग	रे	सा	—
ली	ऽऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		३		०	
नि़ सा	रे	—	म ग	—	म	म	रे	सा	—
दे	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	दे	ऽ	व	ऽ
×		०		२		३		०	
सा नि़	नि़ध़	सा	—	सा ग	—	रे	—	सा	—
मा	ऽऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ
×		०		२		३		०	

---

८ टमंजरी—चौताल (विलम्बित).

(विलावलमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सा	सा	म	ग	—	सा	नि़	—	प़	नि़	—	सा
अ	नू	ऽ	ह	ऽ	त	ना	ऽ	ऽ	द	ऽ	स
०		३		४		×		०		२	
—	सा	नि़	रे	सा	—	सा	सा	म	ग	—	सा
ऽ	मू	ऽ	ऽ	द्र	ऽ	अ	प्रं	ऽ	पा	ऽ	र
०		३		४		×		०		२	
सा	सा	रे सा	नि़	—	प़	नि़ सा	रे	ग रे	ग रे	ग	सा
जै	गु	नि	गा	ऽ	वे	सु	ध	अ	लं	ऽ	का
०		३		४		×		०		२	

सा, सा | सा म | ग सा |
र। अ | नू ऽ | ह त |
० | ३ | ४ |

अन्तरा.

						नि	
प —	— सां	— सां	सां सां	— सां	— सां
ता ऽ	ऽ पैं	ऽ क	र त	ऽ औ	ऽ र
×	०	२	०	३	४
सां सां	— सां	सां नि	— प	ध —	म म
गु नि	ऽ गा	ऽ वे	ऽ ध	रू ऽ	ऽ धु
×	०	२	०	३	४
म ग	— सा	प —	— सां	— सां	सां सां
र प	ऽ द	बा ऽ	ऽ तैं	ऽ क	र त।
×	०	२	०	३	४
प ध	म ग	— सा			
वि द्या	ऽ ध	ऽ र।			
×	०	२			

पटमंजरी—झपताल (मध्यलय).
(बिलावलमेलजन्य प्रकार)
स्थायी.

सा	ग	(रे)ग	–	म	रे	रे	सा	–	सा
स	क	ल	ऽ	गु	नी	ऽ	जा	ऽ	ने
×		२			०		३		
सा	ध़	सा	–	रे	सा	–	ध़	ध़	प़
मा	ऽ	ने	ऽ	ऽ	सो	ऽ	जा	ऽ	ने
×		२			०		३		
प़	प़	रे	–	रे	रे	रे	रे	ग	सा
गु	न	की	ऽ	बा	त	ब	खा	ऽ	ने
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	सां	–	सां	सां	–	सां	रें	सां
ज	ग	त	ऽ	गु	रू	ऽ	शा	ऽ	हे
×		२			०		३		
सां	गं	गं	मं	पं	मं	गं	मं	रें	सां
अ	क	ब	ऽ	र	अ	ति	सु	ऽ	ख
×		२			०		३		
प	प	रें	–	रें	सां	–	प	ध	प
दा	य	क	ऽ	अं	त	र	जा	ऽ	मी
×		२			०		३		
ग	रे	(रे)ग	–	म	रे	रे	सा	–	सा
जो	ऽ	जा	ऽ	ने	सो	ऽ	मा	ऽ	ने ।
×		२			०		३		

राग हंसध्वनि.

—*—

हंसध्वन्याह्वयो रागः स्यात् शुद्धस्वरमेलनात् ।
आरोहेऽप्यवरोहे च मधहीनो भवेत्सदा ॥७४॥
स्वरःषड्जो मतो वादी कैश्चिद्‌गांधारको ह्यसौ ।
गानमस्य समादिष्टं रात्र्यां प्रथमयामके ॥७५॥
हिन्दुस्थानीयपद्धत्यां प्राचुर्यं नास्य दृश्यते ।
संगीते दाक्षिणात्यानां स तु साधारणो मतः ॥७६॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगीते (प्रथमावृत्ति) पृ० ७४

'हंसध्वनि' कर्नाटकी पद्धति का राग है। यह उत्तर भारत में विशेष प्रसिद्ध नहीं हुआ है। सम्भवतः इसीलिये ग्रंथकार ने इस राग को 'श्रीमल्लक्ष्यसंगीत' की द्वितीय आवृत्ति में कम कर दिया है। यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है और औड़व जाति का है। इसमें मध्यम और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं। इसका वादी स्वर षड़ज है। कोई-कोई गांधार को वादी मानते हैं। यह राग रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।

इसका साधारण चलन निम्न रूप में होता है:—

चलन

सारेगसा, सा, गपगरे, गपनि, पनिनि, सां, रेंसां, रेंगंरेंसां
नि, पनिरेंसांनि, गरेगपनि, नि, रेंगंरेंसां ।

हंसध्वनि—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा रे ग रे	सा रे नि॒ सा	नि॒ प॒ नि॒ नि॒	सा – – सा
गु णि ज न	हं ऽ स ध्व	नि को स म	झा ऽ ऽ य
०	३	×	२
			ग
सा – ग रे	ग – ग ग	सां नि प प	रे – – नि॒
शं ऽ क र	भू ऽ ष न	मे ऽ ल मि	ला ऽ ऽ य
०	३	×	२

अन्तरा.

ग – ग –	प – नि नि	सां सां रें नि	सां सां सां सां
गा ऽ वा ऽ	दी ऽ सु र	ह र त च	तु र म न
०	३	×	२
गं रें नि रें	नि प ग रे	नि प ग रे	ग रे सा ऽ।
०	३	×	२

राग दीपक.

(बिलावलमेलजन्य प्रकार)

वेलावलसुमेलोत्थो निद्वयः श्रूयते क्वचित् ।
लक्ष्यगतमनुसृत्य बुधः कुर्यात् स्वनिर्णयम् ॥

(श्रीमल्लक्ष्यसंगीते द्वि०) ॥ ६७ ॥ पृ. १२७

यह बहुत प्राचीन रागों में से है। ग्रन्थों में इसका वर्णन प्राप्त होता है। इसका स्वरूप आजकल भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रचलित है। उसमें से एक बिलावल मेलजन्य प्रकार है जो बिहाग और भिंभोटी के मिश्रण से गाया जाता है। इसका विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तक में ही होता है। यह रात्रिगेय राग है। इसका वादी स्वर गांधार है। कोई-कोई षड्ज को वादी मानते हैं। इसके आरोह में ऋषभ स्वर वर्ज्य है और धैवत स्वर वक्र लगता है। कोई-कोई इसे खमाज मेलोत्पन्न मानते हैं। मुख्य प्रचलित प्रकार पूर्वी थाट का है। उसकी चीजें आगे पूर्वी थाट के प्रकरण में देखी जावें।

चलन.

प़, म़प़ध़, प़नि़, नि़सा, साग, गरेसा, गमप, धप, निधप,
(म), गम, पमग, रेसा, नि़, ध़, प़ध़सा, सा
नि़, ध़प़।

उठाव.

प
सा, गमप, म, गमपमग, रेसा, प, म, मग, रेसा, सा, नि़ध़प़।

दीपक—झूमरा (विलम्बित)

स्थायी.

प	सा नि		
म़ प़ म़प़ध़ प़,प़	निसा पनिसा साग	ग रे सा —सा	सा — निसा
ला ऽ ऽऽऽ ऽल	केऽ ऽऽऽ ब्रिज	बा ऽ ऽ ऽ,ल	के ऽ ऽऽ
३	×	२	०
प		म म	
ग —म प धधप	नि ध प	(म)— गम गमपम	गरे सा —
लो ऽच न ऽऽऽ	ऽ के ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽऽऽल	लाऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
नि	ध	ध	पप ध
सा — नि ध,पध	सा — —	सा — नि धप	धध मप प
चो ऽ ऽ ऽ,निऽ	ला ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ये
३	×	२	०
ध			
म़ प़ म़प़ध़ प़,प़			
ला ऽ ऽऽऽ ऽ,ल			
३			

अन्तरा.

नि म	प	ग म	
सा सा ग ,म	प प गम	म — गम ,पम	गरे सा —
र त न ऽज	टि त ऽऽ	को ऽ ऽऽ ,पल	नाऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
सा प		नि	पप ध
ध — मप (म)	ग रे सा	सा — नि धप	धध मप प
झू ऽ ऽऽ ऽ	ला ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ये
३	×	२	०
ध			
म़ प़ म़प़ध़ प़,प़			
ला ऽ ऽऽऽ ऽ,ल			
३			

खंमाज थाट.

खंमाज थाट के राग (९)

झिंझोटी	गारा
खंबावती	सोरट
तिलंग	नारायणी
दुर्गा	सावन (देस-अंग)
रागेश्वरी	

राग झिंझोटी



झिंझूटीत्येष रागः सकलजनमतः कोमलाभ्यां मनिभ्या ।
मन्ये तीव्राः प्रयुक्ताः क्वचिदपि मृदुगस्तीव्रनिश्चापि गेयः ॥
वादी गांधार उक्तः श्रुतिरुचिरतरो धैवतः संप्रवादी ।
प्रारोहेऽल्पौ निगौ स्तो निशि मधुरगलैर्मंद्रमध्याभिगीतः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८७ ॥

धसौ रिमौ गपौ मश्च गरी सनी धपौ तथा ।
झिंझूटी गांशिका नक्तं स्वमेलोत्थसमाश्रया ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ५६ ॥

कोमल मनि झिंझूटि है चढत न लगे निखाद ।
कहुँ कोमल गन्धार है धग संवादीबाद ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ८६ ॥

झिंझोटी राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है । यह आरोह-अवरोह में सम्पूर्ण जाति का है । इसमें गांधार स्वर वादी है । सम्वादी निषाद है । गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है । इसे खमाज थाट का आश्रय राग कहा जाता है । इसका स्वरूप बहुत सीधा और सरल है । यह भी एक क्षुद्र रागों में से है । इसका विस्तार प्रायः मन्द्र और मध्य सप्तक में विशेष रूप से होता है । इसके आरोह में रिषभ ग्रहण किया जाने से इससे खमाज भिन्न हो जाता है । इसके सिवाय इसका सरल आरोह भी इसे अन्य रागों से स्वतन्त्र बनाये रखता है । "धृसा, रे मग" स्वर समुदाय रागवाचक है ।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा रे ग म प ध <u>नि</u> सां । सां <u>नि</u> ध प म ग रे सा ॥

उठाव.

धृसा, रेम, ग, पमगरेसान्निधृपृ ।

चलन.

धृसा, रेमग, प, मग, रेसा, न्निधृपृ, धृसा, रेमग, गमपमग,
धपमग, सारेग, सा, न्निधृपृ, धृसा, रेमग ।

प्रकार २

सा, रेग, सा, धृ (न्नि), पृधृसा, सा, रेमपध, मग, गमसा,
रेपमग, सा, रेग, सा, धृ, पृधृसा ।

झिंझोटी—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

ध़	सा	रे	(म)पम	ग	–	ग	ग	म	रे	ग	सा	ध़	नि़॒	ध़	प़
आ	ऽ	अ	यऽ	रा	ऽ	ग	क	ह	त	गु	नि	ज	न	स	ब
३				×				२				०			
प़	–	रे	–	(ग)रे	ग	सा	–	(म)प	म	ग	रे	सा	नि़॒	ध़	प़
झिं	ऽ	झो	ऽ	टी	ऽ	को	ऽ	स	र	ल	सु	ग	म	सु	र।
३				×				२				०			

अन्तरा.

सा	ग	–	म	प	–	प	प	ग	ग	म	ध	प	म	ग	ग
वा	ऽ	दि	गं	धा	ऽ	र	नि	स	द्धि	ती	ऽ	य	प	ह	र
३				×				२				०			
ध	म	प	ग	म	रे	ग	सा	रे	नि़	सा	ध़	नि़॒	प़	ध़	प़
ज	न	क	रा	ऽ	ग	क	हे	च	तु	र	नि	रं	ऽ	त	र।
३				×				२				०			

झिंझोटी—दादरा (मध्यलय)

स्थायी.

नि़	नि़	नि़	सा	सा	सा	नि़॒	ध़	नि़॒	ध़	प़	प़
म	धु	र	म	धु	र	प	न	घ	ट	प	र
×			०			×			०		
(सा)ध़	–	ध़	सा	–	रे	(ग)रे	–	ग	–	म	–
झिं	ऽ	झु	टी	ऽ	ब	जा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ।
×			०			×			०		

नि़	नि़	सा	ग	ग	म	प	प	प	ध	म	प
सु	ध	बु	ध	स	ब	ह	र	न	क	र	त
×			०			×			०		
			रे			ग					
ग	म	ग	सा	सा	सा	रे	–	ग	–	म	–
च	तु	र	स	खि	क	न्हा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ।
×			०			×			०		

अन्तरा.

सा	–	ग	–	ग	म	प	–	प	प	ध	प
कां	ऽ	भो	ऽ	जी	ऽ	ठा	ऽ	ठ	क	र	त
×			०			×			०		
प						ग	म				
ग	–	ग	–	म	प	म	प	म	ग	ग	ग
गा	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	सु	र	उ	च	र	त
×			०			×			०		
ग	ग	म	म	म	म	(गम)	प	म	ग	–	ग
अ	ति	सु	ल	भ	बि	(चीऽ)	ऽ	त्र	रू	ऽ	प
×			०			×			०		
						ग					
ग	म	ग	रे	सा	–	रे	–	ग	–	म	–
रा	ऽ	गि	नि	को	ऽ	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ।
×			०			×			०		

झिंझोटी—त्रिताल (विलम्बित).

स्थायी.

			रेप
			आंखि
		प	
म – – ग,गरे	ग – सा सारे	सा नि – धध	सा – – सासा
यां ऽ ऽ जो,हऽ	ती ऽ ऽ अब	नै ऽ ऽ नभ	ये ऽ ऽ कज
३	×	२	०
म	ध	प प	रे
रे म – पध	सां – नि धप	ध म – गग	ग सा, – रेप
रा ऽ ऽ जोदि	यो ऽ ऽ मृग	छो ऽ ऽ वन	को ऽ ऽ। आंखि
३	×	२	०

अन्तरा.

			मप
			तब
प		सां	
सां – नि धध	सां – – पप	ध सां – रेंमं	गं सां – सांरें
बा ऽ ऽ रिह	ती ऽ ऽ अब	ना ऽ ऽ रिभ	ई ऽ ऽ पिया
३	×	२	०
ध		प प	
सां नि – पध	सां नि – धप	ध म – गग	ग सा – रेप
से ऽ ऽ जके	बी ऽ ऽ चवि	छो ऽ ऽ नन	को ऽ ऽ। आंखि
३	×	२	०

झिंझोटी—एकताल (विलम्बित).

स्थायी.

रे रे			नि	ध सानि				ग		सां सां	
गग	सा(सा)	सानि	धनिपध	सा	धध	सा	,सासा	रेम	पध	निनि	,धप
मेऽ	रेऽ	ऽऽ	मऽनऽ	ला	ऽऽ	ऽ	,लगो	पाऽ	ऽऽ	ऽऽ	,लऽ
३		४		×		०		२		०	

प	नि	प		म			प	प			
ध	धम	ग	मसा	रे	प	मग	,ग	ग	मसा	सा	,सारेग
की	मुऽ	र	ऽत	ठा	ऽ	ड़िऽ	,र	ही	ऽऽ	री	,ऽऽऽ
३		४		×		०		२		०	

		सा सा	नि
ग	सा	निनि	धनिपध
मे	रे	ऽऽ	,मऽनऽ
३		४	

अन्तरा.

प		ध सां		नि सां		रेंरें		ध रें			
मम	,पध	सांध	सांसां	सांसां	रेंरें	गंसां	सां,निध	पध	सांनि	ध	(म)
मधु	,रम	धुर	धुन	मुर	लीअ	धर	ध,रेऽ	बाऽ	ऽऽ	ज	त
३		४		×		०		२		०	

प				म			पम	प			
ग	मसा	सा	सा	रे	प	—	गग	ग	मग	सा	,सारेग
गा	ऽऽ	व	त	ता	ऽ	ऽ	नर	सा	ऽऽ	ले	,ऽऽऽ
३		४		×		०		२		०	

		सा सा	नि
ग	सा	निनि	,धनिपध
मे	रे	ऽऽ	,मऽनऽ
३		४	

झिंझोटी चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

(ग)रेप	
आंखि	

म	–	–	गरे	ग	–	सा	सारे	सा	–	नि़	ध़,प़ध़
यां	ऽ	ऽ	जोह	ती	ऽ	ऽ	अब	नैं	ऽ	ऽ	न,भऽ
३		४		×		०		२		०	
सा	–	–	सासा	(म)रे	म	–	(ध)पध	सां	–	नि	(प)धध
ये	ऽ	ऽ	कज	रा	ऽ	ऽ	जोदि	यो	ऽ	ऽ	ऽऽ
३		४		×		०		२		०	
सां	नि	–	धप	ध	प	म	गरे	ग	सा	–,	(ग)रेप
ऽ	ऽ	ऽ	मृग	छौ	ऽ	ऽ	नन	को	ऽ	ऽ।	आंखि
१		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

(प)मप	
तव	

सां	–	नि	(प)मप	(सां)ध	सां	–	पप	(सां)ध	सां	–	(गं)रेंमं
बा	ऽ	ऽ	रिह	ती	ऽ	ऽ	अब	ना	ऽ	ऽ	रिभ
×		०		२		०		३		४	

						सां					
गं	–	सां	सांरें	सां	–	नि॒	धप	ध	सां	नि॒	धप
ई	ऽ	ऽ	पिया	से	ऽ	ऽ	जके	बी	ऽ	ऽ	चवि
×		०		२		०		३		४	
							ग				
ध	प	म	गरे	ग	सा	रे,	रेप	म	–	–	गग
ओ	ऽ	ऽ	नन	को	ऽ	ऽ।	अंखि	यां	ऽ	ऽ	जोह
×		०		२		०		३		४	

उपरोक्त चीज़ पृष्ठ २७३ पर त्रिताल में दी गई है, किन्तु कोई-कोई गायक इसे चौताल में यहां दिये हुए प्रकार से गाते हैं।

झिंझोटी—एकताल (मध्यलय).

स्थायी.

						–	ध़	ध़	सा	रे	–
						ऽ	ज	हां	क	छू	ऽ
						०		३		४	
				ग		रे					
ग	–	ग	ग	म	ग	सा	–	सा	नि़	धप़	ध़
ता	ऽ	जि	में	ना	ऽ	हं	ऽ	ग	ढा	ऽऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
					रे		सा				
ग	–	ग	गरे	ग	सा	,	ध़	ध़	सा	रे	–
नी	ऽ	ति	रीऽ	ऽ	ति	ऽ	नां	हि	र	हे	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	–	म	ग	ग	–	म	ग	म	ग	रे	–
री	ऽ	त	ज	हां	ऽ	व	हां	ऽ	क	हां	ऽ
×		०		२		०		३		४	

रेरे	ग	म	ग	रे	सा	,	ध़	ध़	सा	रे	–
कहि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	,।	ज	हां	क	छू	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

	सा	सा	ग	–	ग	म	प	–	प	प	–
ऽ	ज	हां	क	ऽ	छु	सु	ने	ऽ	न	हीं	ऽ
×		०		२		०		३		४	
	ग	ग	म	–	म	ग	ग	–	रे	सा	–
ऽ	क	हो	को	ऽ	उ	क	हे	ऽ	न	हीं	ऽ
×		०		२		०		३		४	
	सा	ग	ग	–	ग	ग	ग	–	ग	म	–
ऽ	क	हि	ये	ऽ	तो	सु	ने	ऽ	जै	से	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	रे	ग	(रे)सा	–	सा	ध़	ध़	,	सा	रे	ग
रू	ऽ	ठ	रू	ऽ	ठ	स	ही	ऽ	ये	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म	ग	रे	सा	नि़	ध़	प़,	(सा)ध़	ध़	सा	रे	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।	ज	हां	क	छू	ऽ
×		०		२		०		३		४	

झिंझोटी—चौताल (मध्यलय)

स्थायी.

ग	ग	म	–	ग	रेग	सा	रे	म	–	–	म
इ	त	ना	ऽ	को	ऽऽ	उ	क	हो	ऽ	ऽ	मे
२		०		३		४		×		०	
		सां									
प	प	ध	सां	सां	सां	नि॒	ध	प	प	ध	म
ऽ	री	ओ	ऽ	र	ते	ऽ	क	ऽ	र	जो	ऽ
२		०		३		४		×		०	
	रे			सा				सा			
ग	ग	सा	सा	नि॒	–	ध़	प़	ध़	सा	रे	म
र	जो	ऽ	र	बे	ऽ	गि	द	र	स	दी	ऽ
२		०		३		४		×		०	
		सा			नि़					सा	
ग	सा	नि॒	–	–	ध़	–	प़	म़	प़	ध़	सा
जे	ऽ	ब्या	ऽ	ऽ	कू	ऽ	ल	त	र	फ	त
२		०		३		४		×		०	
	ग			सां							
सा	रे	म	प	ध	सां	–	सां	सां	नि॒	ध	प
स	हो	ऽ	ना	जा	ऽ	ऽ	त	त्रि	ऽ	ऽ	छ
२		०		३		४		×		०	
	सां			सां							
–	ध	सां	सां	नि॒	–	ध	प	ध	म	ग	सा
ऽ	र	ऽ	न	को	ऽ	दु	ख	भा	ऽ	री	ऽ
२		०		३		४		×		०	

अन्तरा.

				सां							
म	–	प	प	ध	सां	सां	–	सां	सां	–	सां
जो	ऽ	ए	क	प	ल	गो	ऽ	पि	न	ऽ	ते
×		०		२		०		३		४	

प	–	(सां)ध	सां	रें	गं	–	सां	–	नि॒	ध	प
हो	ऽ	त	क	ब	हुँ	ऽ	न	ऽ	न्या	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	
(ध)प	ध	म	ग	(रे)ग	सा	नि॒	सा	रे	नि॒	ध॒	प॒
सो	ऽ	ह	म	से	ऽ	नि	ठु	र	भ	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	
सा	रे	म	प	(सां)ध	सां	सां	सां	नि॒	ध	प	प
म	धु	ब	न	जा	ऽ	ये,	सु	धि	ना	ऽ	सं
×		०		२		०		३		४	
(प)ध	म	ग	सा,	ग	ग	म	–				
भा	ऽ	रे	ऽ ‖	इ	त	ना	ऽ				
×		०		२		०					

झिंझोटी–धमार (विलम्बित)

स्थायी.

(सा)नि॒	–	ध॒	प॒ध॒	सा	–	–	ग	रे	(प)म	–	(म)ग	–	म
आ	ऽ	यो	ऽऽ	फा	ऽ	ऽ	गु	न	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ
३				×					२		०		
ग	(रे)ग	सा	–	(सा)नि॒	–	–	ध॒नि॒	प॒ध॒	सा	सा	–	सा	–
स	स	खी	ऽ	मो	ऽ	ऽ	हऽ	नऽ	सं	ग	ऽ	खे	ऽ
३				×					२		०		
रे	–	(म)ग	म	ग	–	सा	रे	–	म	–	(रे)ग	(रे)सा	–
ऽ	ऽ	ल	त	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ।
३				×					२		०		

अन्तरा.

प म म – प ध	सां –	सां म प	ध सां रें मं
अ बी ऽ र गु	ला ऽ	ल की ऽ	भ र पि च
×	२	०	३
सां गं – सां नि –	ध प	म – –	प ध सां नि
का ऽ ऽ री ऽ	मु ख	मीं ऽ ऽ	ज त है ऽ
×	२	०	३
नि ध प – ध प	म गरे	रे ग सा –	
ब र ऽ जो ऽ	ऽ ऽऽ	ऽ री ऽ	
×	२	०	

झिंझोटी–धमार (विलम्बित)

स्थायी.

प

च

म ग सा रे	ग रे म ग – सा –	– –	सा नि –
लो रि स खि	ब्रि ज ऽ में ऽ	ऽ ऽ	धू ऽ ऽ
३	×	२	०
प – – ध ध	सा – – सा –	सा –	म रे म –
ऽ ऽ म म	ची ऽ ऽ हो ऽ	री ऽ	खे ल ऽ
३	×	२	०
प प – ध ध	सां नि – ध प	ध म	ग सा, प
त ऽ नं द	ला ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ल ऽ। च
३	×	२	०

अन्तरा.

प			सां							सां			
म	प	–	ध	–	सां	–	–	सां	–	ध	–	सां	–
ग्वा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	स	ऽ	ब	ऽ
×					२		०			३			
सां							रें						
ध	सां	–	रें	–	–	गं	गं	सां	–	नि॒	–	ध	–
रं	ग	ऽ	में	ऽ	ऽ	भि	जो	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
×					२		०			३			
							म					प	
ध	प	म	ग	रे	सा	–	रे	म	–	प	–	ध	ध
मु	ख	ऽ	प	ऽ	र	ऽ	म	ल	ऽ	त	ऽ	ऽ	गु
×					२		०			३			
									सा				
सां	नि॒	–	ध	प	ध	म	ग	सा,	प				
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ।	च				
×					२		०						

राग खंबावती.

—:*:—

खंबावती मृदुमनी रिगधैश्च तीव्रै-
र्युक्तार्षभेण नियतं रहितावरोहे ।
गांशा निषादसहचारिसमाश्रिता च
गायंति तां किल निशि प्रहरे द्वितीये ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८३ ॥

रिमौ पधौ पधौ सश्च निधौ पधौ मगौ मसौ ।
गांशा खंबावती रात्र्यां मससंगमनोहरा ।

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६४ ॥

खंमाजसि खंबावती उतरत रिखब न देखि ।
मध्यमसें खरजहि गहे पंचम वक्र बिसेखि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ८२ ॥

खंबावती राग, खमाज थाट से उत्पन्न होता है । खमाज के नियमों में किंचित् परिवर्तन करने से खंबावती राग उत्पन्न हो जाता है अर्थात् इस राग का स्वरूप प्रायः खमाज जैसा ही है । इस राग में "म सा" स्वर संगति विशेष रंजकता उत्पादक होती है । खमाज के आरोह में ऋषभ वर्ज्य होता है, वही स्वर इस राग के आरोह में रक्तिवर्धक होजाता है । इस राग का वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर धैवत है । यह रात्रि के द्वितीय प्रहर में गाया जाता है । खमाज और मांड राग के संयोग से यह राग उत्पन्न होता है । उत्तरांग में कुछ बागेश्री का आभास हो जाता, परन्तु इसमें कोमल गांधार नहीं होने से वह राग भिन्न हो जाता है । इसमें "धम" संगति रागांग दर्शक होती है ।

इस राग में "रेमप" और " धमग, मसा" ये टुकड़े महत्वपूर्ण होते हैं ।

उठाव.

रेमपध, पधसां, निधपधम, गमसा ।

चलन.

सा, रेमप, ध, पधसां, निधपध, म, ग, मसा । म, मप,
नि, सांसांरेंगंसां, निध, धनिप, धसांनिध, प,
धम, ग, मसा ।

खंबावती—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

म	म				ध				
रे	रे	म	प	ध	प	ध	सां	सां	नि̱
च	त	रा	ऽ	खं	बा	ऽ	ऽ	व	ति
×		२			०		३		
नि̱		ध			प				
ध	प	प	ध	म	ग	–	म	सा	–
के	ऽ	सू	ऽ	र	गा	ऽ	ग	यो	ऽ
×		२			०		३		
ग				सां	सां				
म	म	म	प	नि	नि	सां	नि	सां	सां
सु	ध	बु	ध	ह	रा	ऽ	य	स	ब
×		२			०		३		
नि					नि		ध		
सां	–	रें	गं	सां	सां	–	नि̱	ध	–
बा	ऽ	व	रि	ब	ना	ऽ	ग	यो	ऽ।
×		२			०		३		
सां	सां	सां							
ध	ध	ध	नि̱	प					
च	त	रा	ऽ	खं					
×		२							

अन्तरा.

ग			सां						
म	–	प	नि	–	सां	नि	सां	–	सां
ना	ऽ	ति	लं	ऽ	ग	ख	म्मा	ऽ	ज
×		२			०		३		
नि									
सां	सां	रें	–	गं	सां	–	नि̱	–	ध
दु	र	गा	ऽ	न	दी	ऽ	स	ऽ	त
×		२			०		३		

सां	सां	सां			ध				
ध	ध	ध	नि	प	प	ध	सां	सां	नि
अ	भि	न	व	बि	ची	ऽ	त्र	मो	हे
×		२			०		३		
नि		ध			प				
ध	प	प	ध	म	ग	–	म	सा	–
रू	ऽ	प	ऽ	दि	खा	ऽ	ग	यो	ऽ ।
×		२			०		३		

खंबावती–सूलताल (मध्यलय).

स्थायी.

प				प		प			
ध	–	(म)	–	ग	ग	ग	म	सा	सा
खं	ऽ	बा	ऽ	व	ति	गा	ऽ	व	त
×		०		२		३		०	
म									
रे	रे	म	–	प	–	ध	–	प	ध
ह	रि	कां	ऽ	भो	ऽ	जी	ऽ	सु	र
×		०		२		३		०	
नि		ध				सां			
ध	–	नि	ध	सां	सां	ध	सां	नि	नि
री	ऽ	ख	ब	अ	नु	लो	ऽ	म	ख
×		०		२		३		०	
				प		प			
ध	प	ध	म	ग	ग	ग	म	सा	सा
मा	ऽ	ज	न	व	त	ला	ऽ	व	त
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प				मां					
म	म	म	प	नि	नि	सां	नि	सां	सां
दु	र	गा	ऽ	रि	प	छां	ऽ	ड	त
×		०		२		३		०	
नि				रें					
सां	–	रें	–	गं	गं	सां	–	नि॒	ध
रा	ऽ	गे	ऽ	स	री	पं	ऽ	च	म
×		०		२		३		०	
नि॒						सां			
ध	नि॒	धप	ध	सां	–	ध	सां	नि॒	नि॒
अ	रि	धऽ	ति	लं	ऽ	ग	सो	र	ट
×		०		२		३		०	
नि॒				प		प			
ध	प	ध	म	ग	ग	ग	म	सा	सा
गां	ऽ	धा	ऽ	र	छु	पा	ऽ	व	त।
×		०		२		३		०	

खंबावती—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

म				प				प			प	प			
रे	म	प	ध	ध	सां	नि॒	–	ध	–	(म)	मप	ग	–	म॒	सा
पि	या	बि	न	नैं	ऽ	ना	ऽ	नीं	ऽ	द	नऽ	आ	ऽ	ऽ	वे
३				×				२				०			
सां	सां			ध	धसां							प			
नि	नि	सां	प	पध	रेंरें	सां	नि॒	धप	ध	(म)	–प	ग	–	म	सा
पि	या	बि	न	नैंऽ	ऽऽ	ना	ऽ	नींऽ	ऽ	द	ऽन	आ	ऽ	ऽ	वे
३				×				२				०			

नि	ध प	प प	प
सां सांप पधसांरें गंसां	सांध सां नि ध	(म) मप ग ग	ग म सा –
पि याऽ बिऽऽऽ ऽन	नैऽ ऽ ना ऽ	नीं ऽऽ द ऽन	आ ऽ वे ऽ
३	×	२	०

अन्तरा.

ग सां		नि	
म म प नि	सां सां सां सां	सां सां रें गं	सां – नि ध
स ग रि रै	ऽ न त र	फ त र फ	बी ऽ ती ऽ
३	×	२	०
नि	प	प	प
ध – नि पध	सां – नि धध	(म) – – मप	ग – म सा
मो ऽ र भऽ	ये ऽ ऽ जिय	रा ऽ ऽ घब	रा ऽ ऽ वे।
३	×	२	०

खंबावती—झपताल (विलम्बित).

स्थायी.

ध	प प	प	
सां नि	ध म मप	ग –	म सा सा
गि न	त र हीऽ	ता ऽ	ऽ ऽ रे
×	२	०	३
नि	म म	प	प
सा –	ग – प	म ग	ग म सा
ना ऽ	ये ऽ स	ज न	म्हा ऽ रे
×	२	०	३
रे		ध	नि
सा रे	म प ध	म प	ध सां सां
क ल	ना प र	त घ	डि प ल
×	२	०	३

				प	प		प		
सांरेंगं	गं	सां	नि॒	ध	म	मप	ग	म	सा
निऽऽ	क	स	त	आ	ऽ	गाऽ	म्हा	ऽ	रे।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प			सां						
म	—	प	नि	—	सां	सां	सां	—	सां
नीं	ऽ	द	ना	ऽ	व	त	नै	ऽ	न
×		२			०		३		
सां	सां	सांरें	रेंगं	गं	सां	सां	नि॒	ध	ध
बि	र	हऽ	बिऽ	थ	त	न	जा	ऽ	रे
×		२			०		३		
नि॒	नि॒	नि॒			ध		ध		
ध	ध	ध	नि॒	प	प	ध	सां	सां	नि॒
ह	र	रं	ग	पि	या	ऽ	के	बि	न
×		२			०		३		
सां	प	प			प				
नि॒	ध	म	म	मप	ग	—	म	सा	सा
क	व	न	दु	खऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रे।
×		२			०		३		

खंबावती—आडाचौताल (विलंबित)

स्थायी.

म				प			प					प	प
रे	म	प	—	ध	—	—	ध	सां	सां	नि॒	—	ध	म
मैं	तो	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	सा
४		०		×		२		०		३		०	

प				ग				सां							
ग	मसा	सा	—सा	म	म	—	प	नि	सां	—	सां	सां	रें		
ऽ	ऽरी	रा	ऽत	ए	री	ऽ	मा	ई	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ		
४		०		×		२		०		३		०			
								नि॒	नि॒				सां		
—	सांरेंगं	—	सांसां	सां	नि॒	ध	—	ध	ध	नि॒	प	प	ध		
ऽ	ऽऽऽ	ऽ	बिछु	रे	ऽ	ऽ	ऽ	क	र	व	ट	लूं	ऽ		
४		०		×		२		०		३		०			
				नि॒		ध			प	प					
सां	—	नि॒	—	ध	प	प	ध	म	ग	ग	म	सा	—		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	र	फ	ऽ	ऽ	त	र	ऽ	फ	ऽ।		
४		०		×		२		०		३		०			

अन्तरा.

प				सां						सां			
म	म	प	—	नि	सां	—	सां	—	सां	नि	सां	सां	—
सु	प	नें	ऽ	नीं	ऽ	ऽ	द	ऽ	न	आ	ऽ	वे	ऽ
४		०		×		२		०		३		०	
								सां					ध
सां	सां	रें	गं	सां	—	नि॒	ध	ध	—	नि॒	प	—	पध
बि	र	हा	ज	री	ऽ	ऽ	ऽ	चौं	ऽ	ऽ	क	ऽ	उऽ
४		०		×		२		०		३		०	
ध				नि॒		ध			प	प			
सां	—	नि॒	—	ध	प	प	ध	म	ग	ग	म	सा	—
ठी	ऽ	ऽ	ऽ	झि	झ	क	ऽ	ऽ	झि	झ	ऽ	क	ऽ
४		०		×		२		०		३		०	

राग तिलंग.



तिलंगिकाऽथ कथिता गांधारांशविराजिता ।
निषादसंवादिनी च धैवतर्षभ वर्जिता ॥ ६६ ॥
औडुवा संगतिस्त्वस्यां स्यात् पंचमनिषादयोः ।
गानमस्या विनिर्दिष्टं द्वितीयप्रहरे निशि ॥ ६७ ॥
गांधारस्तीव्र आख्यातो मध्यमश्चैव कोमलः ।
उभावपि निषादौ स्तस्तीव्रकोमलसंज्ञकौ ॥

सङ्गीतसुधाकरे ॥

निसौ गमौ पनी सश्च सनी पगौ मगौ च सः ।
तैलंगी चौडुवा गांशा रात्रौ द्वितीययामके ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥६२॥

ओडव कोमल मनि जहां धैवत रिखब न होइ ।
गनि वादीसंवादिते राग तिलंग कहोइ ॥

राग चन्द्रिकासार ॥८४॥

राग तिलंग, खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें ऋषभ और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं। इसकी जाति औड़व औड़व है। इसका वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर निषाद है। गायन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। यह खमाज अंग का राग है। इसमें धैवत नहीं लगता, अतः यह सहज में ही खमाज से भिन्न रखा जा सकता है। "नि प" स्वर संगति राग वाचक है। "नि, प, गमग सा" यदि इतने स्वर गाये जावें

तो श्रोता तिलंग की ही आशा करने लगते हैं। कोई-कोई अवरोह में थोड़ा ऋषभ ग्रहण करना भी स्वीकार करते हैं। आजकल इस तरह का प्रचार भी होने लगा है।

आरोहावरोहस्वरूप

सा ग म प नि सां। सां, नि॒, प, मग, सा।

चलन

नि़सागमप, नि॒प, सांनि॒प, गमग, पग, मगसा। निसां, नि॒प, सांनि॒प, गंमंगं, गंमंगंसां, सांनि॒प, गमग, पगमग, सा।

तिलंग—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

ग म

रि ध

प नि सां सां	सां नि प सां	सां नि प म	ग ग, ग म
व र जि त	रू ऽ प ति	लं ऽ ग क	हा ऽयू, रि ध
२	०	३	×
प नि प सां	सां नि प नि	नि प म म	ग ग, ग म
व र जि त	रू ऽ प ति	लं ऽ ग क	हा ऽयू, ह रि
२	०	३	×
प ग प म	ग – नि सा		
कां ऽ भु जि	के ऽ सु र	नि सा ग म	प ग म ग
२	०	३	×
	नि सां	सां नि प म	ग ग, ग म
म प नि नि	सां गं नि त	सा ऽ च ल	गा ऽयू। रि ध
२	०	३	×

अन्तरा.

ग म प नि	नि सां सां सां	प नि सां सां	सां नि प प
रा ऽ ग ख	मा ऽ ज रि	ध क ब हूं	न त ज त
३	×	२	०
ग म ग म	प – नि सां	सां गं मं गं	सां नि प, सां
श्रा ऽ श्र य	भिं ऽ भू ऽ	टि च तु र	क ह त, श्र
३	×	२	०

नि॒	प	ग	म	ग	–,	ग	म	प	नि	सां	सां
रि	प	दु	र	गा	ऽ।	रि	ध	व	र	जि	त
३				×				२			

तिलंग—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

प					प			ग	रे
सां	–	सां	नि॒	प	ग	म	प	म	ग
गा	ऽ	य	स	खी	रा	ऽ	धि	का	ऽ
×		२			•		३		
म				प					
ग	–	म	प	नि॒	नि॒	प	म	ग	–
रा	ऽ	ग	नी	ति	लं	ऽ	गि	का	ऽ
×		२			०		३		
म								म	
ग	सा	म	ग	म	प	ग	म	नि॒	प
×		२			०		३		
प					प			ग	रे
सां	–	नि॒	नि॒	प	ग	म	प	म	ग
सो	ऽ	हे	स्व	र	मा	ऽ	लि	का	ऽ।
×		२			•		३		

अन्तरा.

म					सां				
ग	–	म	प	–	नि	सां	नि	सां	सां
वा	ऽ	दि	गं	ऽ	धा	ऽ	र	सु	र
×		२			•		३		

सां					नि				
नि	–	नि	सां	सां	सां	–	सां	नि̱	प
बो	ऽ	ले	जे	सी	सा	ऽ	रि	का	ऽ
×		२			०		३		
ग		रे	म						
म	ग	सा	ग	म	प	–	नि	सां	गं
अ	ध	र	क	र	मे	ऽ	ल	ह	रि
×		२			०		३		
रें					प			ग	रे
सां	–	नि̱	नि̱	प	ग	म	प	म	ग
पू	ऽ	र्व	कां	ऽ	भो	ऽ	जि	का	ऽ।
×		२			०		३		

तिलंग–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

ग
म
स

		सां						प		ग		प			
प	नि̱प	नि	सां	सां	–	नि̱	प	ग	ग	म	प	ग	म	ग	–
ज	नऽ	तु	म	का	ऽ	हे	न	ह	रि	गु	न	गा	ऽ	वो	ऽ
०				३				×				२			
ग		म				सां					ग			सां	
सा	–	ग	म	प	प	नि	सां	सां	नि̱	प	म	प	नि̱प	नि̱	सां
ना	ऽ	ह	क	ज	न	म	ग	मा	ऽ	वो।	स	ज	नऽ	तु	म
०				३				×				२			

अन्तरा.

प									रें			प			
ग	म	प	नि	सां	–	सां	सां	सां	सां	नि̱	प	ग	म	ग	ग
त्र	य	गु	ण	मो	ऽ	हि	त	अ	खि	ल	ज	ग	त	य	ह
०				३				×				२			

सा नि़ सा ग म	सां प – नि सां	ग सां नि॒ प म
ना ऽ ह क	दे ऽ ख लु	भा ऽ वो, । स
०	३	×

तिलंग—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

गम
होमे

प नि सां सां	सां नि॒ प नि॒	नि॒ नि॒ प ,गम	ग – ग, म
रे तो म न	श्या ऽ म सुं	द र ऽ ,बन	मा ऽ ली, मे
२	०	३	×
प नि॒ प ,निसां	सां नि॒ प सां	सां नि॒ प ,गम	ग – ग –
रे तो ऽ ,मन	श्या ऽ म सुं	द र ऽ ,बन	मा ऽ ली ऽ
२	०	३	×
नि़ सा – ग म	प – – निनि	सां – सां गं	(सां) नि॒ प गम
जा ऽ य बु	ला ऽ ऽ वोको	ई ऽ मो री	आ ऽ ली होमे।
२	०	३	×

अन्तरा.

ग म प नि	सां सां सां सां	प नि सां सां	प ग नि॒ प म ग
बि न द र	स न म न	धी ऽ र ध	र त ना हिं
०	३	×	२
सा सा ग म	नि प प सां गं	(सां) नि॒ प ,गम	प नि सां सां
म द न मो	ह न गो ऽ	पा ऽ ल। होमे	रे तो म न
०	३	×	२

तिलंग—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

			ध
प नि सां सां	— नि॒ प प	गम ग म प	नि॒ प ग म
ब स कि नो	ऽ बा ट च	लऽ त जि या	पि या मो रा
२	०	३	×
			सां
प सां नि सां	प नि सां सां	सां ग रें (मं)	गं गं नि सां
ब स कि नो	मो रि आ ली	सु घ र पि	या ने क छु
२	०	३	×
			ध
प नि सां रें	निसां नि॒ प प	गम ग म प	नि॒ प ग म
जा दु कि नो	ऽऽ बा ट च	लऽ त जि या	पि या मो रा।
२	०	३	×

अन्तरा.

प		नि	
म प नि नि	सां सां सां सां	सां गं रें मं	गं — (सां) —
ऐ सो टो ना	कि नो मो हे	सु ध बि स	रा ऽ ई ऽ
३	×	२	०
			नि
सां गं रें मं	गं रें सां सां	प नि सां रें	सां नि॒ प प
बा ऽ ट घा	ऽ ट म न	ह र लि नो	ऽ बा ट च
३	×	२	०
	ध		
गम ग म प	नि॒ प ग म		
लऽ त जि या	पि या मो रा।		
३	×		

तिलंग - चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

(सा)नि़	सा	ग	मप	(प)ग	म	(प)नि॒	प	—	नि	सां	सां
स	म	झ	सऽ	म	झ	आ	ली	ऽ	प्रा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
नि॒	—	प	(प)सां	नि॒	प	(प)ग	म	प	(प)ग	म	ग
जा	ऽ	त	ध्या	रे	मो	ह	न	ऽ	बि	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

(ग)म	ग	म	प	नि	—	सां	सां	प	(सां)नि	सां	सां
ब	हो	ऽ	र	न	ऽ	य	ह	ऽ	रं	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
(नि॒)प	नि	—	(सां)नि	सां	—	(नि)सां	नि॒	प	(प)ग	म	ग
ब	हो	ऽ	र	व	ऽ	य	ह	ऽ	रु	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	
(सा)नि़	सा	—	(प)ग	म	प	(सां)नि	सां	गं	(गं)नि	सां	सां
ब	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	न	ऽ	र	ऽ	हे
×		०		२		०		३		४	
(प)सां	—	—	नि॒	—	प	(प)ग	म	प	(प)ग	म	ग
आ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	य	ह	ऽ	दि	ऽ	न।
×		०		२		०		३		४	

राग दुर्गा (खमाज थाट)



अथ दुर्गा निगदिता गांधारांश विभूषिता ।
निषादसंवादिनी स्यात्पंचमर्षभवर्जिता ॥
आडुवा मधयोर्नित्यं संगत्यातिमनोहरा ।
तीव्रौ धैवतगांधारौ मध्यमः कोमलस्तथा ॥
निषादौ द्वौ गीयतेऽसौ रात्रौ यामे द्वितीयके ॥

सङ्गीतसुधाकरे ।

गमा निधौ निसौ मगौ मधौ निधौ मगौ च सः ।
गांशिका कीर्तिता दुर्गा द्वितीये यामके निशि ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

गनि वादीसंवादि है मनिसुर कोमलकीन ।
गावत दुर्गा राग गुनि ओडव जो रिपहीन ।

रागचन्द्रिकासार ।

राग दुर्गा, खमाज थाट से उत्पन्न होने वाला राग है । इसी नाम का एक और राग बिलावल थाट का है, जिसकी चीजें पीछे दी जा चुकी हैं । इस खमाज थाट के दुर्गाराग में ऋषभ और पंचम स्वर वर्ज्य होते हैं । इसकी जाति औड़व है । वादी गांधार और संवादी निषाद होता है । इस राग में 'ध म' स्वरसंगति अच्छी शोभा देती है । इस स्वर संगति से किंचित बागेश्री का आभास होता है, परन्तु पूर्वाङ्ग में कोमल 'ग नी' न होने से यह राग भिन्न हो जाता है । इसके आरोह में

कुछ स्थलों पर तीव्र निषाद का प्रयोग होता है। इसके गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा ग म ध नि सां। सां नि ध म ग सा।

चलन.

सा, निध, सा, मग, मधनि, ध, मग, । मधनिसां, गंमंगंसां, सां, निध, मग, धमग, म, सा।

दुर्गा–झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म			धृ				ग		
ग	म	सा	नि॒	ध़	सा	–	म	ग	–
दे	ऽ	वि	दु	र	गा	ऽ	स	दा	ऽ
×		२			०		३		
म			नि॒						
ग	म	ध	ध	नि॒	ध	–	म	ग	–
गा	ऽ	य	रे	ऽ	मा	ऽ	न	वा	ऽ
×		२			०		३		
म		ग	म		ध				
ग	म	म	नि॒	ध	सां	–	सां	सां	सां
जा	ऽ	कि	कि	र	पा	ऽ	सुं	स	ब
×		२			०		३		
ध			सां						
सां	सां	सां	ध	धनि	ध	–	म	ग	–
ट	र	त	रि	पुऽ	आ	ऽ	प	दा	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

म			म						
ग	म	म	नि॒	ध	सां	–	सां	सां	सां
मे	ऽ	ल	खं	ऽ	मा	ऽ	ज	ग	त
×		२			०		३		
ध									
सां	–	गं	गं	मं	गं	–	सां	सां	–
पं	ऽ	च	सु	र	सुं	ऽ	द	रा	ऽ
×		२			०		३		
सां									
नि	सां	नि॒	ध	नि॒	ध	म	ग	म	ध
×		२			०		३		

सां	ऽ	नि	ध	नि	ध	ऽ	म	ग	ऽ।
×		२			०		३		

दुर्गा—चौताल (विलम्बित).

स्थायी.

म			सा					ग			
ग	म	सा	ध़	—	नि़	सा	—	म	ग	—	ग
जो	ऽ	ब	ना	ऽ	के	जो	ऽ	र	तो	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
ग				सां		सां					
म	ग	सां	सां	ध	सां	ध	—	म	ग	—	ग
कै	से	ऽ	स	म	ऽ	झा	ऽ	य	रा	ऽ	खुं
×		०		२		०		३		४	
ग				नि		नि					
म	ग	—	म	ध	—	सां	—	गं	सां	—	सां
मे	रो	ऽ	क	हा	ऽ	मा	ऽ	न	प्या	ऽ	रि
×		०		२		०		३		४	
नि			सा			सां					
सां	—	सां	ध	सां	सां	ध	—	म	ग	—	म
आ	ऽ	ज	ते	ऽ	रो	दा	ऽ	व	री	ऽ	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

ग				नि							
म	ग	म	म	ध	ध	सां	—	सां	—	सां	सां
त	न	म	न	ध	न	नो	ऽ	छा	ऽ	व	र
×		०		२		०		३		४	

नि		मं	मं				सां				
सां	सां	गं	गं	मं	सां	सां	ध	सां	ध	–	म
क	र	हुँ	बी	ऽ	त	ग	ई	ऽ	रै	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

म				सां				मं			
ग	–	म	–	ध	–	सां	सां	गं	मं	सां	–
ता	ऽ	सों	ऽ	छू	ऽ	ट	ग	यो	ऽ	है	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ध										म	
सां	–	–	ध	–	सां	ध	–	म	म	ग	–
चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	री	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

राग रागेश्वरी



रागेश्वर्यपि पंचमेन रहिता खंमाजसंस्थानजा
प्रारोहे ऋषभं न संस्पृशति धो वक्रोऽवरोहे मतः।
षड्जो वाद्यथ मध्यमेन सततं संवादिना रोचते
यामिन्यां प्रहरात्परं सुमतिभिर्मंजुस्वरं गीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८४ ॥

रिसौ निधौ समौ गश्च मधौ निधा मगौ रिसौ।
रागेश्वरी मता तज्ज्ञैर्गांशिका रात्रिगोचरा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६३ ॥

मनि कोमल पंचम नहीं धग संवाद सुहाइ।
चढते रिखब न लगत है रागेसरी कहाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ८३ ॥

यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें पंचम स्वर बिलकुल वर्ज्य है और आरोह में रिषभ वर्ज्य है। इसकी जाति औड़व-षाड़व है। वादी स्वर गांधार और संवादी निषाद है। अन्य मत से 'सा-प' का संवाद होता है। इसके गाने का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसमें 'धम' स्वर संगति बड़ी मनोरंजक है। उत्तरांग में बागेश्री का आभास होता है, परन्तु पूर्वाङ्ग के तीव्र गांधार से यह राग बागेश्री से अलग हो जाता है। रिषभ के प्रयोग से दुर्गा राग को अलग कर देता है। कर्नाटकी पद्धति के 'रागलक्षण' नामक ग्रन्थ में 'नाटकुरंजिका' नामक रागिनी का वर्णन आता है, वह रागेश्वरी जैसी ही है।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा ग, म ध नि सां । सां नि॒ ध म ग रे सा ।

चलन.

सा, रेसा, नि़॒ध़नि़सा, मग, मध, नि॒ध, गग, मग,
सारेसा, गमध, निसां, मंगं, रेंसां नि॒ध, मध, नि॒ध,
मग, रे, सा, नि़॒ध़, सा ।

रागेश्वरी—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

									रे
									प्र
नि़	सा	नि़	—	ध़	सा	—	सा	—	सा
थ	म	मे	ऽ	ल	सा	ऽ	धे	ऽ	,ह
०		३			×		२		
२									
सा	—	नि़	—	ध़	नि़	—	ध़	—	सा
री	ऽ	का	ऽ	बु	जी	ऽ	को	ऽ	,त
०		३			×		२		
नि़									
सा	ग	म	ध	ध	म	ध	सां	सां	रें
ज	त	पं	ऽ	च	म	ऽ	स्व	र	,र
०		३			×		२		
सां	सां	ध	नि॒	ध	म	म	ग	—,	रे
च	त	रा	ऽ	गे	शि	री	को	ऽ।	प्र
०		३			×		२		

अन्तरा.

									म
									स
		नि॒							
ग	म	ध	नि॒	ध	सां	सां	सां	—	सां
ज	त	बा	ऽ	गे	शि	री	अं	ऽ	ग
०		३			×		२		

नि									
सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	–	सां
अं	ऽ	त	र	सु	गां	ऽ	धा	ऽ	र
०		३			×		२		
							ग		
सां	सां	ध	नि॒	ध	म	ग	रे	–	सा
बि	न	रि	ख	ब	अ	नु	लो	ऽ	म
०		३			×		२		
		सा							
सा	सा	ध̣	–	नि̣॒	सा	ग	म	ध	ध
र	वि	चं	ऽ	द्रि	का	ऽ	च	त	र
०		३			×		२		
सां	सां	ध	नि॒	ध	म	–	ग	–,	रे
क	हे	रा	ऽ	ग	नी	ऽ	को	ऽ,	प्र
०		३			×		२		

रागेश्वरी—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

									रे
									प्र
		सा					म		
सा	सा	ध̣	नि̣॒	ध̣	सा	–	ग	म	सा
थ	म	सु	ऽ	र	सा	ऽ	धे	ऽ	प्र
०		३			×		२		
सा	सा	ध̣	नि̣॒	ध̣	सा	–	सा	–	सा
थ	म	सू	ऽ	र	सा	ऽ	ध	ऽ	र
०		३			×		२		

(रे)सा	—	(ध)नि	—	ध	(प)ध	—	(ध)नि	ध	नि
ट	ऽ	ना	ऽ	म	जो	ऽ	लो	ऽ	र
०		३			×		२		
सा	ग	म	ध	ध	(ध)म	ध	सां	—	(सां)रें
हे	ऽ	या	ऽ	हि	घ	ट	में	ऽ	प्र
०		३			×		२		
सां	नि	(नि)ध	नि	ध	म	—	ग	—	,रे
ग	ट	प्रा	ऽ	न	सा	ऽ	धे	ऽ।	प्र
०		३			×		२		

अन्तरा.

(ग)म	मग	म	ध	ध	सां	सां	सां	—	सां
स	प्रऽ	सू	ऽ	र	ती	न	प्रा	ऽ	म
×		२			०		३		
सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	—	—
गु	नी	ज	न	ब	खा	ऽ	ने	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
(ध)नि	ध	(प)ध	नि	ध	म	ग	रे	सा	—
आ	व	न	ऽ	ग	व	न	की	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
(नि)सा	—	नि	ध	नि	सा	ग	म	ध	ध
बि	ऽ	द्या	ऽ	क	ठि	न	भे	ऽ	द
×		२			०		३		

```
ग         | ध        सां |          | नि
म    ध    | सां  –   रें  | सां   नि  | ध   नि   ध
पा   ऽ    | वे   ऽ   गु  | रु    न   | से   ऽ   वे
×         | २           | ०         | ३
```

```
म    –    | ग    – ,  रे |
आ    ऽ    | दे   ऽ।  प्र |
×         | ०           |
```

राग गारा.

—:*:—

रिगौ रिसौ धनौ पधौ निसौ गमौ रिगौ रिसौ ।
गारा संकीर्तिता लोके गांशिका रात्रिगोचरा ।।
अभिनवरागमंजर्याम् ।। ६५ ।।

द्वै गंधार निखाद द्वै मध्यम कोमल जान ।
तीखे रिध वादी खरज गारा राग बखान ।।
राग चन्द्रिकासार ।।१००।।

गारा, खमाज थाट से उत्पन्न होता है । इसमें दोनों गांधार और दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं । कोमल गांधार अवरोह में लगता है । इस राग का ढांचा खमाज अङ्ग का होने के कारण इसे खमाज थाट में सम्मिलित करना होगा । इसका वादी स्वर गांधार और संवादी धैवत अथवा निषाद माना जाता है । यह राग रात्रि के दूसरे प्रहर में गाया जाता है । इसका विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में ही विशेष रूप से होता है । अनेक मर्मज्ञों का मत है कि मन्द्र मध्यम को षड़ज मानकर उस पर खमाज राग गाने से गारा उत्पन्न होता है । यह मत अधिकांश में यथार्थ है । कोई-कोई इसमें 'सा-प' का सम्वाद मानते हैं । यह राग क्षुद्र प्रकृति का अर्थात् ठुमरी जैसे गीतों के योग्य है । ऐसे रागों का एक नाम 'धुन' भी प्रचलित है ।

राग का चलन इस प्रकार है:—

सा, धनि, मग, मप, मग, म, रेगरेसा, निसा, निध निप,
मप, धनिसा, रेनिसा, धनि, ग ।
ग, मग, साग, मप, म, रेगरेसा, प, मप, गम, रेगरेसा, रे,
निसा, निध निप, मप, धनिसा ।

———

गारा—एकताल (मध्यलय)

स्थायी.

म	म	रे	ग॒	रे	सा	नि़	सा	रे	सा	नि़	ध़
गु	नि	ब	र	न	त	गा	ऽ	रे	के	सु	र
×		०		२		०		३		४	
म़	—	नि़	ध़	सा	—	ग	म	प	ग	म	म
मं	ऽ	द	र	म	ऽ	ध्य	म	के	च	तु	र
×		०		२		०		३		४	
ग	म	ग	म	प	ग	म	प	ध	नि॒	ध	म
×		०		२		०		३		४	
ग	म	प	रे	ग	म	प	रे	ग॒	रे	नि़	सा ।
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

सा	—	ग	म	प	ग	म	—	ध	—	नि॒	ध
ती	ऽ	व	र	सु	र	सौं	ऽ	रो	ऽ	ह	त
×		०		२		०		३		४	
म	ध	नि॒	ध	म	—	म	प	ग॒	—	रे	रे
को	ऽ	म	ल	सौं	ऽ	अ	व	रो	ऽ	ह	त
×		०		२		०		३		४	
म	—	ध	नि॒	ध	सां	नि॒	ध	म	प	ग	म
दो	ऽ	उ	गं	धा	ऽ	रैं	ऽ	बि	ल	स	त
×		०		२		०		३		४	
सां	ध	नि॒	प	ध	म	प	ग	म	ग॒	रे	सा
×		०		२		०		३		४	

गारा—त्रिताल (धीमा)

स्थायी.

रे सा नि़ ध़	सा – सा सा	सा ग म प	मग रेग रे निसा
का ऽ न प	री ऽ ज ब	भ न क मु	रऽ लिऽ की रीऽ
३	×	२	०
नि़ ध़ नि़ ध़	सा ग म प	ध मगम रे सा	नि़ सा रे सा
सु ध बु ध	क छु न हिं	र हीऽऽ म न	की ऽ री ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

प प सां –	नि नि सां सां	नि ध रें सां	सां नि ध प
ह रि कां ऽ	बु जि सु र	गा ऽ रे के	नि के क र
३	×	२	०
म ग म ग	म – प म	म ग रे सा	नि़ सा रे सा
स प सं ऽ	बा ऽ द मि	ला ऽ ऽ ऽ	यो ऽ री ऽ।
३	×	२	०

गारा—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि (कण) ध़नि़ सा रे	म (कण) ग –म ग रे	– सानि़ रे (कण) सा सा	नि़ ध़ रे सा
ऽ मेऽ ,रो रं	गी ऽऽ ला ऽ	ऽ मंऽ म द	सा ऽ आ या।
३	×	२	०

अन्तरा.

						ग			म					ग	
सासा	ग	ग	ग	–	म	ग	–	ग	म	प	मग	मग	रेग	रेसा
ऽ दिन,	ही,	दु	नो	ऽ	दि	न	ऽ	रं	न	ज	नऽ	ऽऽ	मऽ	हीऽ
३			×				२				०			

	सा	प	मप	म	ग	–	मप	म	–	ग	म	रे	ग	रे	सा
ऽ	मो	ति	यन	मां	ऽ	ऽ	गभ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ।
३				×				२				०			

गारा—एकताल (विलम्बित)

स्थायी.

नि़ ,सासा ,जानि

ग		ग						ध़			
म	ग	(म)रे	सा	रे	सा	नि़	ध़	नि़ध़	(नि़)ध़	नि़प़	म़
आ	ऽ	गऽ	रे	ल	गा	जा	ऽ	ऽऽ	तोऽ	ऽऽ	रे
×		०		२		०		३		४	

प़									ध़		
म़म़	म़नि़	–ध़	सा	नि़सा	,सासा	रे	सा	नि़सा,नि़सा	नि़सारेसा	नि़ध़	,सासा
मिल	नदा	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	,मैनु	चा	ऽ	ऽऽ,ऽऽ	ऽऽऽऽ	वेऽ।	जानि
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

नि़	मम		म				म	ग			
सा	गग	–ग	गग	म	प	म	,प	मग	(म)ग	मरे	सा
बा	रवा	ऽर	,सम	झा	ऽ	यो	,न	सऽ	मऽ	ऽऽ	झे
३		४		×		०		२		०	

नि	प			सा	सा
सासा ध	-,मप मग	(म)ग –	मरे सा	नि सा	निसा, निसारेग रेसा,सा
सदा ऽ	ऽ,रंग कीऽ	नाऽ ऽ	ऽऽ ऽ	मा ऽ	ऽऽ, ऽऽऽऽ नीऽ,गु
३	४	×	•	२	०

सा	सा	
नि सा	निसा,निसारेसा	निध, सासा
मा ऽ	ऽऽ, ऽऽऽऽ	निऽ । जानि
३	४	×

गारा—तिलवाड़ा (विलंबित)

स्थायी.

नि	सा
सा(सा)	–,धनि
एऽ	ऽ,जाण

म गम		सा ग	ध प
ग – – मप	म ग मरे सा	रे नि सा ,सा	(सा)ध निप म ,मम
दा ऽ ऽ ,जाण	दी ऽ ऽऽ मौ	ला ऽ ऽ ,मे	राऽ दिल दी ,पिउ
×	२	•	३
म सा	सा सा	रे	सा सा
नि – ध ,निनि	सा निसा मा निसा	रे गरेसानि सा निसा	निसा सा निसा ,धनि
ने ऽ ऽ ,किन	रा ऽऽ खो, बिर	मा ऽऽऽऽ ऽ ऽऽ	येऽ ऽ ऽऽ ,जाण
×	२	•	३

	सा सा
(अथवा)	नि सा सा(सा) धनि
	३

अन्तरा.

नि़ प म	मम	म	सा
सासा ,गग ग ग	गग प म ग	ग मग म,रेग रेसा	नि़ सा रे सा
कोइ ,नहिं जा ने	जिन ऽ रं ग	स बऽ ऽ,ऽऽ कछु	प हि चा ऽ
३	×	२	०
ध़	प़ म़	सा	सा रे
सा निध़ निप़ म़	म़म़ नि़ – ध़	नि़ सा सा निसा,सा	रे गरेसानि़ सा निसा
ऽ ऽऽ ऽऽ नो	इश्क दी ऽ ऽ	बा ऽ तें ऽऽ,नि	बा ऽऽऽऽ ऽ ऽऽ।
३	×	२	०
नि़ सा			
सा सा(सा) – ध़नि़			
हे ऽऽ ऽ ,जाण			
३			
(अथवा)			
सा सा			
नि़ सा सा(सा) ध़नि़			
हे ऽ ऽऽ ,जाण			
३			

गारा—रूपक (विलम्बित).

स्थायी.

			नि़		म
रे सा	नि़ –ध़	सा – सा	सा म	ग म	रे –ग रेसा
त ख	त ऽऽ	बैं ऽ ठो	दु ल	हा, ब	ना ऽऽ योऽ
२	३	०	२	३	०
नि़		म			म
सा निध़	सा सा	रे गम प	म ग	म रे	रेग रे सा
स बऽ	मि ल,	मं गऽ ल	गा ऽ	ऽ ऽ,	ऽऽ यो ऽ।
२	३	०	२	३	०

अन्तरा.

प		सां	नि		
म प	सां –	नि सां सां	ध –नि	रें सां	नि ध प
घ डि	आ ऽ	व ल के	डौं ऽऽ	ऽ ड,	डं ऽ क
२	३	०	२	३	०
म		म			म
ग –	म म	प गम म	प म	ग म	रेग रे सा
नौ ऽ	ब त,	ख्वा ऽऽ न,	ब जा	ऽ ऽ	ऽऽ यो ऽ
२	३	०	२	३	०

गारा–चौताल (मध्यलय)

स्थायी.

						ध़
						प्या
						०

			म		
नि़ सा	ग म	ग –	– ग	म प	म ग
ऽ रे	की ऽ	मू ऽ	ऽ र	ऽ ऽ	त ऽ
३	४	×	०	२	०
ग					
– रे	ग॒ रे	नि़ सा	– सा	नि़ ध़	नि़ प़
ऽ चि	ऽ त	ऽ ऽ	ऽ च	ढी ऽ	ऽ नि
३	४	×	०	२	०
		सा			
म़ म़	नि़ ध़	नि़ सा	– रे	नि़ सा	– सा
स दि	न ऽ	र ह	ऽ त	ऽ ऽ	ऽ ह
३	४	×	०	२	०
रे ग॒	रे सा	नि़ सा	– रे	नि़ सा	नि़ध़ ध़
मा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	रेऽ। प्या
३	४	×	०	२	०

अन्तरा.

ग	म	—	म	नि॒	ध	नि	सां	—	नि	सां	—
क	र	ऽ	उ	प	ऽ	चा	ऽ	ऽ	र	पै	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रें	ग॒ं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	—	नि॒	ध	—
चा	ऽ	र	को	ऽ	ऽ	ऽ	टी	ऽ	बि	ध	ऽ
×		०		२		०		३		४	
(प)नि॒	प	—	म	ग	(रे)ग	म	—	—	म	ग	म
बि	स	ऽ	र	ऽ	त	ना	ऽ	ऽ	हीं	ऽ	बि
×		०		२		०		३		४	
रे	ग॒	रे	नि़	सा	सा	—	(सा)ध़	नि़	सा	ग	म
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ।	प्या	ऽ	रे	की	ऽ
×		०		२		०		३		४	

गारा—धमार (विलम्बित).

स्थायी.

रे	ग॒	रे	सा	नि़	सा	रे	सा	—	(सा)नि़	(सा)नि़	—	ध़	म़
क	र	सिं	गा	ऽ	ऽ	र	खे	ऽ	ल	न	ऽ	को	ऽ
२		०			३				×				
प़	ध़	(सा)नि़	(सा)नि़	सा	सा	—	नि़	सा	नि़	सा	—	रे	रे
ऽ	ऽ	नि	क	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	अ	बी	ऽ	र	ली
२		०			३				×				
(ग)रे	ग	(ग)प	मग	म	(म)रे	ग॒	रे	सा	(म)ग	—	(रे)ग	म	—
ये	ऽ	भ	रऽ	ऽ	भो	ऽ	री	ऽ	सां	ऽ	व	रो	ऽ।
२		०			३				×				

अन्तरा.

(सा) ध़ – नि़ सा –	, रे	ग म –	(रे) ग – – –
हो ऽ ऽ री ऽ	, खे	ल न ऽ	को ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
(म) ग – म प –	म –	(म) रे – ग॒	रे नि़ सा –
आ ऽ ऽ ई ऽ	रा ऽ	ऽ ऽ धि	का ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
(नि़ सा) सा प – म प	(प) ग म	प ^{मग} म	(म) रे ग॒ रे सा
सु घ ऽ र च	तु र	अ लऽ ऽ	बे ऽ ली ऽ
×	२	०	३
(म) ग – (रे) ग म –	(म) रे ग॒	रे सा –	
ना ऽ र हो ऽ	क र	सिं गा ऽ	
×	२	०	

गारा–धमार (विलम्बित)

स्थायी.

सा सा (नि़) ध़ नि़	(म) ग ग – (प) ग म	प –	म ग म
रं ग भ रि	पि च ऽ का ऽ	ऽ ऽ	री ऽ ऽ
३	×	२	०
(म) रे ग॒ रे सा	(सा) नि़ – सा रे ग॒	रे सा	(सा) नि़ सा –
मा ऽ री ऽ	रे ऽ ऽ मो ऽ	रे ऽ	हो री ऽ
३	×	२	०

```
                 | ग़                           |              |
नि़ ध़ नि़प़ म़  | म़ नि़ ध़ सा नि़           | सा    –     | रे नि़ सा
के ऽ ऽऽ खे      | लै ऽ ऽ ऽ ऽ                  | ऽ     ऽ     | या ऽ ऽ।
३                | ×                            | २            | ०
```

अन्तरा.

```
रे                                                      ग
सा – – ग –   | –   ग  | ग  –  –  | – – म ग
का ऽ ऽ हा ऽ  | ऽ   क  | रू ऽ  ऽ  | ऽ ऽ क छु
×            | २      | ०        | ३
ग                                 ग॒
म प – म –    | ग   –  | म  ग  म  | रे ग॒ रे सा
ब न ऽ ना ऽ   | ऽ   ऽ  | हीं ऽ ऽ  | मो ऽ रे ऽ
×            | २      | ०        | ३
नि़    प
सा प – ग –   | म   –  | म  ग  म  | रे ग॒ रे सा
ह म ऽ द ऽ    | म   ऽ  | तु म  ऽ  | ही ऽ प र
×            | २      | ०        | ३
सा
नि़ – सा रे ग॒ | रे  सा | रे नि़ सा |
बा ऽ ऽ ऽ ऽ   | री  ऽ  | ऽ  ऽ  ऽ। |
×            | २      | ०
```

राग सोरट

यदा तु रिगधाः स्वरा निगदिताश्च तीव्रास्तथा ।
मृदुर्भवति मध्यमो विलसतो निषादावुभौ ॥
रिधौ विलसतो मिथो रुचिरवादिसंवादिनौ ।
धगौ यदि न रोहणे निशि तदा मता सोरटी ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥८६॥

रिमौ पनी तथा सश्च निधौ मपौ धमौ च रिः ।
सोरटी कीर्तिता रात्रावृषभस्वरवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥६६॥

द्वै निखाद कोमल मध्यम चढते धग न लगाइ ।
परि संबादीबादितें सोरठ गुनियन गाइ ॥

राग चन्द्रिकासार ॥८८॥

सोरट, खमाज थाट से उत्पन्न होने वाला एक औड़व सम्पूर्ण राग है। खमाज थाट के रागों के दो मुख्य वर्ग हैं। १—वे राग जिनमें गांधार प्रबल होता है। २—वे राग, जिनमें रिषभ प्रबल होता है।

सोरट के आरोह में गांधार और धैवत वर्ज्य होते हैं। अवरोह में भी गांधार स्वर दुर्बल ही रहता है। इसका किंचित् प्रयोग मध्यम से रिषभ तक आने वाली मींड़ में किया जाता है। यह मींड़ सोरट के लिये जीवभूत अङ्ग ही है। इस क्रमिक पुस्तक माला के तीसरे भाग में आये हुए 'देस' राग से इस राग का बहुत साम्य है। यथासंभव कम से कम प्रमाण में गांधार का प्रयोग कर इसे 'देस' से भिन्न किया

जा सकता है। इसके सिवाय 'धमरे' स्वर संगति से भी 'द्वेस' काफी दूर हो जायेगा। सोरट का वादी स्वर रिषभ और सम्वादी धैवत है। इसके गाने का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

आरोहावरोहस्वरूप

सा रे, म प नि, सां। सां, रें, नि ध, मपध, मरे, नि, सा।

चलन

सा, रे, मप, नि, सां, रें, निध, प, धमरे, रेपमरेरे, रेसा।

रे, प, मपध, मरे, नि, ध, मरे, रेमपनि,

सां, रें, निध, मरे, प, मरे, रेंनि, सा।

सोरट—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

																ग
																म
																क
				प	प							सा				
म़	रे	म	प	सां	नि̱	ध	(म)	मरे	ग	(सा)	सा	म	–	रे	रे	
हूँ	ऽ	अ	ब	सो	ऽ	र	ट	देऽ	ऽ	स	को	भे	ऽ	ऽ	द	
२				०				३				×				
म		म	म	रे				म	रे			ग				
रे	–	रे	रे	प	–	म	–	रे	रे	ग	–	नि़	नि़	सा	सा	
ओ	ऽ	ड	व	सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	सो	ऽ	ह	त	नि	त	
२				०				३				×				
रे						सां	सां									
म	रे	म	म	प	प	नि	नि	सां	-	निसां	–	निसां	निसांरेंनि̱	धप	म	
क	ह	त	ध	ग	न	को	नि	षे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ	धऽ	। क	
२				०				३				×				
म																
रे	–	म	प													
हूं	ऽ	अ	ब													
२																

अन्तरा.

प				सां		सां						सां			
म	म	म	प	नि	–	नि	–	सां	–	सां	सां	नि	सां	सां	सां
ह	रि	कां	ऽ	भो	ऽ	जी	ऽ	ठा	ऽ	ठ	ज	नि	त	द्व	य
०				३				×				२			
सां								रें							
नि	नि	नि	नि	सां	–	सां	सां	नि	सां	निसां	निसांरें	नि̱	–	ध	प
स	ब	सु	र	छू	ऽ	ब	त	दे	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
०				३				×				२			

प सां	–	नि	–	धप	ध	(म)	–	म रे	रे	ग	ग	रे नि	–	सा	सा
रे	ऽ	वा	ऽ	दीऽ	ऽ	सो	ऽ	र	ट	स	ब	सं	ऽ	म	त
०				३				×				२			
म रे	–	म	म	प	प	सां नि	नि	सां	निसांरेंनि	धप,	म	म	रे	म	प
पं	ऽ	च	म	को	उ	क	है	दे	ऽऽऽऽ	सऽ,।	क	हूँ	ऽ	अ	च
०				३				×				२			

सोरट–चौताल (विलम्बित)

स्थायी.

प सां	नि	धप	धम	म रे	–	–	म	रे रे	गनि	सा	सा
सो	ऽ	रऽ	टऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ग	नि
३		४		×		०		२		०	
म रे	–	रे म	म	म प	–	ध प	ध	म	रे	रे प	म
ओ	ऽ	ड	व	सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	ध	ग
३		४		×		०		२		०	
म रे	म रेग	सा	सा								
सु	रऽ	बि	न	म रे	म रे	म	प	सां नि	सां नि	सां	ऽ
३		४		×		०		२		०	
सां नि	सां नि	सां	ऽ	रें	रें	सां	ऽ	रें	नि	ध	प।
३		४		×		०		२		०	
सांनि	रेंनि	धप	धम								
सोऽ	ऽऽ	रऽ	टऽ								
३		४									

अन्तरा.

रे				सां							
म	रे	म	प	नि	नि	सां	—	नि	सां	सां	सां
रा	ऽ	त	स	म	य	दू	ऽ	जे	प	हु	र
×		०		२		०		३		४	
मा						नि					
नि	सां	सां	सां	रेंगं	रेंसां	सां	—	रें	नि॒	ध	प
कां	ऽ	भु	जां	ऽऽ	केऽ	ठा	ऽ	ठ	म	धु	र
×		०		२		०		३		४	
म						सां	सां				
रे	—	म	म	प	—	नि	नि	सां	नि	सां	सां
री	ऽ	ख	ब	अं	ऽ	श	क	रे	च	तु	र
×		०		२		०		३		४	
गं				प	रें						
रें	रेंगं	रें	सां	सां	नि॒	ध	प				
गु	निऽ	ज	न	धा	ऽ	ये	ऽ।				
×		०		२		०					

सोरट - तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

								म							
	नि	नि	नि	सां	नि॒	धपम	म	रे	—	रे	—	म	—	—	रे
ऽ	जो	ब	न	झा	ऽ	लऽऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ना	जा	ऽ	ऽ	ऽय
२				०				३				×			
सा	रे	नि़	सा	रे	रे	रे	रे	प	ध	म	—	म	—	रे	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दि	न	दि	न	दू	ऽ	नो	ऽ	दू	ऽ	ख	प
२				०				३				×			

मम	रेसा	सा	–	रे	–	म	म	प	–	नि	नि	सां	–	–	–
रोऽ	ऽऽ	है	ऽ	का	ऽ	से	क	हूं	ऽ	स	म	झा	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			

,	नि	नि	नि
य, ।	जो	ब	न
२			

अन्तरा.

	मम	प	प	नि	सां	सां	म	प	प	नि	सां	सां	सां	रें	–
ऽ	दिन	न	हिं	चै	ऽ	न	रै	ऽ	न	न	हिं	निं	दि	या	ऽ
०				३				×				२			
नि	नि	नि	वि	नि	सां	सां	सां	निसां	रेंरें	सांनि	सांनि	धप,	नि	नि	नि
त	र	फ	त	जि	या	अ	कु	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽयू ।	जो	ब	न
०				३				×				२			

सोरट–त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी.

सां
:
ला

सां	निसां	निसांरें	नि	निधप	ध	धपम	–म	म	–	रे	रे
रा	ऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	लाऽऽ	ऽ	गोऽऽ	ऽहि	आ	ऽ	ऽ	वे
०				३				×			

गगरेसा	रेसानि	सासा	सा
नंऽऽ	ऽऽऽ	ऽन्द	ल
२			

म रे	म रे	म	—	प	—	—	निनि	सां	निसां	सां निसांरेंगं	रेंसांनिध
पि	छ	ली	ऽ	पी	ऽ	ऽ	तज	ता	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ
०				३				×			

प,धम	म रे	म रे,	मप
ऽ,ऽऽ	वे	हो।	लाऽ
२			

अन्तरा.

ग म	—	—	,मप	सां नि	सां	सां	—	प निनिधप	मप	सां नि	सां	निसां	निसांरें	रें —
नं	ऽ	ऽ	,दरो	ढी	ऽ	टो	ऽ	बऽऽऽ	ऽज्यों	ना	हीं	माऽ	ऽऽऽ	ने ऽ
३				×				२				०		

नि	नि	सां	,सां	सां	निसां	गंगंरेंसां	रेंसांनिध
कू	डा	बो	,लसु	ना	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ
३				×			

निसांनिध	पधप	प रे	,मप	सां
ऽऽऽऽ	ऽऽवे	हो।	,लाऽ	रा
२				०

सोरट—तिलवाड़ा (विलंबित)

स्थायी.

रे म म रे ,मप	सां नि सां निसांरें निनि	नि ध धप ध (म)	म — — रे
हो जी ऽ ,म्हारी ३	बे ऽ ऽऽऽ ऽग ×	सु ऽध ऽ ली २	जो ऽ रे ऽ ०
म म रे रे प —	मप ,मपध — म	ममगरे ग — सानि	सा — — सा
हो जी ऽ ऽ ३	ऽऽ ,ऽऽऽ ऽ ऽ ×	ऽऽऽऽ ऽ ऽ म्हारा २	रा ऽ ऽ जू ०

अन्तरा.

,मम प प	नि नि सां सां	,मप नि सां	नि सां निसां रें
ऽ कब् की मैं ३	उ भी ठा डी ×	ऽ दर व ज २	वा ऽ ऽऽ ऽ ०
,निनि नि नि	सां — सां —	नि नि सां सां	निसां रेंरें सांनि धप
ऽ अर ज क ३	रो ऽ छो ऽ ×	बो लो म्हा रा २	राऽ ऽऽ ऽऽ ऽजू । ०

सोरट—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

			निनि मारु
सां निसां निसांरें नि	निधप ध धपम म	ग म — रे रे	गगरेसा रेसानि सा निसा
जी ऽऽ ऽऽऽ ऽ ०	चांऽऽ ऽ दऽऽ नि ३	रा ऽ ऽ ते ×	ऽऽऽऽ ऽऽऽ ऽ ऽऽ २

म रे – – ,मम	प – – निनि	सां सां निसां निसांरेंगं रेंसांनिध	प निसांनिध पधप रे– मप,
से ऽ ऽ ,जरि	या ऽ ऽ क्युंना	चा ऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ ऽऽवो होऽ ,मारु
०	३	×	२

नि सां निसांरें नि
जी ऽ ऽऽऽ ऽ
०

अन्तरा.

प म मप नि नि	सां सां सां सां	सां म प नि ,नि	सां निसांरें रें –
उ भीऽ उ भी	मि र्गा ने णी	अ र ज ,क	रे ऽऽऽ छे ऽ
०	३	×	२
रें सां सां सां नि नि नि नि	सां सां सां सां	सां म प नि ,नि	सां निसांरें रें –
उ भी उ भी	मि र्गा ने णी	अ र ज ,क	रे ऽऽऽ छे ऽ
०	३	×	२
रें नि नि नि	सां सां सां सां	सां निसांरेंगं रेंसांनिध निसांनिध पधप	प रे – – ,मप
बा दि जी रा	गो रे गा र	गाऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽले	हो ऽ ऽ। मारु
०	३	×	२

नि
जी
०

सोरट—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म	रे	म	–	प	नि	नि	नि	नि	नि
ते	ऽ	रो	ऽ	हि	ध्या	न	ध	र	त
×		२			०		३		
सां	–	सां	रें	नि॒	(ध)नि॒	–	ध	प	प
ज्ञा	ऽ	न	क	र	ता	ऽ	र	तु	हि
×		२			०		३		
म	प	धप	ध	म	ग	रे	ग	(रे)सा	–
तु	हि	जोऽ	ऽ	त	ज	ग	त	में	ऽ
×		२			०		३		
नि़	सा	रे	म	प	म	रे	प	म	–
भा	ऽ	नू	ऽ	द	ये	ऽ	भ	यो	ऽ
×		२			०		३		

अन्तरा.

म	प	नि	–	नि	नि	नि	सां	–	सां
तू	ऽ	ही	ऽ	प	व	न	पा	ऽ	नि
×		२			०		३		
नि	सां	रें	–	नि॒	ध	प	नि॒	ध	प
वा	नि	क	ऽ	र	सु	ऽ	ध	तु	हि
×		२			०		३		

म	प	नि	सां	–	रें		–	मं	गं	रें	
दा	ऽ	नि	दा	ऽ	ता		ऽ	र	तुं	हि	
×		२			०			३			
सां	–	रें	नि॒	ध	प		रे	म	म	म	
रं	ऽ	ग	न	को	मा		ऽ	न	द	यो	
×		२			०			३			

सोरट—चौताल (विलंबित)

स्थायी.

रे (म)	म	प	नि॒प	नि	सां	रेंनि॒	धप	ध	म	रे (म)	–
पा	ऽ	यो	ऽऽ	हो	ऽ	ऽऽ	आऽ	ऽ	व	लो	ऽ
३		४		×		०		२		०	
ग॒	रे	रे	नि॒सा	सा	–	सा	–	रे (म)	म	प	प
ऽ	नो	सा	ऽऽ	नो	ऽ	आ	ऽ	मा	ऽ	त	प
३		४		×		०		२		०	
धप	–	नि	सां	रें (सां)	रेंनि॒	नि॒ (ध)	ध	प	ध	म	रे
नोऽ	ऽ	अ	प	ऽ	नोऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	नो	ऽ ।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

म	म	प	नि	सां	सां	सां	–	सां	रेंनि	सां	सां
बि	ख	या	का	ऽ	ज	धा	ऽ	य	धाऽ	ऽ	य
×		०		२		०		३		४	

नि	नि	सां	रें	गं	रें	सां	.-	नि	ध	प	-
क	री	ऽ	क	रि	ल	बा	ऽ	र	प	नो	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म	प	रें	रें	रें	रें	सां	सां	नि	ध	नि	रें
ह	री	ऽ	च	र	न	अ	नू	ऽ	रा	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
सां	-	नि	धप	ध	म	रे	-				
दू	ऽ	र	दूऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ				
×		०		२		०					

संचारी.

म	रे	म	प	-	प	प	ध	म	-	रे	रे
दे	ऽ	ह	गे	ऽ	ह	दा	ऽ	रा	ऽ	सु	त
×		०		२		०		३		४	
म	म	प	नि	नि	सां	नि	सां	रें	नि	-	धप
प	र	म	हि	त	ऽ	जा	ऽ	नि	जा	ऽ	नोऽ
×		०		२		०		३		४	
प	-	रे	रे	प	म	रे	-	-	सा	-	सा
का	ऽ	म	को	ऽ	ते	रो	ऽ	ऽ	रू	ऽ	प
×		०		२		०		३		४	
म	म	-	प	प	प	-	-	-	नि	ध	म
तें	ही	ऽ	म	न	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

आभोग.

म	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सां	–	सां
चिं	ऽ	ता	ऽ	म	नि	स	र	न	ता	ऽ	तें
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	सां	रें	रें	गं	रें	सां	नि	ध	–	प
आ	ऽ	न	प	रो	ऽ	ते	रे	ऽ	द्वा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
म	प	रें	रें	रें	–	सां	–	नि	ध	नि	रें
दी	ऽ	न	हि	त	ऽ	दी	ऽ	ना	ना	ऽ	थ
×		०		२		०		३		४	
सां	–	नि	धप	प	ध	म	रे				
दी	ऽ	न	जाऽ	ऽ	ऽ	नो	ऽ				
×		०		२		०					

सोरट–चौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि
सां
पू

			प	म			म			म	
नि	धप	ध	म	रे	–	–	रे	प	म	रे	–
ऽ	जऽ	ऽ	न	जा	ऽ	ऽ	त	ऽ	शि	व	ऽ
३		४		×		०		२		०	

(म)रे	ग	(रे)नि़	सा	(म)रे	—	—	म	प	(म)प	(ध)प	ध
मु	ऽ	र	त	को	ऽ	ऽ	न	ऽ	म	नो	ऽ
३		४		×		०		२		०	
—	म	(म)रे	—	(रे)प	म	(म)रे	ग	(रे)नि़	सा	—	(म)रे
ऽ	र	थ	ऽ	हि	त	चि	त	की	ऽ	ऽ	मो
३		४		×		०		२		०	
म	प	(सां)नि	(सां)नि	सां	—	—	सांनि̲	रें	नि̲	ध	प
ऽ	सौं	न	दु	रा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये।
३		४		×		०		२		०	
(प)सां	नि̲	(प)ध	(प)म								
पू	ऽ	ज	न								
३		४									

अन्तरा.

(प)म	—	प	(सां)नि	—	नि	सां	सां	—	(सां)नि	सां	सां
भा	ऽ	ल	ला	ऽ	ल	ट	ग	ऽ	दे	ऽ	खे
×		०		२		०		३		४	
(सां)नि	—	सां	नि	सां	सां	(सां)नि	सां	रें	नि̲	ध	प
औ	ऽ	र	लो	च	न	जो	व	दि	न	टी	ऽ
×		०		२		०		३		४	
(रे)म	—	रे	म	प	प	(सां)नि	सां	निसां	सां	सां	सां
आ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	द	दि	ये	ऽऽ	ला	ज	स
×		०		२		०		३		४	

नि	सां						प
सां	रें	–	नि़	ध	–	प,	सां
मा	ऽ	ऽ	स	मा	ऽ	ये।	पू
×		०		२		०	

सोरट—चौताल (विलम्बित)

स्थायी.

सा			प	म			म				
सां	नि़	धप	धम	रे	–	–	रे	गुनि़	सा	सा	–
उ	ल	हुऽ	नऽ	ला	ऽ	ऽ	गे	ऽऽ	ऽ	री	ऽ
३		४		×		०		२		०	
रे	म			म			प			रे	
म	रे	म	–	प	–	ध	म	रे	रे	प	म
पु	र	हा	ऽ	ठौ	ऽ	र	ठौ	ऽ	र	घ	र
३		४		×		०		२		०	
म				रे						सां	
रे	गुनि़	सा	सा	म	–	रे	म	–	प	नि	सां
नी	ऽऽ	प	र	पा	ऽ	ऽ	व	ऽ	स	आ	ऽ
३		४		×		०		२		०	
				सां				नि			
सां	सां	सां	सां	रें	रें	–	सां	सां	रेंनि़	ध	प
व	त	पि	या	क	हां	ऽ	लु	भा	ऽऽ	ये	ऽ।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

ग			सा		सां						
म	–	प	नि	–	नि	सां	–	नि	सां	–	सां
बा	ऽ	ल	मा	ऽ	वि	दे	ऽ	स	ग	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	

(सां) नि	–	सां	रें	गं	रेंसां	सां	–	(सां) रें	नि	ध	प
जो	ऽ	ब	ना	ऽ	उऽ	सा	ऽ	स	ले	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	
(रे) म	(म) रे	–	म	प	–	(सां) नि	सां	नि	सां	सां	–
पि	या	ऽ	बि	ना	ऽ	मो	ऽ	हे	ध	री	ऽ ।
×		०		२		०		३		४	
(गं) रें	रेंगं	रें	सां	(नि) सां	रेंनि	ध	प				
प	लऽ	न	सु	हा	ऽऽ	ये	ऽ				
×		०		२		०					

राग नारायणी



हरिकांबोजिमेलाच्च संजातश्च सुनामकः ।
नारायणीतिरागश्च सन्यासं सांशकग्रहम् ॥
आरोहे गनिवर्ज्यं चाप्यवरोहे गवर्जितम् ॥
स रे म प ध स । स नि ध प म रे सा

रागलक्षणे ॥ पृ. ४१ ॥

कांभोजी मेलसंजाता नारायणी प्रकीर्तिता ।
आरोहे गनिहीनाऽसाववरोहे गवर्जिता ॥७२॥
कैश्चित्सैव मनीत्यक्ता शंकराभरणे मता ।
मतभेदास्तत्र संतु ग्रंथेऽत्र प्रथमा मता ॥७३॥
ऋषभं वादिनं मत्वा भवेत्सारंगसंनिभा ।
निवर्ज्यत्वे धसंयोगे भवेत्तद्रूपवारणम् ॥७४॥

(श्रीमल्लक्ष्यसंगीते प्रथमा पृ. ८१)

'नारायणी' दक्षिण-पद्धति के ग्रन्थों में वर्णित किया हुआ और अपने यहां के विद्वानों द्वारा प्रचलित किया हुआ राग है। यह खंमाज थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में गांधार वर्ज्य है और आरोह में निषाद वर्ज्य होता है। इससे इस राग में सारङ्ग का आभास होने लगता है, परन्तु निषाद के वर्ज्य होने और धैवत ग्रहण करने से यह सारङ्ग से सहज में भिन्न हो जाता है। इसकी जाति औड़व-षाड़व है। इसका वादी स्वर रिषभ और सम्वादी पंचम है। गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा रे म प ध सां । सां नि ध प म रे सा ।

चलन.

सां, निध, मप, निधप, मपम, रे, सारे, मरे, धसा । मप
धसा, रे, मरे, निधप मपधप, म, रे, मरेसा ।
मपधसां, सां रेंरेंसां, मंरेंसां, सारें, सांरेंसां
निधप, मपधसां, धप, मरे, सारेमरे,
सा धधसा ।

नारायणी—सूलताल (मध्यलय).

स्थायी.

^प^सां	—	नि॒	ध	^ध^म	प	^प^नि॒	ध	—	प
ना	ऽ	रा	ऽ	य	ण	को	ना	ऽ	म
×				२		३		०	
^प^नि॒	प	^म^रे	म	रे	सा	^सा^नि॒	सा	रे	—
भ	ज	ले	ऽ	म	न	मे	ऽ	रे	ऽ
×		०		२		३		०	
^रे^नि॒	सा	रे	म	^म^रे	म	प	ध	^ध^म	प
ना	ऽ	म	बि	ना	ऽ	क	छु	न	हिं
×		०		२		३		०	
^प^सां	—	(नि॒)	—	^नि॒^म	—	प	^प^नि॒	—	प
का	ऽ	मे	ऽ	आ	ऽ	वे	ते	ऽ	रे।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

^प^म	प	^सां^ध	सां	सां	—	सां	सां	सां	सां
जो	इ	जो	इ	ध्या	ऽ	व	त	प्र	भु
×		०		२		३		०	
सां	रें	सां	रें	सां	नि॒ध	^ध^म	—	ध	प
नि	र	गु	ण	ह	रीऽ	को	ऽ	ज	स
×		०		२		३		०	
^प^म	प	ध	सां	^नि॒^ध	प	म	रे	सा	सा
रि	ध	सि	ध	फ	ल	पा	ऽ	व	त
×		०		२		३		०	

मं			प प	
रें मं	रें सां	नि̱ –	मप नि̱	– प
सु ल	भ उ	पा ऽ	यऽ ते	ऽ रे।
×	०	२	३	०

सावन–त्रिताल (मध्यलय)

(देस अङ्ग)

स्थायी.

				ग
				म
				ए

रे	ग	ग	सां
ग नि̣ – सा	रे – – –	रे ग म प	ध (म) – नि
रि का ऽ रि	बा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	द्द री ऽ मो
३	×	२	०
		प ध	
नि सां – नि	सां – – नि̱	ध ध – म	– म – ग
हे ड ऽ र	पा ऽ ऽ ऽ	व न ऽ ला	ऽ गी ऽ। ए
३	×	२	०

अन्तरा.

म म म प	नि नि सां सां	नि नि सां –	रें नि सां –
ऐ सी ऐ सी	अं धि या रि	बि ज री ऽ	च म के ऽ
३	×	२	०
सां			प
नि – नि नि	सां – सां सां	निसां रेंसां नि̱ धप	ध म म म
को ऽ य ल	कू ऽ कु सु	ना ऽ व नऽ	ऽ ला गि। ए
३	×	२	०

भैरव थाट.

भैरव थाट के राग (१५)

बंगालभैरव	मेघरंजनी
आनन्दभैरव	गुणकरी या गुणक्री
सौराष्ट्रटंक	जोगिया
अहीरभैरव	देवरंजनी
शिवभैरव या शिवमतभैरव	विभास (भैरव थाट)
प्रभात	झीलफ
ललितपंचम	गौरी (भैरव थाट)

जंगूला

राग बंगालभैरव.

धपौ मगौ मरी सपौ धसौ धपौ गमौ रिसौ।
बंगालो धांशकः प्रातर्नित्यक्तो वक्रगो जने ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ७६ ॥

संभेदः किल भैरवस्य कथितो बङ्गालसंज्ञो बुधै-
रारोहेऽप्यवरोहणे च नियतं वर्ज्यो निषादस्वरः ॥
अन्यद्भैरवतुल्यमेव सकलं वक्रोऽवरोहे तु गो
गायंति प्रचुरं प्रभातसमये षड्भिः स्वरैर्गायकाः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ४ ॥

याही भैरव राग में सुर निखाद जब नाहिं।
वक्र होय गंधार सुर कहत बङ्गाला ताहि ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ३ ॥

बंगाल भैरव, भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला एक भैरव का भेद है। इसमें निषाद स्वर बिलकुल वर्ज्य है, अर्थात् इसकी जाति 'षाड़व-षाड़व' है। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी स्वर ऋषभ है। इसके अवरोह में गांधार वक्र होता है। इसके गायन का समय प्रातःकाल है। "साध्र" स्वर संगति राग-वाचक होती है। प्रचार में एक "बङ्गाली" नामक राग और भी है परन्तु वह 'बङ्गाल भैरव' से बिलकुल अलग है। भैरव का एक प्रकार होने से इस राग में भैरव-अंग प्रधान होता है।

आरोहावरोह स्वरूप

सा रे, ग म, प, ध, सां । सां ध, प, म प ग म, रे सा ।

साधारण स्वरूप इस प्रकार है:—

ध, ध, प, गम, प, गमरे, सा, सारे, सा, धसा, रे, रे, सा,

गमरे, पगमरे, रे, सा ।

—— ——

बंगालभैरव—त्रिताल (विलम्बित).

स्थायी.

नि प म म	म	ग	नि
ध – मप गम,गमपमग	रे – सा, सासा	रे – सा –	ध – प गम
ए ऽ ऽऽ बऽ,ऽऽऽनऽ	ता ऽ ऽ ,बन	आ ऽ या ऽ	मा ऽ ई ऽऽ
३	×	२	०
म म म	म	नि सा	सा
ध – प गम,गमपमग	रे – सा –	सा ध – –	रे – सा –
सा ऽ ज ऽऽ,ऽऽऽनऽ	के ऽ ऽ ऽ	घ र ऽ ऽ	आ ऽ ई ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

नि	नि	नि	नि नि
ध – – सांसां	सां – सां सां	ध – सां ,सां	रें सां,निसां सां धप
गा ऽ ऽ ओघ	जा ऽ ओ रि	झा ऽ ओ ऽ,स	ब ऽ,ऽऽ मि लैऽ
३	×	२	०
प नि	ध	नि म म	म
म प ध –	सां – निसां –	ध – प,मप गम,गमपम	रे – सा –
म न ई ऽ	छा ऽ ऽऽ ऽ	फ ऽ ल,ऽऽ ऽऽ,ऽऽऽऽ	पा ऽ ई ऽ।
३	×	२	०

राग आनन्दभैरव.

—:*:—

गमौ रिगौ पमौ गमौ स्निौ गमौ सधौ पमौ ।
गमौ रिसाविति प्रोक्त आनन्दभैरवोऽशमः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ८५ ॥

भैरवकेही मेलमें तीखो धैवत पेखि ।
मम बादीसंबादितें आनन्दभैरव लेखि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ४ ॥

संस्थानकेऽस्मिन्यदि भैरवस्य
तीव्रो भवेद्धैवत एष नित्यम् ।
पूर्णस्तदानीमिह षड्जवादी
ह्यानन्दपूर्वोऽयमवादि भैरवः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ५ ॥

'आनन्द भैरव', भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का भैरव है। इसमें धैवत तीव्र लगता है। पूर्वाङ्ग में भैरव और उत्तराङ्ग में बिलावल, इस प्रकार के संयोग से यह राग उत्पन्न होता है। इसमें वादी स्वर मध्यम और संवादी षड़ज है। इसका गायन समय प्रातःकाल है। कोई-कोई कहते हैं कि, इसके आरोह में कोमल धैवत और अवरोह में तीव्र धैवत रखा जावे। हमारे लिये बहु प्रचलित को ग्रहण करना ही श्रेयस्कर है। इस राग में भैरव अंग प्रधान रहता है, और भैरव के अनुसार ही ऋषभ पर आंदोलन होता है। इसमें मध्यम स्वर पर विश्रांति अच्छी दिखाई देती है। "आनन्द भैरवी" नामक एक अन्य राग प्रचार में और है। वह इस राग से बिलकुल भिन्न होता है। वह राग आसावरी थाट का है क्योंकि उसमें गांधार और निषाद कोमल लगते हैं।

चलन.

ग, मगरे, ग रे, सा, सा, रेग, म, म, मप, । सां, धनिप,

मग, मरे, पमगरे, रे, सा ।

आनंदभैरव—झपताल (विलम्बित).

स्थायी.

मग	मग	(म)रे	ग	प	मग	म	(ग)रे	(ग)रे	सा
आऽ	ऽऽ	जे	ऽ	आ	नंऽ	ऽ	द	भ	यो
×		२			०		३		
सा	–	रे	सा	निरे	ग	म	म	–	–
सा	ऽ	ज	न	सुऽ	ना	ऽ	यो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
म	–	(म)ग	प	प	(प)सां	–	ध	नि	प
पू	ऽ	र्णां	ऽ	ग	में	ऽ	वि	स	र
×		२			०		३		
मग	मग	(म)रे	ग	प	मग	म	(ग)रे	(ग)रे	सा
भैऽ	ऽऽ	र	व	दि	खाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	–	सां	सां	–	सां	–	सां	–	सां
सू	ऽ	र्य	कां	ऽ	ती	ऽ	मे	ऽ	ल
×		२			०		३		
रें	रें	(मं)गं	मं	(गं)मं	(मं)रें	–	सां	–	–
अ	वि	क	ल	र	चा	ऽ	यो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

सां	–	रें	–	सां	सां	सां	ध	नि	प
सं	ऽ	बा	ऽ	द	स	म	स	म	य
×		२			०		३		

		म					ग	ग	
म	ग	रे	ग	प	मग	म	रे	रे	सा
सं	ऽ	ग	व	व	ताऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो।
×		२			०		३		

आनंदभैरव—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

ग				रे					
म	ग	म	रे	प	म	ग	म	रे	सा
मे	रे	म	न	सु	म	र	न	क	र
×		२			०		३		

ग					म				
रे	सा	–	सा	रे	ग	म	म	–	म
इ	ला	ऽ	ही	ऽ	को	ऽ	ना	ऽ	म
×		२			०		३		

ग				ग					
म	–	म	–	म	प	प	प	–	प
जा	ऽ	सों	ऽ	स	क	ल	ते	ऽ	रे
×		२			०		३		

प		सां	प		ग				
सां	–	धनि	प	मप	म	ग	म	रे	सा
हो	ऽ	बऽ	त	सऽ	फ	ल	का	ऽ	म।
×		२			०		३		

अन्तरा.

							नि		
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां
मो	हं	म	द	र	सू	ल	पं	ऽ	ज
×		२			०		३		
		मं							
रें	रें	गं	—	मं	मं	रें	सां	—	सां
त	न	पा	ऽ	क	चा	रो	या	ऽ	र
×		२			०		३		
नि					सां		सां		
सां	—	रें	सां	—	नि	सां	ध	नि	प
मू	ऽ	र्तं	जा	ऽ	ली	ऽ	औ	ऽ	र
×		२			०		३		
प		म		ग					
ग	मग	रे	ग	प	म	ग	म	रे	सा
ह्वा	ऽऽ	ब्दे	ऽ	ई	मा	ऽ	ऽ	ऽ	म।
×		२			०		३		

सौराष्ट्रभैरव या सौराष्ट्रटंक.

(चौरासी या चौर्‌यायशीं टंक)

गमौ पमौ रिसौ गमौ धमौ धसौ रिसौ भ्रपौ ।
सौराष्ट्रटंक इत्याह्वो मध्यमांशोऽपि धद्वयः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥८२॥

भैरवके संस्थानमें सौराष्ट्रहिको गान ।
द्वै धैवत सोहत अति बादी मध्यम जान ॥

रागचन्द्रिकासार ॥११॥

सौराष्ट्रोऽयं भैरवस्यव मेले मांशः पूर्णो धैवतद्वन्द्वयोगी ।
आरोहे स्यात्तीव्रधोऽन्योऽवरोहे प्रातर्गेयो दुर्बलोऽस्मिन्निषादः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ८ ॥

सौराष्ट्र-भैरव अथवा सौराष्ट्र-टंक, भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला राग है। कोई-कोई इसे भी भैरव का भेद समझते हैं। इसमें मुख्य अङ्ग भैरव का होने से इसे भैरव थाट का माना जाता है। इसका वादी स्वर मध्यम और सम्वादी स्वर षड्ज है। इसका गायन समय प्रातःकाल है। इसमें दोनों धैवत लगते हैं। तीव्र धैवत का प्रयोग एक विशिष्ट तरीके से होता है। यह स्वर "गमध, मधसां, निधम" इस प्रकार के स्वर समुदायों में आता है। तीव्र धैवत के प्रयोग में पंचम स्वर गौण बनाना पड़ता है। यद्यपि यह राग प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित प्राप्त होता है, परन्तु आजकल यह बिलकुल अप्रसिद्ध होगया है, अतः इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद प्राप्त होता है।

उठाव

गम, पम, <u>रे</u>, सा, गम, ध, मध, सां, <u>रें</u>सां, <u>ध</u>प ।

चलन.

गगमगरे, सा, गम, ग<u>रे</u>, सा । गमध, मधसां, निधम धम, मध, निसां, मगमग<u>रे</u>, सा । म, म, प, प, <u>ध</u><u>ध</u>, नि<u>ध</u>प, सां, सां, <u>ध</u>, प, मगमग, <u>रे</u><u>रे</u>सा ।

सौराष्ट्रटंक—तीव्रा (मध्यलय).

स्थायी.

सा	सा	ध़	नि़	सा	–	सा	म	म	म	म	म	–	म
प्र	भु	कि	र	ता	ऽ	र	तु	म	हो	श्र	पा	ऽ	र
२		३		×			२		३		×		
				सां									
म	–	म	ध	ध	ध	ध	म	ध	सां	सां	रें॒	सां	सां
मैं	ऽ	हूं	ऽ	श	र	न	तु	म	बि	न	क	व	न
२		३		×			२		३		×		
				ग									
म	प	प	म	रे॒	–	सा							
मै	ऽ	को	श्र	धा	ऽ	र।							
२		३		×									

अन्तरा.

ग							नि		नि		नि		
म	–	ग	म	प	–	प	ध॒	–	ध॒	ध॒	ध॒	–	प
मा	ऽ	ल	व	ठा	ऽ	ठ	रा	ऽ	ग	सु	रा	ऽ	ष्ट्र
२		३		×			२		३		×		
म							म	म					
प	ध॒	प	म	रे॒	–	रे॒	ग	ग	प	मग	रे॒	–	सा
स	म	स	म	वा	ऽ	द	गा	ऽ	य	सऽ	मा	ऽ	ज
२		३		×			२		३		×		
सा							सां						
सां	–	सां	–	रें॒	सां	सां	म	प	प	मग	रे॒	–	सा
की	ऽ	जे	ऽ	च	त	र	को	ऽ	भ	वऽ	पा	ऽ।	र
२		३		×			२		३		×		

सौराष्ट्रटंक–तीव्रा (मध्यलय)

स्थायी.

ग	म	म	प		ग
म मग	प मग	रे - सा	ग -	म मग	रे - सा
क टऽ	त बिऽ	का ऽ र	ना ऽ	म अऽ	धा ऽ र
२	३	×	२	३	×
सा	ध	नि			
नि़ सा	ग म	म ध -	सां -	सां -	रें सां -
जे ऽ	न र	सु म ऽ	र ऽ	त ऽ	गु नी ऽ
२	३	×	२	३	×
म					
ग म	प मग	रे - सा			
त र	ग येऽ	पा ऽ र।			
२	३	×			

दूसरा प्रकार.

नि़	नि़				
सा सा	ध़ नि़	सा म म	म -	म म	म - म
क ट	त बि	का ऽ र	ना ऽ	म अ	ध ऽ र
२	३	×	२	३	×
ग			ध		
म -	ध ध	ध ध -	म ध	सां -	रें सां -
जे ऽ	न र	सु म ऽ	र ऽ	त ऽ	गु नी ऽ
२	३	×	२	३	×
ग	म	म			
म म	प मग	रे - सा			
त र	ग येऽ	पा ऽ र।			
२	३	×			

अन्तरा.

ग		म					नि	नि	नि		नि		
म	–	ग	म	प	प	–	ध	ध	ध	–	ध	–	प
जी	ऽ	ने	ऽ	र	चो	ऽ	स	ब	सं	ऽ	सा	ऽ	र
२		३		×			२		३		×		
म	प		म				ग				म		
प	ध	प	प	मग	मरे	सा	म	ग	(म)	ग	रे	–	सा
भ	व	बि	ऽ	स्ता	ऽऽ	र	ली	ऽ	नो	ऽ	भा	ऽ	र
२		३		×			२		३		×		
सा											म		
सां	–	सां	–	रें	–	सां	(म)	ग	प	मग	रे	–	सा
की	ऽ	न्हे	ऽ	चं	ऽ	द्र	सू	ऽऽ	र	जऽ	ता	ऽ	र
२		३		×			२		३		×		

राग अहीर-भैरव

गमौ रिसौ रिगौ मपौ धनी धपौ मपौ मगौ ।
मरी सोऽपि सदाहीरभैरवो मध्यमांशकः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ८७ ॥

भैरव पूरब अङ्गमें काफी उत्तर भाग ।
अति बिचित्र द्वै रूपसें होत अहीरी राग ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ ६ ॥

पूर्वांगे किल भैरवः स्फुटतरं यत्रोत्तरांगे पुनः
स्पष्टं भाति हरप्रिया भवति तद्रूपं विचित्रं ततः ॥
वादित्वं त्विह षड्ज एव निहितं संवादिता पंचमे
द्वैरूप्येण हि गीयते सुमतिभी रागिण्यहीरी प्रगे ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ११ ॥

अहीर भैरव एक भैरव-प्रकार है। यह सम्पूर्ण जाति का है। इसके पूर्वाङ्ग में भैरव और उत्तरांग में काफी मिश्रित होती है। अर्थात् उत्तरांग में शुद्ध ध और कोमल नि का प्रयोग होता है। परन्तु भैरव अङ्ग प्रधान होने से यह भैरव थाट में ही सम्मिलित किया जाता है। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी षड़ज है। गायन का समय प्रातःकाल है। परस्पर भिन्न अंग वाले-भैरव और काफी का मिश्रण होने से इस राग में बड़ा ही वैचित्र्य आ जाता है। आरोह में क्वचित् तीव्र ऋषभ ग्रहण

करना भी पाया जाता है। इस राग में मध्यम पर विश्रांति बड़ी शोभनीय होती है। "रागलक्षण" नामक ग्रन्थ में "आहीरी" नामक भैरवी थाट की एक रागिनी बताई है; वह इस राग से बहुत भिन्न है।

चलन

ग, म, रे, सा, रेग, म, प, धनिध, प, मप, मग, मरे, सा।

ममरेम, पपमप, पमगध, निधपध, मपगम,

रेरेगम, पगरेसा।

अहीरभैरव—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

					म				
मग	मसा	सा	सा	रे	ग	म	म	म	म
राऽ	ऽऽ	धि	का	ऽ	र	म	ण	गि	र
×		२			०		३		
ग			म				ग		
म	ग	रे	ग	प	मग	मग	रे	—	सा
ध	र	न	गो	ऽ	पीऽ	ऽऽ	ना	ऽ	थ
×		२			०		३		
नि					म				
सा	रे	सा	सा	रे	ग	म	म	—	म
म	द	न	मो	ऽ	ह	न	कृ	ऽ	ष्ण
×		२			०		३		
म	मं	प	म	ग	रे	गरे	ग	म	प
न	ट	ब	र	वि	हा	ऽऽ	ऽ	ऽ	री।
×		२			०		३		

अन्तरा.

ग			म						
म	—	म	रे	—	म	—	प	प	प
रा	ऽ	स	ली	ऽ	ला	ऽ	र	सि	क
×		२			०		३		
					सां				
म	म	म	प	ध	नि	—	धप	ध	प
ब्रि	ज	जु	व	ति	प्रा	ऽ	न	प	ति
×		२			०		३		
								ग	
प	ध	म	प	ध	म	म	मग	रे	सा
स	क	ल	दु	ख	ह	र	न	गो	ऽ
×		२			०		३		

	प		
सा प	म ग –	रे गरे	ग म प
ग ण	न चा ऽ	ऽ ऽऽ	ऽ ऽ री।
×	२	०	३

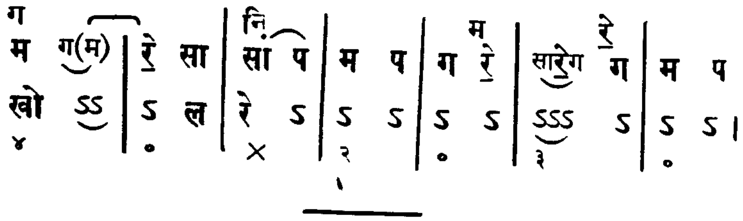
अहीरभैरव–आडाचौताल (विलंबित)

स्थायी.

		रे		म म		नि
ग रे	सा निसा	सारेग ग	म गम	प पग	मरे सा	सा सानि
ब न	रा ऽऽ	मोऽऽ ऽ	रा ऽऽ	र ऽऽ	ऽऽ स	मा ऽऽ
४	०	×	२	०	३	०
		म		म प		म
रे सा	– सा,सारे	ग म	म गम	गम गमप	– म	प मग
ऽ ता	ऽ र,सऽ	मा ऽ	ता ऽऽ	आऽ ऽऽऽ	ऽ न	मो ऽऽ
४	०	×	२	०	३	०
		नि			रे	
म रे	सा निसा	सा प	म प	ग रे	सारेग ग	म प
ऽ ऽ	ला ऽऽ	रे ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽऽऽ ऽ	ऽ ऽ।
४	०	×	२	०	३	०

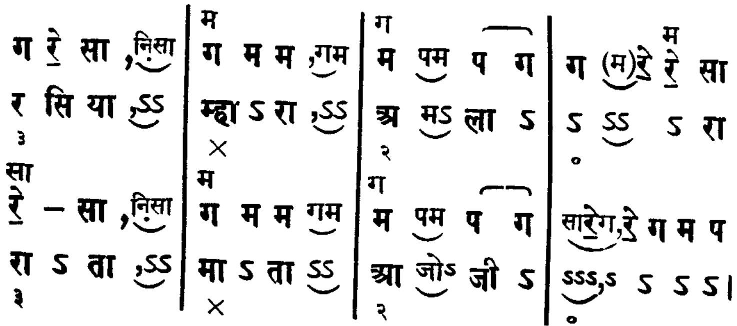
अन्तरा.

ग	म	प प	म		प	प
म म	रे –	म म	प प	प –	म –	पध ध
ब न	री ऽ	दे ख	ऽ न	को ऽ	चा ऽ	वेऽ म
४	०	×	२	०	३	०
सां		प		प	म	
नि धप	ध पम	म म	म –	म प	प ध	म –
न रंऽ	ग ऽऽ	र स	सौं ऽ	घूं ऽ	ग ऽ	ट ऽ
४	०	×	२	०	३	०

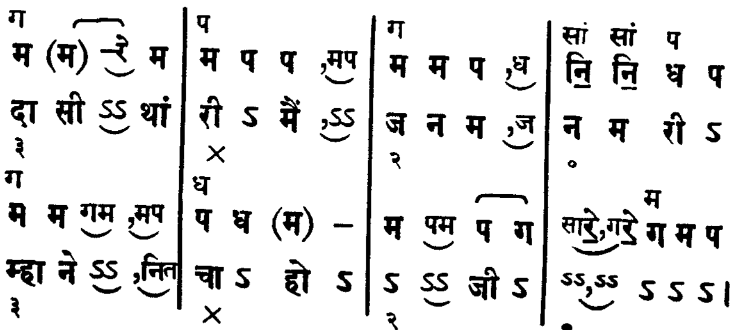


अहीरभैरव–तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.



अन्तरा.



अहीरभैरव—तिलवाड़ा (विलंबित)

स्थायी.

	म	ग म	म
ग,गम ,गरे सा(सा) नि,सारे	ग म म गम	म म प ,मग	(म)ग रे सा,निसा
ए,ऽऽ ,टोन वाऽ ऽ,ऽऽ	मो ऽ रा ऽऽ	ज ग त ,सऽ	लोऽ ऽ ना ,ऽऽ
३	×	२	०
निग म	ग	रे	रे रे
सारे -,सारे ग मम	म मग प ,म	पम (म)रे पम पग	सारेग ग म प
हमा ऽ,रेऽ भा ऽग	सो ऽऽ ऽ ,खि	लोऽ ऽऽ रेऽ ऽऽ	ऽऽऽ ऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०
ग रे सा ,सारे			
टो न वा ,ऽऽ			
३			

अन्तरा.

२	प	प	सांसां प
म (म)रे म ,म	म प प प	मम प ध ,ध	निनि ध प धम
अ पऽ ने ,पि	या ऽ प र	मख री ऽ ,पु	राऽ ये हो ऽऽ
३	×	२	०
सा प	ध	सा	रे रे
मम ,म मप प	प ध म ,म	(म)ग मरे रेप -ग	सारेग ग म प
और ऽभ राऽ ये	हो ऽ ऽ ,खि	लोऽ नाऽ रेऽ ऽऽ	ऽऽऽ ऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०

राग शिवभैरव या शिवमत भैरव

गमौ धपौ मपौ गमौ रिसौ मपौ निधौ पनी ।
सधौ पगौ मरी मश्च शिवभैरवकोऽशधः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥८४॥

भैरवके अवरोहिमें कोमल गनि सुर होई ।
बादी ध रिसंबादितें शिवभैरव ऐसोई ॥

रागचन्द्रिकासार ॥५॥

संस्थान एवाजनि भैरवस्य मिश्रस्वरूपः शिवभैरवोऽसौ ।
भेदस्त्वियान् भैरवतोऽस्य दृष्टोऽवरोहणे यन्निगयोर्मृदुत्वम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥६॥

राग शिवभैरव अथवा शिवमत भैरव, एक मिश्रमेलोत्पन्न भैरव का भेद है। इस राग में दोनों गांधार और दोनों निषाद तथा बाकी के सभी स्वर भैरव थाट के लगते हैं। इसका विस्तार प्रायः भैरव अङ्ग से होता है, अतः इसे भैरव थाट में मानना उचित होगा। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी रिषभ है। इसे प्रातःकाल गाते हैं। एक अप्रसिद्ध राग होने के कारण इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद होना शक्य है। आरोह में तीव्र गांधार, निषाद, भैरव का अङ्ग है, और अवरोह में कोमल गांधार से किंचित टोड़ी का आभास होता है। कुछ लोगों के मत से यही राग पूर्वकालीन शुद्ध भैरव है। कुछ स्थलों पर इसमें तीव्र धैवत का प्रयोग किया हुआ प्राप्त होता है। इस राग में कोमल गांधार और कोमल निषाद सरल अवरोह के रूप में नहीं लगाये जाते बल्कि 'निसागुरेसा, निसा, धनिप' इस प्रकार के स्वर समुदाय में लिये जाते हैं।

चलन.

सारेरेसा । गमपमगरेसा, निसा, गरेसा, धपगमपगमरे, सा,
पपगम, रे, गमधप, गमरे, सा, ग, गमरे, गपमगरे,
सा; निसा गरेसा, निसा, ध, निधनिप, मपध,
निसा, गमरे, गपमग, रे, सा ।

प म नि
ग, ग, मरे, गप, मग, मरे, सा, सा, रे, सा, रेगरेसा,

म म नि
साध, सा ग, गमरे, सा । प, ध, नि, सां, सां, रें,

नि
सां, धनिसां, रेंगंरेंसां, निसांधनिधप, पधनिसां,

नि नि
धप, मग, मरे, सा । साध, ध, निधप,
पधनिसांध, ध, प, गगरे, गमपमगरे,
सा । प, ध, निसां, सां, रेंसांनि
सांध, ध, प, पधनिसां, ध,

प प
ध, प, ग, ग, मरे, गप,
मग, मरे, सा ।

शिवभैरव—धमार (विलम्बित).

स्थायी.

		प	
रे सा –	म – प प	नि ध प – प	प –
अ हो ऽ	ऽ ऽ सो भ	ल ऽ ऽ ऽ जि	न्हे ऽ
०	३	×	२
प	प	ग ग	
ध म प	ग म म –	म – – रे –	सा –
का ऽ ऽ	ऽ ऽ न ऽ	चा ऽ ऽ ऽ ऽ	हे ऽ
०	३	×	२
ग	नि		
रे – सा	सा – ध ध	रे – सा म प	प –
रा ऽ धे	सो ऽ च क	रे ऽ ऽ कै ऽ	से ऽ
०	३	×	२
नि	ध		
ध – –	प – नि –	ध – प म –	रे सा
आ ऽ ऽ	वे ऽ चै ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ न।
०	३	×	२
ग		प	
रे सा म	प – प प	नि	
अ हो ऽ	ऽ ऽ सो भ	ली	
०	३	×	

अन्तरा.

प नि		नि नि	
म प – ध –	– प	ध ध रें	सां – – सां
सि ग ऽ रे ऽ	ऽ न	ग र ऽ	में ऽ ऽ प
×	२	०	३
नि	प	ध	
सां – ध ध –	– ध	रें – सां	सां – – ध
री ऽ ऽ है ऽ	ऽ च	वा ऽ ऽ	ऊं ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

म	म	नि नि	ध
प म – गम प	प प	ध ध –	ध रें सां –
आ नं ऽ ऽऽ द	भ यो	कुं व ऽ	री ऽ के ऽ
×	२	०	३
सां		म	ग
सां ध – नि –	ध प	प म –	म प प प
हि र ऽ दे ऽ	ऽ ऽ।	अ हो ऽ	ऽ ऽ सो भ
×	२	०	३

शिवमतभैरव–त्रिताल (विलम्बित).

स्थायी.

म नि	म म ग	म	म
गम ध पध पमप	ग ग – ,म	रे – सा ,म	म गम गमप ,प
गाऽ वो मिल केऽऽ	आ ऽ ऽ ,जब	धा ऽ ऽ ,व	र। ऽऽ ऽऽऽ ,स
३	×	२	०
निनि			
धध सां निसां निसांरें	नि ध प नि	ध प म(म) रेसा	निसा म – ग
जऽ ऽ ऽऽ ऽऽऽ	नी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रीऽ ऽऽ	ऽऽ ऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

नि नि		नि गं	नि नि नि
प प ध ,ध	सां सां निसां सांसां	सां रेंरें – सां	सां ध ध प
सां व रे ,स	लो ने ऽऽ बन	सु खऽ ऽ वा	क रे ऽ ई
३	×	२	०
म निनि	नि		
पप धध सां-,निसां	सां नि ध प	नि ध प म(म)	रे सा म ग
सदा रंग को ऽ,ऽऽ	म ना ऽ ऽ	ऽ व रा रीऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०

शिवमत भैरव—चौताल (विलम्बित)

स्थायी.

प	ग	म	म					ग			
ग	ग	ग	रे	ग	रे	—	रेरे	रे	—	सा	सासा
चा	ऽ	ल	च	ल	त	ऽ	अल	सा	ऽ	नी	कछु
×		०		२		०		३		४	
नि				सा	नि			म			
सा	रेग	रे	सा	निसा	ध	—	सासा	ग	मग	मरे	सा
ए	ऽऽ	क	बो	लऽ	त	ऽ	अल	सा	ऽऽ	ऽऽ	नि।
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

म			नि						सां		
प	—	—	ध	—	नि	सां	—	—	नि	सां	सां
आ	ऽ	ऽ	न	ऽ	न	को	ऽ	ऽ	रं	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
नि										नि	
ध	—	—	नि	सां	रेंगं	रें	सां	नि	सां	ध	निप
आ	ऽ	ऽ	न	ऽ	भऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	है	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	
								नि			
प	मप	—	मग	म	म	प	—	ध	नि	सां	निसां
ला	ऽऽ	ऽ	जऽ	ऽ	भ	री	ऽ	अ	खी	ऽ	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	
गं						म				ग	
रें	सां	नि	सां	ध	प	म	ग	म	रे	रे	सा
यां	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ल	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि।
×		०		२		०		३		४	

संचारी. (द्रुतलय)

नि़			नि		नि				म	सां	सां
सा	सा	सा	ध	—	ध	—	प	प	प	नि	नि
क	छु	ए	क	ऽ	भा	ऽ	त	भ	ले	प	ट
×		०		२		०		३		४	
	नि	नि		ग	म				ग	म	
सां	ध	ध	प	म	प	म	ग	—	म	ग	—
ऽ	भू	ख	न	दी	ख	त	ऽ	ऽ	दे	ह	ऽ
×		०		२		०		३		४	
प	प			प					म		
ग	ग	मरे	रे	ग	प	म	—	ग	रे	—	सा
स	ब	ऽऽ	दि	ख	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि।
×		०		२		०		३		४	

आभोग.

म			नि								
प	—	—	ध	—	नि	सां	—	—	सां	सां	—
जा	ऽ	ऽ	न	ऽ	ल	ई	ऽ	ऽ	ह	म	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि						सां					
ध	—	—	नि	सां	—	गं	रें	सां	नि	सां	—
तो	ऽ	ऽ	स	ज	ऽ	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	नि				म			सां			
सां	ध	नि	ध	प	प	प	पध	नि	सां	सां	—
म	न	ऽ	मो	ह	न	सो	ऽऽ	ह	न	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि											
ध	प	नि	ध	प	—	म	ग	म	रे	—	सा
सो	ऽ	ऽ	रु	त	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि।
×		०		२		०		३		४	

राग प्रभात या प्रभातभैरव

गमौ गरी सधौ निसौ गमौ धपौ मगौ रिगौ ।
ममौ भवेत् प्रभाताख्यो भैरवो मध्यमांशकः ॥

अभिनवरागमंजर्याम ॥८३॥

जबही भैरव रागको ललत अङ्गसें गाय ।
मम संबादीबादितें सो प्रभात कहि जाय ॥

राग चन्द्रिकासार ॥६॥

संस्थाने किल भैरवस्य कथितो रागः प्रभाताभिधः ।
संपूर्णस्वरमंडितश्च ललितांगेन प्रयुक्तः सदा ॥
वादी मध्यम ईरितो मधुरसंवादी च षड्जस्वरो ।
गायंति ध्रुवमेनमत्र सुधियः प्रत्यूषकाले मुदा ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥७॥

प्रभात अथवा प्रभात–भैरव राग, भैरव थाट का माना जाता है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड़ज है। यह प्रातःकाल गाया जाता है। इसमें किंचित् रूप से तीव्र मध्यम प्रयुक्त होता है और वह भी अवरोह में शुद्ध मध्यम की संगति में लगता है। इस कारण इस राग में थोड़ा सा 'ललितांग' रहता है और यह अङ्ग बड़ा सुन्दर मालूम होता है। शुद्ध मध्यम पर विश्रांति बड़ी शोभनीय होती है। भैरव अङ्ग का राग होने के कारण इस राग में भी भैरव जैसे ही रिषभ और धैवत प्रयुक्त होते हैं। परन्तु मध्यम खुला रखने और ललित अङ्ग आ जाने से, इससे भैरव अलग हो जाता है।

उठाव.

गमग, रे, सा, रे, सा, ध, निसा, ग, म, ध, प, मग, रे, गम, मं ।

चलन.

सा, रेरेसा, ग, म, गरेसा मम, गम, पधप, म, रे, गममं,
गम, गरेसा ध, सा । गमगरे, सा, सा, ध, निसा,
सारेग, रेगम, मम, रेगममं, गमगरेसा, धनिसा
मम मगम, धधप, मग, रे, ग, ममं, गमग,
रेसा। प, प, धध, निसां, सां, धनिसां,
रेंरें, सांनिधप, मगम, ध, प, मग,
रे, ग, ममं, गमग, रेसा ।

प्रभात—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

ग म ग रे॒	ग रे॒ रे॒ सा –	नि॒ ध॒ ध॒ नि॒ नि॒	सा – सा सा
का ऽ हे न	म न तू ऽ	गु रु प द	से ऽ व त
०	३	×	२
ग म ध॒ ध॒	ध॒ प म –	ग – रे॒ रे॒	ग – म मं
क व न क	रे ऽ गो ऽ	ते ऽ रो स	हा ऽ ऽ य।
०	३	×	२

अन्तरा.

म – म –	नि ध॒ – नि –	सां मां मां सां	नि सां सां सां
आ ऽ शा ऽ	तृ ऽ ष्णा ऽ	क ब हुँ न	पू ऽ र त
०	३	×	२
नि ध॒ – ध॒ नि	सां सां सां –	रें॒ – सां सां	नि ध॒ प म मं
व्य ऽ र्थ दे	ऽ ख तू ऽ	जा ऽ त लु	भा ऽ ऽ य
०	३	×	२
म म म म	म म म –	म ध॒ – प म	ग रे॒ ग ग
ह र रं ग	ज ग में ऽ	दू ऽ जो न	दे ऽ ख त
०	३	×	२
सां – सां रें॒	सां निध॒ प म	ग ग रे॒ रे॒	ग – म मं
ना ऽ म बि	ना ऽऽ को इ	त र न उ	पा ऽ ऽ य।
०	३	×	२

रागललित पंचम अथवा ललतपंचम

भैरवाख्यसुमेलाच्च जातो ललितपंचमः ।
आरोहे तु पवर्ज्यं स्यात्पूर्णवक्रावरोहकम् ॥ ८२ ॥
मध्यमः संमतो वादी संवादी षड्ज ईरितः ।
गानं चानुमतं तस्य तुरीयप्रहरे निशि ॥ ८३ ॥
रागोऽयं गीयते लक्ष्ये ललितांगपरिष्कृतः ।
मध्यमावप्युभौ तत्र स्वीकृतौ गायनोत्तमैः ॥ ८४ ॥
मध्यमेन प्रमुक्तेन ललितांगं समुद्भवेत् ।
पंचमस्य प्रयोगेण बुधस्तत्परिमार्जयेत् ॥ ८५ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीते (द्वि. पृ. १२१)

जबँ ललतके मेलमें धैवत कोमल होइ ।
अरु उतरत पंचम लगे ललतपंचम कहोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ १२० ॥

'ललितपंचम' एक मिश्र राग है, जो भैरव थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। इसके आरोह में पंचम वर्ज्य है। अवरोह पूर्ण और वक्र है। वादी स्वर शुद्ध मध्यम और संवादी षड्ज है। यह राग रात्रि के अन्तिम प्रहर में गाया जाता है। इसे ललित अंग से गाते हैं। इसमें मुक्त मध्यम के प्रयोग से ललित अंग उत्पन्न किया जाता है, परन्तु पंचम लगाने पर यह ललित से भिन्न हो जाता है। मारवा थाट में एक "पंचम" नामक राग है। उसमें धैवत स्वर शुद्ध लगता है, अतः वह भी इस राग से सहज ही भिन्न हो जाता है। 'पंचम' की चीजें आगे मारवा थाट के प्रकरण में इस क्रमिक पुस्तक के छठे भाग में देखी जावें।

उठाव.

गर्मगरे सा, निसागम, र्मग, प, र्मधनि, धप, धर्मम, पग, रेसा ।

चलन.

गर्मगरेसा, धनिसागम, ममर्म, मर्मग, र्मधनिसां, सांरें,
सांनिधप, र्मपर्मध पर्म । गमधनिसां, सां, सांनिरें
सांनिधनि, सां गं गं र्मं गं रें सांनिधप र्मप
गर्मगरेसा ।

ललितपंचम—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

म॑ प ग रे॒ सा क हो तु म ०	सा नि॒ सा म म सां ऽ चि क ३	म – म म हां ऽ तें ज़ु ×	गमम॑ गम ग – आऽऽ ऽऽ ऽ ये २
ग प – प प भो ऽ र भ ०	प ध॒ म॑ ध॒ रें॒ नि ये ऽ नं द ३	ध॒ नि ध॒ प म॑ ला ऽ ऽ ऽ ×	ग म ग रे॒ ऽ ऽ ला ऽ। २
ग प ग रे॒ सा क हो तु म ०			

अन्तरा.

म ग – ग ग पी ऽ क क ०	ध॒ म॑ – ध॒ ध॒ पो ऽ ल न ३	सां – सां सां ला ऽ ग र ×	रें॒ – सां – ही ऽ है ऽ २
नि सां – सां सां घू ऽ म त ०	नि ध॒ ध॒ ध॒ नै ऽ न बि ३	ध॒ रें॒ रें॒ नि ध॒ शा ऽ ऽ ऽ ×	म॑ ग म ग ऽ ऽ ला ऽ। २

ललितपंचम—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

रें॒ नि सां सां सां निध॒ क र म नऽ ०	ध॒ म॑ प ध॒नि ध॒,पम का ऽ ऽऽ ई,बिऽ ३	म – – म चा ऽ ऽ र ×	– मम (म) ग ऽ मनु जा ऽ २

सा	म	ध ध	रे
म – मग म	– मां सां निध	मं –ध मं गमं	ग रे सा –
लो ऽ भऽ मो	ऽ ह म दऽ	आ ऽऽ शा ऽऽ	त्रे ऽ ष्णा ऽ
	३	×	२
नि सा	ग मां	सां	
मा – म –	म म नि सां	रें निध नि धमं	ध मंम म ग
भू ऽ टा ऽ	य ह सं ऽ	सा ऽऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽऽ ऽ र।
०	३	×	२

अन्तरा.

ग ध	नि	नि	
म ग मं ध	सां – सां –	सां सां सां –	सांनि रें सां –
कि स की ऽ	मा ऽ ता ऽ	कि स का ऽ	पोऽ ऽ ता ऽ
०	३	×	२
नि		सां	रें
मां – सां ,सां	नि ध नि –	रें गं रेंसां ,सां	सां नि धमं म
छां ऽ ड ,भ	र म जा ऽ	श र नऽ ,उ	सी ऽ कोऽ ऽ
०	३	×	२
ग ग	म	ध	रे
म म म म	ग गनि नि –	मं –ध मं गमं	ग रे सा –
जि न य ह	स बऽ सं ऽ	सा ऽऽ र रऽ	चो ऽ है ऽ
०	३	×	२
नि सा	ग सां	सां	
सा – म –	म म नि सां	रें निध नि धमं	ध मंम म ग
वो ऽ ही ऽ	अ प रं ऽ	पा ऽऽ ऽ ऽऽ	ऽ ऽऽ ऽ र।
०	३	×	२

ललितपंचम–एकताल (द्रुतलय)

स्थायी.

ग					
ग मं	ग रे	सा –	ध नि	सा म	म –
ज ब	आ ऽ	वे ऽ	मो रे	सै ऽ	यां ऽ
२	०	३	४	×	०

म	—	म	म	म	प	ग	ग	ग	ग	(प)म॑	ध॒
बां	ऽ	ह	ग	हे	रा	ऽ	खु	औ	र	ला	गु
२		०		३		४		×		०	
सां	सां	(ध॒)सां	(नि)रें॒	सां	नि	ध॒	प	(ग)प	(म॑)ध॒	प	म॑
उ	न	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पै	ऽ	यां	ऽ।
२		०		३		४		×		०	

अन्तरा.

(ग)म	—	(नि)ध॒	नि	सां	—	सां	—	(नि)सां	सां	सां	निरें
जा	ऽ	रे	ऽ	का	ऽ	गा	ऽ	पी	या	स	नऽ
२		०		३		४		×		०	
सां	नि	ध॒	नि	रें॒	गं	गं	मं	गं	रें॒	सां	नि
क	हि	यो	ऽ	इ	त	नो	सं	दे	ऽ	ऽ	ऽ
२		०		३		४		×		०	
ध॒	प	(ग)प	(म॑)ध॒	प	म॑	ग	(प)म॑	ग	रे॒	सा	—
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ
२		०		३		४		×		०	
सा	सा	सा	सा	—	ध़॒	नि़	सा	(नि़)सा	(सा)सां	नि	ध॒
गि	न	त	जा	ऽ	त	मो	हे	घ	री	या	ऽ।
२		०		३		४		×		०	

ललितपंचम—आदिताल (विलंबित)

स्थायी.

(रे॒)ग	—	म॑	ग	रे॒	—	सा	—	(ग)म	म	म	—	(ग)म	—	(प)म	ग
बा	ऽ	ऽ	म	दे	ऽ	ऽ	ऽ	व	म	हा	ऽ	दे	ऽ	ऽ	व
३				×				२				०			

ग								मं		धृ		मं			
प	—	—	मं	धृ	नि	धृ	प	प	—	मं	—	ग	म	ग	—
पा	ऽ	ऽ	ऽ	र	ब	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ते	ऽ
३				×				२							
धृ		धृ						धृ				धृ		ग	
मं	धृ	मां	—	सां	सांनि	रें	निधृ	मं	धृ	नि	नि	मं	—	म	ग
बे	ऽ	जू	ऽ	के	साऽ	ऽ	धेऽ	प	शु	ऽ	प	ती	ऽ	ऽ	ऽ
३				×				२				०			

अन्तरा.

धृ								नि					रें		
मं	—	धृ	सां	—	सां	सां	सां	मां	नि	रें	गं	रें	सां	नि	धृ
कं	ऽ	ठ	मा	ऽ	ल	शि	व	गं	ऽ	ग	बि	रा	ऽ	ज	त
३				×				२				०			
धृ	सां							नि	रें	धृ		धृ			
मं	—धृ	नि	सां	—	नि	रें	सां	मां	नि	धृ	नि	मं	धृ	मं	ग
गौ	ऽऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	शि	व	शि	व	ऽ	ज	टी	ऽ	ऽ	ऽ।
३				×				२				०			

ललितपंचम—आदिताल (मध्यलय)

स्थायी.

मं
गमंग
एऽअ

		सा	म					म							
रे	सा	निरे	गम	मं	—	म	—	प	पमं	धृ	मं	म	—	ग	—
ला	ऽ	ऽऽ	तेरो	सा	ऽ	चो	ऽ	ना	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ
३				×				२				०			

ध़ नि		ध़	ग मं
मं ध़ सां ,सां	रें नि ध़ –	मं ध़ नि मं	ध़ मं मग गमंग
सा ऽ हे ,अ	क ब र ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ योऽ | एऽअ
३	×	२	०

अन्तरा.

ध़	सां	सां	सां
मं धुसा – सांसां	नि रें सां सां	नि रें गं ,रेंसां	नि रेंनि मंध मंग
रू मशा ऽ मखु	रा ऽ सा न	ब ल ख ऽस	ब ऽऽ ऽऽ ऽऽ
३	×	२	०
ध़		ध़	ग मं
मं ध़ सां –नि	रें नि ध़ –	मं ध़ नि मं	ध़ मं मग गमंग
प ग ला ऽऽ	ऽ ग न ऽ	धा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ योऽ | एऽअ
३	×	२	०

ललितपंचम–तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

ग
मंग
अल

सा		म	
रे सा निरे ,ग	म – म –	प –मं धुनि मं	म –मं (म)ग ,ग
स ऽ ऽऽ ,उ	नी ऽ दे ऽ	नै ऽऽ ऽऽ न	ला ऽऽ लऽ ,ति
३	×	२	०
		ध़	ध़ मं
मं ध़ सां ,सां	रें नि ध़ ध़	मं ध़ नि ध़नि	मं धुमं गम गमंग
हा ऽ रे ,क	हां ऽ तु म	रै ऽ ऽ नबि	ता ऽऽ ऽऽ ये,|अल
३	×	२	०

अन्तरा.

ध म ध सां ,सां	सां –नि रें मां	सां नि –रें गंरें सां	
पी ऽ क ,क	पो ऽऽ ऽ ल	दे ऽखि यऽ त	
३	×	२	
		नि सां,नि रेंनिध नि,धम ग धममग	
		है,ऽऽ ऽऽऽ ऽ,ऽऽ ऽऽपिया	
		०	
ध म ग – ध मध	नि सां –नि रें मां	रें निध नि म	ध म म गम ग,मग
अ ध ऽ रन	अं ऽऽ ज न	ल खाऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ये,।अल
३	×	२	०

राग मेघरंजनी.

—*—

निरी गमौ गरी गमौ निसौ रिसौ मगौ रिसौ ।
रंजनी मेघपूर्वास्यान्मध्यमांशा पधोज्झिता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ८१ ॥

अथ रागो मध्यमांशो नामतो मेघरंजनी ।
संवादीषड्जरुचिरो वर्ज्यपंचमधैवतः ॥ ५०० ॥
नित्यमौडुव एवायं ललितांगविभूषितः ।
तीव्रस्य मध्यमस्यात्र प्रयोगः किंचिदिष्यते ॥ ५०१ ॥
तीव्रौ निषादगांधारावृषभः कोमलः स्मृतः ।
मध्यमौ द्वौ निशायां च गीयते प्रहरेऽतिमे ॥ ५०२ ॥

सङ्गीतसुधाकरे ।

भैरव थाट से यह 'मेघरंजनी' नामक एक मनोरंजक राग स्वरूप उत्पन्न होता है। इसमें पंचम और धैवत स्वर बिलकुल वर्ज्य होते हैं। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड्ज है। इसके गायन का समय रात्रि का चौथा प्रहर है। इसमें मध्यम पर विश्रांति ली जाती है। इस कारण इस राग पर किंचित् ललितअंग की छाया आ पड़ती है, परन्तु धैवत वर्ज्य होने से यह ललित से अलग हो जाता है। ललितअङ्ग दिखाते हुए कोई-कोई इसमें तीव्र मध्यम का प्रयोग भी करते हैं, परन्तु यह अनिवार्य नहीं है। इसके बीच-बीच में "सा म" स्वर संगति आती है। यह राग विलंबित लय में गाये जाने पर अच्छा लगता है। इस राग का आधार—"राग लक्षण" नामक प्राचीन ग्रन्थ है।

उठाव.

निरेग, म, ग, रेगम, नी, सां, रेंसां, मग, रेसा ।

चलन.

निरेगग, म, मग, रेग, रेसा, म निसां रेंरेंसां, निम, ग,

मरेगरेसा, निरेगम ।

तीव्र मध्यम लगाना चाहें तो निम्न रूप से लगाया जावे:—

निरेगम, म, मंमग, रेग, म, गरेसा ।

मेघरंजनी—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा									
नि़	रे	ग	म	म	म	—	म	म	म
ल	ल	त	न	अ	ही	ऽ	र	न	अ
×		२			०		३		
ग					म				
म	—	म	म	म	ग	—	रे	ग	—
भा	ऽ	त	न	भ	खा	ऽ	र	है	ऽ
×		२			०		३		
ग				सां					
म	—	म	म	नि	सां	—	सां	रें	सां
पं	ऽ	च	म	वं	गा	ऽ	ल	न	हिं
×		२			०		३		
नि					म				
सां	—	म	म	म	ग	—	रे	ग	मम
हो	ऽ	त	भ	टि	या	ऽ	र	है	ऽऽ।
×		२			०		३		
	सा								
ग	नि़	रे	ग	म	म	—	म	म	म
ल	ल	त	न	अ	ही	ऽ	र	न	अ
×		२			०		३		

अन्तरा.

ग					सां				
म	—	नि	सां	सां	नि	—	रें	सां	—
मा	ऽ	ल	व	सु	मे	ऽ	ल	में	ऽ
×		२			०		३		
सां	सां				नि				
नि	नि	रें	गं	रें	सां	—	रें	सां	—
प	ध	न	को	ऽ	त्या	ऽ	ग	है	ऽ
×		२			०		३		

नि सां	—	सां	सां	—	सां रें	रें	मां	मां	सां
मे	ऽ	घ	रं	ऽ	ज	नि	च	तु	र
×		२			०		३		
नि सां	—	म	म	म	म ग	—	रे	ग	मम
मां	ऽ	श	प	र	का	ऽ	र	है	ऽ, ।
×		२			०		३		
ग	सा नि़	रे	ग	म					
ल	ल	त	न	श्र	इत्यादि				
×		२							

राग गुणकरी या गुणक्री

गुणकरी त्वियं मंद्रमध्यमा ।
गनि विवर्जिता भैरवांगिनी ॥
ऋषभधैवतौ मंत्रिवादिनौ ।
सदसि गीयते प्रातरौडुवा ॥
रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ १० ॥

रिसौ धसौ मरी पश्च धपौ मरी पमौ रिसौ ।
गुणक्री गीयते प्रातर्भैरवांगी धवादिनी ॥
अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ८६ ॥

गनि सुर बरजै गुनकरी रिमध कोमलही मान ।
वादी धैवत है रिखब संवादी सुर जान ॥
रागचन्द्रिकासार ॥ ८ ॥

गुणक्री अथवा गुणकली भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला एक औड़व राग है। इसमें गांधार और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं। वादी स्वर धैवत और सम्वादी रिषभ है। यह भी भैरव अङ्ग का राग है। यह विलंबित में अच्छा गाया जा सकता है। इसकी प्रकृति शान्त और गम्भीर है। यह प्रातःकाल प्रथम प्रहर में गाया जाता है। इस राग का जोगिया राग से थोड़ा साम्य है। परन्तु जोगिया में निषाद प्रयुक्त होने और भैरवांग न होने से 'गुणक्री' भिन्न रह सकता है। भैरव की मरे मींड़ इस राग में भी लगती है। इसमें कोई-कोई कोमल धैवत का

उच्चार कोमल नि के स्पर्श के साथ करते हैं। इस राग को 'सङ्गीत पारिजात' और 'रागतरंगिणी' इन दोनों प्राचीन ग्रन्थों का आधार प्राप्त है। बिलावल थाट का 'गुणकली' नामक राग इससे बिलकुल भिन्न है। इस गुणकली की चीजें पीछे पृष्ठ २३७-२४२ पर दी जा चुकी हैं।

आरोहावरोह स्वरूप.

सा, रे॒, म, प, ध॒, सां। सां, ध॒, प, म, रे॒, सा।

चलन

सा, सारे॒, रे॒सा, ध॒, सा, रे॒, सा, मपमरे॒, सा, साध॒प, मपम, रे॒सा।

गुणक्री—तीव्रा (विलम्बित)

स्थायी.

रे	–	रे	रे	रे	सा	सा	ध	–	ध	(ध)सा	–	सा	–
रू	ऽ	प	अ	नु	प	म	आ	ऽ	ज	गा	ऽ	यो	ऽ
×			२		३		×			२		३	
(ग)रे	–	रे	(ग)रे	रे	सा	सा	ध	–	ध	(ध)सा	–	सा	–
रा	ऽ	ग	गु	न	क	रि	जो	ऽ	क	हा	ऽ	यो	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	ध	ध	(नि)ध	–	प	प	म	प	म	(म)रे	–	सा	–
मे	ऽ	ल	भै	ऽ	र	व	को	ऽ	मि	ला	ऽ	यो	ऽ।
×			२		३		×			२		३	

अन्तरा.

प	–	प	(नि)ध	–	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
अं	ऽ	श	धै	ऽ	व	त	रि	ख	ब	स	ह	च	र
×			२		३		×			२		३	
ध	ध	ध	सां	–	सां	सां	रें	रें	सां	सां	–	(नि)ध	प
अ	ग	न	औ	ऽ	ड	व	सु	ग	म	सू	ऽ	द	र
×			२		३		×			२		३	
(प)ध	सां	सां	(सां)ध	प	प	प	प	–	प	मप	ध	ध	ध
प्रा	ऽ	त	च	ऽ	त्र	सु	जा	ऽ	न	गाऽ	ऽ	य	सु
×			२		३		×			२		३	
ध	सां	सां	ध	ध	प	प	म	मप	म	(म)रे	–	सा	–
ना	ऽ	य	गु	नि	ज	न	म	नऽ	रि	झा	ऽ	यो	ऽ।
×			२		३		×			२		३	

गुणक्री—तीव्रा (मध्यलय).

स्थायी.

सा			ग				सा			ध			
रे	रे	रे	रे	रे	सा	मा	ध	–	–	मा	–	–	–
ड	म	रु	ह	र	क	र	आ	ऽ	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा			ग				सा			ध			
रे	रे	रे	रे	रे	सा	सा	ध	–	ध	मा	–	सा	–
त्रि	शु	ल	ध	र	क	र	भ	ऽ	रम	अं	ऽ	ग	ऽ
×			२		३		×			२		३	
नि			नि				ग			म			
सा	ध	ध	ध	–	प	–	म	प	म	ग	–	सा	–
व्या	ऽ	ल	मा	ऽ	ला	ऽ	ग	ले	बि	रा	ऽ	जे	ऽ।
×			२		३		×			२		३	

अन्तरा.

म			नि				ध						
प	–	प	ध	ध	ध	ध	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां
पं	ऽ	च	ब	द	न	पि	ना	ऽ	क	ध	र	शि	व
×			२		३		×			२		३	
सां			गं				नि			नि			
रें	रें	रें	रें	–	सां	सां	सां	–	सां	ध	–	–	प
त्रि	ख	व	वा	ऽ	ह	न	भू	ऽ	त	ना	ऽ	ऽ	थ
×			२		३		×			२		३	
प			सां				नि			म			
ध	सां	सां	ध	–	ध	ध	ध	ध	प	प	–	ध	–
रुं	ऽ	ड	मं	ऽ	ड	ल	स	ब	न	सो	ऽ	हे	ऽ
×			२		३		×			२		३	
प			नि				ग			म			
ध	सां	सां	ध	–	प	प	म	प	म	रे	रे	सा	सा
अ	ना	दि	पू	ऽ	र	क	अ	नं	त	अ	घ	ह	र।
×			२		३		×			२		३	

राग जोगिया.

—:*:—

आरोहे किल न गनी कदापि दृष्टौ ।
क्वाचित्को विलसति पंचमोऽवरोहे ॥
षड्जोंशोऽस्त्युपरितनोहि मस्तुमंत्री ।
सा योगिन्युषसि चकास्ति भैरवांगे ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥१२॥

रिमौ पधौ सनी धश्च पधौ मपौ धमौ रिसौ ।
गहीना जोगिया मांशा क्वचिद्गांधारसंयुता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ७८ ॥

भैरव मेलहि जोगिया नित गांधार बरजे हि ।
बादीम ससंबादि है आरोहत नि तजेहि ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ १० ॥

जोगिया राग भैरव थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार स्वर बिलकुल वर्ज्य है और आरोह में निषाद वर्ज्य है। वादी स्वर मध्यम और सम्वादी षड्ज है। गायन का समय प्रातःकाल है। कोई–कोई वादी तार षड्ज और मध्यम को सम्वादी मानते हैं। 'रेम' और 'धम' स्वर संगति इस राग में बहुत रंजक होती है। मध्यम स्वर मुक्त रखने से यह राग विशेष अच्छा जमता है। दाक्षिणात्य ग्रन्थों में 'सावेरी' नामक राग बताया गया है। जोगिया का स्वरूप थोड़ा बहुत उसी के जैसा है। केवल सावेरी के अवरोह में गांधार लिया जाता है। मर्मज्ञों का मत है कि जोगिया राग, भैरव और सावेरी के संयोग से

बना हुआ है। यह यथार्थ भी है। इस राग के अवरोह में क्वचित स्थलों पर कोमल नी लेकर कोमल धैवत पर आते हैं।

आरोहावरोह स्वरूप

सा रे म प ध सां। सां नि ध प, ध, म, रे सा।

चलन.

रेमम, पप, धमरेसा, सारेरेसा, निध, सा, मपधपधम, रेम

रेसा। मम, पप, ध, सां, सां, रें सां, सां रें मं मं,

रें रें सां, मां रें सां निधप, ध नि धप

मम म प ध ध म म, रे रे सा;

सा, सा रे म।

जोगिया—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प प प ध॒	सां – सां नि	ध॒ ध॒ प ध॒	म – प –
गु नि ज न	रा ऽ ग लि	ख त जो ऽ	गी ऽ को ऽ
०	३	×	२
म – म प	ध॒ ध॒ प प	म – (प)म म	(ग)रे॒ रे॒ सा –
मे ऽ ल क	र त नि त	भै ऽ र व	सु र को ऽ
०	३	×	२
– रे॒ म म	म – प –	ध॒ – ध॒ पम	म म प ध॒
ऽ म ध्य म	वा ऽ दी ऽ	नी ऽ को ऽऽ।	गु नि ज न
०	३	×	२

अन्तरा.

प प ध॒ ध॒	सां – सां रें॒	रें॒ रें॒ रें॒ रें॒सां	(गं)रें॒ – सां सां
ग नि सु र	छां ऽ ड स	ज त अ नुऽ	लो ऽ म क
०	३	×	२
सां सां सां नि	ध॒ ध॒ प ध॒म	प ध॒ सां –	– – – –
प्र ति लो ऽ	म त जे ऽ	गा ऽ को ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
सां – सां सांनि	ध॒ (ध॒)नि॒ ध॒ प	म – (म)प म	(ग)रे॒ – सा सा
सं ऽ ग तऽ	रि म ध म	रू ऽ प दि	खा ऽ व त
०	३	×	२

रे	–	म	म	म	–	प	–	ध	–	ध	पम	म	म	प	ध
सं	ऽ	नि	ध	सा	ऽ	वे	ऽ	री	ऽ	को	ऽऽ।	गु	नि	ज	न।
०				३				×				२			

जोगिया—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प						नि									
म	म	प	ध	सां	सां	सां	ध	–	(प)	–	म	प	–	प	–
अ	नि	अ	नि	च	र	क	दा	ऽ	मैं	ऽ	नु	भां	ऽ	दा	ऽ
२				०				३				×			
				सा								प			
–	–	–	–	रे	रे	म	–	प	–	मप	ध	मप	मप	ध	पम
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सैं	यो	नी	ऽ	मैं	ऽ	ऽऽ	ऽ	क्यु'ऽ	ऽऽ	ऽ	कऽ
२				०				३				×			
म				ग											
रे	–	–	रेरे	रे	–	सा	–	रे	रे	म	म	प	–	ध	म
रे	ऽ	ऽ	कित	सा	ऽ	ढा	ऽ	म	न	ल	ल	चां	ऽ	दा	ऽ।
२				०				३				×			

अन्तरा.

												गं			
म	–	म	–	प	ध	सां	–	–	रें	–	रेंसां	रें	सां	(सां)	ध
क	ऽ	बी	ऽ	रु	इ	दा	ऽ	ऽ	ता	ऽ	रऽ	क	ढ	ना	ऽ
०				३				×				२			
प		प				प		प							
ध	–	ध	–	(ध)	–	म	म	ध	–	सां	–	–	–	–	–
सो	ऽ	सा	ऽ	नूं	ऽ	न	हिं	आं	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

प म म म म	प प ध़ सां	– रें रें रें	(रें) – सां ध़
म न रं ग	म हे र म	ऽ को उ न	जा ऽ ने ऽ
०	३	×	२
पध़ रें सां –	सां – ध़ ध़	प म – प –	प म म प ध़
सोऽ ऽ सा ऽ	नूं ऽ व त	लां ऽ दा ऽ।	अ नि अ नि
०	३	×	२

जोगिया—तिलवाड़ा (विलम्बित).

स्थायी.

सा रे म प पप	ध़ ध़ प ध़ पध़ नि़	ध़ (म) – मम	म रे – सा –
हुँ तो ऽ थांने	जा ऽ ऽऽ ऽ	व न ऽ नहिं	दे ऽ शां ऽ
३	×	२	०
प म म प पध़	सां – – –	(सां) – ध़ म	म रे – सा –
हो जी ऽ म्हारा	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

प नि़ म प – ध़ध़	सां – सां –	रें रें रें मं	रें रें सां –
हूं तो ऽ थांरी	दा ऽ सी ऽ	ज न म ज	न म री ऽ
३	×	२	०
प ध़ ध़ रें – सांसां	सां – ध़ म	प नि़ ध़ म	ग म (म) रे सा
तूं तो ऽ म्हारा	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ज।
३	×	२	०

जोगिया—चौताल (विलंबित).

स्थायी.

(म)रे॒	रे॒	म	म	प	प	ध॒	—	—	ध॒	—	म
अ	खि	ल	गु	न	न	भां	ऽ	ऽ	डा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
म	प	म	(म)रे॒	—	सा	रे॒	म	—	प	—	ध॒
र	च	त	सृ	ऽ	ष्टि	सु	र	ऽ	ज	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	(सां)ध॒	—	म	(म)प	म	—	रे॒	—	सा
हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	क	र	ऽ	ता	ऽ	र।
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा.

म	म	प	प	ध॒	ध॒	सां	—	सां	सां	—	सां
स	क	ल	गु	न	न	को	ऽ	अ	धा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
रें॒	—	मं	रें॒	—	सां	रें॒	सां	सां	ध॒	—	प
दा	ऽ	स	ता	ऽ	प	भं	ज	न	हा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
ध॒	—	सां	—	ध॒	ध॒	म	म	म	रे॒	—	सा
मा	ऽ	या	ऽ	प	त	ज	ग	त	प	ऽ	त।
×		०		२		०		३		४	

जोगिया–धमार (विलंबित).

स्थायी.

											सा रे	म	–
											हो	ऽ	ऽ
											०		
प	–	प	–	नि ध	–	–	प	–	ध	म	म प	ध	–
गी	ऽ	को	ऽ	छे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	मो	हे	हूं	ऽ	ऽ
३				×					२		०		
प म	–	म	–	म रे	–	–	सा	–	सा	सा	नि़ सा	सा ध़	–
ड	ऽ	त	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	अ	ब	क	हां	ऽ
३				×					२		०		
सा	–	नि़ सा	सा	सा ध	–	–	प म	–	म प	म	म रे	–	सा
जा	ऽ	य	छि	पो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	रि	आ	ऽ	ली।
३				×					२				
सा रे	म	प	प										
हो	ऽ	री	को										
३													

अन्तरा.

म प	–	–	नि ध	–	–	प ध	ध सां	–	–	रें	–	सां	सां
अं	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ऽ	द्धा	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	स
×					२		०			३			
सां रें	–	–	रें मं	–	रें	–	सां	–	–	नि ध	–	–	–
घे	ऽ	ऽ	र	ऽ	ही	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ
×					२		०			३			

प | नि | नि |
ध ध - सां सां | ध — | ध — — | प — ध म
मो रे ऽ अं ग | ना ऽ | में ऽ ऽ | धृ ऽ म म
× | २ | ० | ३
ध प | म | म | मा
प ध — म — | प म | रे — सा | रे म प प
चा ऽ ऽ वे ऽ | मो रि | आ ऽ ली। | हो ऽ री को
× | २ | ० | ३

जोगिया—धमार (विलंबित).

स्थायी.

| प | | |
प ध म | ध — — म — | , म | रे — सा
ऽ रं ग अ | बी ऽ ऽ र ऽ | ऽ क | हां ऽ से
३ | × | २ | ०

सा ध़ रे सा | रे म — प — | — प | ध — ध
पा ऽ ऽ उं | स खी ऽ य ऽ | ऽ न | मि ऽ ल
३ | × | २ | ०
प | | प | म
ध — — सां | ध ध — म — | म — | रे — सा
लू ऽ ऽ ट | ल ई ऽ ऽ ऽ | है ऽ | श्या ऽ म।
३ | × | २ | ०

अन्तरा.

म प — ध — | , सां | सां — — | सां — — सां
अ ब ऽ मैं ऽ | ऽ तु | मी ऽ ऽ | सं ऽ ऽ ग
× | २ | ० | ३

प ध़ – – सां –	, सां	रें – –	सां – ध़ –
हो ऽ ऽ री ऽ	ऽ न	खे ऽ ऽ	लूं ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
ध़ सां – ध़ –	– प म	म रे़ – सा	म म प ध़
व हीं ऽ क्यूं ऽ	ऽ न	जा ऽ वो	ज हां त क
×	२	०	३
रें सां – ध़ ध़	म –	रे़ – सा	
त है ऽ तु म	री ऽ	रा ऽ ह।	
×	२	०	

राग देवरंजनी

मायामालवगौलाच्च मेलाज्जातः सुनामकः ।
देवरंजीति रागश्च सन्यासं सांशकग्रहम् ॥
आरोहे गरिवर्ज्यं चाप्यवरोहे तथैव च ।
स म प ध॒ नि स । स नि ध॒ प म म म ॥

रागलक्षणे ॥ पृ. १८ ॥

'देवरंजी' अथवा 'देवरंजनी' एक दाक्षिणात्य राग है जिसे अपने यहां के विद्वानों ने प्रचलित किया है। यह भैरव थाट का औड़व राग स्वरूप है। इसमें ऋषभ और गांधार स्वर वर्ज्य होते हैं। इसका वादी स्वर षड्ज और संवादी मध्यम है। इसका उठाव षड्ज से होता है और इसी पर विश्रांति ली जाती है। उत्तरांग प्रबल होने के कारण यह राग प्रातर्गेय है। अवरोह में किंचित् कोमल नी का स्पर्श क्षम्य है।

इसका साधारण स्वरूप इस प्रकार है:—

नि
सा, म, मप, ध॒, प, ध॒, ध॒सां, ध॒, प, सांध॒, नि॒ध॒, प, म,
पम, मपध॒सां, म, मपम। मपध॒, ध॒सां, सां, सां,
मं, सां, निसांध॒, प, मपसां, ध॒नि॒ध॒पम, सा,
म, मपध॒सां, मपम।

देवरंजनी—झपताल (मध्यलय).

स्थायी.

नि॒ सा	मा	सा म	म	–	प	प	नि॒ ध॒	प	–
त्रि	वि	ध	गा	ऽ	म	नि	ति	हू	ऽ
×		२			०		३		
नि॒ ध॒	नि॒ ध॒	नि॒ ध॒	नि॒ ध॒	–	ध॒ सां	–	सां	ध॒	प
लो	ऽ	क	ऊ	ऽ	द्धा	ऽ	र	नी	ऽ
×		२			०		३		
ध॒ प	ध॒	सां	नि॒ ध॒	ध॒नि॒	ध	पम	प	म	–
ता	ऽ	प	त्र	यऽ	वा	ऽऽ	र	नी	ऽ
×		२			०		३		
प म	प	ध॒	ध॒ सां	–	प म	प	म	–	–
त	त	छि	ना	ऽ	गं	ऽ	गे	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		
ग म	सा								
त्रि	वि								
×									

अन्तरा.

प म	प	नि॒ ध॒	–	ध॒	सां	–	सां	–	–
त्र	य	दे	ऽ	व	मा	ऽ	नी	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
नि सां	सां	सां मं	–	सां	सां नि	सां	नि ध॒	–	प
त्र	य	स्तो	ऽ	म	त्रा	ऽ	नी	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

(प)म	प	सां	(नि)ध	नि	ध	पम	प	म	–
पा	ऽ	प	ह	र	नी	ऽऽ	त्र	ई	ऽ
×		२			०		३		
(म)सा	सा	(सा)म	–	म	प	–	(नि)ध	(नि)ध	–
त्र	य	लो	ऽ	च	ना	ऽ	त्र	ई	ऽ
×		२			०		३		
(प)ध	ध	(ध)सां	–	सां	(प)म	प	म	–	–
ति	रि	वे	ऽ	नि	सं	ऽ	गे	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		
(म)सा	सा								
त्रि	वि								
×									

राग विभास (भैरव थाट)

विभास इह वर्ज्यमध्यमनिषादकस्त्वौडुवो ।
रिकोमल धकोमलो भवति तीव्रगांधारकः ॥
अमात्य ऋषभस्वरो स्फुरति धैवतांऽशस्वरो ।
मनो हरति शृण्वतामुषसि पंचमन्यासतः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥१३॥

धपौ गपौ गरी सश्च गपौ धपौ सधौ च पः ।
विभासो मनिरिक्तः स्याद्धैवतांशः प्रभातगः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥८०॥

कोमल रिखबरु धैवतहि सुर मनि बिना उदास ।
वादीध रिसंबादि है ओडव राग विभास ॥

रागचन्द्रिकासार ॥१२॥

'विभास' राग का एक प्रकार भैरव थाट से उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम और निषाद स्वर वर्ज्य होते हैं। इसकी जाति औड़व है। इसका वादी स्वर धैवत और सम्वादी गांधार है। कोई-कोई रिषभ को संवादी मानते हैं। यह राग उत्तरांग प्रधान है। इसका गाने का समय प्रातःकाल का है। इसकी प्रकृति शान्त और गम्भीर होने से यह प्रातःकाल के समय बड़ा प्रभावशाली होता है। मनि वर्ज्य होने के कारण इसमें 'गप' स्वरों की संगति अपने आप सम्मुख आ जाती है। कोमल धैवत पर से सावकाश रीति से पंचम पर न्यास करने से विभास-अङ्ग विशेष शोभनीय हो जाता है। सायंकाल के समय पूर्वी थाट से निकलने वाला एक 'रेवा' नामक राग गाया जाता है, उसमें भी वर्ज्यावर्ज्य स्वर विभास के समान ही होते हैं। केवल वह (रेवा) राग पूर्वाङ्ग प्रबल है और यह (विभास) उत्तरांग प्रबल है। दोनों में इतना ही अन्तर है। ये

राग मानों एक दूसरे के जवाब ही हैं। 'विभास' राग पूर्वी थाट से भी निकलता है। इसके विषय में आगे पूर्वी थाट में देखा जावे। 'विभास' नामक एक राग मारवा थाट में भी है. उसकी चीजें अगले क्रमिक पुस्तक के छठे भाग में विभास राग में देखी जावें।

विभास का उठाव.

ध, प, गप, गरेसा, गप, ध, प, सां, ध, प।

चलन.

धध, प, गप, धप, गरेसा; सारेसा, गपधप, गपधसांधप,
धधप, सारेगप, सांधरेंसां धप, गपधप, गरेसा, ध, प।
गप, धसां, सां, सांरेंसां, रेंगंरेंसां, सांधप,
पधगप, सांधप, गपधप, गरेसा।

विभास–सूलताल (मध्यलय)
(भैरव मेलजन्य)
स्थायी.

ध	–	प	प	(प)ग	प	ग	रे	सा	सा
रा	ऽ	ग	वि	भा	ऽ	स	म	धु	र
×		०		२		३		०	
रे	–	रे	–	(प)ग	प	ग	रे	सा	सा
मा	ऽ	या	ऽ	मा	ऽ	ल	व	सु	र
×		०		२		३		०	
सा	रे	सा	(प)ग	प	प	ध	ध	प	प
प्रा	ऽ	त	स	म	य	स	सु	चि	त
×		०		२		३		०	
सां	–	ध	प	(प)ग	प	ग	रे	सा	सा
गा	ऽ	व	त	स	ब	गु	नि	व	र।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	रें	सां
म	नि	सु	र	व	र	जि	त	क	र
×		०		२		३		०	
रें	रें	रें	–	गं	–	रें	रें	सां	सां
रि	ध	सं	ऽ	बा	ऽ	द	रु	चि	र
×		०		२		३		०	

		प							
सा	–	ग	प	प	–	ध	ध	ध	ध
पं	ऽ	च	म	न्या	ऽ	म	क	ह	त
×		०		२		३		०	
				प					
सां	–	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
शा	ऽ	स्त्र	प्र	मा	ऽ	न	च	तु	र।
×		०		२		३		०	

विभास—त्रिताल (मध्यलय)

(भैरव मेलजन्य)

स्थायी.

ध				नि				प		प					
प	ध	सां	सां	ध	ध	प	–	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
प्या	री	प्या	री	ब	ति	यां	ऽ	क	र	क	र	मो	ऽ	ह	न
३				×				२				०			
सा				प		ग						नि		नि	
रे	–	रे	–	ग	प	रे	सा	रें	रेंगं	रें	सां	सां	–	ध	प
आ	ऽ	ली	ऽ	री	ऽ	मे	रो	म	नऽ	ब	स	की	ऽ	नो	ऽ।
३				×				२							

अन्तरा.

ध	ध	प	ध	सां	–	सां	सां	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	–
घ	री	प	ल	मू	ऽ	र	त	ट	र	त	न	हि	य	तें	ऽ
३				×				२				०			
				सां		नि		प							
सां	सां	रे	सां	ध	–	ध	प	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	–
ह	र	रं	ग	बे	ऽ	गि	दि	खा	ऽ	वो	सु	र	ति	या	ऽ।
३				×				२				०			

विभास - त्रिताल (मध्यलय).

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सां –

बैं ऽ

नि															
ध	–	प	–	–	ध	ग	ग	प	–	ध	–	ध	–	–	–
रि	ऽ	न	ऽ	ऽ	न	ऽ	न	दी	ऽ	ऽ	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
प															
ध	–	प	–	ग	प	ध	प	ग	–	रे	–	सा	–	–	–
ला	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ड	रा	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
								प							
रें	रें	रें	रें	प	ग	रे	मा	ग	–	प	–	ग	रे	सा	–
नि	त	उ	ठ	ऽ	मा	ऽ	ई	ना	ऽ	ले	ऽ	ज्ञा	ऽ	वां	ऽ
०				३				×				२			
प						प		नि				नि		ध	
ग	–	प	प	ध	–	ध	ध	ध	–	सां	–	ध	प	सां	–
ना	ऽ	ऽ	क	ही	ऽ	उ	ठ	ज्ञा	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	। बैं	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा.

प															
ग	-	प	प	ध	धप	ध	ध	सां	–	सां	सां	–	रें	–	सां
सां	ऽ	चि	क	ह	तऽ	तो	रे	बा	ऽ	व	रे	ऽ	नै	ऽ	न
०				३				×				२			
											नि		ध		
रें	–	रें	गं	रें	रें	सां	सां	रें	सां	–	ध	–	प	सां	–
भूं	ऽ	टि	क	र	त	स	र	स	ले	ऽ	जा	ऽ	त,	बैं	ऽ।
०				३				×				२			

विभास–रूपक (विलंबित)

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

प		ध॒		नि			ग			प			
ध॒	ध॒	सां	सां	ध॒	–	प	प	ध॒	प	गप	ग	रे॒	सा
आ	ज	तु	म	भो	ऽ	र	भो	ऽ	र	हिऽ	आ	ऽ	ये
२		३		×			२		३		×		
सा							सा		प				
रे॒	–	रे॒	प	ग	रे॒	सा	रे॒	–	ग	प	प	ध॒	ध॒
हो	ऽ	रि	म	चा	ऽ	ये	ऐ	ऽ	से	ऽ	हो	तु	म
२		३		×			२		३		×		
प		ध॒		नि									
ध॒	ध॒	सां	सां	ध॒	–	प							
च	तु	र	खे	ला	ऽ	रि							
२		३		×									

अन्तरा.

प		नि		ध॒			सां						
ध॒	–	ध॒	–	सां	–	सां	रें॒	रें॒	गं	रें॒	रें॒	रें॒	सां
छी	ऽ	न	ऽ	लूं	ऽ	गि	मु	कु	ट	ऽ	मु	र	ली
२		३		×			२		३		×		
प		ध॒		नि						प			
ध॒	–	सां	सां	ध॒	–	प	ध॒	–	ध॒	गप	ग	रे॒	सा
औ	ऽ	र	म	लूं	ऽ	गी	मु	ऽ	ख	ऽऽ	रो	ऽ	री।
२		३		×			२		३		×		

विभास - एकताल (विलम्बित).

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

											ग
											प
											पि
ध ग	प	—	पध	ध	सां	—	नि ध	—	प	—	ग प
या	ऽ	ऽ	तुम	व	हीं	ऽ	जा	ऽ	ओ	ऽ	ज
३		४		×		०		२		०	
ध ग	प	ध	—	प ध	प	ग	प गप	ग	रे	सा	,प
हां	सा	री	ऽ	रै	न	ऽ	गऽ	मा	ऽ	ई ।	,पि
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

ग प	धग	प	प धध	ध सां	—	सां	रें	—	सां	सां रें	—
रा	ऽत	के	ऽउ	नीं	ऽ	दे	जा	ऽ	गे	आं	ऽ
३		४		×		०		२		०	
गं	रें	सां	सां	रें	सां	नि ध	प	ध पप	धग	प	धध
खें	तु	म्हा	री	है	ऽ	ऽ	जू	तुम	ऽम	ले	जुभ
३		४		×		०		२		०	
ध सां	—	सां ध	प	प ध	प	ग	प	ग	रे	सा	,प
ले	ऽ	सं	ग	रं	ग	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ये ।	,पि
३		४		×		०		२		०	

विभास–तिलवाड़ा (विलंबित)

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सा नि			सा प
ध ,ध ध प	ध प ग प	ध प,गप गरे सा	रे गप गरे सासा
आ ,जुब धा ओ	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ,ऽऽ जेंऽ द्र	सा ऽऽ ऽतु रख
३	×	२	०
नि	नि	प ध नि	ग प
सा ध रे सा	सा गग प ध	ध सां ध प	प धग प ध
बा ऽ जो रे	मं दिल रा ऽ	बा जो रे ऽ	ऽ ऽऽ ऽ ऽ।
३	×	२	०
ध नि			
ध ,नि ध प			
आ ,जुब धा ओ			
३			

अन्तरा.

ग	ध		नि
प,पग पप ध ध	सांसां ,सांसां रें सां	रेंरें ,गंगं रें सां	रें सां ध प
ध,रऽ ,धर आ ई	बन ,बन आ ई	भुर ,पट खे ले	पि या सं ग
३	×	२	०
प नि	प प	ध	नि
धध सांसां ध प	धग प ध ध	रें ,रेंगं रें सां	रें सां ध प
सहे ऽल री ऽ	अऽ खी नी की	सा ,जन मैं का	बा ऽ जो रे।
३	×	२	०

विभास–झपताल (मध्यलय)

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

ग			
प ग	प ध प	ग रे	सा – सा
चि रि	यां ऽ चु	ह चु	हा ऽ नि
×	२	०	३

					प				
सा	सा	रे॒	सा	—	ग	प	ग	रे॒	सा
सु	न	च	क	ऽ	इ	की	बा	ऽ	नि
×		२			०		३		
नि़		प							
सा	सा	ग	प	प	प	प	ध॒	—	ध॒
क	ह	त	ऽ	ज	सो	दा	रा	ऽ	नि
×		२			०		३		
प					नि			प	
ध॒	ध॒	ध॒	सां	—	ध॒	—	प	गप	ध॒
जा	गो	मो	रे	ऽ	ला	ऽ	ला	ऽऽ	ऽ ।
×		२			०		३		
		प							
ध॒	प	गप	ध॒	प					
चि	रि	यांऽ	ऽ	चु					
×		२							

अन्तरा.

प	प	ध॒	—	सां	सां	सां	सां	—	सां
र	वि	की	ऽ	कि	र	न	जा	ऽ	नि
×		२			०		३		
							सां		
रें॒	रें॒	गं	रें॒	—	सां	सां	ध॒	—	प
कु	मु	दि	नी	ऽ	मु	क	ला	ऽ	नि
×		२			०		३		
ग	प						नि		
प	ग	प	ध॒	—	ध॒	सां	ध॒	—	प
क	म	लि	नी	ऽ	वि	क	सा	ऽ	नि
×		२			०		३		
ध॒					प				
प	प	ध॒	ध॒	—	ध॒ध॒	सांसां	ध॒प	पग	प
द	ध	म	थे	ऽ	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ला ।
×		२			०		३		

ध	ध	प	ग	प
चि	रि	यां	ऽ	चु
×		२		

विभास—चौताल (विलंबित)

(भैरवजन्य प्रकार)

स्थायी.

प									प		
ध	प	ग	रे	सा	सा	रे	सा	—	ग	प	प
ये	ऽ	न	र	ह	र	ना	ऽ	ऽ	रा	ऽ	य
०		३		४		×		०		२	
						ग	प				
प	ध	—	ध	—	प	प	ग	—	रे	—	सा
न	गो	ऽ	पा	ऽ	ल	गि	रि	ऽ	ध	ऽ	र।
०		३		४		×		०		२	

अन्तरा.

ग						ध					
प	—	प	ध	ध	—	सां	सां	—	सां	—	सां
गो	ऽ	पि	प	ति	ऽ	घ	न	ऽ	श्या	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	रें	गं	रें	सां	रें	सां	—	ध	—	प
क	म	ल	न	य	न	ब	न	ऽ	वा	ऽ	रि
×		०		२		०		३		४	
ग	प					प	ध		सां		
प	ग	प	—	ध	ध	ध	सां	सां	ध	—	प
ग	रु	ड़	ऽ	ध्व	ज	च	तु	र	भू	ऽ	ज
×		०		२		०		३		४	

ग प	प ग	—	रे	—	सा
म	नो	ऽ	ह	ऽ	र।
×		०		२	

विभास—चौताल (विलम्बित).

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

प ध	ध	प	प गप	ध	प	ग	—	रे	रे	सा	सा
ब	द	न	पंऽ	ऽ	च	भा	ऽ	ल	न	य	न
×		०		२		०		३		४	
सा रे	—	रे	ग रे	—	सा	प ग	प	ग	रे	—	सा
नी	ऽ	ल	कं	ऽ	ठ	चं	ऽ	द्र	सी	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	
सा	रे	सा	प ग	प	प	प	—	म प	ध	सां	—
ज	टा	ऽ	बी	ऽ	च	सो	ऽ	ऽ	ह	त	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रें	सां	—	नि ध	—	प	प ग	प	ध	प ध	सां	—
ग	ले	ऽ	रुं	ऽ	ड	मा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ।
×		०		२		०		३		४	
सां ध	ध										
ब	द										
×											

अन्तरा.

ग	प										
प	ग	प	प	ध	ध	सां	–	सां	सां	–	सां
द	श	भु	ज	ब	भू	तें	ऽ	सिं	गा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
सां										सां	
रें	–	गं	रें	सां	सां	रें	–	सां	–	ध	प
बा	ऽ	घां	ऽ	ब	र	ओ	ऽ	ढे	ऽ	शि	व
×		०		२		०		३		४	
		प				ध			सां		
प	प	ग	प	ध	–	रें	सां	–	ध	–	प
उ	र	ग	न	के	ऽ	अ	भू	ऽ	ष	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
		सां		नि		प			ग		
सां	सां	ध	ध	ध	प	ग	प	–	प	ध	सां
च	र	म	इ	भ	के	प	हि	ऽ	रे	ऽ	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

संचारी.

ग									नि		
प	ग	प	प	–	प	ध	–	ध	ध	ध	प
आ	ऽ	धे	शं	ऽ	भु	आ	ऽ	धे	ग	व	री
×		०		२		०		३		४	
प	प	ध	सां	–	सां	सां	–	ध	ध	प	–
दो	ऊ	ऽ	ए	ऽ	क	भे	ऽ	ष	ध	रे	ऽ
×		०		२		०		३		४	
		ध				ग	प				
ध	प	ग	प	ध	प	प	ग	प	ग	रे	सा
त्रि	ष	भा	ऽ	प	र	अ	स	ऽ	वा	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	

							नि		नि		
सा	सा	ग	प	प		ध	ध	ध	ध	प	—
'	शु	ल	ड	म	रु	आ	यु	ध	क	रे	ऽ।
×		०		२		०		३		४	

आभोग.

प	ध	सां	—	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	—
त्रि	दि	शा	ऽ	प	ति	अ	स्तु	ति	क	रे	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रें	—	गं	रें	—	सां	रें	सां	सां	मां	ध	प
रा	ऽ	जा	रा	ऽ	म	प्र	भु	शि	व	को	ऽ
×		०		२		०		३		४	
		ध									
प	ध	ग	प	ध	ध	सां	—	सां	सां	ध	प
नि	स	बा	ऽ	स	र	ध्या	ऽ	न	ध	र	त
×		०		२		०		३		४	
प		सां				प					
ध	सां	ध	ध	प	प	ग	प	ध	ध	—	सां
ह	र	ह	र	ह	र	क	ह	त	मो	ऽ	सें।
×		०		२		०		३		४	

विभास—ब्रह्मताल (मध्यलय)

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

प				प					
ध	—	—	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
श्या	ऽ	ऽ	म	अ	ति	सुं	ऽ	द	र
×		०		२		३		०	

		प							
सा रे	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा		
मु	र	लि	म	नो	ऽ	ह	र		
४		५		६		०			
नि़	प					ध			
सा	ग	प	प	ध	ध	सां	—	ध	प
गो	ऽ	व	र	ध	न	धा	ऽ	र	न
७		८		६		१०		०	

अन्तरा.

				ध					
प	प	ध	—	सां	सां	सां	सां	—	सां
बिं	द	रा	ऽ	ब	न	बि	हा	ऽ	रि
×		०		२		३		०	
सां									
रें	रें	गं	रें	सां	—	ध	प		
सु	ख	के	ऽ	का	ऽ	र	न		
४		५		६		०			
प		नि		प					
ध	सां	ध	प	ग	प	म	रे	सा	सा
गो	ऽ	पी	ऽ	म	न	रं	ऽ	ज	न,
७		८		६		१०		०	

राग भीलफ.

आसावरीमेलजन्यो भीलफः श्रूयते जने ।
राग आधुनिको ह्येष संपूर्णो धैवतांशकः ॥ ८७ ॥
जौनपुर्यपि खट्रागो द्वावत्रावयवौ मतौ ।
प्रातःकालप्रगेयत्वादुत्तरांगं परिस्फुटम् ॥ ८८ ॥
भैरवमेलनेऽप्याहुः केचिदेनं विचक्षणाः ।
धवादीनं रिनित्यक्तं बुधः कुर्याद्यथोचितम् ॥ ८९ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीते (द्वि. पृ. १६४)

'भीलफ' राग, एक यावनिक राग है, जो हजरत अमीर खुसरो द्वारा प्रचलित किया गया है। इस राग के दो प्रकार हैं। एक आसावरी थाट से उत्पन्न होने वाला सम्पूर्ण जाति का भीलफ है और दूसरा यह भैरव थाट का भीलफ, जिसमें ऋषभ और निषाद दुर्बल होते हैं। आसावरी थाट का भीलफ, जौनपुरी और खट राग के मिश्रण से उत्पन्न होता है। दोनों प्रकार के भीलफ का वादी स्वर धैवत है। ये दोनों राग प्रातःकाल गाये जाते हैं। आसावरी थाट के भीलफ की चीजें छठे भाग में, आसावरी थाट के प्रकरण में देखी जावें।

चलन.

सा, गम, प, प, प, ध॒, ध॒, सां, ध॒, प, पप, मगम, पध॒, सां, पपमप, मग, म ।

झोलफ—झपताल (विलंबित).

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

नि़		म		ग			ध॒		
सा	–	ग	म	म	प	प	प	प	–
मे	ऽ	री	ऽ	म	द	द	क	रो	ऽ
×		२			०		३		
म		नि	नि	नि	ध॒		नि		
प	–	ध॒	ध॒	ध॒	सां	–	ध॒	–	प
या	ऽ	शा	ऽ	ह	मे	ऽ	रे	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
	म	म	प						
प	प	प	ग	म	प	–	ध॒	सां	सां
दु	ख	द	रि	द्र	दू	ऽ	र	क	रो
×		२			०		३		
	म	ग							
प	प	म	ग	म	प	मप	म	ग	म
सु	ख	दो	ऽ	ऽ	मे	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

	म	नि		नि					
प	प	ध॒	–	ध॒	सां	–	सां	–	सां
अ	लि	यो	ऽ	न	बी	ऽ	ते	ऽ	री
×		२			०		३		
नि		ध॒			नि		नि		
ध॒	ध॒	सां	–	सां	सां	सां	ध॒	–	प
बि	न	ती	ऽ	क	र	त	हूं	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

प		प		ग					
म	प	ग	म	म	प	ध॒	सां	—	सां
स	द	का	ऽ	ह	स	न	का	ऽ	छु
×		२			०		३		
नि		म							
ध॒	प	प	म	प	प	मप	म	ग	म
व	त	च	र	न	ते	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

झीलफ—झपताल (मध्यलय)

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

नि़									
सा	नि़	सा	ग	म	प	प	प	प	—
ना	म	ही	ऽ	के	व	ल	स	ह	ऽ
×		२			०		३		
									सां
प	म	प	ध॒	प	ध॒	सां	रें॒	सां	प
सा	ऽ	न	न	ध	रा	ऽ	ध	र	त
×		२			०		३		
प	—	ध॒	प	नि	ध॒	प	म	ग	म
ना	ऽ	म	ब	ल	र	च	च	तु	ऽ
×		२			०		३		
सा	रे॒	ग	म	प	म	प	ग	म	रे॒
रा	ऽ	न	न	ज	ग	त	को	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	ध	—	सां	सां	सां	सां	नि	सां
ना	म	ही	ऽ	के	व	ल	शि	वा	ऽ
×		२			०		३		
ध	ध	नि	सां	नि	सां	—	गं	रें	सां
शि	व	को	ऽ	अ	भा	ऽ	घ	स	न
×		२			०		३		
प	—	ग	ग	म	प	—	प	रें	सां
ना	ऽ	म	हि	अ	धा	ऽ	र	ए	क
×		२			०		३		
प	नि	ध	—	प	म	प	ग	म	रे
के	व	ल	ऽ	भ	ग	त	को	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

संचारी.

सां	नि	ध	—	ध	प	—	प	प	प
ना	म	ही	ऽ	के	आ	ऽ	स	ज	न
×		२			०		३		
म	प	ध	नि	—	सां	—	सां	नि	ध
में	ऽ	भ	व	ऽ	त्रा	ऽ	स	स	व
×		२			०		३		
प	—	नि	ध	ध	प	—	म	प	म
ना	ऽ	म	ब	ल	हो	ऽ	तो	न	तो
×		२			०		३		

ग	म	रे̲	सा	–	प	म	ध̲	प	–
रू	ऽ	प	को	ऽ	ल	ख	त	को	ऽ।
×		२			०		३		

आभोग.

प	ध̲	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	–
ना	म	के	ऽ	र	ट	न	नि	स	ऽ
×		२			०		३		
नि	सां	सां	सां	–	रें̲	–	सां	नि	ध̲
दि	न	अ	म	ऽ	रे	ऽ	श	क	रो
×		२			०		३		
प	–	ध̲	म	प	ग	म	प	ध̲	रें̲
ना	ऽ	म	के	बि	सा	ऽ	रे	कि	त
×		२			०		३		
सां	नि	ध̲	प	ध̲	म	प	ग	म	रे̲
धा	ऽ	ब	त	ऽ	न	त	को	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

राग गौरी (भैरव थाट)



मालवगौडके मेले गौरी शास्त्रेषु वर्णिता ।
आरोहे धगहीनासाववरोहे समग्रिका ॥ ७७ ॥
ऋषभः स्यात्स्वरो वादी संवादी पंचमो भवेत् ।
गानं सुनिश्चितं तस्याश्चतुर्थप्रहरे दिने ॥ ७८ ॥
आदिशन्ति पुनः केचिदत्र तीव्रमयोजनम् ।
सायंगेये स्वरूपेऽस्मिन् भाति मे न विसंगतम् ॥ ७९ ॥
कलिंगांगा मता गौरी पूरियांगा तथैव च ।
मतं त्विदं प्रसिद्धं स्यात्सर्वत्र लक्ष्यवर्त्मनि ॥ ८० ॥
मंद्रस्थस्य निषादस्य वैचित्र्यमद्भुतं मतम् ।
श्रोतारः प्रायशस्तत्र कुर्वन्ति रागनिर्णयम् ॥ ८१ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगीते (द्वितीया० पृ० १२०-१२१)

'गौरी' राग के बहुत से प्रकार हैं, उनमें से यह एक भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला भेद है। इसके आरोह में गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं। अवरोह सम्पूर्ण है। इसलिये इसकी जाति 'औडव-सम्पूर्ण' हुई। इसका वादी स्वर रिषभ और सम्वादी पंचम है। यह सायंगेय राग है। इसमें कोई-कोई तीव्र मध्यम प्रयुक्त करते हैं। सायंगेय राग होने के कारण इस स्वर का प्रयोग असंगत नहीं जान पड़ता। गौरी के इस भेद में कालिंगड़ा और श्री राग का मिश्रण होता है। इसमें मन्द्र सप्तक का निषाद एक विशेष रीति से लिया जाता है, और इसी पर विश्रान्ति की जाती है। इसका यह प्रयोग ही इसके और अन्य गौरी-प्रकारों के लिये एक चिन्ह जैसा मानकर पहचाना जाता है।

उठाव.

सानिधनि, रेगरेम, गरेसारेनि, सा ।

चलन.

सानिधनि, रेगरेम, गरेसारे, निनिसा, मधनिसा, धनिसा,
ममरेग, रे, सा; मपधपम, रेग, रेरेसा, नि, सा,
मपधपम, धपम, रेग, रेसा ।

गौरी—चौताल (विलम्बित)

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

रे̱	—	प	म	प	म	(प)ग	रे̱	—	ग	(रे̱)ग	रे̱
फू	ऽ	ली	ऽ	सां	ऽ	ऽ	झ	ऽ	म	धू	ऽ
३		४		×		०		२		०	
सा	सा	(नि̣)सा	प	(प)प	सां	नि	ध̱	प	म	प	ग
ब	न	में	ऽ	ऽम	धु	ब	ऽ	ऽ	न	में	ऽ।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा

(सा)रे̱	—	प	—	प	—	(सां)नि	सां	नि	ध̱	प	नि
जै	ऽ	सो	ऽ	ही	ऽ	चं	ऽ	चु	हा	ऽ	ट
३		४		×		०		२		०	
सां	रे̱ं	(गं)रे̱ं	रे̱ं	सां	—	(सां)नि	—	रे̱ं	गं	रे̱ं	सां
चि	री	य	न	की	ऽ	तै	ऽ	सो	ही	ऽ	ऽ
३		४		×		०		२		०	
रे̱ं	सां	—	(सां)नि	रे̱ं	नि	ध̱	प	—	म	प	ग
चं	ऽ	ऽ	द्र	ऽ	छि	पो	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ऽ
३		४		×		०		२		०	
—	(रे̱)ग	—	ग	—	रे̱	सा	(सा)रे̱	—	प	—	म
ऽ	घ	ऽ	न	ऽ	में	ऽ	फू	ऽ	ली	ऽ	ऽ।
३		४		×		०		२		०	

गौरी–चौताल (विलंबित)

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

	ग
	प
	मु

				ग			नि़				रे॒
ग	रे॒	—	रे॒	रे॒	—	सा	सा	नि़	रे॒	—	ग
र	ली	ऽ	ब	जा	ऽ	वो	री	ऽ	ऽ	ऽ	झा
३		४		×		०		२		०	

			सा	प				नि़		सा	
रे॒	ग	रे॒सा	प	ग	रे॒	सा	सा	सा	सा	ध॒	ध॒
ऽ	ऽ	वोऽ	म	न	मो	ह	न	म	धु	र	म
३		४		×		०		२		०	

		म		ग							सा
प	म	प	ग	प	—	ग	रे॒	ग	रे॒	सा,	प
धु	र	सु	र	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न।	मु
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

प			सां								
ध॒	प	—	नि	—	नि	सां	सां	—	नि	सां	सां
स	ब	ऽ	ती	ऽ	न	ए	क	ऽ	ई	ऽ	स
×		०		२		०		३		४	

									नि		
रें॒	—	—	मं	—	गं	रें॒	—	सां	ध॒	—	प
बा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	सो	ला	ऽ	ग	डां	ऽ	ट
×		०		२		०		३		४	

प			सां								
ध	—	—	नि	सां	—	रें	नि	ध	नि	ध	प
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	प						सा				
प	ग	—	रे	ग	रे	सा,	प				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न।	मु				
×		०		२		०					

गौरी–चौताल (विलंबित).

(भैरवमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

											रे
											प
											मू
				ग			नि़	सा			
ग	रे	सारे	सा	रे	—	सा	सा	नि़	रे	—	ग
र	त	मन	में	ला	ऽ	गी	र	हे	ऽ	ऽ	मा
३		४		×		०		२		०	
			सा				ग			नि़	सा
रे	ग	रेसा	प	ग	रे	—	रे	सा	—	सा	ध
ऽ	ऽ	ईऽ	क	हां	लों	ऽ	स	हूं	ऽ	ए	त
३		४		×		०		२		०	
				म			ग				सा
प	—	म	—	प	—	ग	प	ग	रे	सा,	प
नी	ऽ	ऽ	ऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र।	मू
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

प			सां						सां		
ध॒	ध॒	प	नि	सां	–	सां	सां	–	नि	सां	सां
आ	व	न	के	ऽ	ऽ	दि	न	ऽ	गि	न	त
×		०		२		०		३		४	
सां			रें॒			नि					
रें॒	रें॒	–	मं	गं	रें॒	सां	सां	सां	नि	ध॒	प
र	स	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ज	प	त	मा	ऽ	ला
×		०		२		०		३		४	
प						सां					
ध॒	ध॒	प	नि	सां	–	रें॒	नि	ध॒	प	ध॒	म
द	र	स	बि	ना	ऽ	न	य	ना	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	प						सा				
प	ग	–	रे॒	ग	रे॒	सा,	प				
फ	की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र।	मू				
×		०		२		०					

राग जंगूला



'जंगूला' भैरव थाट से उत्पन्न होने वाला राग स्वरूप है। इसमें दोनों धैवत लगते हैं, परन्तु शुद्ध धैवत कम प्रमाण में लगता है। जहां यह स्वर प्रयुक्त होता है, वहां 'धनिप' स्वर समुदाय लेकर बिलावल की छाया दिखाई जाती है, परन्तु इस राग में मुख्य अंग भैरव का ही रखा जाता है। यद्यपि इसमें दोनों धैवत लिये जाते हैं और बिलावल की छाया दिखाने के लिये क्वचित् कोमल निषाद का प्रयोग होता है, परन्तु कोमल निषाद के बाद कभी भी कोमल धैवत नहीं लिया जाता। इस तरह यह राग आसावरी थाट के 'जंगूला' राग से सहज ही में भिन्न हो जाता है। यह राग आनन्द भैरव के बिलकुल निकट आ जाता है; उसमें वादी मध्यम है और उसका मुक्त प्रयोग स्पष्ट रूप से होता है। इस राग में ऐसा नहीं होता।

यह बिलकुल ही अप्रसिद्ध राग है। इसका केवल एक ही गीत उपलब्ध हो सका है, जो यहां दिया जा रहा है। "जंगला" नामक अत्यन्त प्रसिद्ध 'धुन' जैसा एक राग है। यह राग आगे क्रमिक पुस्तक के छठे भाग में आसावरी थाट के अन्तर्गत वर्णित किया जावेगा। उसे वहीं पर देखा जावे।



जंगूला—एकताल (विलंबित).

स्थायी.

प				म				ग			
ग	म	गम	गमप,मग	रे	—	सा	निसा,सा	रे	—	सा	,सारे
मं	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽ,शुऽ	मा	ऽ	दिल	ऽऽ,गु	दा	ऽ	जं	,तोसु
३		४		×		०		२		०	
म			म	ग				ग			
ग	म	मप	गमप,मग	म	ग	म	रे	रे	—	सा	,निसा
भे	ऽ	दिल्	ऽऽऽ,कुऽ	शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	,ऽऽ।
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा.

म		प						म		प	
गम	म	गम	,म	प	—	प	,मप	प	—	सां	—
सोजं	ऽ	गर	,तन	बी	ऽ	नं	,ऽऽ	मी	ऽ	रं	ऽ
३		४		×		०		२		०	
सां				प							
ध	नि	प	,म	म	प	ध	नि	(नि)निप	मग	मरे	सा
चो	ऽ	रू	,रूनु	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ,ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ई।
३		४		×		०		२		०	
प											
ग	म	गम	गमप,मग								
मं	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽ,शुऽ								
३		४									

पूर्वी थाट.

पूर्वी थाट के राग (१०)

गौरी	रेवा
त्रिवेणी	जेताश्री या जेतश्री
टंकी या श्रीटंक	दीपक
मालवी	हंसनारायणी
विभास	मनोहर

राग गौरी (पूर्वी थाट)

सनी धनी रिगौ रिश्च मगौ रिसौ रिनी च सः ।
दिनान्ते गीयते गौरी मद्वया ऋषभांशिका ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६७ ॥

तीव्र मगनि कोमल धरि बादि रिखब सुरजान ।
संबादी पंचम कहै गौरी रागनिदान ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ६५ ॥

गौरीरागः प्रकटतरमाभाति तुल्यः श्रियैव ।
भेदः किंचिद्भवति च परं वादिसंवादितोऽस्य ॥
वादी चात्रर्षभ इति जगुः पंचमोऽमात्यवर्यः ।
सायं गीतः सुखयति मनो मंद्रनी रक्तिदोऽस्मिन् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥६४॥

गौरी राग का यह प्रकार पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसके आरोह में भी गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य होते हैं। इसमें वादी स्वर रिषभ और सम्वादी स्वर पंचम है। इसके गायन का समय संध्याकाल है। इसमें भी श्रीराग का अङ्ग लगता है। मन्द्र स्थान में पूरिया के समान "नि़ ध़ नि़" इस प्रकार निषाद का प्रयोग होता है। कुछ लोगों का मत है कि इसके आरोह में स्वल्प धैवत ग्रहण करने से यह राग श्रीराग से स्वतन्त्र रखा जा सकता है। कोई इसमें वादी पंचम को बनाकर राग भिन्नता रखते हैं। इस राग के कुछ गीत दोनों मध्यम लगने वाले प्राप्त हुए हैं। भैरव थाट के 'गौरी' राग की चीजें पीछे दी जा चुकी हैं।

उठाव.

सानि़ध़नि़, रे॒ग, रे॒मंगरे॒, सारे॒, नि़सा ।

(अथवा)

मंमंगरे॒सा, नि़ध़नि़, रे॒, रे॒गरे॒सा; म़ध़नि़, सा रे॒, रे॒रे॒, गरे॒सा;

सासापप, पमंपध॒, मंग मंगरे॒सा ।

दोनों मध्यम लगाकर गाये जाने वाले गौरी राग का स्वरूप निम्न प्रकार का है, प्रचार में यही अधिक प्रचलित है ।

सानि़ध़नि़, रे॒गरे॒मंगरे॒सारे॒नि़सा; म, ममंगमरे॒ग, रे॒, मंगरे॒

सारे॒नि़, सा, म़ध़म़ध़नि़, सा, रे॒, रे॒गरे॒सा, म, ग,

मध॒पम, रे॒ग, रे॒मं, गरे॒सारे॒नि़, सा ।

'ललिता गौरी' नाम एक गौरी-प्रकार, शुद्ध धैवत और दोनों मध्यम ग्रहण करने वाला प्रचलित है। यह राग मारवा थाट में आया है। इसका विवरण अगले छठे भाग में दिया जावेगा।

'गौरी' का एक और प्रकार प्रचलित है, जिसे आरोह में धैवत लेकर श्रीराग का विस्तार मध्य और तार सप्तक में करते हुए गाया जाता है। इसका उदाहरण इस प्रकार है:—

मं
प, मंग, रे॒ग, रे॒सा, मंध॒, निसां रे॒ंसां, रे॒ंनिध॒प, पमंगरे॒,

नि
गरे॒, सा, साप, पमंगरे॒, गरे॒सा, नि, सां, रे॒ंनिध॒प ।

गौरी-त्रिताल (मध्यलय).

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

नि़ | | | सा
सा सानि़ ध़ नि़ | रे॒ ग ग मं | ग रे॒ सा रे॒ | नि़ नि़ सा –
क हाऽ क रू | प ग न च | ल त स खी | घ र को ऽ
२ | ० | ३ | ×

ध़ | | |
| म़ म़ ध़ सा | सा सा रे॒ सा | रे॒ – रे॒ रे॒
ऽ ऽ ऽ ऽ | न य न बि | मु ख ज न | दे ऽ ख त
२ | ० | ३ | ×

ग | नि़ सा | |
रे॒ – सा सा | सा – प प | प पमं प ध॒ | मं ग रे॒, मं
जा ऽ त न | लो ऽ ल त | अ रुऽ ण अ | ध र को। क
२ | ० | ३ | ×

ग
मं ग रे॒ सानि़
हा ऽ क रूंऽ
२

अन्तरा.

ध़ | | रे॒ |
म़ ध़ म़ सा | सा सा सा – | रे॒ रे॒ रे॒ मं | ग रे॒ सा सा
श्र व ण क | ह त वे ऽ | व च न सु | न त न हिं
० | ३ | × | २

सा
नि़ – सा रे॒ | ग मग रे॒ सा | नि़ नि़ सा – |
री ऽ स पा | व तऽ मो ऽ | प र को ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
० | ३ | × | २

सा | | | ध॒ ग
म म ग म | प – प प | ध॒ ध॒ प ध॒प | म प म ग
म न अ ट | क्यो ऽ र स | म धु र हुऽ | स न प र
० | ३ | × | २

सां नि नि सां रें	(सां) – ध प	प ग म ग –	
ड र त न	का ऽ हू ऽ	ड र को ऽ।	
०	३	×	
सा म म म म	ग (अथवा) म म म ग	म ध प धप	प ग म ग ग
म न अ ट	क्यो ऽ र स	म धु र हऽ	स न प र
०	३	×	२
ध ध सां सां	नि प ध ध – म प	प ग म ग –	
ड र त न	का ऽ हू ऽ	ड र को ऽ।	
०	३	×	

गौरी—त्रिताल (मध्यलय).

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सा

मो

– नि ध नि	म सा ग ग ध	मं ग रे सा	नि – सा –
ऽ हे बा ट	च ल त छे	ड त है बि	हा ऽ री ऽ
२	०	३	×
– – सारे सानि	धध म ध	नि नि नि नि	सा रे सा रे ,सा
ऽ ऽ रेऽ ऽऽ	ऽ निर ख ह	स त त्रि ज	ऽ ना रि। मो
२	०	३	×

अन्तरा.

रें नि़ रे	ग – म –	– मर्म म र्म	ग ग मर्म मग
ऽ ला ज कि	मा ऽ री ऽ	ऽ इन गो पि	य न मेंऽ ऽऽ
०	३	×	२
रेरे नि़ रे	ग ग रे सा	नि़ – सा –	– – सारे नि़सा
ऽ सुधि बु धि	ग इ मो रि	मा ऽ री ऽ	ऽ ऽ रेऽ ऽऽ
०	३	×	२
सा नि़ रे	ग ग म –	म र्म म र्म	ग ग मर्म मग
ऽ दे खो चां	ऽ द ए ऽ	नि ठु र श्या	ऽ म नेऽ ऽऽ
०	३	×	२
रे रे नि़ रे	र्म ग रे सा	नि़ – सा –	– – सारे सानि़
उ च क कां	ऽ क री ऽ	मा ऽ री ऽ	ऽ ऽ रेऽ ऽऽ
०	३	×	२
ध़ध़ म़ ध़	नि़ नि़ नि़ नि़		
ऽ निर ख ह	स त ब्रि ज।		
०	३		

गौरी—त्रिताल (मध्यलय)

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

र्म र्म ग रे	नि़ – सा ध़	नि़ – – रे	– रे सा –
भ ट क त	का ऽ हे फि	रे ऽ ऽ बा	ऽ व रे ऽ
०	३	×	२

म़ – ध़ ध़	नि़ नि़ सा –	रे – रे रे	ग रे – सा –
न ऽ श्व र	त न को ऽ	कौ ऽ न भ	रो ऽ सो ऽ
०	३	×	२
सा सा प प	मं – प ध	मं ग रे मं	ग रे सा –
ख ट प ट	यूं ऽ हि क	रे ऽ ऽ वा	ऽ व रे ऽ।
०	३	×	२

अन्तरा.

ध मं मं मं ग	ध मं – ध मंध	सां नि – सां सां	सां – सां –
क र म लि	खो ऽ उ त	नो ऽ हि मि	ले ऽ गो ऽ
०	३	×	२
सां सां नि – नि –	सां नि नि सां रें	सां नि – सां –	नि ध प –
ला ऽ खों ऽ	ज त न क	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
प मं प ध	मं – मं ग	रे ग मं ग	रे – सा सा
च तु र कु	पा ऽ बि न	क छु न हिं	सा ऽ ध त
०	३	×	२
सा – प प	ध मं – प ध	ध मं – ग मं	ग रे सा –
का ऽ हे को	सो ऽ च क	रे ऽ ऽ वा	ऽ व रे ऽ।
०	३	×	२

गौरी–त्रिताल (मध्यलय)

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सा	रे
ता	रे

(रे) नि़	सा	ग	रे	(म) गम॑	प	रे	ग	–	रे	–	सा	(सा) सा	सा	नि़	–
दा	नि	त	द	नोंऽ	ऽ	द्रि	तो	ऽ	म्तो	ऽ	म्त	न	द्रि	ना	ऽ
३				×				२				०			
ध़	–	प़	प़	ध़	नि़	सा	–		नि़	रे	(ध) म॑	ग	–,	सा	रे
ऽ	ऽ	ऽ	त	न	त	ना	ऽ	ऽ	त	न	त	ना	ऽ।	ता	रे
३				×				२				०			

अन्तरा.

(सा) रे	रे	ग	म॑	प	ध	प	ध	म॑	प	ग	म॑	रे	ग	–	रे
है	या	या	रं	य	ल	लि	य	ल	लि	य	लि	या	ला	ऽ	ला
०				३				×				२			
–	सा	–	रे	नि़	सा	ग	रे								
ऽ	ल्ला	ऽ	ला	ला	ले	त	द।								
०				३											

गौरी–रूपक (विलंबित)

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

(प) म॑	प	(सां) नि	सां	(सां) रें	सां	–	(सां) नि	–	रें	नि	ध	प	–
लं	ऽ	का	ऽ	ल	ई	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म	जी	ऽ	ऽ
२		३		०			२		३		०		

म॑	प		नि़		रे॒
प म	प ग	रे॒ – सासा	सा प	म पग	ग रे॒ सा
रा ऽ	व न	मा ऽ रिउ	ड़ा ऽ	ऽ येऽ	दी ऽ नो
२	३	०	२	३	०

अन्तरा.

प			सां		सां
म॑ प	नि ,नि	सां – निसां	नि रें	गं रेंसां	रेंनि ध॒ प
जी ऽ	त ,च	ले ऽ ऽऽ	ध र	को ऽऽ	बाऽ ऽ जे
२	३	०	२	३	०
	प	रे॒	सां		सां
प ध॒म	प ग	ग रे॒ सा	नि रेंगं	रें सां	रेंनि ध॒ प
त तऽ	त्रि त	त घ न	शि खऽ	रे ऽ	राऽ ऽ ज
२	३	०	२	३	०
म॑	म	रे॒			
प ध॒म	पग रे॒	ग रे॒ सा			
बि भीऽ	षऽ न	को दि ये			
२	३	०			

गौरी–तिलवाड़ा (विलंबित).

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

म॑
प
ए

ध॒	ध॒		नि रें
म॑ गरे॒ ग रे॒सा	म॑ ध॒ नि सां	रें – सां सां	सां निध॒ नि ध॒
री हैऽ या ऽऽ	का ऽ के ऽ	पा ऽ स र	हि लोऽ ऽ मो
०	३	×	२

प – मप प[म]	म[ध] गरे ग रे	ग रे सा –	रे[सा] सा[सा] प –
रा ऽ ऽऽ पि	यु सिऽ ग रे	द्यौ ऽ से ऽ	चि रि यां ऽ
०	३	×	२

प[म] म[ध] गरे ग	रे सा नि[सां] सां	रें – नि ध	नि ध प, प[म]
बो ल नऽ ला	ऽ गि सां झ	की ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ। ए
०	३	×	२

अन्तरा.

ध[प] प म[ध] ध	नि[सां] सां सां सां	सां[नि] – नि रें	गं रें सां –
ऐ सो को हो	वे ऽ म न	रं ऽ ग सु	धि ले आ ऽ
×	२	०	३

नि[सां] –ध नि[नि] रेंनि	ध – प –	म[ध] ध नि सां	रें – सां –
वे ऽऽ ऽ उन	की ऽ ऽ ऽ	बा ऽ टे ऽ	मा ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

नि[सां] ध नि रेंनि	नि[ध] ध प ,प[म]
ऽ ऽ ऽ ऽझ	की ऽ ऽ। ए
×	२

गौरी–त्रिताल (विलम्बित)

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

निरे गरे	सा – निसा सा	सा नि धप धम	– – पनि सासा
अक बर	दौ ऽ ऽऽ र	दौ ऽ रऽ ऽऽ	ऽ ऽ मुर मुर
३	×	२	०

नि॒	सा नि॒		
रे॒ – रे॒ ग	ग रे॒ सा –	सा – – रे॒	नि॒ – सासा पप
दे ऽ ऽ ख	त ऽ ऽ ऽ	तो ऽ ऽ को	ऽ ऽ खल् बल्
३	×	२	०
		नि॒	
ध॒ – निप ध॒म॑	ग रे॒ ग रे॒	सा – सा पम	म पग रे॒ ग
ऽ ऽ पऽ ऽऽ	री ऽ है ऽ	ऽ ऽ ऽ सब	ठौ ऽऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
गसा रे॒नि॒ ,नि॒रे॒ गरे॒	सा		
रेऽ ऽऽ ।अक बर	दौ		
३	×		

अन्तरा.

नि			प
,रे॒म॑प नि सां रें॒सां	प नि सां ,सां	रें॒ नि ध॒ प	ध॒नि पध॒ नि ध॒
,औरक श्मी ऽ रेऽ	ब ऽ ल्क ,बु	खा ऽ रो ऽ	सब जग जी ऽ
३	×	२	०
म॑			प म॑
प म पग रे॒सा	रे॒म॑ पनि सांरें॒ निसां	नि ध॒ प पध॒	नि ध॒ प ग
ऽ ऽ तोऽ ऽऽ	औरर गुज राऽ ऽत	जी ऽ तो सब	ठौ ऽ ऽ र
३	×	२	०
रे॒ सा ,नि॒रे॒ गरे॒			
ऽ ऽ ।अक बर			
३			

गौरी—आदिताल (विलम्बित)

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सा रे
ला

सां			ग म
र्म प नि सां	रें – सां –	नि ध प म	म प ग –
ऽ ज र खो	मं ऽ री ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	ऽ हे ब ऽ
३	×	२	०
ग	रे	नि	सा
प ग रे ग	ग रे सा –	सा रे सा निसा	नि ध प प
दो ऊ ऽ ऽ	ज ग में ऽ	री ऽ ऽ ऽऽ	का ऽ द र
३	×	२	०
सा	सा रे	र्म प	रे सा
नि सा रे सा	रे रे प प	प ग रे –	ग रे सा, रे
क री ऽ म	कु द र त	ते ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ री। ला
३	×	२	०

अन्तरा.

र्म		सां	नि रें
प प नि नि	सां – सां सां	नि रें गंरें सां	सां नि ध प
ध न ज ग	ता ऽ र न	ज ग तऽ नि	स्ता ऽ र न
३	×	२	०
सां	नि रें	र्म	रे
नि रेंगं रें सां	सां नि ध प	प – ग रे	ग रे सा सा
ह मऽ गु न्हे	गा ऽ र न	को ऽ दु ख	हा ऽ र न
३	×	२	०
सा प सां		प	सा
रे र्म प नि	रें नि ध प	प म ग रे	ग रे सा, रे
क ऽ ष्ट प	री तुं हे ऽ	ते ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ री, ला
३	×	२	०

राग त्रिवेणी

रिसौ गपौ गरी सश्च रिपौ धपौ सनी धपौ ।
गपौ गरी स इत्युक्ता त्रिवेणी ऱ्यंशिकाऽप्यमा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६८ ॥

कोमल रिध तीवर गनी मध्यम सुर बरजोइ ।
रिप बादीसंबादितें तिरबेनी है सोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ ५७ ॥

पूर्वीस्वरैरेव युता त्रिवेणी
सदा विहीना खलु मध्यमेन ॥
वादी मतोऽस्यामृषभोऽस्त्यमात्यो-
भिगीयते पंचम एव सायम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ५६ ॥

त्रिवेणी राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसमें मध्यम स्वर वर्ज्य है। इसकी जाति षाड़व है। इसका वादी स्वर रिषभ और संवादी पंचम है। इसमें श्रीराग का अङ्ग आता है। मध्यम के अभाव से 'गप' स्वर संगति आगे आ जाती है। यह राग अवरोह वर्ण से गाने पर अच्छा शोभित होता है। इसे सायंकाल के समय गाते हैं। यह प्राचीन राग है। पूर्वकालीन ग्रन्थों में उस समय प्रचलित स्वरूप के अनुसार इसका वर्णन प्राप्त होता है।

उठाव.

रेसा, गपगरे, सा, रे, प, धप, सां, निधप, गप, गरे, सा।

चलन.

ग प
सा, रे, रेसा, सारे, गपग, रे, सा, सा, प, प, धप, सां,

। ग
निध, प, पग, रेरेसा।

त्रिवेणी—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

रे	रे	रे	रे	प	ग	रे	सा	–	सा
अ	हो	ब	ल	क	ह	त	रा	ऽ	ग
×		२			०		३		
सा	रे	सा	सा	ग	प	ग	रे	सा	सा
ति	र	ब	न	ग	प	सु	ला	ऽ	ग
×		२			०		३		
सा	रे	सा	ग	प	प	–	प	ध	प
मे	ऽ	ल	गौ	ऽ	गी	ऽ	म	धु	र
×		२			०		३		
नि	सां	नि	ध	प	ग	प	ग	रे	सा
म	ऽ	ध्य	म	क	र	त	त्या	ऽ	ग ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

प	प	नि	–	नि	सां	–	नि	सां	सां
सि	रि	रा	ऽ	ग	अं	ऽ	ग	गु	नि
×		२			०		३		
नि	–	सां	रें	सां	नि	सां	नि	ध	प
सं	ऽ	म	त	रि	ख	ब	अं	ऽ	स
×		२			०		३		
सा	रे	सा	ग	प	प	प	ध	ध	प
अ	ऽ	स्त	दि	न	स	ब	च	तु	र
×		२			०		३		

नि	मां	नि	ध	प	ग	प	ग	रे	सा
गा	ऽ	व	त	ब	ड़े	ऽ	भा	ऽ	ग।
×		२			०		३		

त्रिवेणी—झपताल (विलम्बित).

स्थायी.

(सा)रे	–	रे	–	रे	ग	रे	रे	सा	–
का	ऽ	लिं	ऽ	दि	स	र	सु	ती	ऽ
×		२			०		३		
(ग)रे	रे	रे	–	रे	ग	प	ग	रे	सा
अ	रु	न	ऽ	ब	र	न	दे	ऽ	वि
×		२			०		३		
(सा)रे	रे	(रे)प	–	प	प	प	ध	–	प
उ	ज	ले	ऽ	ब	र	न	तू	ऽ	हि
×		२			०		३		
(प)सां	–	(ध)प	ग	प	ग	–	रे	–	सा
गं	ऽ	गा	ऽ	त्रि	वे	ऽ	ऽ	ऽ	नि।
×		२			०		३		

अन्तरा.

(मं)प	–	सां	–	सां	सां	–	सां	–	सां
बे	ऽ	नी	ऽ	प्र	का	ऽ	से	ऽ	क
×		२			०		३		

नि	रें	गं	रें	सां	सां	–	नि	ध	प
ट	त	दु	ऽ	ख	दू	ऽ	ऽ	ऽ	द
×		२			०		३		
नि़		प							
सा	–	ग	प	प	प	–	प	ध	प
खं	ऽ	ज	ऽ	न	मी	ऽ	न	लि	ये
×		२			०		३		
प		ध			प				
सां	–	प	ग	प	ग	–	रे	–	सा
सं	ऽ	ग	ऽ	त्रि	वे	ऽ	ऽ	ऽ	नि।
×		२			०		३		

त्रिवेणी–झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा									
रे	–	रे	–	रे	ग	रे	सा	सा	सा
सं	ऽ	सा	ऽ	र	का	ऽ	र	न	तु
×		२			०		३		
सा					प				
रे	–	रे	–	प	ग	प	ग	रे	सा
सां	ऽ	चो	ऽ	वि	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
नि़			सा						
सा	रे	सा	प	प	प	–	ध	प	–
तू	ऽ	हि	ध	र	णी	ऽ	प	ती	ऽ
×		२			०		३		
			प		प				
नि	ध	प	ग	प	ग	प	ग	रे	सा
तू	ऽ	हि	ज	ग	ना	ऽ	था	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

अन्तरा.

मं				सां	सां				
प	–	ध॒	प	नि	नि	सां	सां	सां	–
ए	ऽ	क	हु	अ	ने	ऽ	क	तू	ऽ
×		२			०		३		
सां					सां				
नि	सां	रें॒	–	सां	नि	सां	नि	ध॒	प
अ	वि	ना	ऽ	श	अ	वि	का	ऽ	र
×		२			०		३		
प					सां				
ध॒	–	नि	सां	–	नि	रें॒	नि	ध॒	प
आ	ऽ	दि	तू	ऽ	अं	ऽ	त	तू	ऽ
×		२			०		३		
		ध॒	प		प				
सां	–	प	ग	प	ग	प	ग	रे॒	सा
तू	ऽ	हि	स	ब	दा	ऽ	ता	ऽ	ऽ।
×		२			०		३		

राग टंकी अथवा श्रीटंक

टंकीरागश्च कथितः पूर्वीमेलसमुद्भवः ।
संपूर्णः पंचमांशश्च संवादिऋषभस्वरः ॥ २५६ ॥
तीव्रा निषादगांधारमध्यमा धैवतर्षभौ ।
कोमलौ कथितावत्र सायंकाले च गीयते ॥ २६० ॥
कैश्चिन्मध्यमवर्ज्यश्च वर्णितोऽयं त्रिवेणिवत् ।
वादिभेदाद्रागभेद इति युक्तं तदप्युत ॥ २६१ ॥

सङ्गीतसुधाकरे (पृ. ३६-३७)

गरी सरी सगौ पधौ पसौ निधौ पगौ पगौ ।
रिसौ टंकी भवेत्पांशा दिनान्ते भूरिरक्तिदा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥६५॥

कोमल धैवत रिखब है मध्यम सुर न लगाइ ।
परि बादीसंबादितें टंकी गुनिजन गाइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥५८॥

पुर्वीमेले संस्थिता सा तु टंकी
संपूर्णाऽसौ पंचमांशा प्रसिद्धा ।
संवाद्यस्यां प्रोच्यते चर्षभोऽयं
सायंकाले गीयते गीत्यभिज्ञैः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥५७॥

'टंकी' अथवा 'श्रीटंक' राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होने वाला एक सम्पूर्ण जाति का राग है। इसमें वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। यह सायंगेय राग है। यह भी श्री अङ्ग से ही गाया जाता है। कोई-कोई इसमें मध्यम स्वर वर्ज्य करते हैं, ऐसा करने से इस राग और त्रिवेणी राग में गड़बड़ी हो जाना शक्य है, परन्तु इस राग का वादी स्वर पंचम है और त्रिवेणी में वादी ऋषभ है। इस प्रकार वादी स्वर के अंतर से यह राग स्वतन्त्र रहता है। यदि टंकी में मध्यम लगाया गया, तो भी वह गौण ही रखना पड़ता है। त्रिवेणी के समान यह भी प्राचीन राग है और पूर्वकालीन ग्रंथों में इसका उल्लेख प्राप्त होता है।

उठाव.

ग, रेसा, रेसा, गप, धप, सां, निध, प, मंग, प, ग, रेसा।

चलन.

रेरे, गप, प, धधप, निधप, गपगरे, प, निरेंनिधप, धनि
धप, निसां, निधपमंगरेग, पगरे, रे, सा।

टंकी—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

ग	–	रे॒	सा	सा	सा	नि़	रे॒	सा	सा
का	ऽ	म	व	र	ध	नी	ऽ	सु	र
×		०		२		३		०	
सा	–	नि़	रे॒	ग	प	ग	रे॒	सा	सा
टं	ऽ	की	ऽ	मा	ऽ	न	त	व	र
×		०		२		३		०	
(नि़)सा	–	प	प	म॑	ध॒	नि	ध॒	प	प
सं	ऽ	धि	प्र	का	ऽ	श	प्र	ह	र
×		०		२		३		०	
प	–	म॑	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
पं	ऽ	च	म	जी	ऽ	वि	त	क	र।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	ध॒	प	नि	–	सां	नि	सां	सां
ति	रि	व	न	श्रं	ऽ	श	रि	ख	व
×		०		२		३		०	
नि	–	रें॒	गं	रें॒	सां	रें॒	नि	ध॒	प
म	ऽ	ध्य	म	व	र	जि	त	ज	व
×		०		२		३		०	
(प)म॑	ध॒	नि	सां	सां	सां	रें॒	नि	ध॒	प
गौ	ऽ	री	ऽ	व	र	न	त	अ	ग
×		०		२		३		०	

मं	ध	मं	ग	मं	रे	मं	ग	रे	सा
मा	ऽ	ल	वि	अ	न	घ	च	तु	र।
×		०		२		३		०	

श्रीटंक—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

(सा)रे	रे	रे	रे	(ग)रे	रे	सा	सा	(नि)सा	रे	सा	–	(सा)रे	–	ग	ग
ह	रि	ह	रि	क	र	म	न	ज	ग	में	ऽ	जी	ऽ	व	न
×				२				०				३			
(ग)रे	ग	प	प	प	–	मं	ग	(ग)प	–	ग	प	ग	रे	सा	सा
है	ऽ	दि	न	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र।
×				२				०				३			

अन्तरा.

(सा)रें	रे	–	सा	सा	सा	(सा)रे	ग	रे	–	सा	सा	(ग)प	ग	प	–
गु	मा	ऽ	इ	घ	रि	पा	ऽ	छी	ऽ	न	हिं	आ	ऽ	वे	ऽ
×				२				०				३			
(मं)प	नि	ध	प	प	प	ग	ग	(ग)प	–	ग	प	ग	रे	–	सा
ह	र	रं	ग	क	र	ले	बि	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र।
×				२				०				३			

श्रीटंक—सूलताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा									
रे̲	रे̲	रे̲	रे̲	सा	सा	ग	रे̲	सा	—
सु	मि	र	न	क	र	म	नु	जा	ऽ
×		०		२		३		०	
				प					
रे̲	रे̲	रे̲	—	ग	प	ग	रे̲	सा	—
र	ब	को	ऽ	घ	ट	में	ऽ	रे	ऽ
×		०		२		३		०	
नि̣		सा							
सा	—	प	—	प	प	ध̲	—	प	प
जा	ऽ	सूं	ऽ	भ	व	सा	ऽ	ग	र
×		०		२		३		०	
प	ध̲	प	प	ग	प	ग	रे̲	सा	—
ता	ऽ	र	न	हो	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	प	ध̲	प	नि	नि	सां	—	सां	सां
जो	इ	जो	इ	न	र	ध्या	ऽ	व	त
×		०		२		३		०	
नि	सां	रें̲	सां	नि	सां	नि	ध̲	प	प
ई	ऽ	छा	ऽ	फ	ल	पा	ऽ	व	त
×		०		२		३		०	

सा	सा	प	प	प	—	ध॒	ध॒	प	प
घ	रि	प	ल	बी	ऽ	त	त	स	ब
×		०		२		३		०	
प	ध॒	प	—	ग	प	ग	रे॒	सा	—
बि	र	था	ऽ	जे	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ।
×		०		२		३		०	

राग मालवी.

सपौ गपौ गरी सश्च सगौ मधौ रिसौ तथा ।
मालवी कीर्तिता सायं श्रीरागांगा रिवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥१००॥

कोमल धरि तीवर निगम रोहनमें नी नाहिं ।
रिप बादी संबादितें कहत मालवी ताहिं ॥

रागचन्द्रिकासार ॥६०॥

पूर्वीसंस्थानजन्याऽखिलविबुधमता मालवी रागिणीयं
आरोहे निर्निषादा भवति विकलिता धैवतेनावरोहे ।
वादी यत्रर्षभः संप्रविलसति तथा पंचमोऽमात्य इष्टः
संगत्या गस्य पस्याप्यतिरुचिरतरा गीयते सायमेव ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ६० ॥

'मालवी राग' पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसके आरोह में 'नि' दुर्बल और अवरोह में 'ध' दुर्बल स्वर हैं। इसका वादी स्वर रिषभ और संवादी पंचम है। यह राग सायंकाल के समय गाया जाता है। यह श्री अङ्ग से गाया जाता है। इसमें 'गप' और 'निप' स्वर संगति वैचित्र्यदायक होती हैं। यह एक स्वतन्त्र और अप्रसिद्ध रागस्वरूप है, फिर भी यह बहुत रंजक है। मालवी का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में किया हुआ प्राप्त होता है, परन्तु उस समय प्रचलित स्वरूप और इस राग के स्वरूप में आज बहुत अन्तर होगया है।

उठाव.

सां, पग, पग, रे॒मा, साग, मध॒, रें॒, सां ।

चलन.

सां, निप, ग, मंग, रे॒सा, साग, मंध॒, रें॒सां, सां, नि, प,
मंग, मंग, रे॒सा ।

मालवी–त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

सा	गर्म		नि़ सा
सां – – पप	मं ग – पप	ग – रे॒ सा	सा रे॒ सा –
ऊ ऽ ऽ ठन	म न ऽ कर	ले ऽ ऽ ऽ	प्या ऽ रे ऽ
०	३	×	२
नि़ मं	ध॒	नि नि	रें॒ ध॒
सा सा ग ग	मं ध॒ सां –	सां सां सां सां	नि – मं ध॒
दि न क र	अ ऽ स्ता ऽ	च ल तें सि	धा ऽ रे ऽ।
०	३	×	२

अन्तरा.

मं ध॒	नि		नि
ग – मं ध॒	सां – सां सां	सां – सां सां	सां रें॒ सां सां
कं ऽ च न	मं ऽ डि त	से ऽ रा सु	सो ह ऽ त
०	३	×	२
सां		नि	रें॒ ध॒
रें॒ – गं गं	– रें॒ सां सां	सां – सां सां	नि – मं ध॒
दि ऽ व्य पु	ऽ ष्प ग ल	मा ऽ ल बि	रा ऽ जे ऽ
०	३	×	२

मालवी–धमार (विलम्बित)

स्थायी.

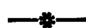
प		ग	प
सां – – प –	ग –	प ग –	– – ग प
आ ऽ ऽ यो ऽ	ऽ ऽ	फा ऽ ऽ	ऽ ऽ गु न
×	२	०	३

			ग
ग – – रे –	सा सा	रे – –	रे – सा –
मा ऽ ऽ ऽ ऽ	स स	खी ऽ ऽ	अ ऽ ब ऽ
×	२	०	३
सा म		ध	
रे सा – ग –	ग –	म ध –	सां – सां –
च लो ऽ स ऽ	ब ऽ	हि ल ऽ	मी ऽ ल ऽ
×	२	०	३
नि		नि	ध
सां – – रें –	सां –	सां नि –	म – ध –
खे ऽ ऽ लें ऽ	ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ।
×	२	०	३

अन्तरा.

ध			सां
म – ध सां सां	सां –	सां – –	रें – सां –
ले ऽ ऽ पि च	का ऽ	री ऽ ऽ	स ऽ ब ऽ
×	२	०	३
सां	गं		
रें – – गं –	– मं	गं – रें	गं रें सां –
रं ऽ ऽ ग ऽ	ऽ उ	ड़ा ऽ ऽ	ऽ ऽ वो ऽ
×	२	०	३
नि सां	गं		
सां मं – गं –	– मं	गं – –	रें – सां –
अ बी ऽ र ऽ	ऽ गु	ला ऽ ऽ	ल ऽ की ऽ
×	२	०	३
		नि	ध
सां सां – रें –	सां –	सां नि –	म – ध –
भ र ऽ भ ऽ	र ऽ	भो ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ।
×	२	०	३

राग विभास (पूर्वी थाट)



मस्तु तीव्रतरो यस्मिन् गनी तीव्रौ रीधौ मतौ।
कोमलौ न्यासधोपेते विभासे गादिमूर्छने।
आरोहे मनिवर्ज्यत्वं गपांशस्वरसंयुते॥

सङ्गीत पारिजाते।

'विभास' पूर्वी थाट से उत्पन्न होने वाला एक बिलकुल अप्रचलित राग है। 'विभास' राग का भैरवमेलजन्य प्रकार पीछे दिया ही जा चुका है, और मारवामेलजन्य प्रकार आगे क्रमिक पुस्तक माला के छठे भाग में दिया जावेगा।

पूर्वी थाट के इस विभास को सम्पूर्ण जाति का माना जाता है। इसमें मध्यम और निषाद स्वर दुर्बल होते हैं। यह उत्तरांग प्रधान राग है। इसकी सायंगेयता दूर करने के लिये कुछ गायक इसके अवरोह में तीव्र मध्यम ग्रहण करने को बचा दिया करते हैं। निषाद अवरोह में लिया जाता है। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी रिषभ है। पंचम पर विश्रान्ति लेने से यह राग अच्छा स्पष्ट हो जाता है। इसके विश्रांति स्थान सा, ग, प और ध॒, भी होते हैं।

विभास—झपताल (मध्यलय).

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

ध	ध	प	ध	प	ग	प	ग	रे	सा
रा	ऽ	ग	बि	भा	ऽ	स	च	तु	र
×		२			०		३		
सा	रे	सा	ग	प	ध	ध	नि	ध	प
का	ऽ	म	व	र	ध	न	के	सु	र
×		२			०		३		
प	ग	प	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प
गा	ऽ	व	त	गु	नि	ज	न	सं	ऽ
×		२			०		३		
सां	ध	नि	ध	प	ध	प	ग	रे	सा
पू	ऽ	र	न	म	नि	दु	र	ब	ल।
×		२			०		३		

अन्तरा

प	म॑	ग	प	ध	सां	सां	सां	रें	सां
अ	व	रो	ऽ	ह	में	म	त	ज	त
×		२			०		३		
सां	रें	सां	गं	रें	सां	—	नि	ध	प
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	अ	नि	क	ह	त
×		२			०		३		

ध	ध	रें	रें	सां	रें	सां	नि	ध	प
पं	ऽ	च	म	मु	का	ऽ	म	है	ऽ
×		२			०		३		
सां	ध	नि	ध	प	ध	प	ग	रे	सा
पा	ऽ	ब	त	अ	नं	ऽ	द	त	ब।
×		२			०		३		

राग रेवा



पूर्वीमेलसमुत्पन्ना ख्याता रेवा गुणिप्रिया।
आरोहे चावरोहेऽपि मनिहीनैव संमता ॥ ८६ ॥
त्र्यंशिका गांशिका वासौ सायंगेया बुधैर्मता।
वर्जने निमयोः सिद्धा गपयोः संगतिः स्वयम् ॥ ८७ ॥
उत्तरांगप्रधानत्वे विभासांगं भवेत्स्फुटम्।
निमयोर्यत्परित्यागस्तद्रागेऽपि सुसंमतः ॥ ८८ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीते (द्वी. पृ. १२६)

पूर्वीमेले भाति वर्ज्या मनिभ्यां
षड्जांशा वा गांशिका कैश्चिदुक्ता ॥
संवाद्यस्यां पंचमः संप्रदिष्टः
सेयं रेवा सायमेवाभिगीता ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ५६ ॥

'रेवा' पूर्वीथाट से उत्पन्न होनेवाला 'औड़व-औड़व' जाति का राग है। इसमें मध्यम और निषाद वर्ज्य होते हैं। इसका वादी स्वर गांधार है। किसी-किसी के मत से वादी ऋषभ है। निषाद और मध्यम वर्ज्य होने के कारण इसका स्वरूप भैरव थाट के "विभास" के समान हो जाता है, क्योंकि विभास में भी ये ही स्वर वर्ज्य होते हैं, परन्तु वादी स्वर के भेद, और पूर्वाङ्ग की प्रबलता से यह राग विभास से भिन्न हो जाता है। 'म' और "नी" वर्ज्य होने के कारण "गप" संगति अपने आप आगे आ जाती है।

चलन.

ग, रेग, पग, रे, सा; सारेग, प, पध, पग, सारेग, रेग,
सारेंसा, धप, ग, पग, रेसा।

रेवा—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

ग	–	रे	सा	सा	–	सा	रे	सा	सा
सां	ऽ	झ	स	मै	ऽ	सु	ख	क	र
×		०		२		३		०	
सा	रे	ग	–	प	ग	प	ग	रे	सा
रे	ऽ	वा	ऽ	रू	ऽ	प	म	धु	र
×		०		२		३		०	
सा	सा	ग	ग	प	–	प	ध	प	–
पू	ऽ	र	वि	मे	ऽ	ल	हुँ	स	ऽ
×		०		२		३		०	
प	–	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
औ	ऽ	डौ	ऽ	बि	न	म	नि	सु	र।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

प	–	प	ध	प	–	सां	सां	–	सां
अं	ऽ	स	ग	हे	ऽ	गं	धा	ऽ	र
×		०		२		३		०	
सां	सां	रें	सां	गं	पं	गं	रें	सां	सां
ग	प	सं	ग	सा	ऽ	ध	न	क	र
×		०		२		३		०	

सा	सा	ग	—	प	रे	ग	प	ध	सां
प्र	ति	मू	ऽ	र	त	बि	भा	ऽ	स
×		०		२		३		०	
रें	सां	ध	प	ग	प	ग	रे	सा	सा
च	तु	र	सु	ज	न	म	न	ह	र।
×		०		२		३		०	

राग जेताश्री या जेतश्री

जैतश्रीरितिरागश्च सायंकालोचितो मतः ।
गांधारांशो निषादेन निजसंवादिनाश्रितः ॥ २७२ ॥
षड्जन्यासस्तथारोहे वर्जितर्षभधैवतः ।
अवरोहे तु संपूर्णः समाख्यातो मनीषिभिः ॥ २७३ ॥
तथा चौडुवसंपूर्णः कोमलौ धैवतर्षभौ ।
त्रयो निषादगांधार मध्यमास्तीव्रसंज्ञकाः ॥ २७४ ॥

सङ्गीतसुधाकरे । पृ. ३८

निसौ गपौ मधौ पश्च मगौ धपौ मगौ मगौ ।
रिसौ जेताश्रिकाऽऽरोहेऽरिधा सायं गवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ६६ ॥

गमनी सुर तीखे जहां मृदुरिध चढत न लीन ।
गनि वादीसंबादिते जैतसिरी कह दीन ॥

राग चन्द्रिकासार ॥ ६२ ॥

जैतश्रीरिह वर्णिता गमनयस्तीव्रा मृदू धर्षभा-
वारोहे रिधवर्जिता पुनरियं पूर्णावरोहे मता ॥
गांधारस्य निषादकस्य च सदा संवादसंभूषिता
गीतालापविचारचारुमतिभिः सायं मुदा गीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥६१॥

जेताश्री राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इसकी जाति 'औडव-सम्पूर्ण' है। इसके आरोह में रिषभ और धैवत वर्ज्य होते हैं। इसका वादी गांधार और संवादी निषाद है। कोई 'पस' का सम्वाद मानते हैं। गायन का समय सायंकाल है। 'मंगमं, ग' स्वर संगति जेताश्री में रक्तिदायक होती है। कोई-कोई इसे मारवा थाट का राग मानते हैं, परन्तु हमें प्रचार के अनुसार चलना ही श्रेयस्कर है। 'सङ्गीत पारिजात' और 'रागविबोध' ग्रन्थों में पूर्वी थाट में रिषभ और धैवत दुर्बल स्वर वाला जेताश्री राग बताया है। हृदयकौतुक में भी जेताश्री का वर्णन आता है, परन्तु वह भैरव थाट में बताया गया है।

उठाव.

निसा, गप, मंधप, मंग, धप, मंग, मंग रेसा।

चलन

सा, गपमं, ग मंग, रेसा, निसा, ग, मंप, धप, निधप,

मंग, मंग, रेसा। प, धप, सां, सां, रें, सां निसां,

गंरेंसां, रेंनिधप। मंप, रेंसांनिधप, प, मंग,

रे
मंग, रेसा।

जेताश्री–सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा		ध		ध					
नि़	नि़	म॑	ग	म॑	ग	रे	रे	सा	सा
अ	हो	ब	ल	रा	ऽ	ग	लि	ख	त
×		०		२		३		०	
सा		म॑				ग			
नि़	–	रे	सा	ग	–	म॑	ग	रे	सा
जे	ऽ	त	शि	री	ऽ	गु	नि	म	त
×		०		२		३		०	
सा						म॑			
नि़	सा	ग	ग	म॑	ग	प	पम॑	ध	प
का	ऽ	म	व	र	ध	नि	जऽ	नि	त
×		०		२		३		०	
प		ध							
नि	–	म॑ध	म॑	ग	–	म॑	ग	रे	सा
सं	ऽ	धिऽ	प्र	का	ऽ	श	उ	चि	त।
×		०		२		३		०	

अन्तरा.

म॑		म॑							
ग	–	प	ध	प	प	सां	सां	सां	सां
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	न	रि	ध	ह	त
×		०		२		३		०	
सां				सां					
नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	ध	प	प
अ	ह	सु	र	नी	ऽ	को	क	र	त
×		०		२		३		०	
ध									
म॑	ध	म॑	ग	म॑	ग	रे	रे	सा	सा
वा	ऽ	दि	ग	प्र	च	लि	त	म	त
×		०		२		३		०	

सां		धृ		ग					
निरें	नि	मंधृ	मं	मं	ग	मं	ग	रे	सा
हुऽ	र	रंऽ	ग	म	न	हु	ल	स	त।
×		०		२		३		०	

जेताश्री—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि													ग		
सा	—	ग	मं	प	—	प	—	प	धृ	प	प	मं	ग	मं	ग
मा	ऽ	न	न	की	ऽ	जे	ऽ	अ	प	ने	पि	या	ऽ	सों	ऽ
३				×				२				०			
मं								प		ग					
प	—	सां	नि	—	धृ	प	प	मं	ग	मं	ग	ग	रे	सा	—
मा	ऽ	न	ली	ऽ	जे	अ	ब	रा	ऽ	धा	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ।
३				×				२				०			

अन्तरा.

मं							नि								
प	धृ	प	सां	सां	—	—	सां	रें	—	सां	गं	रें	रें	सां	सां
तु	म	तो	म	हा	ऽ	ऽ	प्र	बी	ऽ	न	स	क	ल	गु	न
३				×				२				०			
				धृ						ग					
सां	सां	रें	नि	नि	धृ	प	प	प	मं	ग	मं	ग	रे	सा	—
य	ह	बि	न	ती	ऽ	मो	री	मा	ऽ	न	स	या	ऽ	नी	ऽ।
३				×				२				०			

जेताश्री—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि॒	सा	ग	ग	प	प	प	प	प	प	मं	ग	मं	ग	रे॒	सा
क	र	च	तु	र	सु	ध	र	नि	स्	का	ऽ	म	का	ऽ	म
०				३				×				२			

अन्तरा.

प	प	प	सां	—	सां	रें	सां	सां	सां	रे॒	सां	सां	रेंनि	ध॒	प
पा	ऽ	क	चि	ऽ	त्त	बि	न	क	छु	न	हिं	सा	ऽऽ	घ	त
०				३				×				२			
									ध॒						
नि॒	सा	ग	प	प	—	ध॒	प	प	मं	ग	ग	मं	ग	रे॒	सा
जो	ऽ	चा	ऽ	हे	ऽ	ह	र	रं	ऽ	ग	नि	र	बा	ऽ	न।
०				३				×				२			

जेताश्री—त्रिताल (मध्यलय).

स्थायी.

																मं प
																ब
मं	प							नि॒		मं	मं					
प	ग	मंपध॒	प	ग	रे॒	सा	—	सा	—	ग	प	—	ध॒	प	—	
हु	त	दि॒ऽऽ	न	बी	ऽ	ते	ऽ	री	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	
३				×				२				०				

मं मं		मं	मं
प ग प सां	– नि ध़ प	प ग पध़ प	ग रे़ सा, प
अ ज हुँ न	ऽ आ ऽ ये	री ऽ मोऽ रे	ला ऽ ल। ब
३	×	२	०

अन्तरा.

मं		नि	ध़ रें़
प ग प सां	सां रें़ सां –	सां सां नि ध़	नि नि ध़ प
ज ब तें भ	व न ते ऽ	ग व न ऽ	की ऽ नो ऽ
३	×	२	०
मं		नि़ सा	मं
प पमं ग प	ग रे़ सा सा	सा – सां –	नि ध़ प, प
त बऽ ते भ	यो ऽ म न	है ऽ बे ऽ	हा ऽ ल। ब
३	×	२	०
प ग मंपध़ मंग	मं ग रे़ सा		
हु त दिऽऽ नऽ	बी ऽ ते ऽ		
३	×		

जेतश्री–झूमरा (विलम्बित).

स्थायी.

नि़
सा
हा

मं	ध़	मं ध़	ध़
– ग प प	ध़ – प	प – मं ग	मं – ग
ऽ ल ऽ रि	यां ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	मा ऽ ई
३	×	२	०

म ध		रे ध	नि
गममंध म ग रे	ग रे सा	सारेरेम म ग रे	ग रे, सा
हुऽलऽ रा ऽ ऽ	ऽ ऽ उं	हुऽलऽ रा ऽ ऽ	ऽ ऊं। हा
३	×	२	०

अन्तरा.

ध ध		सां	ध
म ग म धप	सां सां सां	– सांसां नि रेंनि	नि ध प
अ ग र चंऽ	द न को	ऽ पल का ऽब	ना ऽ ऊं
३	×	२	०
ध ध	ध	ध	
मध मग म ग	म ग	म – ध रेंनि	ध प –
हीऽ राऽ मो ति	ऽ य न	ला ऽ ऽ लरि	यां ऽ ऽ
३	×	२	०
म ध	ध	म	नि
प – म ग	म – ग	गममध म ग रें	ग रें, सा
ऽ ऽ ऽ ऽ	मा ऽ ई	झुऽलऽ रा ऽ ऽ	ऽ ऊं। हा
३	×	२	०

जेतश्री—त्रिताल (विलम्बित).

स्थायी.

म
प
म्हा

नि	म		सा
प मग म ,सा	ग प मग म	ग रे सा रे	सा – निसा नि
ने ऽऽ ऽ ,अ	के ऽ लीऽ ऽ	डा र् ऽ ग	यो ऽ ऽऽ म्हें
३	×	२	०

मं सा ग प ,प	ध़ प – पप	सां नि निरें निध़ प	मं ध़ ग मं प मं मंग ,प
कां ऽ ईं ,क	रां ऽ ऽ कित	हूं ऽऽ डऽ न	जां ऽ वांऽ। म्हा
३	×	२	०

अन्तरा.

ग म ग प धप	प सां – सां –	सां नि सां रें सां	सां नि –सां निध़ प
उ ण बि नऽ	म्हा ऽ नें ऽ	कां ऽ इ न	भा ऽऽ वेऽ ऽ
३	×	२	०
ग प (प) मंग गमं	मं मं सा ग प मं,गमं	मं ग रे़ रे़	म सा – ऩिसा ,प
ह र रंऽ गऽ	त न ऽ म,नऽ	हा ऽ र् ग	यो ऽ ऽऽ। म्हा
३	×	२	०
नि़ प मंग मं ,सा	मं ग प मंग गमं		
ने ऽऽ ऽ ,अ	के ऽ ऽऽ लीऽ		
३	×		

जेतश्री—त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी.

प

ते

प – मंग गमंसाग	ग ग प – – मंग	मं ग रे़ रे़	सा – – –
हा ऽ ऽऽ रेऽदुऽ	र ऽ ऽ सकि	आ ऽ स ब	डी ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०

सा	ग	र्म	र्म
नि़ सा – गग	प – – पप	प ध़ – पध़	(प) – – गप,प
ला ऽ ऽ गिर	ही ऽ ऽ नित	हो ऽ ऽ नंद	ला ऽ ऽ ला।ते
३	×	२	०

अन्तरा.

		नि नि	
र्म ग – पधुप	सां – सां –	सां – – सांसां	रें नि ध़ प
त न ऽ मऽन	वा ऽ रूं ऽ	औ ऽ ऽ रवा	रूं ऽ स ब
३	×	२	०
प	ध़		
र्म – – गग	र्म प – निरेंनि	नि ध़ प पप	र्म – – गप,प
ना ऽ ऽ मज	पूं ऽ ऽ निऽत	ला ऽ ऽ लगो	पा ऽ ऽ लऽते
३	×	२	०

जेतश्री—त्रिताल (विलंबित)

स्थायी.

र्म
प
म

रे	ग म र्म		
प र्म ग ,साग	प – र्मग गर्म,गर्म	र्म ग – रेरे	सा – नि़सा –
न ऽ ऽ ,तुऽ	मी ऽ ऽऽ सऽनऽ	ला ऽ ऽ गर	झो ऽ ऽऽ ऽ
३	×	२	०
नि़ रे	र्म	र्म	ध़ र्म
सा (सा) नि़ गग	प – र्मप ,प	ध़ प – प	र्म ग र्मग ,प
हों ऽ ऽ ढिंग	तें ऽ ऽऽ ,अ	न त ऽ न	जा ऽ वोऽ। म
३	×	२	०

अन्तरा.

प मं		नि नि	नि रें
मं ग पमं धप	सां सां रें सां	सां सां नि ध	सांरें नि ध प
ज ब हऽ ऽम	तु म पि या	सु ख वा ऽ	कऽ र ही ऽ
३	×	२	
मं ध	ध सां नि	ध	मं ध मं
प मं ग –ग	मं ध नि रेंनि	नि ध प –	प मं ग प
ऐ सो ऽ ऽम	न ऽ रं गसु	हा ऽ ऽ ऽ	वे ऽ ऽ। म
३	×	२	०

जैतश्री—चौताल (विलंबित)

स्थायी.

मं		ध			नि
प –	मं ग	मं ग	रे रे	सा –	सा सा
का ऽ	न्ह र	ज न	म भ	यो ऽ	ज न
३	४	×	०	२	०
मं		मं			
ग प	प –	– प	– ध	– प	मं ग
म भ	यो ऽ	ऽ औ	ऽ ता	ऽ र	व र।
३	४	×	०	२	०
ग					
प –	मं ग				
का ऽ	न्ह र				
३	४				

अन्तरा.

ध					
मं –	ग पमं	ध प	सां सां	– रें	सां –
जा ऽ	ऽ गऽ	ऽ त	प ह	ऽ रु	आ ऽ
×	०	२	०	३	४

सां						सां					
नि	–	सां	रें	–	सां	नि	–	सां	नि	ध	प
सो	ऽ	ऽ	य	ऽ	ग	ये	ऽ	ऽ	हैं	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
मं											
प	नि	–	सां	–	रें	सां	–	निसां	नि	ध	प
टू	ऽ	ऽ	ट	ऽ	ग	ये	ऽ	ऽऽ	हैं	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
मं						ग		ग			
प	–	–	ध	मे	ग	मं	ग	प	–	मे	ग
ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	झ	र।	का	ऽ	न्ह	र।
×		०		२		०		३		४	

राग दीपक.

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

अथ दीपकरागः स्यात्षड्जन्यासग्रहांशकः ।
पंचमस्वरसंवादी आरोहे वर्जितर्षभः ॥ २८६ ॥
अवरोहे निगदितो निषादस्वरवर्जितः ।
गीयते दीपसमये बुधैः षाडवषाडवः ॥ २८७ ॥
केचिदेनं तु संपूर्णं निर्दिशंति विचक्षणाः ।
केचिन्निषादहीनं च प्राहुः कल्याणमेलजम् ॥ २८८ ॥
तीव्रानिषादगांधारमध्यमा धैवतर्षभौ ।
कोमलौ कथितौ षड्जपंचमावचलौ सदा ॥ २८९ ॥

सङ्गीतसुधाकरे । पृ. ३६

पूर्वीमेलसमुत्पन्नो दीपको गुणिसंमतः ।
आरोहणे रिवर्ज्यं स्यादवरोहे निवर्जितम् ॥ ६४ ॥
षड्जस्वरो भवेद्वादी कैश्चित्पंचम ईरितः ।
गानं सुसंमतं चास्य दिने यामे तुरीयके ॥ ६५ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीते (द्वी. पृ. १२७)

मेले पूर्व्यां दीपकः षड्जवादी
प्रारोहे संवर्ज्यतेऽत्रर्षभो हि ।
वर्ज्यः प्रोक्तश्चावरोहे निषादः
सायंकाले गीयते गानधुर्यैः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ६५ ॥

चढत जहां सुर रिखब नहीं उतरत नहीं निखाद ।

गयो पूरवी ठाट में दीपक सपसंवाद ॥

रागचन्द्रिकासार ॥६६॥

यह बहुत प्राचीन राग है। ग्रन्थों के निर्माण काल तक यह लुप्त हो चुका था। और इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद था, ऐसा उल्लेख मिलता है। इस राग के संबंध में अनेक मनोरंजक आख्यायिकायें हैं। आज भी इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मतभेद है। इसके दो तीन स्वरूप प्रचार में हैं। परन्तु वे भी अप्रसिद्ध ही हैं।

इस राग के नाम से जो-जो गीत उपलब्ध हैं उनमें से एक से पूर्वीथाट से उत्पन्न होने वाला स्वरूप बनता है। इसके आरोह में ऋषभ और अवरोह में निषाद वर्ज्य होता है। इसका वादी स्वर षड़ज और संवादी पंचम है। कोई-कोई पंचम वादी और षड़ज को संवादी मानते हैं। यह सायंकाल गाया जाता है। इस राग को सम्पूर्ण-सम्पूर्ण मानने वाले भी कितने ही लोग हैं।

इसके दूसरे स्वरूप, एक कल्याण थाट से उत्पन्न होने वाला निषाद वर्जित राग, और दूसरा बिलावल थाट से उत्पन्न दोनों निषाद वाला राग, भी कहीं-कहीं पाये जाते हैं। इनमें से बिलावल थाट के स्वरूप की चीज पीछे पृष्ठ २६६ पर दी जा चुकी है।

चलन.

सां, प, गपगरेसा, सागप, मधप, गमधपसां, निसांरेंसां, प, गपगरेसा।

दीपक—झपताल (मध्यलय).

(पूर्वीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सां	—	प	ग	प	ग	रे॒	सा	रे॒	सा
दी	ऽ	प	क	क	थ	न	क	र	त
×		२			०		३		
नि़			प						
सा	रे॒	सा	ग	प	प	प	प	ध॒	प
रा	ऽ	ग	ल	ऽ	छ	न	ग्रं	ऽ	थ
×		२			०		३		
			प						
प	—	प	ग	—	म॑	ध॒	प	नि	सां
मे	ऽ	ल	फा	ऽ	म	व	र	ध	न
×		२			०		३		
सां	सां	प	ग	प	ग	—	रे॒	रे॒	सा
दि	न	अ	ऽ	स्त	जा	ऽ	म	ग	त।
×		२			०		३		

अन्तरा.

		प							
ग	—	म॑	ध॒	प	सां	सां	नि	रें॒	सां
आ	ऽ	रो	ऽ	ह	त	ज	रि	ख	ब
×		२			०		३		
सां	नि	रें॒	—	सां	गं	मं॑	गं	रें॒	सां
अ	व	रो	ऽ	ह	अ	नि	क	ह	त
×		२			०		३		

नि़	रे	सा	ग	मं	ध	प	सां	रें	सां
बा	ऽ	दि	सु	र	भ	यो	ख	र	ज
×		२			०		३		
सां	सां	प	ग	प	ग	रे	सा	रें	सा
च	तु	रा	ऽ	को	नि	त	सु	म	त।
×		२			०		३		

संचारी.

रे	सा	प	प	प	प	प	ध	–	प
अ	हो	ब	ल	क	ह	त	मे	ऽ	ल
×		२			०		३		
प	–	ध	प	प	(ध)मं	–	(ग)मं	ग	ग
मा	ऽ	ल	व	म	नी	ऽ	ब	र	ज
×		२			०		३		
मं	ध	मं	–	ग	मं	ग	(रे)ग	रे	सा
क	ऽ	न्या	ऽ	णि	को	उ	क	ह	त
×		२			०		३		
नि़	रे	सा	ग	मं	प	मं	मं	(ग)मं	ग
स	ऽ	त	म	सु	र	बि	र	हि	त।
×		२			०		३		

आभोग.

मं	ग	मं	ध	प	सां	–	सां	सां	सां
लो	ऽ	च	न	गु	नी	ऽ	क	ह	त
×		२			०		३		

सां	–	रें	सां	–	गं	मं	गं	रें	सां
रू	ऽ	प	को	ऽ	मं	ऽ	द्	म	त
×		२			०		३		
सा	रे	सा	ग	म	ध	प	सां	रें	सां
पं	ऽ	डि	त	स	क	ल	च	तु	र
×		२			०		३		
			प						
सां	–	प	ग	प	ग	रे	सा	रे	सा
शा	ऽ	स्त्र	म	त	अ	नु	स	र	त
×		२			०		३		

राग हंसनारायणी



पूर्वी थाट से उत्पन्न होने वाला यह दक्षिण संगीत पद्धति का षाड़व जाति का राग है। इसमें धैवत स्वर वर्ज्य है। कोई-कोई इसे मारवा थाट के अन्तर्गत मानते हैं। इसका स्वरूप सायंगेय रागों जैसा है। रागस्वरूप इस प्रकार है:—

चलन.

निरेगमं, पमंगरे, गमंपमं, गरेसा, निरेनिप, मंग,

निरेगमं, रेगरेसा।



हंसनारायणी—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

रे	रे	ग	मं	प	—	प	—	मं	ग	गमं	पमं	मं	ग	रे	सा
भ	ज	म	न	ना	ऽ	रा	ऽ	य	न	हंऽ	ऽऽ	स	ना	ऽ	म
३				×				२				०			
														रे	
रे	—	ग	रे	सा	सा	प	—	मं	ग	मं	ग	मं	ग	ग	प
पू	ऽ	र	त	स	ब	ते	ऽ	रे	ऽ	म	न	के	का	ऽ	म।
३				×				२				०			

अन्तरा.

प	—	सां	सां	—	सां	सां	सां	रें	रें	गं	रें	ंस	—	सां	सां
ना	ऽ	म	ले	ऽ	त	वा	को	वि	प	त	न	पी	ऽ	र	त
३				×				२				०			
सां	—	सां	सां	रें	नि	प	प	मं	ग	मं	ग	मं	ग	रे	सा
जा	ऽ	य	स	र	न	च	तु	र	तु	नि	र	भि	मा	ऽ	न।
ः				×				२				०			

राग मनोहर



यह पूर्वी थाट से उत्पन्न होने वाला एक अप्रसिद्ध राग है। इसमें उपलब्ध एक ही गीत यहां दिया जा रहा है। यह आधुनिक राग स्वरूप है, अतः इसके लिये ग्रंथाधार प्राप्त नहीं होता। इसमें वादी गांधार और सम्वादी धैवत है। आरोह में पंचम वर्ज्य है। अवरोह में साधारणतः "पमंग" का प्रयोग नहीं किया जाता।

साधारण चलन.

धमंगरे, गरेसा, मंधरेंनिधप, गमंगरेसा। मं ध सां

रेंसां, रें नि ध प.



मनोहर—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा धु	रे	सा ग	सा
धु मं ग ,गमं	ग रे सा सा	रे – रे सा	मंमंरे ग रे सा
अ ति हि ,मऽ	नो ऽ ह र	नै ऽ न न	लाऽऽ ऽ गो ऽ
३	×	२	०
नि धु	धु	धु	रे
सा प – मंधु	रें नि धु प	मं धुनि मंग ,गमं	ग रे सा –
ए री ऽ तेऽ	हा ऽ रो ऽ	श्या ऽऽ मऽ ,सऽ	लो ऽ ना ऽ।
३	×	२	०

अन्तरा.

धु			सां
मं धु सां सां	रें – सां सां	रे –गं रें सां	रें नि धु प
जा ऽ न कि	दा ऽ स मि	ले ऽऽ ह रि	प्री ऽ त म
३	×	२	०
धु धु	रे	नि	रे
मं धुनि मं ग,गमं	ग रे सा –	सां रें निधु मं,गमं	ग रे सा –
ए ऽऽ क ऽ,सुऽ	गं ऽ ध ऽ	दू ऽ जोऽ ऽ,ऽऽ	सो ऽ ना ऽ।
३	×	२	०

स्वर विस्तार.

टिप्पणी—इस पुस्तक में दिए हुए रागों के इन स्वर विस्तारों से विद्यार्थियों के गायन में सुन्दरता आयेगी तथा रागों के चलन उनके ध्यान में भली प्रकार आवेंगे। इन विस्तारों में स्वल्प विराम (कौमा) उचित स्थानों पर रुकने की जगह दिखाते हैं, अतः इन विरामों का विशेष महत्व समझना चाहिये। ये स्वर विस्तार अच्छी तरह से सध जाने पर फिर इनकी सहायता से छोटी-बड़ी तानों को रचने की कला विद्यार्थियों को आयेगी तथा नई-नई तानों को तैयार करने की उन्हें स्वयं इच्छा होगी।

इस पुस्तक में आये हुए रागों के स्वर विस्तार.

—*—

कल्याण थाट

(१) चन्द्रकांत–स्वरविस्तार

(१) गरेसा, नि़ध़प़, ध़प़, सा, सारेगरेसा, रेरेसा।

(२) नि़रेग, रेग, रेरे, गपरेग, मंग, पमंग, रेगरेसा।

(३) नि़रेग, रेसा, रेरेसा, रेरेसा, नि़ध़नि़ध़प़, प़ध़नि़रे, गरे, धगपरे, नि़, रेगरेसा। प़, ध़प़, नि़ध़प़, नि़रे गरेग, पमंग, निधपमंग, रेग, प, रे, सा।

(४) साध़प़, ध़ध़प़ प़ध़सा, नि़रेगरेसा, सासागरेग, रेग, नि, निमंग, रेग, प रे, सा।

(५) धमंगरेग, मंगरे, प, निध, मंगरे, गपगरेसा गगरेगप, धप, सां, निरेंगंरेंसां, निरेंगंपंगंरेंसां सांरेंसांनिध, निधप, ग, रे, गप, निरें, निधमंगरे, गप, गरेसा।

(६) सासा, प, प, मंगरे, धध, निधमंगरे, धपमंगरे, गप, गरे, नि़रेग, निधपमंगरे, गपगरे, गरेसा।

---

(२) सावनीकल्याण–स्वरविस्तार

(१) गरेसा, सा (सा)नि़ध़, नि़ध़प़, प़सा, सारेसा, सारे गरेसा, मगप, पध, प, गधप,ग, रेसा, नि़ध़सा, सारे, सा।

(२) सारेगरेसा, मगप, ग, रेसा, मगपध, प, गरेसा, नि़ध़सा, रेसा।

(३) सा, ग, मगप, प, ध, प, पधनिधप, पध, प, ग, रेग, सारेग, पग, निधप, ग, धप, ग, रेसा, नि़ध़, ग, रेसा, नि़ध़प़, सा, सारे, सा ।

(४) गरेसा, पगरेसा, मगप, धप, गरेसा, मगपनिधप, गरेसा ।

(५) सारेसा, निधनिधप, ग, रेग, पग, रेग, रेसा, सारेसा ।

(६) प, पधप, पधनिधप, धप, मगप, निधसां, सां(सां) निधनिधप, प(प)ग, सामगप, निधप, ग, रेग, रेसा ।

(७) पपसां, सांरेंसां, सां(सां) निधनिधप, सांगंरेंसां, निधप, मगपनिधसां(सां)निधप, पधप, ग, धप, ग, रेसा, नि़ध़प़, सा, सारेसा ।

(८) पनिधसां, सांरेंसां, गं, रेंसांनिध, सां, रेंसां, मंगंपं, गंरेंसां, निध, सांरेंसां, निध, निध, प, पग, धप, ग, रेसा, नि़ध़, नि़ध़प़, सा, रेसा ।

(९) सारेगरेसा, सामगपगरेसा, सामगपनिधपगरेसा, सांनिधपगरेसा, गंरेंसांनिधपमगरेसा, नि़ध़, सा, सारे, सा ।

(१०) सासारेसा, सासागगपपधपगरेसा, सासागगपपधनिधप–गरेसा, सासागगपपनिधसांरेंसांनिधपमगपधपगरेसानि़ध़, सा, सासारे, सा ।

(११) सागरेसा, सामगपगरेसा, सामगपसांनिधपगरेसा, सामगप-निधसांरेंसांनिधपगरेसा, सामगपनिधसां, गं, रेंसां, निध, प, गधप, ग रेसानि़ध़सा, सासा, रे, सा ।

(१२) सांनिधपपगरेसा, गंरेंसांनिधपपगरेसा, सांमंगंपंगंरें, सांनिधपपगरेसासामगपनिध, गंरेंसांनिध, निधप, मगप, धपगरेसा, नि़ध़, सा सासारे, सा ।

(३) जैतकल्याण–स्वरविस्तार

प ग　　　　　　　　　　प प
(१) सा, गपरे, सा, सा, रेसा, सासागगप प, पधग प,
ग
धपरे, सा

प　　ग
(२) सासारेसा, प़, सा, रेसा, गप, प, धपरे, सा ।

(३) सागप, प, गप, प, सां, रेंसां, प, सागपसां, प, पधग
ग
प, धपरे, सा

ग　　ग　　ग
(४) सारे, सा, प़सारे, सा, गपरे, सा, धपरे, सा, गपधपरे, सा ।

ग
(५) सागपसां सां, गपसां, गपधपरे, सा ।

ग
(६) सारेध़सा, गपधप, रे, सा, प़प़सा, रेसा, पगप, धप, सां,
ग
पधपगपधप, रे, सा ।

(७) गरेसा, रेसा, सागप, गप, सां, पधप, धध, प, गपधप
गरे, सा ।

---

(४) श्यामकल्याण–स्वरविस्तार

(१) सा, रे, मरे, रेमरे, नि़सा, रे, मंप, प, धप, मंप, म, रे,
पगमरे, नि़, सा ।

(२) प़नि़, सा, रेनि़सा, मगमरे, नि़सा, मंपधप, मंपम, रेप-गमरेनि़सा ।

(३) मम, रेनि़सा, रेनि़, म, रेनि़, प़नि़, रेनि़सा, सारेमंप, गमरे नि़सा ।

(४) प़प़नि़सा, रेरेनि़सा, मंपरेनि़सा, रेमरे, मंप, निमंप, मंप, धमंप, मग, गमपधमंप, गमप, गमरे, नि़सा, रे, मंप ।

(५) पप, सां, सां, रेंनिसां, निसांरें, मंरें, निसां, निधप, मंपप, निरेंनि, मंप, मंपप, धमंप, मग, गमपधमंप, गमप, गमरे, नि़सा ।

---

(५) मालश्री—स्वरविस्तार

(१) पगसा, सासागगप, प, पमंग, पगसा । सासाप़नि़सा, गपग, मंग, सा, नि़सागपमंग, पगसा ।

(२) पमंग, पमंग, मंग, सागमंग, मंग, सा । प़प़सा, साग, सासा, गपमंगपगसा, निपमंग, गमंपमंगगसा ।

(३) पपगसा, गपसां, निसांगंसां, पंमंगंसां, निनिपमंगपसां, सां निपग, सागपसां, निपगगपग, गसा ।

(४) सासापपमंपनिप, पमंगपसांनिपप, निपगसा गपसां, गंसां, निप, गपगसा ।

बिलावल थाट

(६) हेमकल्याण—स्वरविस्तार

(१) पपधप, सा, सारेसा, गरेसा, गमप, गमरेसा, सारेसा, धधप, सा, गमप, गमरेसा ।

(२) सासारेसा, रेरे, सा, प, मगमरे, सा, गमप, गमरे, सा, सासा, मग, प, पधप, पपसा, रेरेसा, गमप, गमरे, सा ।

(३) सारेसा, गमप, धप, पधप, सां, धप, गमप, गमरे सा । धधप, सा, पगमरे, सा, सारेसा, धप, गमरे सा, रेरेसा ।

(४) सासा, गग, प, धप, गमप, गमरेसा, सामगप, धप, पगमरे, सा, रेसा ।

---

(७) यमनीबिलावल—स्वरविस्तार

(१) सा, सारेगरेसा, निसा, पधनिसा, सारेगरेसा, सागमरेग, पमंप, गम, रेग, गपमग, मरेसा, रे, सारेगरेसा । सासा, गमरेग, पमंप, मगमरे, सा, सारेग, सानिध, निधप, पपधधप, मंप, मगमरे, सा ।

(२) प, धनिध, सां निध, सां सांरेंगंमंरेंसां, मंप, :सांधसां, रेंसांनिधप, पधप, मंप, मगरेग, पमगमरे, सा ।

---

(८) देवगिरी—स्वरविस्तार

(१) सा, निध, निधसा, रेग, गमरेग, मरे सा । सारेसानिध निधप, पपग, मग, रेग, पमग, मरेसा ।

(२) पप, निध, सां, रेंसां, निध, निसां धनिप, गमधध, निधनिप, गपधनिप, मग, पगमग, मरे, सा, सानि़ध़, सारेग ।

(३) सा, ध़नि़, ध़सा, रेग, गप, गरे, गमगरे, सारेसा ।

(४) सारेग, ध़नि़ध़सा, रेग, पग, मगरे, सारेगमगरे, गप, धप, गमगरे, गरेसा ।

ध़
(५) नि़, ध़, सारेग, ध़सारेग, मग, प, धनिप, धप, मगरे, सारेगप, गमगरे, गरे, सा ।

(६) साग, रेग, पग, मगरे, गप, मगरे, ध़नि़रेग, पमगरे, गपधनिप, गमगरे, गरे, सारेसा, नि़ध़, सारेग ।

(७) गग, प, धनिप, धग, मगरेगमपमगरे, गपनिधनिप-मगरे, गरेसा, नि़ध़, सारेग ।

ध
(८) निनिप, ग, मपमग, रे, सा, गमगरेग, पधनिप,

ध
गमग, रेग, पनिधनिसां, निनिप, गमगरे, प, गमगरे, गरेसा, नि़ध़, सारेग ।

ध ध
(९) पपधप, धनिध, निसां, निनिप, सांरेंगंसां, निनिप, धनिधप, प, गमगरे, गप, गरेसा, नि़ध़, सारेग ।

(१०) सारेगपधनिध, निसां, सांरेंसां, धनि, धसां, रेंगं ।

ध
मंगंरें, सांरेंगं, सां, निध, नि, ग, मगरे, सारेगसा, नि़ध़, सारेग ।

(११) सारेगरेसा, सारेगपमगरे, गरेसा, सारेगपधनिप, मगरे, गरेसा, सारेगपधनिसां, निधनिप, मगरे, गरेसा ।

(१२) धसारेग, धसारेगमग, धसारेगप, मग, धसारेगपधनिप, मग, गपधनिसांनिधनिप, सांनिधपमगरे, गरेसा निधसारेग ।

(१३) सारेगपरे, गपधनिप, गपरे, गपधनिसां, निधनिप, गपरे, गपधनिसां, रेंसां, निधनिप, गपरे धसारेगपरे, गमगरे, सा (सा), निध, सारेग ।

(१४) पपधनिसां, धनिधसां, सांरेंगंमंगं, गंरेंसां, पंमंगंरें, गंमंगंरें, गंरेंसांनिध, निप, पपधनिसां, निधनिप, मग।

ध

पमगरे, सारेगसा, निध, सारेग ।

(१५) सारेगरेसा, धनिसारेगपपमगरेसा, सारेगपधनिपप मगरेसा, गपधनि सांरेंगंरेंसांनिधपमगरेसा ।

---

(६) सरपरदा—स्वरविस्तार

(१) सा, रेगम, धधप, पमंप, मग, गमग, रेसा, गमधप, गमरेसा ।

(२) गरेसा, सारेगमरेरेसा, धपधमग, मपमग, रेरेसा । सारे सा, निसा, पधनिसा, गरेगमप, गमरे, सारे गमधधप ।

(३) गमप, धधप, मप, धनिधप, मग, रेगमग, मपमग, मरे, सा, धप ।

(४) निधनिसां, निधप, धप, निधप, मपधनिसांनिधप, मग, गम, धधप, मप, मग, मरे, सा । मप, धनिध, निसां,

सांरेंगंमंगंरेंसां, सांनिधप, गम, धनि॒ध, नि॒प, धनिसां, सांरेंसां, निधधप, गमरे, सा, सा, रेगम, धधप ।

---

(१०) लच्छासाख—स्वरविस्तार

(१) सा, पमग, मप, गम, रेग, मगरेसा, सासारेगमप, धनि॒ धप, मपमग, नि॒नि॒ध, रेगम, पमग, रेसा ।

(२) पपधनिसां, निसां, सांनिधनिसां, सांनिधधप, पधपमग, गगमरे, गमप, गमरे, सा, सा, रेगमप, धनिसां, रेंगं रेंसां, सांरेंसांनिधप, धमग, मरेरेसा, पप, मग, रेगमप, मग, रेसा ।

---

(११) शुक्लबिलावल—स्वरविस्तार

(१) सा, ग, गम, गमप, मग, रेग, गम, प, सां, रेंसां, धधप, मग, रेग, मप, मग, म, रेसा ।

(२) सा, गग, म, पमग, रेसा, सा, रेगम, गम, पपमपम, ग, पधप, धनि॒धप, मपमग, रेग, पमग, मरेसा, साग, गम ।

(३) गमप, धप, निध, प, सां, रेंसांनिध, निधप, म, पमग, म, रेरेसा ।

(४) मगम, नि॒धप, मपम, मगरेग, सा, गम, मग, मप, धनिसां, निसां, रेंसांनिधप, नि॒धप, मगमरेसा, साग, गम ।

(५) सारेगम, रेगमप, धम, धनि॒धपम, धमप, गम, रेरेसा, रेगम ।

(६) पप, धनिध, निसां, सां, सांरेंगंमं, रेंरेंसां, रेंसांनिधनिसां निधप, ममप, धनिसां, निधपमपम, ग, रेग, म, पमगम, रेरेसा । साग, गम ।

---

(१२) कुकुभ—स्वरविस्तार

(१) पपमगरेग, सा, रे, सा, प़, ऩिसा, रेरे, मप, मगरेगसा । धऩिधप, धमग, रेग, सा, रेगमप, मगम, रेसा, सारेसा, रेमप, धम, गम, रेसा, सांनिध, ऩिधप, मगमरेसा ।

(२) ऩिसा, ऩिध़ऩिध़प़, सा, रेपमपधमगरेगसा, मपधपध-मग, मरेसा ।

(३) पप, धनिध, निसां, सां, धनिध, सां, रेंसांधऩिप, गम-रेगपध, रेंसां, धऩिप, धपमगरेगसा, रे, रे, रेगमगरेसा ।

---

(१३) नट—स्वरविस्तार

(१) सा, सा, म, म, गम, मपप, मग, गम, मप, धनिसां, निध, निप, रेग, गमप, सारेसा ।

(२) सारेसा, गम, पम, गम, धऩिप, मपधऩिप, मपमगम, मप, सांधऩिप, रेगपम, गम, सारेसा ।

(३) पमगम, पमप, धनिसांनिधऩिप, सां, रेंगंमं, रें रेंसां, सांधनिप, मपसां, धऩिपमप, मग, म, साग, गम, प, रेगमप, सारेसा ।

(४) पपधसां, निसांरेंरेंसां, सांरेंगंगंमं, रेंरेंसां, सांनिधनिप, मपमगम, सांधनिप, गगमप, सारेसा ।

---

(१४) नटनारायण–स्वरविस्तार

(१) सा, प, गमरेसा, प, धप, सारेगमपगम, सारेसा।

(२) गमरेसा, रेसा, ध़प़, सा, सारेगमप, गमधप, गम, सारेसा।

(३) प, गमप, सारेगमप, धप, सांधप, गमप, सा, रेसा, धप, गम रेसा ।

(४) मरेसा, पधप, गमरेसा, सारेगमपगम, सारेसा, सांरेंसां, पगमप, गमरेसा, सारेगमधप, गमपगमरेसा ।

(५) म, सारेसा, प, गमसारेसा, धपगमसारेसा, सांधपगम–सारेसा, रेंसांधपगमसारेसा, सांरेंगंमंपं, गंमंसांरेंसांधप, गमपगमसारेसा ।

(६) पपसां, रेंसां, ध, सांरेंसां, धप, पसांरेंसांधपसारेगमपगम, सारेसा ।

(७) सासारेरेसासा, पपधधपपगमरेरेसासा, सांसांरेंरेंसांसांधप–गमपपगमरेसा, सारेगमपग, मसारेसा ।

---

(१५) नटबिलावल–स्वरविस्तार

(१) सासाग, गम, पम, मपप, म, गग, मपपधनिसां, सां निधऩिप, मग, मरे, सा ।

(२) पपधनि, धनिसांसां, सांनिध, निसां, निधधप, मगम, धधनिपप, धनिसां, पपधऩिप, मपमग, मरेरेसा, सासा, ग, गम, सा ।

(१६) नटबिहाग–स्वरविस्तार

(१) सा, ग, ऩिसा, गम, मप, म, ग, गमपनि, प, गमपध, मग, सा।

(२) सा, सा(सा)ऩिपऩिसा, ऩिसा, गम, ग, गमपनिसां पम, गम, सागम, पमग, गसा।

(३) सा, मगप, निसां, प, गम, गमपनिसांरेंसां, पम, ग,
रे
ग, गम, पधमग, गरेसा।

(४) सागमपम, पनिसांरेंसांनिधपगम, गंरेंगंमंगंरेंसां, निधप, गम, पनिसांरेंसां,निधप, गम, पधमग, पमग, रेसा।

(५) सागमपमगरेसा, सागमपसांनिधपमगरेसा, सांरेंसां–निधपगमपनिसांगंमंगंरेंसां, पधम।

---

(१७) कामोदनाट–स्वरविस्तार

(१) सा, गमपगम, रेसा, रे, ग, म(प), मग, मरे, सा, रेसा, धऩिप पपसा रे, प, धप, सां, धप, ग, मप, गमरेसा।

(२) सा, गमरेसा, प, धप, गमपगम, रेसा, रे, गम(प)पग, मरे, प, धप, सांरेंसां, धऩिप, पग, मरे, गम(प), मग, गमपगमरेसा।

(३) पगमरेसा, रेसा, धऩिप, सा, रेसा, मगप, धप, सां, धप, गम(प), पग, मपगमरेसा, रे, प(प), पग, गमधप गमरे, गमपगमरेसा।

(४) सा, रे, पगमरे, धप, गमरे, रेगमधप, गमरे, प, सांनि धप, गमपगमरे, सारे, गम(प), गमरेसा।

(५) रेसाधप़, ध़नि़प़, ध़प़, सा, रे, गम(प), पगमरे, प, सां रेंसां, धप, गमपगमरेसा ।

(६) सा, मगप, सांधसां, प, धप, सांरेंसां, धप, गमध, प, पग, मधप, मग, म रे, गमपगमरेसा ।

(७) पपसां, सां, रेंसां, सांध, सां, रेंसां सांनिधप, गमप, सां, धप, गमरे, प, धप, पग, मपगमरे, सासामगप, सां, धप, गमपगमरे, सा ।

(८) सारेसा, धपपग, गमपगमरेसा, सांसांधप, गमपगमरेसा, पसांरेंसां, पधप, गमध, प, पग, गमपगमरेसा ।

(९) गमरेसारे, पगमरेसारे, गमधपमगमरेसारे, गमधपसां-रेंसांनिधनि़पगमरेसारे, गमपगमरेसा ।

(१०) सासारेरेसासा, पपगगमरेसासा, रेरेगमधपगमरेसा, रेरेपप-धपसांरेंसांसांधपगमपगमरेसा ।

---

(१८) केदारनाट-स्वरविस्तार

(१) सा, गम, मप, धप, मग, रेसा, सा, ध़प़, सा, नि़सारे-गमपगमरेसा, रे, सा ।

(२) सा, ध़नि़सारेसा, ध़प़, सा, म, प, ध, प, म, गरेसा, नि़सारेगमप, गमरेसा, रे, सा ।

(३) म, मप, धनि़प, धपम, प, सां, धप, म, गरे, नि़सा-नि़सारेगमपगमरेसा, ध़प़, म़, प़, सा, रे, सा ।

(४) मगरेसा, नि़सारेगमप, म, रेसा, मपधनिधप, म, गरेसा, मपधनिसां, निधप, म, नि़सारेगमप, गमरेसा ।

(५) गमप, मगरेसा, धपमगरेसा, सांनिधपमगरेसा, सांरेंसां निधप, धनिधप, म, गरेसा, नि़सारेगमपमगरेसा ।

(६) सा, गम, मपम, गरे, सारेसा, म, प, धनिप, म, गम, मपधनिसां, धनिप, म, धपमगरेसा ।

(७) पपसां, सां, रेंसां, सां, गंमंरेंसां, निसांरेंगंमंपंगंमंरेंसां, सांरेंसां, धनिप, धपम, गम, सागम, धपम, ग, रे, सारेगमपगमरेसा ।

(८) मगरेसा, पपधपमगरेसा, सांरेंसांनिधपमगरेसा, निसां-रेंगंमंपंगंमंरेंसां निधपमगरेसा, सासारे, सा ।

(९) पपधपमम, मपधनिसांनिधनिपपधपम, पपसांसांरेंरेंसां-निधपधपमम, पपसांरेंसांसांरेंगंमंपंमं, सांरेंसांनिधपम, सारेगमपगमरेसा ।

---

(१९) बिहागड़ा—स्वरविस्तार

(१) गमग, सा, नि, (ध)निसा, म, ग, मरेग, मध, निधप, गम, पमग, रेसा ।

(२) सा, गम, गमपधनिधप, गम, गमपनिसां, निधप, गम, पमग, सा ।

(३) सा, मग, म, (प), मग, निधप, गम, प, निसांरेंसां, धनिधप, गम, पमग, रेसा,

(४) सा, रेसा, गमगरेसा, पमगरेसा, गमध, पधनिधप, गम, गरेसा, गमपनिसांनिधप, सांगंरेंमंगंरेंसां, निधप, धगम, पमग, रेसा ।

(५) सा, प, गमप, निधप, निसां, धनिधप, पनिसांरेंसां, धनिधप, गमपनिसांगंरेंसां, मंगंरेंसां, (नि), धप, गम, गमपगमगरेसा ।

(६) प, (प), मग, म, सागम(प), गम, सां, प(प), गमग, पनिसां, रेंसां, (प), गम, गमपधनि॒धप, गमग, मधपम गरेसा ।

(७) पपनि, ध निसां, सांरेंसां, गंरेंमंगंरेंसां, धनिसांनि॒धप, गम, पनिसांरेंसांनिधप, नि॒धप, गम, पमग, रेसा ।

(८) पपमगरेसा, नि॒धपपगमपमगरेसा, मं, गंरेंसांनिधप, ध, पधनि॒प, गम, पमगरेसा ।

(९) पपनिसांरेंसांनिधनि॒धप, गमपनिसांरेंसांनिधनि॒धप, पनिसांगंरेंमंगंरेंसां, धनि॒धप, गम, सागमपगमधपमगरेसा ।

---

(२०) पटबिहाग—स्वरविस्तार

(१) गमनि॒धप, गमरेग, मपमग, सा, सा(सा) नि़, नि़ध़नि़सा, सा, रे, रेग, गमप, गमरेग, मनि॒धप ।

(२) गमग, सागमपगमग, मनि॒धप, गमग, गमपनिसां, निप गमग, सारे, रेग, गमप, गमग, पमग, रेसा ।

(३) ग, सा, सा(सा), नि़ध़प़, प़नि़सा, रेगमपगमग, सा, पनिसांरेंसां, निप, गमग, रे, रेग, गमप, गमग, मनि॒धप ।

(४) प, निप, नि(सां)निप, गमनि̱धप, पनिसांरेंसां, निप, रें,
रे
रेंगं, गंमंगंरें, सां, निप, मग, म, ग, सारे, रेग, गमप,
रे
गमग, मनि̱धप ।

ध̣ रे
(५) गमग, सा, नि̣, नि̣सा, रे, रेग, गमप, गमग, नि̣सा, नि̣
रे
सागमप, गमनि̱धप, गमग, नि̣सा, गमपनिसां, निप,
रे रे
गमग, नि̣सा, गमपनिसांगंरेंसां, निप, गमग, मनि̱धप,
रे
गमग, सानि̣, प̣नि̣, सारे, सा ।

(६) प, मग, मनि̱धप, गमग, सां, निप, गमग, मंगंरेंसां,
रे
निप, गमग, रे, गमप, गमग, सारे, नि̣सा, ग, गम
नि̱धप ।

ध
(७) गमपनिसां, सां, रेंसां, गंरेंसां, नि, नि(सां), निप, गम
रे रे
ग, गमपनि, सांरेंनिसां, निप, गमग, सारे, रेग, गमप,
रे
गमग, मनि̱धप ।

रे रे
(८) गमग, नि̣सा, सारेरेग, गमपगमग, नि̣सा, नि̣सागमनि̱
रे रे
धपगमग, नि̣सा, गमपनिसां, प, गमग, नि̣सा, गमप
रे
निसांगं, सां, निप, गमग, मनि̱धप ।

(६) सांनिधपमगरेंसा, गंरेंसांनिधपमगरेसा, गंमंपंगंमंगं, सांरें
रेंनिसां, निप, मग, सा, सारे, रेग, गम, निधप ।

(१०) गसारेनिसा, पगमरेगसारेनिसा, सांपधगमरेगसारेनिसा, गंसांरेंनिसांपधगमरेगसारेनिसा, गंमंरेंगं, सांरेंनिसां, पग
मरेग, मनिधप, गमग, मपमग, निसा ।

---

(२१) सावनी—(बिहाग अङ्ग)—स्वरविस्तार

(१) ग, सा, निधनिप, निधनिरे, सा, ग, मग, मपसां, प मग, सा ।

(२) सापमग, सा, निधनिरे, सा, ग, मपनिसां, प, मग, निरे, सा ।

(३) निरेनिसाग, मग, सा, पसा, निरेसा, मग, प, गमग, सां, प, मग, पनिसाप, मग, निधनिरे, सा ।

(४) सा, ग, मग, प, मग, निधनिरें, सा, प, मग, गमपनिसांरेंनिसां, मंगं, सां, प, मग, गंनिरेंसां, प, गमपसां, प, मग, सा, निधनिरेसा ।

(५) निधनि, प, गमग, गमपधनिप, गमग, मपसां, प, गमग, मपनिरेंसां, प, गमग, गमपनिसांगरेंसां, पगमपसां, प, मग, सा ।

(६) पप, गमपनिधनिरें, सां, गंरेंसां, गंमंगंरेंसां, निधनिरेंसां, पसां, पगमपसां, सागमपसां, प, मग, सा ।

(७) पप सांसां, निधनिरें, सां, गं, सां, गंमंगं, निरेंसां,

पंमंगं, निरेंसां पनिरेंसां, गमपनिरेंसां, सागमप, निध-
निरें, निसां, पग, मपसां, प, मग, सा ।

(८) गरेनि़रेसा, पमगरेनि़रेसा, निधनिप, मगरेनि़रेसा, प़नि़
सारे, नि़सागमप, निरेंसांमंगंरेंनिरेंसांनिपमगरेनि़रेसा ।

(९) पपनिसां, गंरेंसांनिधनिरेंसां, निप, निसांगं, पंगंमंगंरें-
निरेंसां, पगमपगरे, नि़रेसा ।

(१०) पपमगरेसा, सांसांपमगरेसा, निरेंसांपगमगरेनि़रेसा,
निसांमंगंरेंसां, पगमपसां, सागमपनिसांनिपमगरेनि़रेसा ।

---

(२२) मलुहाकेदार—स्वरविस्तार

(१) सा रेसा, प़, म़, प़, नि़, सा, रेरे, सा, नि़सारेसा, नि़रे
सा, प़नि़सा, रेरेसा, गमप, गमरे, सा । सासागग, मरे,
गमप, गमरे, नि़सा रेसा, प़म़प़, नि़, सा ।

(२) गमरेसा, पगमरेसा, नि़रेसा, प़म़म़प़, नि़सा, गमपगमरे,
नि़सा, नि़सागमप, निप, गमरे, नि़रेसा, गमरेसा, प़,
नि़सागमपगमरे, नि़सा ।

(३) नि़सा, प़, म़म़प़, नि़प़म़प़नि़सा, ममरे, नि़सा, गमपरे,
नि़सा ।

(४) गमप, सां, सां, रेंसां, गंमंपंगंमंरेंसां, सांसांरेंसां, निप,
ग, मप, गमरे, नि़रेनि़सा ।

(५) गगपसां, सां, रेंसां पनिसांरें, सांनिधप, गमपग, मरे
नि़सा, सां, पगमरे, नि़रेसा, सा, प़, म़म़, प़सा, गमप
गमरे, सा ।

---

(२३) जलधर केदार—स्वरविस्तार

(१) सा, प, धपम, पसां रें, सां, धपम, मरेप, धपम, सारेसा ।

(२) साम, मप, मरेप, प, धपम, मप, सां, धपम, पम, रेसा, रेप, मपधसां, पधपम, मपम, रेसा ।

(३) सा, रेप, धपम, मप, सांरेंसां, पम, धपम, मपधसां, पम, धपम, रेसा ।

(४) पधप, साधपरेसाधप, मंरेंसां रेंसांधप, म, पसां, धपम रेमरेप, धपम, मरेसा ।

(५) सा, रेसा, रेप, सारेसा, सांरेंसां पधपम, पसां, पम, धपम, रेप, धपम, पम, रेसा ।

(६) मपध, पसां, सां, सां, सां, रेंसां, मंरेंसां, पंमं, रेंसां, रेंसांधप, पधपम, मप, म, सारेसा ।

(७) सा, रेप, धप, म, धप, सां, धपम, पसांरेंसांधपम, मंरेंसां धपम, पम, सारेसा ।

(८) साम, रेप, म, मपधसां, पम, पधपमरेसा, रेंसांधपम, रेसा, मरेसा, धपमरेसा ।

सां
(९) मपध, सांसांरेंसां, सां, रेंमंरेंसां, ध, पम, मप, सां, धपम, रेसा ।

(१०) पसांरेंसां, मंपंमंरेंसां, धसां, रेंसां, धपम, मरेप, धसां, धपम, म, रेसा ।

(११) सामरेसा, सापमरेसा, सामरेपधपमरेसा, सामरेप,

धसांधपम, रेसा, मपधसांरेंसां, धपम, रेसा, मंरेंसां–
धपम, रेसा ।

(१२) सारे सा, मपम, पधप, सांरेंसां, धपमरेप, सां, धपम,
रेसा

(१३) सासा रेरे सासा, रेरे पप मम रेरे सासा, रेरे पप धप
मम रेसा, रेरेपपधपमप, सांरेंसांसां धप मम रेसा रेरे पप
धपमप, सांरेंसांसां रेंमं रेंसां धप मम रेसा, रेरे पप धप
मप सांरेंसांसां, मंमं रेंसां रेंपं मंमं रेंसां धप मम रेसा ।

---

(२४) दुर्गा–स्वरविस्तार

(बिलावलमेलजन्य प्रकार)

(१) प, मपधम, मरे, प, पधम, रेप, म, सा रे, सारेसा, सांध,
सांरें, पधम, प, मपधम ।

(२) मरेसा, सारेसा, पम, सा रेसा, धधम, रेप, धम, रेपम,
सारेसा, साधसा, मपधम, सांध, म, रेपधम, पम, रे, धम,
पमरेसा, प, मपधम ।

(३) मम, प, सां, सां, सांरेंमंरें, सां, पध, म, मपसां, रेंरें
धसां, मपसां, पधधम, पमपध, म, रेम, सारेम, सारेसा ।

(४) सांध, सांरें, सांप, धम, पमपधम, मरेपप, धधम, पपम
सारेरेसा, सांरेंमं, सां, पधम, रेप ।

---

(२५) छाया–स्वरविस्तार

ग ग रे
(१) सा, रे, रेग, गप, मग, मरेसा, रेरेसा, धनिप, पसा, गरेगप, मगमरे, सा ।

ग ग
(२) सा, गरेसा, पमग, रे, रेगप, मग, रेसा, सारेगरेसा, धनिप, पसा, ग, रेगमप, मग, रे, सा ।

ग
(३) प, मपमग, रे, रेगम, मग, धनिप, मपमग, रे, रेगम-गरेसा, सागरेसा, धनिप, मपसा, रे, सारेगमपमग, रे, सा ।

रे
(४) प, धप, धनिप, सारेग, गप, मप, मग, मरे, रेगपमग, मरे, सा ।

(५) मगरेसा, पमगरेसा, धनिप, रेगपमगरेसा, पपसांरेंसां, धनिप, मग, रे, रेगपमग, मरेसा ।

(६) पपसां, सां, रेंसां, सांसांरेंगंरेंसां, सांसांरेंगंपंमंगं, मंरें, सां, सांरेंसां, धनिप, गमरे, रेगपमग, मरे, सा ।

(७) सांसां धपगमरेसा, सांसांरेंगंरेंसांनिधपरेगपमगरेसा, सांसांरेंगंपंमंगंरेंसांनिधपमगरेसा ।

---

(२६) छाया–तिलक–स्वरविस्तार

रे
(१) सा, रेग, गम(प), म, ग, सारेग, सा, (म), गरेग, सासारेमग सा ।

(२) सा, मरेसा, रेसा, प़, ध़सा, रेगसा, सां, प, धम, गरेगसा, रेग, रे, गमप, म, गरेग, सा, रेग, सा ।

रे

(३) म, मप, धमप, सां, धनिप, रेग गमप, म, गरेग, सा, सां, प, धम, गरे, रेग, गमप, म, ग, सा ।

(४) गरे; प, म, गरे; प, धम, गरे; रे, ग, म, प, सां, धनिप, मप, धम, पग, मरे, सा, रेसा, ध़नि़प, प़सा, रेगसा ।

रे

(५) प; रेग, गमप; धप, सां, प; सांरेंसां, प, परेंसां,

रे रे

धनिप, रेग; गम, प; प़नि़सारे, ग, गमप, म, गरेग, सा ।

(६) मपनि, निसां, रेंगं रेंपं, मं, गंसां, रेंसां, धनिप, मप, सां, प, धम, गरेग, सा ।

(७) पपसां, रेंसां, रेंपंमं, पंगं, मंरेंसां, सांरेंसां, धनिप, सांधनिप, धप, मपसां, प, धनिप, म, ग, रेग, सा ।

(८) सारेगसा, रेपमगरेगसा, रेगमपधम गरेगसा, रेगमपसां, प, धमगरेगसा, पनिसांरेंसां, धनिप, रेपमगरेगसा ।

(९) पपसांसांपधमगरेसा, पपसांरेंसांधनिपमगरेसा, मपनि-सांरेंगंमंपंमं-रेंसां निधनिपमगरेगसा ।

(१०) सासारेगमपधनिसांधनिप, मगरेगरेसा, रेगमपनिसांरें-सांनिधनिप, मगरेगरेसा रेगमपनिसांरेंगंमंपंमंगंरेंसांगंरें-सांनिधनिपसांनिधपमगरेसा ।

(२७) गुणकली–स्वरविस्तार

(एक प्रकार)

(१) पपधनिसांरेंसां, सांनिध, निधप, पसांसांधधप, धपप, पपधधपप, गमरेरेसा, साध़प़, सापपमग, सारेसा, सारे–गम, रेरेसा ।

(२) पपप, सांध, सांसां, गंगं, गंरेंपंगं, पगप, सांधसां, सांधप, ग, पग, प, सांधसां, सां, रेंगंसां, सांधप, पग, मरेरेसा ।

(दूसरा प्रकार)

(१) गरेसानि़ध़नि़ध़प़, सा, रेसा, गग, परे, सासा, गरेसा, सानि़ध़, नि़ध़प़, प़ध़सा, गरेसा ।

(२) पपधनिधसां, सांनिध, निध, सांरेंसांनिधप, पपधसां–धधप, गप, गरेसा, नि़ध़, सानि़ध़प़, सा, गरेसा ।

---

(२८) पहाड़ी–स्वरविस्तार

(१) सा, रेग, गरे, सारेगरे, सारेसा, नि़ध़, प़, ध़सारेग, गमगरे, सारेगसा, नि़ध़, ग, रेसा ।

(२) गगपप, धधपग, गरेसानि़ध़, प़ध़सा, गपधपग, रेसाध़, प़ध़सा, रेसा, सारेग, साध़, सांधप, ग रेसाध़, प़ध़सा ।

(३) गग, गमगरे, रेगरेसानि़ध़, धधपग, गपग, मगरे, सा, नि़ध़, प़ध़सा, गगपध, सांध, पधप, गरेसाध़, रेसाध़, प़ध़सा ।

(४) सा, रेग, मगरे, सा, रेगरे, सारेसानि़ध़, प़ध़सा, रेगरेसा ।

(२९) मांड-स्वरविस्तार

(१) सा, ग, रेसा, म, पगम, रेग, रेसा, म, प, निधम,
सा
पग, रेसा ।

(२) सागरेम, रेगरेसा, मपधम, प, म, गम, रेग, रेसा, धध,
सा
निप, धम, पग, रेसा ।

(३) मम, रेग, रेसा, रेम, रेमप, पधप, निधप, सांनिधम,
सा
पग, रेसा ।

(४) म, प, धनि, प, सां, रेंगं, रेंसां, सांनिध, निप, धम,
पधसां, गंसां, नि, ध, निप, धम, पग, सांनिधम, प,
गम, रेग, रेसा ।

---

(३०) मेवाडा-स्वरविस्तार

(१) म, गरेग, सा, रे, ममध, पधमधप, म, धप, म, गरे, सा ।

(२) सा, सारेग, मगरेसा, म, ममप, मधप, नि, निधनिध,
म, गमपध, पनिधप, ग, पम, गरेग, सा ।

(३) सा, प, म, गमगरेसा, गमध, मधप, गमगरेसा, ध,
ध, मप, निध, मधप, ग, गमपध, मप, गमगरेसा ।

(४) ग, गसा, रेम, मप, पधनिध, सां निध, मधप, गम,
मपग, म, ध, धपमग, मग, सारेसा ।

(५) प, गमगरेसा, ध, मधप, गमगरेसा, धनिधप, ध, मप,
गम, धपमग, रेग, सा, सारेमपधनिधप, म, गरे, गसा ।

(६) म, मप, पधनिप, धसां, निध, मधप, पधनिपधम, गमप, सांनिधप, ध, निधपधमप, गमपध, धपमग, मगरेसा ।

(७) म, मप, पधनिपधसां, सांरेंनि, सां, निध, निधप, पसां, गमपध, मधप, गमगरेसा ।

(८) सा, रेगरेसा, रेमपधमपगमगरेसा, सारेमपधनिपधमप-गमरेसा, गमपधनिसांधनिपधमपगमगरेसा, पधसांरेंगं-रेंसांनिध, धनिधप, निधपमगरेसा ।

(९) धधपमगरेसा, निधपमगरेसा, सांनिधपमगरेसा, रेमपनि, पधसां, रेंगंरेंसांनिधपमगरेसा ।

---

(३१) पटमंजरी—स्वरविस्तार

(१) सा, गरेगमपमगरे, सा, सा, गरेसा, निधनिप, परे, रेगसा, पमगरे, सा ।

(२) सा, निधनिप, गरेगमगरे, सा, नि, सारे, सा, गरेग-सारेसानि, सा, गमपमगरे, सा ।

(३) सारेसा, मगरे, सा, गरेगमपमगरे, सा, निसां, रेंसां, निधनिप, गरेग, मपमग, रे, सा ।

(४) प, निधनिप, सां, निधनिप, गमगरे, गमपमगरे, सारेसा, नि, धनि, रेसा, निधनिप, रे, पमगरे, सा ।

(५) परेसा, गरे, सा, प, मगरे, सा, निप, मगरे, सा, सां, निधनि, सां, रेंसां, निप, गमगरे, गरेगमपमगरे, सा ।

(६) पपसां, सां, रेंसां, निधसां, रेंसां, निधनिप, गमगरे, गमप, मग, रे, सा ।

(७) सांगंरेंसां, रें, गंमंगंरें, गंसां, रेंसां, नि, धनिसां, पध–निसां, निधनिप, गमगरे, गमपमगरे, सा ।

(८) प, मगरे, सा, सां, निधनिप, मगरे, सा, रेंसां, निप, मगरे, सा, गंरेंसां, निप, मगरे, सा, सांगंरेंगंमंपंमंगंरें, सां, निनि, सांरेंसां, निधनिप, मगरेसा ।

---

(३२) हंसध्वनि—स्वरविस्तार

(१) गरे, सारेगपगरेसानि़, परे, नि़रे, सारेगरेसा ।

(२) गरेसा, नि़, प़नि़सा, रेग, पग, पनिप, गरे, गपगरेनि़, प़नि़रे, प़रे, नि़रे, गरेसा ।

(३) नि़रेसा, नि़रेगपगरेसा, नि़रेगपनिसां, निप, गरे, नि़रेसा ।

(४) प़नि़सा, नि़रेगरेसा, गपनिसां, निपगरे, गपनिपगरे, नि़रेगरेसा ।

(५) पगरेसा, नि़रेगपगरेसा, पनिसां, पनिसां, रेंगंरें, निरेंनि-पगरे, गपगरेसा ।

(६) पगप, पनिप, पनिरेंगंरेंसांनिप, पसां, निरेंनिगंरेंसांनिप, पनिसांप, निपगरे, प़नि़ेगरे, नि़, प़नि़प़सा ।

(७) पगपगरेसा, निपनिसांनिपगरेसा निरेंगंरेंसांनिपगरेसा, निरेंसांगं, निरेंगंपंगंरेंनि, पनिरेंसां, गंरेंसांनिपगरेसा ।

(८) गगपपनिनिसां, रेंनिसां, रेंगंरेंसां, निप, रेंनिगंरेंनिप, पनिसांनिपगरे, नि़रेसा ।

(९) सांनिपगरेसा, गंरेंसांनि, पगरेसा, गंपंगं, निरेंसांनिप-गरेसा ।

(३३) दीपक (बिलावलमेलजन्य)—स्वरविस्तार

(१) सा, प़, म़प़ध़, प़नि़, सा, साग, गरेसा, सा, नि़॒, ध़, प़नि़सा, गम, मपमग, रेसा ।

(२) ग, मग, प, धपनि॒धप, म, पमग, रेसानि़॒, ध़, म़, प़ध़, प़, नि़, सा, ग, गरेसा ।

(३) पमग, रेसा, प, धप. म, पमग, रेसा, सागमप, धपनि॒-धप, ग, मपमग, रेसा, प, म़प़नि़, नि़सा, ग, गरेसा ।

(४) सा, म़प़ध़, म़प़, नि़, नि़सा, ग, मपधप, नि॒धपमग, मपमग, रेसा, नि़॒, ध़, म़प़नि़, सा, ग, गरेसा ।

(५) सा, मगरेसा, म़प़नि़सारेसा, नि़॒ध़, प़ध़सा, म़प़नि़, रेसा, प, मग, गरेसा, पधपनि॒धपम, पमग, रेसा, ग, गरेसा ।

(६) सा, गम, पम, धपनि॒धपम, ग, मग, रेसा, नि़॒, ध़, म़प़ध़प़सा, प, मग, रेसा ।

(७) सागरेसा, पनि॒धपमगरेसा, नि॒धप, निसां, नि॒धपम, पमगरेसा, सां, नि॒ध, मपधपसां, गंरेंसां, मपनिसां, नि॒, ध, पधसां, मपधप, नि॒धपमग, गरेसा ।

(८) साप, गम, मपमग, रेसा, गरेसानि़॒, ध़, म़प़ध़, प़, नि़, नि़सा, ग, गरेसा ।

(९) पपसां, सां, निसां, गंरेंसां, नि॒, ध, पनि, सां, गंमंगं, रेंसां, पं, मंगं, रेंसां, पनि॒धप, म, पमग, रेसा, सापमग-रेसा, प़, म़प़ध़, प़, नि़, नि़सा ।

(१०) साग, म, पगम, पधपनिधपगम, पनिसां, गंरेंसां, पनिधप, गम, मपमग, रेसा, नि, ध, मपध, प, नि, निसा ।

(११) सागगरेसा, सासापपगमपमगरेसा, पपधपनिधपमगरेसा, पपधमपनिसां, पपमगरेसा, मपधमपधमपनिसांगंमंपं, गंमंगंरेंसांनिधपमपमगरेसा ।

(१२) पपधधपप, धधपपनिनिधप, सांनिधप, सांसांगंगंरेंसां, पनिधपमगरेसा, पपसांसांगंमंपंपंगंमंपंमंगंरेंसां, पनिधप-मगपमगरेसा ।

---

(३४) झिंझोटी—स्वरविस्तार

(१) सा, रेमग, सानिधप, मगप, मग, सा, रेसा, निधप, धसा, रेमग, गमगरेसा, सारेगमग ।

(२) सारेमग, गमप, गमग, धधप, गमग, सारेगमगरे, गमगरे, सा, निधप, धसा, रेमग ।

(३) धनिधप, पधप, गमग, सारेमग, निनिधप, मग, मपमग, रेरेपमग, सारेगमगरे, सा, रेसानिधप, धसा, प रेमग ।

(४) सां, रेंसांनिधप, निधप, मधपनिधप, मग, रेरेपमग, मगरेसा, सारेगमगरेसा, रेसानिधप, धसा रेमग ।

(५) सारेगमप, गमप, गमपधनिधप, सां, निधप, गमपध पमग, सारे, मग, मगरेसा, रेरेसानिधप, धसारेमग ।

(६) गमप, निनिधप, सांनिधप, गंमंगंरेंसां, सांरेंसां, निधप, मपधप, मग, सा रेगमग, प, गमग, सारेगमगरेसा, निधप, धसा, रेमग ।

(३५) खंबावती–स्वरविस्तार

प
(१) सा, रे मप, ध, पधसां, निध, पधम, ग, मसा ।

(२) सा, ग, मगमसा, सापमग, मसा निधनिम, गमसा ।

(३) सागम, पधम, सांनिध, पधम, गमसा ।

(४) गम, धम, पधम, निसां, पनिसां, रेंगंसां, सांनिध, निध, पपधम, गग, मसा ।

(५) निनिध, निध, पधम, गग, मसा, पमगम, सा, निसा,
प
गम, रेमप, ध, पधसां, निध, पधम, गग, मसा ।

निनिनिध
(६) मम, प, निनसां, निनिसां, सां रें, गंरेंसां, निधधधपध,
प
सांनिध, पधम, गग, म, निसा ।

(३६) तिलंग–स्वरविस्तार

(१) साग, गमप, निप, गमग, पगमग, सा ।

(२) निसा, गमप, गमग, निनिप, सांनिप, गमग, सा ।

प प
(३) सासागमप, निनिप, सांनिप, निप, गमग, प, गमग, निसा ।

(४) गमपगमग, निसाग, गमप, निनिसां, प निनिप, सांनि-
निप, गमप, निप, गमग, पगमग, सा ।

(५) गमग, निसा, सागमप, निप, सांनिप, गमग, पमग,
सा ।

(६) गमप, निसां, निसां, सांगंसां, मंगंसां, निनिप, निप,
गमप, निसां, गंमंगं, सां, सांनिनिप, गमग, मगसा ।

---

(३७) दुर्गा—स्वरविस्तार

(खंमाजमेलजन्य प्रकार)

(१) सा, ग, मग, सानिध, सा, मग, गमध, निध, मगसा,
निध, सामग ।

(२) मगमध, निधमग, धनिसां, निध, मधनिध, मग, सा,
निधनिसा, मग ।

(३) सा, गमध, मग, सांनिधनिधमग, धनिसां, गंसां, निध,
सांसांनिध, मग, मगसा, धनिसा, मग ।

(४) मगमध, निसां, गंगंसां, गं, मंगंसां, नि सांनिधनिधध,
मग, धनिसां, निध, मग, मग, सा, निध, निसा, मग ।

---

(३८) रागेश्वरी—स्वरविस्तार

(१) सा, रेसानिध, निसा, म, मग, मधमग, मगरेसा, गम ।

(२) गम, धम, धनिधम, गमध, सांनिध, निधम, गरेसा ।

(३) मगमध, निसां, निध, रेंसांनिध, म, धग, धनिधम, गरेसा।

(४) सागम, धम, सांनिधम, धनिध, म, ग, रेसा, निध, निसा, म, मधनिसां, निसां, रेंसां, ंमंगंरेंसां, सांनि धम, गसा, निध, निसा, गम, सांनिध, निध, मग, रेसा।

---

(३६) गारा—स्वरविस्तार

(१) सा, गम, रेगरेसा, निसारेसा, धनिध, ममधनिसा, रेनिसा।

(२) निसारेनिसा, गमप, गम, रेगरे, निसा, रेगरे, निसा, निध, निपम, मनिधनिसा।

(३) निसा, धनिध, निसा, गमप, गम, गरे, निसा, गरे, निसा, निधपम, मधनिसा।

(४) गम, गम, रेगरे, पम, रेगरे, निसारेगरे, धनि, पध, मप, गम, रेगरे, निसाधनि, पध, निसा।

(५) धनिधपम, निधपम, धपम, मधनिसा, धनिसा, गमपगम, रेगरेसा।

(६) पपध, मपगम, रेगरे, निसा, गरे, मपधनिधप, गमपगमरेगरेनिसा, रेगरेसा, निसा, पधनिनिसा।

---

(४०) सोरट—स्वरविस्तार

(१) सा, रेरे, मप, मरे, रेसा, निरेसा, मरे, सा ।

(२) निस रे, मरे, पमरे, मपधमरे, रेपमरेसा, निरेसा ।

(३) निसारे, सा, रेसा, निधप, निसा, मरे, मपधमरे, सा ।

(४) रेरेमप, निधप, धमरे, पमरे, सा, निसारेरे, सा ।

(५) निनिधप, निधप, मपनिसां, निधप, मपधपधमरे सा ।

(६) सारेमरे, मपनिसां, रेंसां निधपधम, रे, पमरे, सा ।

(७) सारेमप, रेमप, निसां, रेंरेंसां, रेंसां, निधप, मंरेंसां,
निनिधप, रेमप, निनिसां, निधमप, सांनिधपधमरे, सा ।

(८) ममप, निनि, सां, सां, निसांसां, निसांरें, मंमंरें, सां,
निसांरेंमंरेंरेंनिसां, निसांरें सानिधप, धधप, मपध, धप,
धमरे, रेंमंरेंसां, निसां, मपनिसां, रेंनिधप, धमरे, रेसा ।

---

(४१) नारायणी—स्वरविस्तार

(१) सां, निध, मप, निधप, मपम, रे, सारे, मरे, धसा ।

(२) मपधसा, रे, मरे, निधप, मपधप, मरे, मरेसा ।

(३) धधप, मप, धप, धप, सां, धधप, निधप, मपमरे, सासारे, मप, धसां निधप, मपनिधप, मरे, रेसा ।

(४) मपधसां, सां, रेंरेंसां मंरेंसां, सांरे, सांरेंसांनिधप, मपधसां, धप, मरे, सारेमरे, सा, धधसा ।

---

(४२) बंगालभैरव—स्वरविस्तार

(१) धध, प, गमप, गमरे, सा, सारेसा, धसा, रेरेसा, ग मरेप, गमरे, सा ।

(२) गमपप, धध, प, गमप, रेगमप, गमरे, सा, सारेसाध, साध, मपध, सा, सारेगम, रेगम, पमगप, रेपगमरेरेसा ।

(३) गमपधप, धपसांधप, मप, रेगमप, सांधप, गमपगम रे, सा ।

ग ग म नि म नि
(४) सारेसा, रेपगमरे, पगमरे, सा, धधसा, गमधध, प,
म ग
गमरेरे, सा ।

ग नि नि गं नि नि सां नि
(५) मपध, सां, सांरें, सां, सांध, सां, रेंरेंसांधप, मपध,
म नि म ग म ग
रेंसां, गमधपगमरे, पगमरे, सा, सारेसा

(४३) आनन्दभैरव–स्वरविस्तार

ग म
(१) सा, रेरेसा, निधप, सा, गरेगमपमगरे, रे, सा ।

ग म ग म म ग सा म
(२) सारेसा, गरेसा, गमपगमरे, पगमरेसा, निसागमप,
म म ग
गमपगमरे, सा ।

म म म सां नि म ग
(३) पपगमप, धध, प, गमपगमरे, सा, निनिध, प, गमरे,
म ग ग
पपगमरे, गरे, सा ।

म नि गं म
(४) पपधध, प, सां, सां, गंमंगंरेंसां, निसां, धध, प, गम–
ग म ग
रे, पगमरे, सा ।

सा ग ग
(५) निसागम, रेगमप, पम, धपम, पम, रेग, निसाग,
ग ग ध
पमगरे, गमपमगरे, रे, सा ।

(४४) सौराष्ट्रटंक—स्वरविस्तार

(१) सारेरे, सा, ध, सा, सा, रेसा, गमगरे, सा, पगमरे सानिसा ।

(२) गम, गम, धम, गमध, मधनिसां, रेंरेंसां, निसां, धम, मधनिसां, रेंसां, ग, मपगमरे, सा ।

(३) सासागमप, गम रेसा, रेंरें, सां गमपगमरे, सा ।

(४) गमगम, पप, गमप, धधप, गमधप, रेगम, पमरे, पगम, रेसासारेसा, धसा, गमधधप, गमपगमरे, सा रेंरेंसां, गमपगमरे, सा ।

---

(४५) अहीरभैरव—स्वरविस्तार

(१) गग, रेसा, सासारेसा, सारेसा, निसागरे, गगम, गम-रेप, गमरेसा ।

(२) रेरेसासा, गरेगम, ममपग, मरेरे, सा, सारेसाम, गरे-साप, गमपग, मगरेसा ।

(३) ममरेम, पपमप, पमपध, निधपध, मपगम, रेरेगम, पगरेसा ।

---

(४६) शिवमतभैरव–स्वरविस्तार

म म ग
(१) सा, म, गम, गमप, मध, प, म, प, ग, ग, म, रे,
सा, निसा, रेरेसा ।

(२) सारेसा, म, गम, प, मपध, प, निधप, मगम, प,
गमरेसा, सारेरेसा ।

(३) सा, निसा, धपनिधप, धनिसा, रेसा, गमरेसा, म,
गमप, पध, सां, निसां, ध, प, नि, धप, गम, मनि–
धप, ग, म, रेसा, निनिसा, रे, सा ।

(४) सा, प, ग, मरेसा, मपध, प, गमरेसा, मपध, सां,
निसां, ध, प, मप, ध, प, नि, मप, म, ग, धप, ग,
म
मरेसा, निसागरेसा, ध, निसाम, गम, ग, मरेसा, निसा,
रेरेसा ।

(५) सा, सागमप, गमप, मप, ध, सां, निसां, ध, पनिधप,
म
गमध, सां, धप, निधप, मग, मनिधप, ग, मरेसा,
निसारेरेसा ।

म म
(६) मरेसा, प, ग, मरे, सा, निधप, गमरेसा, सां,
म
निसांधप, गमरेसा, रेंसा, निसां, ध, निसां, धप,
म
निधप, गमरेसा ।

(७) मध, सां, निसां, धनिसां, गंरेंसां, निसांरें, सां, सां,
धप, मग, मध, निसां, धप, निधपम, रेसा, ग, निनि-
सारेरेसा ।

(८) पध, निसां, धप, रेंसां, निसां, धप, मप, गम, ध, निसां, धप, धनिसांगं, रेंसां, निसांध, प, सांनिधपमग, मरेसा ।

(९) गगमरेसा, धधनिसां, निधप, निधपमग, मरेसा, गमधनिसांरेंसांनिसांधप, निधपमग, मरेसानिनिसांगं-रेंसांनिधप, निधपमग, मरेसा ।

(१०) सागमपगमप, गमपधनिसांनिधप, निधपग, मधनिसां-रेंसांनिधप, निधपग, पग, मगरेसा ।

(११) सांनिधपमग, मरेसा, सांरेंसांनिधपमग, मरेसा, मंगंरेंसांनिधप, निधप, ग, मरेसा, गंमंपंगंमरेंसां, गंरेंसांनिधप, निधप, ग, मरेसा ।

---

[४७] प्रभात—स्वरविस्तार

मग नि ग म ग
(१) मगरे, सा, ध ध नि सा, रे सा गम, रेगगममर्म-गमगरे ।

ग म
(२) सा रे सा नि सा ग म, रेगम, धधपम, गम, रेगमर्म, ग म ग रे सा ।

नि सा म ग
(३) सारेसा धधनिधप, धधनिसा, रेरे, सा, गमगरे, सा, गममंगम, रेगमप, मगरेसा ।

(४) निसागमपप, धधपम, रेगमर्म, गमगरे, सा धनिसा, गमपम, ग, मगरेसा ।

प सां
(५) पपधधनिनिसां, धनिसां, रेंरेंसां, निधप, म, मर्मम,
म ग
गरेगम, धपम, रेगमर्म, गमगरेसा, नि, सा ।

(४८) ललितपंचम—स्वरविस्तार

(१) सा, मंगरेसा, निरेगम, मंग, प, मंधनिधप, म, मंग, रेग, मंगरेसा, निनिरे, सा ।

(२) सा, निरेसा, म, गप, धनिधप, मंम, मंग, निधप, मंमग, धमंगरेसा, निनिरे, सा ।

(३) सा, रेसा, धनिधप, मंधसा, निरेसा, निरेगम, मंग, मंपधनि, मंमगरेगमंगरेसा, निनिरे, सा ।

(४) प, मंधनिधप, मंधरेंनिधप, मंधनि, धनि धप, मंम, निधप, मंम, पग, पग, रेसा, निनिरे, सा ।

(५) साम, मंम, निधपमंम, सांनिधपमंम, गंरेंसांनि, धनिधप, मंम, मंग धमंगरेसा, निनिरे, सा ।

(६) मंपधप, मंपधनिधप, मंधनिरेंनिधप, निधमंम, पगपगरेसा, निनिरे, सा ।

(७) मंधसां, सां, निरेंसां, निरेंगंरेंसां, मंमंगंपंगंरेंसां, रेंसांनिधनिधप, मंम, सांनिधनिधपमंम, निधनिधपमं, धपमंम, पग, पगरेसा, निनिरे, सा ।

(८) सांरेंसां, मंगंरेंसां, निरेंगंरेंसांनिधनि, धपमंम, गमधनिसांनि, धनिधपमंम, निधमंम, प, पग, पगरेसा, निनिरे, सा ।

(९) निरेसा, निरेगरेसा, निरेगमंगरेसा, निरेगमंधनिधपमंमपगरेसा, निरेगमंधनिरेंगंरेंसांनिधपमं, निधमंगरेसा ।

(१०) साम, गप, मंधपसां, निरें सांगं रेंसां निध पमंगरेसा, मगपमंधपसांनिरेंसांगंरेंमंगंरेंसांनिधपमंमगपगरेसा ।

(४९) मेघरंजनी—स्वरविस्तार

(१) निसा, गम, म, गरेगम, ग, रेसा, निसा, गम, मम, रेगम, गरेसा ।

(२) सारेसामगरेसा, सारेसा, निरेसा, रेसा, गम, मरेगम, मम, रेगरेसा; निरेसा ।

(३) निरेगमरे, गम, मम, निसागम, रेग, म, निसां, निसांनि,
ग
मग, रेग, मग, रेसा ।

(४) मम, मग, मनिसां, सां, निरेंसां, निरेंगंरेंसां, गंरेंसां,
सां
सांनिमग, सांमंगंरेंसा, निमग, मगरेसा, निरेसा ।

---

(५०) गुणक्री—स्वरविस्तार

सा ग
(१) सा, रेरे, साधसा, रेरेसा, मरे, सा, साध, प, मप, धसा, रेमरे, सा, सारेसा ।

म म म सा म
(२) सारेसा, मपमरे, पमरे, रे, सा, धधप, मपमरेसा, साध-
सा सा म प म म सा
धप, मप, धधरेसा, रेमपमरे, धधपमपमरे, पमरे, रेसा; सारेसा ।

नि नि सां प
(३) मपपधधसां, सांरेंसां, सांधधसां, रें रें सांधप, मपध,
प म म सा
रेंसां, धप, मप, मरे, पमरे, रे, सा; सारेसा ।

(४) साधधधप, मप, धधप, सांधप, मपमरे, मरेपमरे, सा, धधसारेसा ।

(५) रेंरेंसां, मंपंमंरेंसां, रेंसांध, सांधप, मप, रेंसां, धप, मप, मरे, पम, रे, सा; सारेसा ।

---

(५१) जोगिया—स्वरविस्तार

(१) म, रेसा, रेरेमरेसा, रेम, मपप, धमरेसा, सारेसा ।

(२) रेरेसा, निध, सा, मपधपधम, रेमरेसा, निधपधम, निधम, रेसा; सारेसा ।

(३) सारेमम, पप, धधप, धसांधपधम, सांनिधप, पधनिधप, धमरेसा; सारेसा ।

(४) धध, धधप, धसांनिधप, मपधधम सांनिधपम, धम, रेमपधम, निधम, पमरेसा; सारेसा ।

(५) मम, पप, ध, सां, सांरेंसां, सांरेंमंमं, रेंरेंसां, सांरेंसांनिध, पसांनिधप, ममपप, धधमप, सांरेंसांनिधप, मपधप, निधपधम, रेरेसा; सारेसा ।

(६) सारेसा, सारेमरेसा, धसारेरेसा, सारेमपधध, ममरेसा,
ध
निनिध, मपधमनिनिधध, मपधप, ममरेसा, सांनिध,
रेंसांनिधमपधधममरेरेसा; सारेसा ।

---

(५२) देवरंजनी–स्वरविस्तार

नि नि
(१) सा, म, मप, ध, प, मप, सां, ध, प, मपम, साम, मप ।

नि नि
(२) प, मप, ध, प, सां, धनिधप, मपधसां, म, मपम, सा
म, मप ।

नि नि
(३) म, पम, धप, म, सां, धनिधप, म, सा, म, मप, ध,
प, निधप, सां धनिधप, सां, मंसां, धनिधप, म, पम सा ।

नि
(४) सा, निसा, ध, प, मपधसा, निसा, प, म, निधपम,
मपध, सां, पम, म, सा ।

(५) प, पध, निध, सां, ध, मं, सांध, मपध, साम, मप,
ध, निधप, पम, सा ।

(६) पपध, सां, सां, निसां, सां, मं, सां, धप, पधनिसां,
नि
मपधसां, मपम, सा, म, मप, ध, प ।

(७) पधसां, निसां, मं, मंपंमं, सां, निसां, पधपम, मपध-
सां, म, पधनिधपम, पम, म, सा ।

(८) सा, मपम, पधपम, पधसांनिधपम, मपधसां, मंपंमंसां, निधप्म, ममपधसांनिधनिधपम, धपम, पम, सा ।

(९) मसा, पमसा, धपमसा, सांनिधपमसा, मं, मंसां धनि-धपमसा, साम, मपधसां मं, सांनिधपमसा ।

(५३) विभास—स्वरविस्तार

(१) धधपप, गपधप, गरेसा, सारेसा, गप, प, ध, प, सारे गप, धधप, गपधप, गरेसा, धध, प ।

(२) सारेसा, धधपप, धसा, रेरेसा, गपधपगरेसा; धध, प ।

(३) सारेसा, गरेसा, गगपपगरे, सा, सारेगप, गप, धधप, गपध, धप, सां, धप, रेग, प, धधप, पगरेसा, धध, प ।

(४) रेरेसा, गपधध, सां, धध, प, रेंसां, धध, प, गपध, सांध, प, रेगप, धधप, गपधपगरेसा, ध, धप ।

(५) पगप, धध, सां, सां, सांरें, सां, सांरेंगंरेंसां, सांरेंसां, ध, प, गगपपध, सां, धधप, गपध, प, गरेसा; ध, धप ।

(६) सारेसा, सारेगरेसा, सारेगपगरेसा, गपधपगसांरेंसां, ध प, गपध, रेंसां, ध, प, पधगप, सांसां, धपगपधप-ग सा; ध, ध, प ।

(७) सासा, धध, पधधप, गपध, सांधधप, सागप; रेंसांधप, गपधप, गरेसा; धध, प ।

(५४) झीलफ् (भैरवमेलजन्य प्रकार)—स्वरविस्तार

नि नि

(१) सा, म, गमप, पध॒, पध॒सां, ध॒, प, मगमध॒, प, मपगम, सा, गम, मप ।

नि॒ नि

(२) ग, सा, म, गम, प, ध॒, प, पध॒सां, ध॒, प, म, गम–पध॒सां, ध॒, प, मग, साग, मप ।

(३) प, मग, ध॒प, मग, सां, ध॒प, मग, मपध॒सां, ध॒प, मग, सागमप, मग, सानि॒सासा, म, गमप ।

(४) ध॒प, सां, ध॒प, मप, ध॒, प, पध॒सां, ध॒प, गम, ध॒, प, मग, सानि॒साग, म ध॒प ।

(५) पपध॒सां, सां, निसां, गंमं, गं, सांनिसां, पपमगम, पध॒सां, ध॒पमग, सागमप, पध॒ प ।

(६) ग, गसा, मगसा, पमगसा, ध॒पमगसा, सांनिध॒पमगसा, मंगंसां, सांनिध॒पमगसा ।

(७) म, मप, पध॒, सांनिसां, सांगंसांनिध॒प, पध॒सां, ध॒प, मपमग, साग, मप, ध॒, प ।

(८) गसामगपमध॒पसांनिसां,गंसांमंगं, सां, ध॒प, गमपध॒सां, ध॒प, मग, पमगरे॒सा ।

---

(५५) गौरी (भैरव थाट)—स्वरविस्तार

ग

(१) सा, रे॒रे॒सा, नि॒सा, गरे॒, रे॒सा, नि॒रे॒सा ।

रे॒ ग सा

(२) नि॒सा, गरे॒, सा, नि॒ध॒नि॒सा, रे॒रे॒गरे॒ मग, रे॒गरे॒सा, नि॒रे॒सा ।

ग
(३) निसा, गम, पम, गरेमगरे, रेसा, धप, म, रेग, मग,
रेरे, सानिसा, रेसा ।

नि
(४) निसारेरेसा, धध, निधध, निनिसा, ग, म, रेगम, पम,
सा
रेगरेसा, निरेसा ।

ग प ग ग
(५) मगरेगम, रेगम, पप, धपम, रेरे, ग, मगरे, सा, ध,
म सा ग
निसा, धपम, रेगम, ग, रेरे, सा, निरेसा ।
(६) निनिसारेग, रेगरे, सा, निरेसा, म, रेग, रेसा, धमप–
पमरेग, रेसा, निसा, धपमप, निसा, रे, रेसा ।

मप ग ग
(७) निसामम, रेगरे, म, पम, रेग, रेसा, धधपम, रेग, रेम,
गरेसा, निरेसा ।

प म
(८) मम, पप, धधप, निधप, धपम, रेग, सांनिधप, म,
ग सा ग ग
निधपम, रेग, नि, सा, रेग, रे, पमग, रेगरेसा ।

---

(५६) जंगूला–स्वरविस्तार

(१) म, गम, गमपमगरे, सा, सारेगम, मप, म, गमपमरे, सा ।
नि
(२) म, गमप, पसां, धनिप, गमध, प, मपधनि, (नि),
प, मग, मरे सा ।

(३) सा, प, म, गमरे, सा, सां, धप, गमप, मरे, सा, रेंसां, निध, प, मपधनि, प, गमपम, रे, सा ।

(४) सा, सारे, निसा, ध, प, म, गम, पध, निप, म, सां,
नि
ध, प, म, गम, गमपम, रे, सा ।

(५) मगरेसा, पमगरे सा, धप, मगमरे, सा, सां, धनिप, मगमरेसा रेंसां, निसां, ध, प, मपधनिप, गम पम, रे, सा ।

(६) गम, मप, पध, प, सां, निसां, रें, सां, धनिसां, निसां, धनिप, गमपधनिसां, धप, म, निधनिप, म, गम, गमपम, रे, सा ।

(७) पपसां, सां, रेंमां, मं, गंमं, रें, सां, निसां, धनिप, मपगमध, सां, गंमंपंमंरें, सां, रेंसां, निसां, पधनिप, म, गम, गमपम रे, सा ।

(८) मगरेसा, धपमगरेसा, सांधनिप, मगरेसा, सांरेंसांनि-धनिपमगरेसा, सांरेंगंमंपंमंगंरेंसांनिधपम, गमपधनि-पम, पमगरे, सा ।

(९) पपमम, धधपपमम, सांसांरेंसांधधनिपमम, मपधनि-सांमंगंरेंसां, रेंसां, धधनिपमम, गमपमगरे, सा ।

(१०) पपसांसांरेंसांमंगंमंरेंसां, सांसांरेंसां, धधनिपम, मपध-निसांनिधनिपमम, गमपमगरे सा ।

(५७) गौरी (पूर्वी थाट)—स्वरविस्तार

(१) सा, रेनिसा, धनि, रेग, मंगरेसा, रेनि, सा ।

(२) सा, धनि, रेसा, रेनिसा, धनि, मंधनि, रेग, मंधमंग, रेसारेनि, सा ।

(३) सासापप, मं(ध), रेग, सारेनि, धनिंग, मंगरे, सारेनिसा ।

(४) मंधनिधप, रेग, सारेनि, सारे, पमंगरे, निसा ।

(५) मंधनि, सां, रें, सांरेंनिसां, रेंगं, रें, निसां, धप, मंपधमंप, रेग, रेमं, गरेसा, रेनिसा ।

(५८) त्रिवेणी—स्वरविस्तार

(१) सारेसा, सारेगरेसा, निरेगरे, गपगरेसा ।

(२) सासारेरेसा, गगरेरेसा, प, पगरे, गपगरेसा, रे रे प, पधप, गरे, गप, निधप, गरेगपगरेसा, सासारेरेसासा, गपगरेगरेसा ।

(३) पपधधपप, निरेंनिधपप, सांसांनिधप, गरेगरेसा ।

(४) रेरेप, प, निधनिधप, सांसांरेंनिधप, निनिधधपप, प(प)ध-पपगरेगपगरेसा ।

(५) (मं)पपगरेगपसां, सांरेसां, रेंगंरेंसां, रेंनिधनिधप, पधप, गग, रेंनिधनिधप, पपगरेगपगरेगरेसा ।

(५६) टंकी—स्वरविस्तार

(१) पगरेसा, रे, गरे, गप, पधप, धमंग, रे, गप, गरेसा ।

(२) सा, गरे, प, गप, धप, गपगरे, धप, मंग, रेग, प, निधप, गप, रेंनिधप, गप, गरे, मंगरे, सा।

(३) प, गप, धप, निधप, निरेंनिधप, धमंग, निधप, गरे, पगप, गरे, निरे, सा।

(४) ग, पध, प, सां, निरेंसां, सांरेंगंपं, गंरें, गंरें, सां, निसां, रें, निध, प, रेंगपध, रेंनिधप, मंग, गप, गरे, पगरे, रे, सा।

---

(६०) मालवी–स्वरविस्तार

(१) पग, रे, रे, सा, सारेसा, ग, मंग, रेग, मंध, रेंसां, सां, निप, ग, गमंग, रेसा, सारेसा।

सा सा मं
(२) रेरेसा, रेरेगरेसा, पपगरेगमंगरे, सा, सारेग, मंग, मंधसांऽरेंगंरेंसां, रेंसां, सांनिप, मंधरेंसां, निप, ग,
मं सा
पग, रे, सा, सारेसा।

नि सा मं ग ग प
(३) सासागरेसा, रेग, पगनिपग, रेग, रेंसांनिपग, रेग, मंग, मंप, मंग, पगरेसा, साग, मंध, रेंसांनिपमंग,
ग ग ग
रेगमंप, मंग, रे, रे, सा।

मं मं सा
(४) गग, मंग, रे, सा, पमंग, पग, रे, सा, सारेसा, रेगरे,
प पमं सा नि प
मंगरे पमंगरे, रे, सा, साग, मंधसां, सांनिप, मंग,
ग मं
रेग, पग, रे, सा, सारेसा।

---

(६१) रेवा (गांधारवादी प्रकार)—स्वरविस्तार

(१) सारेग, ग, रेग, पग, रेगरेसा, सारेसा, गपग, रेगप, धपग, पगरेगप, धपग, पग, रेग, सारेग, धप, गपरेग, गरे, रेसा ।

(२) सा, रेसा, गरेसा, सा, सा, रेपग, धप, रेग, पग, ग, रेसा, धरेसा, गरेसा, धधपप, धसा, सारेग, पगरेसा ।

(३) सारेग, रेग, पग, रेसा, पधप, ग, रेग, सारेग, रेसा ।

(४) पग, पधप, सां, सां, रेंसां, रेंगंरेंसां, सांरेंसां, धप, पग, पध, रेंरेंसां, सां, धपग, रेसा ।

---

(६२) रेवा (ऋषभवादी प्रकार)—स्वरविस्तार

(१) सारेरेसा, गरे, सा, सा, धप, पध, रे, रे, सा, पगरे ।

(२) गरे, धप, रेग, पधपगरे, रेसा, सा, रेसा ।

(३) पगरेप, प, धप, ग, धप, ग, रेग, रे, रे, सा ।

(४) सारेसा, सासारेरे, गरे, धप, गरेगपगरे, सा, धप, सा, रेग, पधपग, सांधपग, रेपधपगरे, सारेसा ।

(५) पधपगरे, प, प, धधप, सांरेंसां, धप, गपगरे, धप, रेग, धपगरे, गरे, सा, रेसा ।

(६) सासारेरे, पप, धप, सांरेंसां, धपग, रेपपग, रे, ग, सारेसा, सा, रेसा ।

---

[६३] जेताश्री—स्वरविस्तार

(१) प, गरेसा, रेसा, नि, सागप, प, पधमंग, मंग, रेसा, मंपनि, सा, ग, मंग, रेसा, पगरेसा ।

(२) पमंप, नि, सारेरेसा, नि, सां, रेंसां, निरेंनिधप, मंगप, निरेंनिधप, मंधप, मंग, मंगरेसा ।

(३) सा, निरेसा, ग, प, मंधमंग, प, मंग, मंग, रेसा; सारेसा ।

(४) निरेसा, गपप, मंग, रेसा, गमंग, रेसा, पनिसा, गमंग, प, धधप, ग, मंधमंग, मंग, रेसा, निसा, ग, रेसा, पमंग, मंग, रेसा, प, मंधप, मंधमंग, निधप, मंग, मंधमंग, मंग, रेसा ।

(५) मंपनिसा, पनिसा, रेसा, गरेसा, मंग, प, मंधमंग, धप, निधप, सांनिधप, मंधप, मंधमंग, रेसा ।

(६) मंगमंधप, सां, रेंसां, गंरेंसां, निसां, रेंनिधप, मंप, निधप, मंप, मंग, मंधमंग, पगरेसा ।

---

(६४) दीपक–स्वरविस्तार

(१) धधपमंप, नि, सा, धनिसा, निरेसा, गरेसा, मंपनिसा, रेरेसा, गमंगरेसा, प, प, मंग, मंग, रेरे, सा, सारेसा ।

(२) गमंप, प, धध, प, मंपधमंप, मंग, पमंग, सागमंधप, मंग, प, ग, गरेसा, निरेसा ।

(३) पधपमंपनि, पनि, रेरेसा, पग, पमंग, रे, सा, निसा-गमंप, गमंप, धप, मंप, सागमंप, मंग, धमंग, सागपग, मंग, रेसा रेरेसा ।

(४) गग, मंधप, सां, सां, निरेंसां, मंगंरेंसां, सांरेंसां, प, मंग, पधप, मंग, मंग, रेसा ।

हंसनारायणी—स्वरविस्तार

(१) सा, गरे॒गम॑प, म॑ग, गम॑पम॑गरे॒सा, प, म॑गरे॒सा, प, म॑गपम॑गरे॒सा ।

(२) नि़रे॒ग, पम॑ग, रे॒गम॑प, निप, गम॑पनि, सां, निप, म॑ग, गम॑पम॑गरे॒सा ।

(३) पम॑गरे॒सा, नि़रे॒गम॑गरे॒सा, नि़नि़पम॑गप, गरे॒सा, नि़रे॒-गम॑पनिसांनिपम॑गम॑गरे॒सा. गम॑पनिसां, गंरें॒सां, पसां, निप, म॑ग, रे॒गम॑, गम॑गरे॒सा ।

(४) साम॑गप, म॑पनिप, गम॑पनिसांनिप, म॑पनिप, म॑ग, रे॒गम॑पग, म॑गरे॒सा ।

(५) सागरे॒सा, साम॑गम॑गरे॒सा, गम॑पनिपम॑गरे॒सा, गम॑पनि-सांनिपम॑गम॑गरे॒सा गम॑पनिसांगंरें॒सां, पसांनिपम॑गरे॒सा ।

(६) प, गम॑प, रे॒गम॑प, निप, सांनिप, निसांगंरें॒सांनिप, रे॒गम॑पसांनिप, म॑ग, रे॒गपम॑ग, पगरे॒सा ।

(७) पगरे॒सा, गम॑पम॑गरे॒सा, नि़सागम॑पनिपम॑गरे॒सा, नि़सा-गम॑पनिसांनिपम॑गरे॒सा, नि़सागम॑पनिसांगंरें॒सांनिपम॑ग-रे॒सा, निसागम॑पनिसांगंपंम॑ंपंम॑ंगंरें॒सांनिपम॑गपम॑गरे॒सा ।

(८) पम॑गम॑पसां, सां, निरें॒सां, नि़रें॒गंरें॒सां, रें॒गंम॑ंगंरें॒सां, निरें॒गंम॑ंपंम॑ंगंम॑ंगंरें॒सां, गंरें॒सां, निप, म॑पनिसां, रें॒निप, म॑पसां, निप, म॑पनिप, पम॑ग म॑गरे॒सा ।

(९) निनिपम॑गरे॒सा, गंरें॒सांनिपम॑गरे॒सा, पंम॑ंगंम॑ंगंरें॒सांनिप-म॑गम॑गरे॒सा, नि़सागम॑पनिसांरें॒सांनिपम॑ग, गम॑पनिप-म॑गरे॒सा ।

विभास (पूर्वीमेलजन्य)—स्वरविस्तार

(१) सा, ध, प, मंपध, प, गपगरेसा, सा, रेसा, गप, मंधप, धसां, धनिधप, गपधपगरेसा ।

(२) सा, गरेसा, पगपगरेसा, सारेगप, मंधनिधप, धसां, धप, गपधनिध, प, धपगरेसा ।

(३) सा, प, गप, धप, रेगप, मंपध, रेंसां, धनिधप, निधपग, पमंधपग, पगरेसा ।

(४) सा, ग, पग, ध, प, रेग, निधप, धरेंसां, धप, सांनिधप, मंधप, गप, गरेसा ।

(५) सा, ध, धप, गपधसां, रेंनिधप, गंरेंसांमंगं, पंगंरेंसां, धसांरेंगंरेंसां, पधसां, धनिधप, गपध, मंध, प, रेगधप, गपगरेसा ।

(६) सा, प, पधसां, धप, धरें, रेंगंरेंसां, धप, धरेंसां, धप, पधरेंसां, धप, धसां, धप, निधप, रेंनिधप, मंधनिधप, धपग, पग, रेसा ।

(७) पग, प, धसां, सांरेंसां, सांसांरें, रें, रेंगंरेंसां, गंरें, गंपंगंरें, मंगंरें, गंरेंसां, सांरेंगंरेंसां, धधरेंसां, धसां, धनिधप, रेगमंधनिधप, धप, गरे, गपगरे, गरेसा ।

(८) गरेसा, पगरेसा, धप, गपगरेसा, निधप, धपगरेसा, रेंसां, धपगरेसा, सारेगप, धसांरेंगंरेंसां, रेंनिधप, निधपग, पगरेसा ।

(९) सासारेरेसासा, पपगरेसासा, पमंधधपपगरेसासा, पमंधपनिधपपगरेसासा, सारेगपमंधनिधरेंनिधपगरेसासा, गप, धसांरेंगंरेंसांसांधपगरेसासा ।

राग अनुक्रमणिकानुसार चीजों की सूची

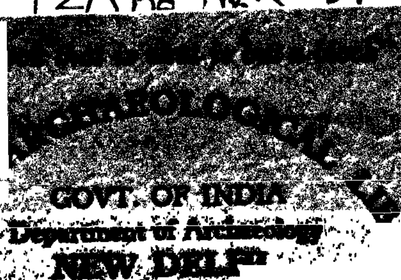
(६७ रागों की २५१ चीजें)



अकारादि क्रम से चीजों की सूची


समाप्त


CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY
New Delhi


GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI